

दानाचरितामण

(एक ऐतिहासिक उपन्यास)

ज्ञानचिन्तामणि

(एक ऐतिहासिक उपन्यास)



जी ब्रह्मप्प, एम ए
रीडर, कन्नड - विभाग
सरकारी कालेज, मडकेरी

एम के भारतीरमणाचार्य, एम ए
हिंदी प्राध्यापक
सरकारी कालेज, कोलार



प्रकाशक

मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति

जयनगर - बेंगलोर - 11

प्राप्ति स्थान
मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति
जयनगर बेंगलोर 11

श्रीर

विद्या साधन षट्त्र
III वेन रोड
हनुमंतनगर, बेंगलोर 19

Copyright- एम जे. भारतीरम्भाचार्य एच ए

मुद्रक

श्री कृष्ण प्रिंटर्स,
266/2 III वेन हनुमंतनगर
बेंगलोर 19

अपनी दो बातें

एक हजार वर्ष-पूर्व चालुक्य राज्य में महामहिमामयी अतिमध्व जीवित थी। इस महिलामणि का यशोगान रन्न ने अपनी अमर कृति अजितपुराण में किया है। उस से प्रेरणा पाकर श्री जी ब्रह्मप्प ने इस उपन्यास की रचना कन्नड में की है।

श्री जी ब्रह्मप्प कन्नड विभाग के प्राध्यापक हैं। आजकल मडकेरी के सरकारी कालेज के रीडर हैं। आपने जैन-साहित्य का गहरा अध्ययन किया है। उपन्यासों के द्वारा अपने ज्ञान का प्रसार जनता में कर रहे हैं।

अजित पुराण के अतिरिक्त लेखक ने पौन्यकवि रचित शाति पुराण, सर्वश्री वि एस कुलकर्णी की साहित्य-सुधा, आचार्य ती न श्रीकठय्य, के समालोकन, डॉ एस श्रीकठ शास्त्री के सोर्सस आफ कर्नाटक हिस्ट्री, नीलकंठ शास्त्री के ए हिस्टरी आफ साउथ इंडिया एव लक्कुडी के शासन SI-1, XI-1, बावे कर्नाटक इन्स्क्रिप्शन्स जिल्द 1 भाग 1 -आदि से भी विषय संग्रह करके बचे-कुचे अंश को कल्पना द्वारा भर कर इस दानचितामणि का ठाँवा तैयार किया है।

ब्रह्मप्प और हम सरकारी कालेज में 1962-67 तक सहोद्योगी थे। 1966 में दानचितामणि का हिंदी-रूप तैयार हुआ।

मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति ने अपने पाठ्यक्रम में इस को स्थान देकर छपाने का अवसर दिया और। स्वयं प्रकाशन का भार भी उठाया। समिति के कार्यकर्ताओं के हम कृतज्ञ हैं।

अनिरीक्षित विघ्नबाधाओं के आने पर भी श्री कृष्णा प्रिन्टर्स की मालकिन अमृता नागराज ने इस की सुंदर छपाई कर दी है। अकेली अमृता नागराज ने अक्षर-जोड़ से लेकर छपाई तक का पूरा कार्य दिन रात काम करके संभाला। उनकी पंचवर्षीय पुत्री उषा कुमारी से लेकर हमारे घर के छोटे बड़े सभी व्यक्तियों ने इस कार्य में किसी

[illegible]

—

...
...
...
...
...
...
...

[illegible]

ਦੇ ਮੇਰੇ ਪੁਰਖਾਂ



1. දැනට වාණිජ මාර්ගයෙන් ලබා ගන්නා බොහෝ ඖෂධ පැරණි කාලීන ඖෂධ වේ. එමඟින්
දැනට වාණිජ මාර්ගයෙන් ලබා ගන්නා බොහෝ ඖෂධ පැරණි කාලීන ඖෂධ වේ. එමඟින්
දැනට වාණිජ මාර්ගයෙන් ලබා ගන්නා බොහෝ ඖෂධ පැරණි කාලීන ඖෂධ වේ. එමඟින්

1. The United States is a free country.

1. The following information is for your information:

सेवा में,

आदरणीय
दि रत्नवर्मा हेगडे

और

आप की धर्मपत्नी
श्रीमती रत्नम्मा



को

सादर समर्पित

जिनचद्रमुनि पूर्वाभिमुख करके पीठ पर बैठे थे । होमकुंड के भस्म से मुनि के मुख और सिर अच्छी तरह मले गए । तदनंतर जिनचद्र ने अपनी मुट्ठी में केशराशि पकड़ इस भांति जड़ से उखाड़ी मानो कर्म की जड़ ही उखाड़ रहे हो । दाढ़ी-मूँछ तक ऐमे ही उखाड़ी गई । फिर भी वे हँसमुख थे । अन्य भक्तवृन्द बच्चे-कुच्चे वाल उन्वाड़ने लगे, पर बहुत सभल सभलकर । इस कार्य में अत्तिमव्वे एव उनकी बहन गुड्डुमव्वे का उत्साह वर्णनातीत था । पीठ पर चढ़कर मुनि के सिर से वाल उखाड़ने में वे बड़ी उत्सुकता एव कौशल दिखा रही थी । कभी-कभी इस कार्य के लिए मुनि जी की जाघो पर भी चढ़ जाती थी । तब नागमय्य उन दोनों को रोकते हुए कहते 'छी' कंसा अनर्थ । बड़ो पर मत चढ़ना, क्षमा माँगकर नमस्कार करो । वे दोनों नमस्कार करती और मुनिजी मन ही मन असीसते कि तुम दोनों सम्यक्त्व च्डामणि बनो । वे दोनों इस तरह काम कर रही थी मानो जिनमूर्ति का निर्माल्य उतार रही हो । इन बहनो का उत्साह साक्रामिक बना, औरो ने भी इस कार्य में हाथ बटाना शुरू किया । पर महामुनि जिनचद्रजी महाशिल्पि के हाथ पड़ी प्रतिमा के समान बैठे थे । भक्तवृन्द ने मुनि के सिर और मुख के सभी वाल उखाड़ दिए । इस लोच के समाप्त होने पर जिन-गघोदक अच्छी तरह मल दिया गया । इसमे मुनिजी इतना प्रसन्न हुए मानो उनको सजीविनी का स्पर्श ही प्राप्त हुआ हो । शरीर पर पड़े हुए वाल पिच मे झाड़ लिए । अत्तिमव्वे एव गुड्डुमव्वे को अपने पाम बिठाकर मुनि जिनचद्रजी ने आशीर्वाद दिया — तुम दोनों सम्यक्त्व च्डामणि बनो ।

पुगनूर में जिनचद्रजी की यह लोच-क्रिया बड़ी धूम से मनाई गई । तब चालुक्य महामंत्री नागमय्य के नेतृत्व में काय

मुनिजी के कथन में आक्षेप सूचक ध्वनि थी ।

महाप्रभु अरिकेसरी के चल बसने के बाद मुझे कुछ भी नहीं
मर रहा है ।

पप का गला बैठ गया ।

अरिकेसरी सचमुच महान थे । उनकी मृत्यु से ससार को
बड़ी क्षति उठानी पड़ी है । यह तो ठीक है, पर हमलोगों का कर्तव्य
तो है कि जितने दिन जीते रहें तब तक सास लेते रहें ।

ठीक है । पर क्या सूरज के डूबने पर कमल खिले रहेंगे ?
मेरी स्फूर्ति की साकार मूर्ति थे अरिकेसरी । मेरे उत्साह के उद्गम
थे अरिकेसरी । मेरे उल्लास के फूल थे अरिकेसरी । ऐसे व्यक्ति को खोकर
जिन्दा रहना निलज्जता है । यह जीवन व्यर्थ है । अब किसके लिए जीऊँ ?

पप की बातों में जीवन के प्रति अनासक्ति का भाव था ।

पपदेव ! एक व्यक्ति के पीछे लोक व्यापार रुक नहीं सकता ।
यह ससार प्रवाह है । यहाँ आनेवाले आते रहते हैं जानेवाले जाते
रहते हैं । चंद्र दिनों के लिए साय रहते हैं और कुछ दिन बाद विवश
होकर अपने प्रिय वन्धुओं को छोड़कर जाना ही पड़ता है । आदिपुराण के
कवि हो तुम ! तुम ही अगर ऐसे वन बैठो तो लोगों का भागदर्शन
कौन करे ? ऐसे आतभाव से क्या तुम्हारा भला होगा ?

महात्माजी ! मैंने भी कई बार इसी प्रकार सोचा है ।
मेरा तो ऐसे ही उपदेश दिया भी है । पर अरिकेसरी का निर्वाण
पर जिग दुस्मह बना है । उनसे प्रदत्त वस्तु वाहन वस्त्रादि को सजा
कर श्रद्धा करता हूँ तो क्षणभर के लिए विरह व्यथा क्षुब्ध सी दिखाई
देती । पर दारों ही क्षण भूझे ऐसा लगता है मानो एक एक वस्तु
मेरी धितागते हुए गह रही हो—देख अरिकेसरी नहीं रहे न क्यों रह
गया । अरिकेसरी के दिए गए नवग्रन्थों को नष्ट देखता था अब भी
नष्ट है पर शीघ्र महते हुए । यह बात स्पष्ट तो गई है कि अरिकेसरी

के बिना मेरे किए स्वयं भी मरक ही रहेगा ।

कवि के बाँवू फूट निकले । गला बैठ गया । पारे बरफ
जाबोहेक से काप उठे ।

परदेव ! बाँवू बहाने से तो केवल जीव बुझने कसेनी
अरिकेसरी तो नहीं जाएँ । इस दुर्बलता को हटा दो । आत्मा की
अमरता की बात छापी । इस में तुम्हारा भी हित है और लोक का
भी । वृत्तो ! छात्रिराज सुनने का मेरा पाव दिन-दिन बढ़ता जा रहा
है । तुम्हारा आक्षिराज एक महान कवि है । तुम्हारा भारत सचमुच
हमारे बाख्त-सा महान एव अनर्थ है । अतएव तुम छात्रिराज रचो !

पप को कावाभ्युक्त करने के पाव से जितबहजी को दो
कहता पवा ।

पर पप ने उत्तर दिया

क्या मैं लिखने छूँ ? क्या मैं मर रहा हूँ ? अरिकेसरी की
बिता में ही मैंने काँटा जी उखा दिया । क्या कभी बिबहा की
सगाव पा सकेगी ? बड़े ही पाने पर क्या उसका समावर होगा ?
परदेव से जाने बोझने नहीं बना । उत्तरीय से बाँवू पोछने लगे ।
इस दूध को देखकर छात्र-भाठ बर्ष की आक्षिरा अतिमग्ने पप के
पस बाई और बोनी मामानी काप क्या रोये है ? आप को क्या
बाहिए । आप का कूँड़ को क्या है ? ऐसे कहते कहते अपने छहने
की ओर से बाँवू पोछने लगी । सुनते ओर से बुझुमग्ने यह कहते कहते
बीह काकी कि यमा । तुम्हें क्या हुआ है ? हमारे यहाँ तो कोई नहीं रोता ।

इत बोनी आक्षिराजी को परकवि ने हाथ पसार कर यानी
ओर खींच लिया । उनकी आरभीयता ने प्रभावित हुए । बोनी को अपनी
गोद में बिठा लिया । जाबोहेक में तब अक्षिबो के बाँवू उमड़ पड़े
महाकवि ने उनकी बाँवू पोछे । बोछे— मैं सब नहीं रोऊँगा । तुम्हारी
। आप भी नहीं सके ।

अन्तिमव्वे ने फिर पूछा — मामा, तुम्हें क्या चाहिए ?

बेटी, जिस वस्तु को खोकर मैं दुखी हूँ उसे कोई ला कर नहीं दे सकता । पप की वाणी खिन्नता से सनी हुई थी ।

मैं ला सकती हूँ — गुडुमव्वे ने आश्वासन दिया ।

मैं भी ला सकती हूँ — अन्तिमव्वे ने दृढ़ता से कहा ।

मामाजी ! कहो न ? क्या खो गया है ?

• दोनो ने प्रश्न किया ।

बेटी तुम सुनकर क्या करोगी ? हमारे महाराजा चल बसे । समझो ? अब उनको कौन ला सकता है ?

पप की माँग अत्यंत जटिल थी ।

पर क्षणार्ध में अन्तिमव्वे ने इन का समाधान ढूँढ निकाला । और बोल उठी : ' हाँ, तुम्हारे राजा चल बसे, पर हमारे राजा तो हैं ! मैं उनको बुला लाती हूँ ।

गुडुमव्वे का उत्तर सीधा था—

मामाजी, तुम हमारे यहाँ ही ठहर जाओ ।

कौन खिलाएगा ? पिलाएगा ? — पप ने तक किया । मोली भाली लडकियों की बातों में विनोद पा रहे थे ।

मैं कलंगी । — अन्तिमव्वे ने दृढ़ता से उत्तर दिया ।

मुझे कपड़े ? — पप की माँग बढ़ती गई ।

मेरे दादाजी के कई कपड़े हैं, पहन लीजिए । पिताजी की वस्तियाँ भी मैं दूँगी — गुडुमव्वे ने आश्वासन दिया ।

इन दोनों की बातों से पपकवि का दुख दब गया । अरिक्केसरी जैसी उदारता की मूर्तियाँ इस कर्नाटक में कई हैं—ऐसा सोचकर प्रमत्त हुए ।

देखो पप जी ! वच्चे कितने नादान होते हैं, ? इन्हें क्या अभाव है ? केवल हम सारी तृणों की झड़ों को ढोए दबे जाते हैं,

हमारी बात बूझती जाती है । सब बात तो यह कि जो बच्चों का
 भावना हो रही सम्झना जानी है । और । तुम पृथक् मित्रता शुरू करो ।
 तुम्हारा धोका नहीं उस प्रवाह समझा देगा ।

विनयवती ने इन सबों में पप को प्रगति करने का प्रयत्न
 किया ।

फिर रही जाया । मुझसे मित्रता नहीं बनता । इस काम में
 पप न विजाने की मैंने कसम खाई है । आप की इच्छा तो धार्मिक
 पृथक् मित्रता के ही न ? ।

जी हाँ ।

111

यह कोई बड़ी बात नहीं । आप की वचन में ही है । मैं ने
 भी अपनी 'मे' प्रमाणों की रचना कर चुके हैं । ऐसे कवि चरित्रों के लिए यह
 कोई बड़ी बात नहीं होती । मे धार्मिक पृथक् मित्रता । आभा हो ।

पोप ने उत्तर दिया — देखिए । प्रसन्न सीमा है । आप को
 धार्मिक पृथक् मित्रता का आदेश हुआ है । आप लिखिए ।

स्वामी जी मेरा आग्रह समझिए । मैंने एक लौकिक और
 एक पारमार्थिक - दोनों रचनाएं की हैं । आप भी एक पृथक् की
 रचना करें तो बड़ा अच्छा होगा । सामाजिक सफल लौकिक काम है ।
 धार्मिक पृथक् आप का लौकिक वर्ण पारमार्थिक काम बन जाय ।
 —मैंने मुक्ति पृथक् लिखकर जाने का प्रयत्न पप ने किया ।

पोपजी भी लिखें और आप भी लिखिए । अतिमन्त्र बोली ।

हाँ हाँ आप दोनों लिखें । एक में लूनी । एक में रोटी ।

१. लूनी में रोटी से कहा । अपनी बात पर आप लूनी न समझें ।
 मास फटी । नहीं उपस्थित सभी लोग इनके पीछे पप से अमीर
 मानस का अनुभव करने लगे ।

पप ने सब लोगों को प्यार से बोलें कहाया और पछा
 बटिनी बोलो हमारे पास । हम अपने यहाँ के आये ।

मामाजी । तुम्हीं ने कहा की जहाँ राजा की मौत हो गई है । यहाँ राजा है । हम यहीं रहें । — अतिमव्वे ने कहा ।

मामाजी, यह स्थान आप को पसंद नहीं आया ?

गुडुमव्वे ने प्रश्न किया ।

तुम्हारा यह देश बड़ा उत्तम है ।

पप ने आश्वासन दिया ।

तो सुखी रह जाओ न — अतिमव्वे ने दृढ़ता से कहा ।

तुम्हारी मामाजी को तो बुला लाना होगा ।

पप ने मुस्कराते हुए कहा ।

हाँ-हाँ, उनको बुला लाना है — गुडुमव्वे ने स्वीकृति दी ।

यह मामाजी का बहाना है । यहाँ से जाने के वाद फिर नहीं लौटेंगे, अतिमव्वे ने ताड़ लिया ।

ठीक कहती हो बेटी, जिनचद्रजी के ओठ खिल उठे ।

तब तब चुपचाप बैठे हुए नागमय्य ने पप कवि को अपने यहाँ बहुरात्र के हरादे से कहा — देखिए, आज रात को कविजी के श्रीमुख से आदिपुराण सुनने का चाव उमड़ रहा है । कौन दरवाजे पर आए इस सुअवसर को जाने देगा ? हमारा अहोभाग्य है । आप हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए ।

यह बहुत ही उत्तम प्रस्ताव है । शिवरात्रि के दिन प्रथम श्रीयेश का चरित हो । सो भी महाकवि के श्रीमुख से ही । क्या ही आनंद की बात है । — जिनचद्रजी ने समर्थन किया ।

बहुत मामाजी कहानी सुनाएंगे — अतिमव्वे ने सतोष प्रकट किया ।

ओह ! तब तो हम इनको ओझा जी कहें — गुडुमव्वे बोल उठी । दोनों आनंद से पुलकित हो रही थी ।

नागमय्य का परिवार बड़ा था । महासाहसी से सल्लप और

अनुर पुत्रमय्य होने के पुत्र रहने थे। उनकी पत्नी न थी। परमारमा को कृपा से मुहामोषी सहायिन की मीन कभी पा चुकी थी। पुत्रमय्य की कोई सहाय नही थी। पर मत्स्य की गोव कमी बाली नही रही। नागमय्य को पत्नी के पुत्रों के मायम अय्यकय्ये थी। मत्स्य की इस बर्म पत्नी ने कई सहायों को जन्म दिया। युधुमय्य एलमय्य विनरूपोप्रमय्य जाह्नवमय्य और बल्ल — ये पांच पुत्र थे। इनके बाद अग्नियय्य और युधुमय्य का एक साथ भग्न हुआ था। अय्यकय्ये की तीसरी सहायिनी भी नागिनय्ये। इस प्रकार आठ सहायों की माँ बन कर उस साध्वी न नागमय्य का घर भर दिया था।

नागमय्य और विनरूप सहायकय्ये थे और बल्लपन के साथी थे। नागमय्य ने जिस समय औषिक कार्यक्षेत्र अपनाया था उसी समय विनरूपजी ने आध्यात्मिक क्षेत्र को अपनाया था और सहायों की रीतिरिवाज किया था। नागमय्य ने औषिक में यश प्राप्त किया। विनरूपजी ने पारमार्थिक साधना में अतिथीय स्थान प्राप्त किया।

नागमय्य के पूर्वज वेदवेदांग में पारंगत औषिक्य क्षेत्र के शास्त्रज्ञ थे। हम वेद विद्या में नागमय्य की काफी पटुता थी। विनरूपजी के प्रभाव से उन्होंने वज्र-भाष का त्याग किया था और वैनायकों का अध्ययन किया। वैनायकों के अधिष्ठातृत्व से नागमय्य अत्यंत प्रभावित थे। मठएव उन्होंने अपनी पत्नी से वैनायिका की। बाद में इनके परिवार के लोग एक एक एक वैनायिका के गेले गए। ठहर वेदों में मतिजी ने पप के पिता अग्निराम को विनरूपीता की थी।

उर्वर वैनायकों के लालन। पत्नी के स्थान में दयावृत्ति के चतुरे बनाए गए। मठस्थान पर अधिष्ठाता का गौरव बढ़ने लगा।

नागमय्य नागमय्य के महाभगवत् ये। नागमय्य की सुदृढ़ धारणा के समय में पपकवि थे। पोन्नवी बहमि समर्थ थे ठिठ भी राट्टकट्ट बहार के कवि के रूप में प्रसिद्ध थे। कभी कभी वैनायकों के साथी

महोत्सवों में से सभी सम्मिलित हुआ करते थे। उन दिनों के सन्यासी राजकीय परिवार में से धर्म रूपी मदराचल के सहारे कन्नड सस्कृति रूपी अमृत निकालने में लगे हुए थे। उन दिनों के राजा महाराजाओं का सिर अहिंसा के सम्मुख आप झुका करता था। वैसे ही उनके अमात्यगण व्यावृक्ष के माली बने रहते थे।

जिनचंद्र मुनि ऊँचे आसन पर विराजमान थे। उनकी बगल में समण पोषकवि विराज रहे थे। वेदिका पर पप कवि आदिपुराण का पाठ कर रहे थे। सुंदर लिखावट थी। सहस्रो पत्र थे। उनको श्रीगंध के पटल के बीच में जोड़कर ग्रन्थ बनाया था। श्रीगंध के उन पटलों के चौकोर सोने से मढ़े गए थे। सोने में सुगंध की बात यहाँ चरितार्थ दिखाई दे रही थी। उस सुगंध में मानो धर्म की शीतलता ने चार चाद लगा दिए थे। आदिपुराण ग्रन्थ बड़ा मनमोहक था। कदली-गन्ध-श्याम पप कवि भी बड़े आकर्षणीय व्यक्ति थे। न अत्यंत ऊँचे कद के थे, न छोटे ही। देखनेवाले देखते ही रह जाएँ ऐसा व्यक्तित्व था। खिले कमल-सा मुख, नीलोत्पल से विकसित नेत्र, विशाल और उन्नत भाल, घुघुराले केश, अखाड़े की साधना से गठित सुंदर शरीर—इस प्रकार वे कन्नड देश के नव ममय से थे। यो तो डलती उम्र थी, पर देह की काति में जरा भी मलिनता नहीं आई थी। दो महर्षियों के बीच में रस-सेतु के समान पपकवि विराजमान थे। एक ओर कमवध से मृत जिनचंद्र जी थे। उनके केश-लोम रहित सिर और मुख देखते ही बता देते थे कि यहाँ कम की जड़ कट गई है। दूसरी ओर जटाधारी समणामोन्न थे। उनके जटावध देखते ही ऐसा भासित होता था कि कम भल ही हो, पर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा क्योंकि मैंने उसको अपने हाथों वस लिया है। ऐसे दोनों के बीच में सगार सारोदय की भाति पप महाकवि आमनास्ट्र थे।

नागमय्य के यहाँ बापन में उस धाम के सभी भावक एकत्रित
 थे। वहाँ एक चबूतरा बना था। उस पर समयसरण का दृश्य समाना
 गया था। सोने का समयसरण था। छत्रों का तोरण लगा था। चाँदी
 के बड़े थे। स्थितिक मणि के तीन पीठ रखे हुए थे। अंतिम पीठ
 पर केशर फैलाए हुए चारों ओर मृदु हृदय चार सिंह थे। मिर्हों के
 पीठ से छत्र निकले हुए रक्त कमल थे। इन कमलों पर त्रिगुण विभ
 रखा हुआ था। वह पारदर्शक पीठधिका की मूर्ति थी। उस मूर्ति के
 पीछे भी का विद्या प्रत्यक्षित था। उस प्रति से ऊँकर जानेवाली
 दीप-किरणों ने सुवर्ण रश्मि का द्यौय फैला दिया था। मावकों को ऐसा
 लगा मानों वे लक्ष्मण समयसरण ही देख रहे हों। जब कभी नागमय्य
 का यन्त्रिज वाग उत्कल्प बसा तब पशुपत वाता ऐसे दृश्यों को समझकर
 चरितार्थ हो जाता। नागमय्य ने इन दिनों में राजकाज का सबका त्याग
 किया था। अपने सुशोभ्य पुत्रों पर यह भार डाल कर आप आध्यात्मिक
 साधना में लगे हुए थे। परिवार के छोड़ नागमय्य से अर्थ के
 उभापन में भय मान रहे थे। अतएव कोई उनसे बातें नहीं करता था।
 केवल अतिथिओं और पुत्रमय्य में इतना साहचर्य था कि शत्रुओं को
 बड़े डराकर खड़ा करती थी। वह देख कर के लोगों ने इन्हीं दोनों
 के बिम्बे नागमय्य की सुख-सुविधाओं की बात छोड़ रखी थी।
 नागमय्य की आध्यात्मिकता का प्रभाव इन दोनों पर भी पड़ा था।
 जब चाहे तब वे वाकिफार्थ आप ही समयसरण की छाँकी सजा देती
 थी। और स्वयं समझाती बन जाती और विनमृति को मोह में डेकर
 ब्रिजाती थी। आज तो इनके उत्साह का पारवार उमड़ पड़ा था।

समयसरण की एक ओर विनमृद और पीर के बीच में
 पपकवि सुखासीन व तो दृष्टि ओर नागमय्य एक दो-एक मय्य
 व्यक्तित्व बैठे हुए थे। अतिथि और पुत्रमय्य के अविनव का प्रबंध
 भी हुआ था।

अतिमब्बे इन्द्र बनी हुई थी। गुडुमब्बे बनी थी इन्द्राणी।

आदि देव के गर्भावतरण-कल्याण का जब अभिनय हुआ तो देखनेवालों को इतना आनंद हुआ मानो बाइने सतान को जन्म दिया हो। निर्मल अत करणवाले वच्चों का खेल ही मनमोहक होता है। ये दोनों मानो नई चमेली थीं। दोनों की देह अत्यंत सुंदर और एक ही साचे में ढली सी थी। मुक्तिद्वार-सी अहिंसा-कांति से आकर्षक मुखाकृति थी। मूर्तिवत् दयादाक्षिण्य से दो नेत्र थे। सृष्टि के रहस्य को बाहर ला रखनेवाली पैनी ठुड्डी थी। उनकी उभरी हुई ठुड्डी से पता चलता कि ये दोनों देखने में जितनी कोमल हैं उनकी ही व्रत - नियमों के पालन में दृढ़ भी हैं। भरे हुए गाल थे। लता को भी लजानेवाली देह देखनेवालों का चाव क्षण क्षण बढ़ाती रहती। कारण यह कि ये सुंदरियाँ अभिनय करते समय जिस किसी मुद्रा में खड़ी होती वही एक नूतन आकर्षक भंगिमा बन जाती थी।

गर्भावतरण का अभिनय पहले हुआ। जब तीर्थंकर पुरि में रत्नवृष्टि होने के दृश्य का अभिनय हो रहा था तब दर्शकों के सम्मुख असली रत्नों की झड़ी लगा दी। गई थी क्योंकि नागभय ने इस का प्रवध कर दिया था। पर श्रावको का मन इन सुंदर बालिकाओं के कलापूर्ण अभिनय में इतना मग्न था कि ये रत्न ज्यों के त्यों पड़े रहे। अतिमब्बे और गुडुमब्बे दोनों ने अजलियों में भर भर कर श्रावको की ओर रत्नों को उछाला। नखशिख तक नवरत्नों से अलंकृत कुसुम कोमलता में भी व्रतनियमादि में दृढ़ता के द्योतक उभरी ठुड्डियों वाली ये कन्याएँ साक्षात् कुसुमांत कल्प वेली सी लग रही थी। यद्यपि ये दोनों हथेलियों में रत्नों को भर भर कर श्रावको की ओर फेंक करती थीं पर वहाँ कोई इन जड़ रत्नों की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। जिस प्रकार उस समवसरण में तृप्ति का साम्राज्य था उसी प्रकार की तृप्ति इस समवसरण में भी थी। तृप्ति और आनंद का ही साम्राज्य था।

अध्यात्मिक क्रत्याण का अभिनय प्रारम्भ हुआ। तब पादक के नेत्रों से आनन्द बाष्प बह निकला। देवेश्वर बनी अतिमय्ये न इन्द्रापी बनी हुई पृथ्वी के अन्तर धरा और आय उसकी प्रतीक्षा करती हुई थी उत्कण्ठ गद्ग में खड़ी रही। इन्द्रापी का कार्य बड़ा मुस्तार था। क्योंकि जिन-सिद्ध को लं जाना था। वहाँ पहुँचे उस की दाँ को मोहतिता में घुसाकर दूसरे भाग्य सिद्ध को वहाँ रखता था। तब जिन सिद्ध को पोंह लिए जाना था। उस दृश्य का अतिमय्य इस संकल्पना के साथ उठने किता कि उसमें अभिनय का दृश्य ही नहीं रहा। तब के सब पक्षस्थित हुए। बाहर जिन-सिद्ध के वस्त्राव उत्कण्ठित होकर लड़ हुए इन्द्र ने अर्थात् अतिमय्ये ने उस सिद्ध को देखते ही इस समता के साथ उसे बोध में उठाकर पले लपाया कि सचमुच वहाँ उपस्थित माताएँ भी मान मानें। तत्पश्चात् उस जिन सिद्ध को ऐरावत पर बिठाकर मेरुपर्वत के जाने का अभिनय हुआ। वहाँ लं जाने पर पादु पित्त पर बिठाकर और और समग्र के वैशिष्ट्य पय से क्षीरामयिक हुआ यों तो जिन मूर्ति पर सचमुच क्षीरामयिक कर दिया। इस मोहक दृश्य में पादक ऐसे तल्लीन थे कि उसे अभिनय और वचार्थ में अन्तर का अनुभव ही नहीं हो रहा था। इस प्रकार इन वाक्चक्राओं ने पञ्चक्रत्याण महाप्रसन्न का अभिनय कर दिखाया कि मायको का चित्त रसस्थित हुआ और देह आनन्द पूरकस्थित। उस दृश्य को देखते हुए नेत्र टकटकी खाने रहे गए।

पय महाकवि यह दृश्य देखकर पुलकित हुए। उनकी दृष्टि में अतिमय्ये और पृथ्वी के दोनों काव्य-कल्पना ही खनी। जिनचन्द्रजी का अभिनेताव लक्ष्य था। पौलकवि रस प्रवाह में बह गए। नागमय्य के नेत्रों से आनन्दबाष्प बह निकला। अतिमय्य समाप्त हुआ कि नहीं नागमय्य ने इन दोनों लक्ष्मियों को वेदव्याप्य उठारने का भी समर्थ नहीं दिया जो ही बोध में बिठाकर वास्तव्य पाद से

गद्गद् हो गए । स्त्रियों की पक्ति में सत्र के सामने बैठी हुई अब्बकब्बे मानो पयोबुधि में तैर रही थी । चालुक्य महामात्य दत्तलप नागमय्य की बगल में ही बैठे थे । अतएव ज्योही नागमय्य की गोद में इन बालिकाओं को देखा तोही उनको अपनी गोद में बिठा लिया और उनको इस भाँति कसकर गले लगाया मानो यह दाना चाहते हो कि वे कभी अपने हाथ लगी इन नवियों को पराए हाथ नहीं सौंप सकते ।

पप कवि के काव्यवाचन सुनने का चाव श्रावको में क्षण-क्षण बढ़ रहा था । कवि के सम्मुख ग्रन्थ सगा हुआ था । अरिकेसरी ने श्रीगद्य एव सोने के पटलो पर काव्य लिखाया था । पप कवि को सुवर्ण-सपुट भेंट में दिया था ।

प्रथम तीर्थश के दिव्य जीवन चरित को एक ओर पप महाकवि ने महाकाव्य में निबद्ध किया था तो दूसरी ओर अरिकेसरी ने उस महाकाव्य का सुवर्ण सपुट निकाला था । पप कवि के सुवर्ण सपुट में चांदी के रत्नजटित चौबट थे । पप कवि ने सर्वप्रथम काव्य से मंगलाचरण के पद्य मुनाए । पञ्चपरमेष्ठियों का स्मरण भक्ति भाव से किया । पप की वाणी दुःखभी-न्यून के समान लग रही थी । पप कवि के दयामल मुख की गीत दत्त पक्ति शक्ति में स्थित मोती का स्मरण दिला रही थी ।

आदिदेव का दिव्यदन, सत्य कवि के श्रीमुख में जो सदमनुसार रागगगिनियों में अभिव्यक्त हो रहा था तो, सुननेवाले श्रावको के भाग्य का द्वार ही मानो खुला हुआ था ।

यद्यपि जयवर्मा ज्येष्ठ पुत्र थे पर उनके पिता अपने कनिष्ठ पुत्र को राज्य देकर चले वसे । इसने जयवर्मा को बड़ा आघात पहुँचा । नागरिक जीवन से जो ज्ञान उठा, ध्यान की ओर आकृष्ट हुए । विरक्त बने । अपने हाथ से अपन तिर के दाँतों को कसकर उखाड़ लिया और

शिरसीक्षा भी पञ्चमभारतकार जपते जपते जयबर्मा उन केसों को बन
 हाथ से बाँधी मं हाकने छत्रों तो सहसा साँप ने काट छाया। उसी
 समय आकाश में एक खेचर विमान दिखाई दिया। एक ओर बिपकी लहर
 चढ़ रही थी दूसरी ओर खेचर दम्पति की रखीसी प्रेम पत्नी बाते सुनाई
 दे रही थी उनकी मनमोहक आकृति मन को बरबस अपनी ओर खींचे
 ला रही थी। परिणाम यह हुआ कि जयवर्मा के मन में जैसे ही खेचर
 बनने एक ऐसे ही बिपस भोग करने की चाहसा प्रबल हो उठी। उस
 खेचर विमान के साथ इन के अंतरव की कल्पनाएँ भी उड़ने लगी।
 इसी धुन में जयवर्मा के प्राण पकक उठ गए—इस कमा का सहर
 निरुपम पप महाकवि ने किया। यहाँ उनकी सहृदयों पर भानो
 बाह्र फिर गया। इतरकर्म के उत्थान पतन कभी उत्थात का मासात्कार
 केवल विनयश्रुती को हुआ अतएव बाप बड़े क्षिप्त बन। अतिमञ्चे
 और बुद्धमञ्चे की समझ में यद्यपि कोई बात नहीं लगी फिर भी
 पप कवि की बोधीर ध्वनि मं हृद सी गर् थी। अतएव के एकाग्र
 भाव से सुन रही थी।

कमा जाये रही। जयवर्मा अपने जग्य में महाबल खेचर
 बने। उनके जत करण में जो जो लाकसाएँ अतिम क्षण में जाइल
 हुई थी सभी जत के प्रभाव से सब पूर हुई। उन्होंने अपने को
 ब्रह्म समझा। उनके स्वभाव के अनुकूल स्थिति थी मित्रे जिससे महाबल
 की शोभाकाञ्क्षा दिन रूनी रात नीचुनी बहने लगी। पर स्वयंबुद्ध
 नामक एक जभात्य भी था जो कभी कभी भोरो की नक्षत्रता का स्मरण
 दिखाया करता था। परिणाम यह हुआ कि महाबल खेचर अपने
 अतिम दिनों में परम विरक्त बने। उन्होंने भोरो का स्वाध किया।
 दिनबर बने इस प्रकार अतिम साँस छोड़ी—पप महाकवि ने महाबल के
 दामिक जीवनोत्कर्ष का बड़ा आकर्षक दर्शन सुनाया। भावको के मन
 पकक पर उनका चित्र भद्र गया। यहाँ ठर छि अतिमञ्च और बुद्धमञ्चे

भी पप महाकवि के काव्य की कमनीयता का अनुभव करने लगी ।

महावल खेचर का जीवन समाप्त हुआ । ईशानकल्प में एक सहस्र दल कमल आप विकसित हुआ । उस में से षोडश वर्षीय एक देव प्रकट हुआ । स्वयं आश्चर्य चकित हो वह चारों ओर देखने लगा । तब वहाँ उपस्थित वद्घो ने कहा—तुम पूर्वजन्म में महावल थे । अब तुम्हारा जन्म देवयोनि में हुआ है । तुम्हारा नाम ललिताग रहेगा ।

सहस्रो देवागनाओं के साथ नित्य रास लीला में ललिताग का जीवन चाव से ढलने लगा । नित्य नया रंग रचा जाता । स्वयंप्रभा नामक देवागना पर ललिताग विशेष आसक्त रहा । चिरकाल तक उसके प्रणयसिन्धु में पैठा रहा । देवलोक में भी मृत्यु का घमकी । ललिताग को मृत्यु की सूचना मिली । उसके सहजाभरण और सहज कुसुम मालाएँ मलिन हो गईं । शरीर की काति फीकी पड़ गई । मौत की आहट पाकर ललिताग काप उठा । कसकर कल्पवृक्ष पकड़ लिया और आयु की माग की । कामधेनु के चरणों पर लिपटकर मृत्यु से बचाने की प्रार्थना की । चंडामणि को गले बांधकर गिड़गिड़ाया । अंत में अपनी प्रेयसी स्वयंप्रभा की शरण में गया । उसे सब की सहानुभूति यथेष्ट प्राप्त हुई पर कोई उसे एक दिन के लिए भी नहीं बचा सका । वहाँ के वद्घो ने कहा—इद्यपि यह देव लोक है फिर भी यह नाशवान है । मरने के लिए ही हमारा जन्म होता है । अतएव शोक का त्याग-करो और बचे हुए दिनों को जिनेंद्र के भजन में बिताओ । ललिताग में त्रिवेक जाग्रत हुआ । बचे हुए छ महीनों को जिनविव के दशन और पूजा में लगाया । देवागनाओं ने पूजाद्रव्य जुटा कर हाथ बँटाया । कल्पवृक्ष ने फल दिया । कामधेनु से जिनाभिषेक के लिए अमृत धारा प्राप्त हुई । जिनविव की चरण सेवा करते करते पचनमस्कार जपते जपते ललिताग ने प्राण-त्याग किया । महाकवि पप ने इस भाँति ललिताग के स्वर्गच्युत होने के प्रसंग का वर्णन

मुनापा कि सब अनुभव करन करन भावो से स्वयं स्वयं से बणित हुए हों।

तदनंतर पप कवि में स्वयंप्रभा के बिरह का वजन दिया। इससे शोभायो का कोयल मत करण पिबछ कर वह उठ। मर को बांस गहाटे वैचकर अतिमय्य और मुकुमभ भी जासू बहाने लगी।

अज्ञान का खपका जग्य मानवयोनि में हुआ। मरने लोठ में उसका नाम बन्धनधा पडा। स्वयंप्रभा जसज्य बिरह ताप से बल बसी। वह भी इस छोट में आई। उसका नाम धीमती या। यहाँ धीमती और बन्धनधा का विवाह हुआ। उन्होंने असावित रीति से अतकाल तक अनंतसुख घोसा। एक दिन की बात है। एकको न न के भवतावार में मुक्क बम कमाकर गवाछ बंद किया। ऐसा निरम किया करते थे। पर उस दिन कुर्वा अधिक उड़ने लगा। इस दन प्रेरणा से उन्होंने विर्गनयो को इस भाति बंद किया कि मर माया तक छाक कर इन के प्रथम मुक्त में बाधा नहीं डाक सके। परस्पर बच्चाही किए रात भर बिहार करते रहे। पर उसी मुहा में न जाने क्य इन दोनों के प्राण पखेक उड़ गए थे। मरेरे देखकों को कलेवर मात्र मिले। वही तो प्रथम जीवन का आदर्श है। पप कवि ने इस अध्याय को समाप्त किया। शोभायो की धाकूता रस-बारा बन वह लगी।

अबसे जग्य में इन इपनियो का जग्य जोग मूमि में हुआ। रहा चारख मुनियो को प्रभित से पिछा-बाल करने के पुष्प प्रभाव ने अजने जग्य में ओपमूमिभा स्वयंप्रभा लगी जग्य में निवृत्त होकर स्वयंप्रभा देव बन गई। तदनंतर जग्य में श्रीपरदेव सुविधि नामक महाराज बन। स्वयंप्रभा सुविधि का पूज कैथन बना। इस प्रकार पप कवि ने आदिदेव बनने तक की जवाबकी का निरूपण सधूप में सुमा दिया।

आदिदेव वह रम्य दक्षिण व उनकी दक्षिणा में उनकी

प्रथमों यशस्वनी एव सुनदा के योग से चार चाद लगे। दिन दूनी रात चौगुनी वेग से उसकी रसिकता रग पकड़ने लगी। तीन लोक के गुरु बननेवाले आदितीय वर ससार में ऐसे मग्न हुए मानो ससार को ही जीवन का सार-सदम्ब मान रहे हो। आप को जगाने के लिए देवेन्द्र को नीलाचना के नृत्य की व्यवस्था करनी पड़ी। लता भी कोमल, मदन चाप भी, आम गुराकार, उस मुदरी को झूले पर झूलते हुए देखकर आदिदेव भी आसक्त बने। पर उस सुर-वारवनिता का अतः उस रगशाला में ही हुआ। मानो कला में वह कमनीय काति लीन हो गई। रग में भग्न न हो इस आशय से यद्यपि देवेन्द्र ने उसकी प्रतिकृति सृष्टि करके अभिनय को चालू रखा। पर आदिदेव ने इसे ताड़ लिया। उनको अपने जीवन का लक्ष्य स्पष्ट दिखाई देने लगा। जातरूपधर वन पण्मास तक तप किया। भिक्षाटन करते और छ महीने वित्ताए। फिछले भवों में स्वयंप्रभा, श्रीमती, भोगभूमिजा आदि बनकर आदिदेव के जीवन को रसमय बनानेवाली आत्मा, उस जन्म में श्रेयास वन, प्रतीक्षा कर रही थी। जैसे ही उसने आदिदेव को अपने द्वार पर देखा, ईश्वर के रस से उनके अजली-पुट को भर दिया। उस का गान करके आदिदेव सतृप्त हुए। आगे चलकर कुछ समय तक आदिदेव तप करते रहे। अतः में उनके घातिकर्मों का नाश हुआ और वे जिनेन्द्र बने। तीनों लोको में जीव के नाना जन्मों के कारणी भूत कर्म की जटिलता का स्वरूप उन्होंने जाना और उससे निवृत्त होने का उपदेश दिया, कर्म से छुटकारा पाने का उपाय भी सुझाया।-

पप महाकविकी दिव्य वाणी ने इस प्रकार आदिदेव के दिव्य जीवन का, जीता जागता वर्णन सुना दिया।

तब तक रात बीत गई थी और उषकाल की रमणीय छटा छाई हुई थी श्रोतागण महाकवि का यशोगान करते करते अपने अपने घर गए।

अतिमम्यं बीडकर पंग के पास आई और बोली— मामाजी
यही सुहर क्या है !

इतना कह अपने कंठ से मुक्ता हार निकालकर पंग के गले
में पहना देता बाहूनी भी कि उधर मङ्गमङ्गे भी आगत मागते आई
और बोली— तुमने तो मायाजी हम दोनों को बेवकूफ के दर्शन करा
दिए - जो कहते कहते यह अपनी रत्नापुत्रीय को उतारकर पंग कवि
की बगला में पहनाया का उपक्रम करने लगी। देखो बेटा ! तुम्हारे
यह पहने मुझे नहीं चाहिए। क्या तुम मुझ मनचाही हो सकोगी ?— एता
कह सबनर उनका स्तब्ध—रूने और उधर मुख देखकर उनको अपनी
और बीच किया और उनके मुखमुखा का चूमता केते हुए कहा— यह
चाहिए, समझी ! दोनों से अपनी मनचाहा पुरस्कार पाकर कवि अपने
को बन्धु समझने लगे। अचरणीय वास्तव्य रस में वह बह।

२

अतिमम्ये और मङ्गमङ्गे का विद्याभ्यास विनयंग्र भी के यहाँ
होने लगा। प्रतिभावान विद्वि के हाथ में पढ़ने पर कहा पत्थर भी
सुहर विप्रह बग जाता है उस अमृतसिद्धा का कहना ही क्या ? विद्वि
का भ्रम कम होना और मूर्ति भी सुहर बनेनी। इन दोनों लक्ष्मियों
की विद्या सुबुध धार्मिक नीच पर प्रारम्भ हुई। उस नीच पर महाकाव्य
के तीव्र और लक्ष्मियों का मङ्गल कहा कर दिया गया। सुभाष्य शरीर
भी से मुक्त इन बाह्यकर्मों की समीप एवं वर्तन में भी विद्या ही
बई। विद्वे हुए कवच से निकलने वाले मकरज पाव मल मयूर के
समान स्वर उनके मुखारविन्द में निकला करता था।

नाममय का घर क्या था कविओं और कलाकारों का बङ्गा
था। यह उनके लिए बाधमशाला धामात् मुराद थे। प्रत्यक्ष से

सध्या तक वहाँ रसधारा प्रवाहित रहती थी । धार्मिक सिद्धांतों का निरूपण भी होता रहता था । ऐसे वातावरण में रहनेवालों पर, विशेष कर बच्चों के मन पर उसका प्रभाव पड़ना अनिवार्य ही था । श्रीगुरु के कारखाने में जाने पर चाहे या न चाहे शरीर सुगंध से लिप्त होता ही है ।

अनिमब्धे और गुडुमब्धे दोनों वीर पुत्रियाँ थीं । मल्लिक इन के पिता थे, और परमवीर नागमय्य दादा । आगे चलकर इन लड़कियों को किसी न किसी वीरकी बहू बनना ही था । अतएव क्षात्र वातावरण में रहनेवाली इन लड़कियों ने क्षत्रियोचित विद्याएँ भी सीख लीं । तलवार की धनी बन गईं । घुड़सवारी में सहज ही निपुण बन गईं । भाइयों के समान दोनों पहली श्रेणी की नीरदाज भी बन गईं । मछलियों की सताने क्या किसीसे तैरना सीखती हैं ?

वसन मारुत के स्पर्श से पुलकित कल्पना सी दोनों लड़कियों ने तारुण्य में प्रवेश किया । सहज सुंदर इन तरुणियों पर संस्कृति कालिकत और क्षात्र तेज की रोली खूब फल रही थी । इनको देखने में अभी अभी मुनार के यहाँ से आई सुवर्ण प्रतिमा का भान हो रहा था । यद्यपि दोनों लड़कियाँ नव यौवन में पदार्पण कर चुकी थी, पर नागमय्य की दृष्टि में अभी तक वे दुधमुही-सी थीं ।

जिनचंद्र मुनि अत्यंत वृद्ध बने । कमर झुक गई । हाथ पैर कापने लग । आँखें कम सूझ रही थीं । बिना छाटे जिनमुनि अन्न स्वीकार कर नहीं सकते थे । इधर नागमय्य की उम्र भी करीब करीब वही थी । पर अखाड़े में गठित वदन थी । अभी शक्ति कुठित नहीं हुई थी । पर आध्यात्मिक चिंतन में सदा व्यस्त अंतःकरण ससार से ऊँच उठा था ।

एक बार जिनचंद्रजी ने कहा-- नागमय्य ! मुझे अब सल्लेखन दीक्षा लेनी होगी ।

नाममय के सिर पर माता बिजली दूट पड़ी। कुछ नहीं पोंस।

क्या पुप हो?— जिनचञ्चली ने और छडा।

जी जब आप सम्मेलन ग्रहण करेंगे तब मेरा क्या होगा?

तुम्हारा क्या होगा? यहा कीन क्रिया है। सब अपना अपना देस गन है। अपना राग और अपनी कफली यही बुनिया की रीत है। सब मेरा जित्वा रहना ठीक नहीं क्योंकि अब मेरा जीना क्या है अर्पिक से अधिक गन गज्ज होना और औरो पर बाँझ बन कर रहना है। जिस दिन छरीर भिखान्न के लिए अनुमति हो जाय उसी दिन सम्मेलन गन की विधि है।

जो हो। अब तब मैं जित्वा हू, आप को सम्मेलन ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। आप के बिना मैं जीवित रहना नहीं चाहता।

यो कहते कहते नाममय का सखा बैठ गया। बस्ती बर्ष से साब साब जीवन बिताया था।

नाममय! देखो यह मोह-कम तुम्हें सता रहा है। इतने दिनों तक धार्मिक क्षेत्र में साधना करने पर भी तुम्हारा ज्ञान दूर नहीं हुआ। बताओ मैं कौन हू और तुम कौन हो? जब छरीर तक हमारा अपना नहीं है तो और किस का भरोसा है? मरीर तक कर्म का परिणाम है। आत्मविकास के मार्ग में वह भी बचन है। इस कर्म का नाश करना ही होना। जब तक व्याकरण जलकार छत्र बादि रस के पोषक बने रहते हैं तब तक काश्च न उनका स्थान है। जब उनका रसास्वादन में विभ्र हो या रसाभास का वे कारण बनें तो उनको काम्य से हटाना ही होना। इसी वांछि इस देह का स्थान-मान भी है। अब तक वह छरीर उपस्था के लिए उपयुक्त था। अब यह बका हुआ है। अब मांगो यह कह रहा है कि अब मुझसे ग्रहण नहीं जाता।

अधिक मन मताओ। बेचारे पर मैं अधिक वीक्षण डालकर दवाना नहीं चाहता। अतएव सल्लेखन ग्रहण करने की स्वीकृति दे दो।

महागज, — नागमय्य बोले— आप बड़े अनामकत हैं। अनायास ऐसी बातें करते जा रहे हैं, पर मुझे कुछ नहीं सूझ रहा है।

नागमय्य। महर्षियों की महानवमी मौत ही है। क्या तुमने श्रवणवेलगोल में नहीं देखा? पद पद पर सल्लेखन की महिमा-द्योतक फलकें लगी हुई हैं। शिला पर अकित सल्लेखन-व्रती महर्षियों की नामावली की भी कोई जत है? दे आज भी नक्षत्र की भानि जाज्वल्यमान हैं। जीवन भर समाधि-मरण की कामना करते हुए अतकाल में उसे पाकर वन्य वने महर्षियों के जीवन-वृत्त को अपने मिर आँखों पर रख कर विश्व को सुनानेवाली ये चट्टानें क्या भुलाई जा सकेगी। श्रवण-वेलगोल मानो इनका आगार है। समाधि-मरण का प्रधान केंद्र है।

जिनचन्द्रजी की वाणी में आवेगा का कपन स्पष्ट था।

गुरुजी, तब आप मुझे भी वह व्रत दे दीजिए। मैं आप का अनुचर हूँ। जीवन भर आप के मुह से कभी न नहीं निकला है। पूज समय साय देनेवालों को क्या कोई प्रसाद वांटते समय खाली हाथ बाहर कर देगा? मुझे भी सल्लेखन की दीक्षा दे दी जाय।

नागमय्य आँसुओं से मुनि के चरण धो रहे थे।

अरे नागमय्य, उठो। मैं तपस्वी हूँ और तुम भाव तापसी हो। तुमने साधु-सता की सेवा करते करते कर्म को मगल स्रोत बना लिया है। कवियों के भाग्य का कल्पवृक्ष बन कर तुमने लोभ को कुचल डाला है। दीनों के लिए कामधेनु बनकर तुमने विश्वानुकपा की भावना की है। उस दिन जब तुम्हारी पोतियों ने गर्भवितरण का अभिनय किया था तुमने सचमुच की रत्न-वृष्टि करके पुराणों में लिखी बात को प्रत्यक्ष कर दिखाई थी। तुम बड़े महानुभाव हो। यदि मैं चल दूँ तो मुझ जैसे दस-एक विरक्त तुम्हारे आश्रय में आ सकते हैं।

अब धर्म पूर्वक मुझे सम्प्रेक्षण की अनुमति मिल जाय ।

मुनिजी ने भीरु ब्रथाया ।

बुद्धी ! आप का कहना यथाथ है । पर आप भिरुता करते करने मुझे धार्म और मैं देखना रह । यह नहीं हो सकता ।

नाममय की बाधी काप रही थी ।

नाममय ! अलग काक से मेरे अलग वाम्य हुए हैं । न जाने कितनी बार वाम्य और कितनी बार मरा है । मरने के लिए वाम्य । वाम्य सेन के लिए मरा । कितने मरों में कैसे कैसे निकल जीवन बनाए है ? किन्तु के पीछे मरनेवालों की क्या कमी है ? अभीत वाम्यवाक के लिए हाथ-हाथ करनेवालों की क्या गिलती है ? कलक के पीछे काक के कलक बननेवाले कापवप कितने नहीं होयें ? किसी ने इनका विसाव किया है ? पर धर्म के नाम पर मरनेवाले कहां निकले हैं और मिले भी तो कितने मिले हैं ? अब मरना अनिवार्य है तो धर्म के नाम पर क्यों न मरें । आत्मोद्धार के निमित्त मैं तु को क्यों न बंधे लगावें । मगोबीरम्य को दूर करो । उठो ! वृद्ध के इस वस्त्रेक्षण का अनुमोदन करो । अनुमोदन पृथ्व तुम्हारा हो !

जिनवद्वयी ने सात्वता थी ।

मुनि ! मैं आप के सम्बन्ध का रोना नहीं बन रहा हूँ । मैं तो केवल अपने लिए सम्प्रेक्षण वस्तु की वीक्षा मान रहा हूँ । यदि उस महाकृत से आप की मलाई होयी तो क्या मेरी मलाई नहीं हो सकती ? आप के साथ मैं भी अग्रेष्क त्याग कर बैठ जाऊँगा । धर्म के साथ रहकर कामर कतरकुमार भी बाहरी बन गया था । कही नाति आप के साथ रह कर मैं भी कही बनना चाहता हूँ । आप अनुग्रह कीजिए । मेरी कामना पूर्ण हो !

पति के साथ विसावोद्धारकरनेवाली कही के उपान नाममय अनुमति के लिए विवधिता रहे थे ।

जिनचन्द्रजी आवाक् बने। क्या किया जाय ? नागमय्य को सल्लेखन दीक्षा दें तो उस के परिवार के लोगो पर क्या बीतेगा ? वे क्या कहेंगे ? ऐसे सोचते सोचते फिर भी नागमय्य की थाह लेने के सकल्प से बोले।

नागमय्य ! मैं तुम्हें सल्लेखन नहीं दे सकता। तुम गृहस्थ हो। तुम्हें अनवरत साधना करते करते क्रमशः महामुनि का पद प्राप्त करना होगा। तभी महाव्रतो के अनुष्ठान का अधिकार प्राप्त होगा। क्षणिक आवेश में आकर सहसा व्रत ले बैठना ठीक नहीं। सल्लेखन का अर्थ केवल अन्न जल का त्याग नहीं है। रागद्वेष का सर्वथा त्याग करना होगा। मृत्यु को प्रेयसी के समान गले लगाना होगा। बिना साधना के ऐसे महाव्रतो की दीक्षा नहीं लनी चाहिए।

नागमय्य ने दृढ़ता से उत्तर दिया —

गुरुदेव ! क्या मैं कोई वच्चा हूँ ? भसुर कुल में मेरा जन्म हुआ है। क्षात्र में जीवन बिताया है। मन जैन धर्म की श्रेष्ठता पर मुग्ध हुआ है। मेरे चारो ओर सदा धार्मिक वातावरण रहा है। उसीसे मेरा जीवन ओत-प्रोत है। तिसपर आप गुरु होते हुए अपने शिष्य पर सदेह करें तो मैं क्या कहूँ ? न जाने मेरी क्या दुर्गति होगी !

नागमय्य ! तुम्हारा आपग्रह माना भी जाय तो एक बात विचारणीय है। सल्लेखन देने के सबध में अनेक बातों पर विचार करना पड़ता है। जब चाहे तब दें या ले — ऐसा यह व्रत नहीं है। यदि देश में अकाल पड़ा हो या शरीर में असाध्य रोग घर कर बैठा हो या शरीर अत्यंत दुर्बल हो गया हो तो साधक सल्लेखन ले सकता है।

ठीक है। यह तो सामान्य नियम है पर जिनचन्द्रजी के शिष्यों के लिए यह नियम लागू नहीं हो सकता। इसका अपवाद भी अवश्य होगा।

तुम्हारे पुत्र मानें तो मेरी कोई आपत्ति नहीं।

महाराज ! क्या यह ठीक है ? कटघरे में पड़े हुए शेर को

छटकारा पाने के लिए क्या करना चाहिए ? जनमत संग्रहीत होगी ?
मोका पाने के लिए जनमत संग्रहीत किया जाता है । आपन मुझे
बिना-सीता की । यह जनमत संग्रहीत करनी पड़ेगी । यह जनमत
ही जनमत संग्रहीत करनी पड़ेगी । यह जनमत संग्रहीत करनी पड़ेगी । यह जनमत
क्या आप का मत संग्रहीत करनी पड़ेगी । यह जनमत संग्रहीत करनी पड़ेगी । यह जनमत
छोड़कर आप लिखकर जाय— इसी शक्ति है ।

विशेष श्रेष्ठ निष्कर्ष है। गुरु मर मोल रहा। चिन्ता-मंथन से बैठे गये। अतः प्रत्येक का नाममय की भाँसा में जाकर दाख कर देना। अपने जर्जरी ज्ञान से गहन गूढ़ सिद्धा कि नाममय की भाँसा भी समाप्त होने आई है। अब वह सकल करण मस्कराते बाँसे।

यं गिता न करो। ये तुम्ह भी सम्मोहन दुगा पर कुछ सुधार के नाथ। जिनके नाम ग आहार का प्रमाण कम करते जाना चाहिए। बनीस और स छत आरंभ कर और एक एक और कम करते जायें। इसी भाँति पानी का प्रमाण भी कम होते जाय। साथ ही व्यायाम में मन लगात जाना चाहिए। बेह की क्षम मयूरता पर बूढ़ विद्वान् रचना चाहिए। परमात्मा के जिनके लक्ष्य सब वस्तुओं का लक्ष्य छोड़ देना होगा। अनुभव में यह रचना होगा कि बोधना सुमता गगनवेध रंग आदि परम ज्योति स्वरूप जाना पर जमे कर्म सफल है। इस बेह की समता तक रचना कर परम्योति के चित्त में मन लगाए रखना होगा। ऐसा करते करते स्वयं परम्योति रूप बन जाओगे।

विनम्रता ही न या जनपद करले ही नायक्या न प्रसिद्ध माण
से चरणो में दखवत किया। जीतु चरण बूझि लेकर जेहि जपने माने पर
कथा कियो।



जिनचन्द्रजी के मल्लेखन की वाता हवा के साथ साथ चारों ओर फैल गई। लोगों ने नागमय के लघु - मल्लेखन की बात भी सुनी। मल्लय और पुनर्मय ने उन की कठोरता के कारण उनका न रहना ही उचित समझा, यहां तक कि उसे स्वीकार करने के सत्र में अपना विरोध भी प्रकट किया। मल्लय के परिवार का परिवार ही जा कर जिनचन्द्रजी के सामने गिड़गिड़ाया। अंत में कम से कम, अपने दादा को इस धार्मिक और अत्याचार से मुक्त कर देने की कार्यवाही की। नागमय के आठ पाने थे। अपने दादा का धर्म के नाम पर जट-जट लिए बिना मर जाना उनको भी अच्छा नहीं लगा। उन्होंने नागमय पर भर पूरा दबाव डाला। रोए' करपे। सन्यासियों की बात जलज है। दादा तो गहम्य ह। गहम्यो को इस प्रकार कठोर दीक्षा देना सरासर अन्याय है — इस प्रकार जिनचन्द्रजी के सामने विरोध व्यक्त किया। जिनमय ने जाग्रह पूर्वक कहा — दादाजी चाह तो कापाय धारण करें उन्हें मल्लेखन की आवश्यकता नहीं है। हम सभी इसे नहीं मानेंगी। गड्ढमय ने स्वयं दादा के साथ अन्नजल त्यागकर बैठजाने की धमकी दी।

नागमय के परिवार की नदनवन पर भयकर आघात वह निकली। ऐसा था कि नाग उपवन उजड़ जायगा। मल्लय को जैन धर्म की यह निष्ठुरता पटकने लगी। पुनर्मय ने कहा दाना-पानी छोड़ आत्महत्या कर ले और उसे भी मल्लेखन महाव्रत कहकर सम्मान दे यह अनर्थ है, और अवम भी। गड्ढमय ने ऐसे चुपचाप बैठे रहीं मानो मिर पर निजली टूट पड़ी हो। एलमय ऐसे चटपटा रहे थे मानो उसे रुकती लगी हो। हारे हुए जवारी की भांति चिक्कपोनमय सिर नकारे बैठे थे। जाहवमल्ल साच रहे थे कि किस प्रकार इस धार्मिक अत्याचार को रोका जा सकेगा। मल्ल ने समझा कि अब दादाजी नहीं रहेंगे। इस कारण से एक ओर खिन्न बैठे थे। औरों को गंते

कलत्रों देखकर नामकन्या भी रो पड़ी। अन्धकर्म की इतना दुःख हो
रहा था माना अपनी माता का इंतान अभी अभी हुआ हो।

सहसा जन्मी जाने की सूचना पाकर गेन कवि पुननूर दौड़े
आए। पय महाकवि सरण्ट चले आए मानो हुआ में उठते उठते आए
हो। सारी परिस्थिति समझ में आ गई। जिनचन्द्र मुनि जी और
नागमय के ज्ञान की जाने समझ में हो न लगी। इन दोनों कवियों
की एकता में बुझाकर नागमय की अतिम दिन की सूचना जिनचन्द्रजी
ने दी। संस्कार सपन दोनों कवियों ने संस्कार का अनुमोदन किया।
संस्कार के पूर्व जिन नियमों का पालन करना ही था उन की और
जिनचन्द्रजी का ध्यान पय कवि ने लीला। संस्कार अनिवार्य माना
गया पर जालझूट कर पयकवि ने एक सप्ताह घर उसको किसी बहाने
रखा दिया। निश्चय हुआ कि मन्त्रवेदनों से चामुण्डा के मातापिता
अर्थात् महादेव और कालिका देवी को बुझाया जाय। नागमय के
परिवारवालों को बिसों कर पोलियों को समझाने में सहजता देने में
पय और पोत्र दोनों को जमीन आसमान एक करना पड़ा। बरत में
रहते में जिनचन्द्रजी ने बरबिस ज्ञान से जानकर ओ कुछ आयुर्वेद
के बारे में बताया था उसका भी उत्तर देना पड़ा। पोत्रमय
मन्त्रवेदनों से पय और मन्त्र पुननूर में संस्कार के लिए आवश्यक
प्रबंध करने लगे।

जिनचन्द्रजी ईश्वर ने। उन्होंने संस्कार के लिए धूम धिनि
बार, नमन आदि का निश्चय किया। जिन पुननूर बरबिस माहायि
की निधि पूरी की गई। मन्त्राह्न के पूर्व जिनचन्द्रजी निष्ठा के किया
निकले। उनकी वन में रिक्त था। दौरे हुए में कर्मरुत था। जीर्ण
शहिना हाथ कचे पर था। मार्ग भरके सभी जीन मृहस्तों के यह
ब्रह्मा उमर आया था। सब ने घर-बार कुछ खड़ाए रखा था।
बरनवार सहरा रहे थे। एगोली से घर घर की सोया अर्धर्धनीय

अनी थी। सब ने मुनि जी को भिक्षा देने मूढास बनाया था। पानी और पक्वान्न लिए द्वार पर प्रतीक्षा करते खड़े रहे। मगलद्रव्य लिए सुहागिनें खड़ी थी। पता नहीं रहता कि किसके यहाँ मुनिजी भिक्षा स्वीकार करेंगे। भाग्यवश अपने घर आ जायँ तो ? क्योंकि श्रावको का विश्वास है कि जैन मुनि को भिक्षा देने से गोम्मटेश्वर को महामस्तकाभिषेक कराने के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। तब सोचिए कि श्रावको का उत्साह क्यों न उमड़े ?

इधर जिनचन्द्रजी निर्विकार भाव से रास्ते पर चले। कौन जाने ये कहाँ खड़े होंगे। सब की दृष्टि अपने अपने घर उनका स्वागत कर रही थी। धीरे धीरे मुनि जी आगे बढ़ते गए। एक गृहस्थ के द्वार पर आ खड़े हुए। दपति ने आकर पाद-प्रक्षालन किया पर न जाने क्या हुआ, वे आगे बढ़े। भिक्षादान का भाग्य यो अचानक खिसकते देख कर वे खिन्न हुए। पर करें क्या !

ऐसे ही दो-एक जगह और हुआ। अंत में जिनचन्द्रजी की सवारी नागमय्य के यहाँ आई। मल्लप और उनकी धर्म पत्नी अब्बकब्बे ने आगे बढ़कर अर्घ्य-पाद्यों में मुनिवर्य की पूजा की। प्रतीक्षा कर ही रहे थे। झटपट जो कुछ करना था किया। तिष्ठ तिष्ठ कहते हुए मुनिजी की परिक्रमा की। दंडवत किया। न्योछावर किया और हृदय से स्वागत किया।

घर के अंदर ले जाकर पादपूजा की। विधि है कि मुनि खड़े खड़े अन्न स्वीकार करें। विधि का पालन हुआ। घर के सभी लोगो ने आ आकर मुनिवर्य के हाथ में एक एक कौर अन्न दिया और अपने जन्म को ही सफल माना। मुनिजी बाईं हथेली पर दाहिनी हथेली रखकर, अगूठे में छान छानकर, परीक्षा करके, कौर-मूँह में रख लेते थे। नागमय्य पप, आहाव, मल्लप एवं उनके परिवार के सब लोगो ने अन्न-दान दिया। जो जो गृहस्थ अपने घर पर मुनि

को जिन्ना न पाए व वं बीहड़ बीहड़ें यहाँ आग और मृमित्री की हबेली पर और रक्त कर बनक यता का जनभक्त बनन लग्य। खेपर बन्माओ के समान सब प्रणिमात्र और गन्मन्त्र । इस जन्म-मन्त्र में सम्मिश्रित हुन । जिन्नी पर अपनी आसक्ति न दियाते हुए कन्वक बनासष्ट भाव से मुनित्री जन्म स्वीता । जन्म जा १ व । क्या बन्माओका के लिए गए बन्माओ में को जिन्ना को मन्त्री १ नहीं पर उस महर्षी के स्वर्ग में बन्मा का दिया गया बन्माओ माना भिक्षुपरस में भोक्तव्य सा बना । जैसे ही महर्षी की अपाए वैंस ही अपनी बाहिनी हबेली उता ली । बाबको न कन्वक में पानी दिया । उस न हाथ मूह को दिया । कुछ ही क्षण में अगर्भयी हुए । उस मूहा में उसी प्रकार बन्मा बिचाई व रहे व जिस प्रकार बन्मा सुकने में लगी मूर्ति एली है ।



बहिर्मुख होते ही त्रिपञ्चजी ने चन्द्रप्रसतीर्थ कर की पूजा की । यन्त्रि उदित त्रिपञ्चजीका का संवन किया । उसे चिर जाँचो पर लगाया । तीर्थ कर को साध्याय प्रणाम किया और परमात्मा के सम्मुख समर्पण सुक्य किया । त्रिपञ्च के समा-महिर में बन्मा-बन्मा त्याग कर हनोतामना में तन्मय बँठ गए ।

यह वैंसा चाहस है । इस हेमने के लिए आसपास के बावो से जोस जाने लगे । जैसे जैसे यह समाचार बाबाजि के समान फैलने लगा वैसे ही वैंस बार दूर सं-भाषको और जायिकाओ का एक जाँच लगा । बाबा सता का मेला पुननूर में लग्य बना । त्रिपञ्चजी के बारे में प्रविष्टि समाचार प्राप्त कर केने का प्रयत्न हर विर के राया महापद्माओ ने कर किया । बाबो और यन्त्रि की बात सी समझयी । बकापुर से बन्मा पुनार्थ की जाए । अन्वकबन्माओ से नेमिपञ्चाचार्य

जी पधारे। तलकाडू से महाबलव्य और उस की पत्नी काळलादेवी भी आई। उनके जाने तक दो सप्ताह बीत गए थे। प्रथम सप्ताह में महाव्रती जिनचन्द्रजी को कभी कभी दिन-चर्या के लिए उठना पड़ता था। वे हँसते हँसते धार्मिक चर्चा में भी भाग लिया करते थे। मुख पर मदस्मिति अंकित रहती थी। भव्यात्माओं से पूरा अनुकंपा से मिलते रहते थे। नेमिचन्द्राचार्य एवं अजितसेनाचार्य जी को जैन-धर्म तथा जैन संस्कृति के प्रसार के लिए कटिबद्ध रहने की आज्ञा दी। महाबलव्य को अपने निकट बुलाकर अहिंसा-वृत्त की जड़ की रक्षा करते रहने का आदेश दिया। काळलादेवी के कानों में कहा देखो बेटी, तुममें धार्मिक महत्वाकांक्षा की कमी नहीं है। वह और बढ़ती जाएगी तुम कृतयुग में भरतेश द्वारा स्थापित 520 चाप प्रमाण बाहुवली की मूर्ति की कल्पना करके नित्य उसकी मानसिक पूजा किया करो।

ऐसे ही राष्ट्रकूट सावभौम मुम्मडी कृष्णराय को बुला कर समझा दिया कि सार्वभौमत्व की अपेक्षा आत्मज्ञान का साधन ऊँचा है अतएव आत्मसिद्धि में मन लगाते जायें। गग मारसिग को बुलाकर आदेश दिया कि निस्सग बनने का अभ्यास किया करें।

सल्लेखन के प्रारम्भिक दिनों में बारी बारी से आकर पोन्न, ५५ नागमय्य आदियों ने तीर्थेशो के दिव्य चरितों को सुनाया। इन पुण्य-चरितों का श्रवण करके जिनचन्द्रजी दैहिक कष्ट भूल कर आनन्द सागर में तन्मय हुए। सतान का मूँह देखकर जिस प्रकार दारुण प्रसव पीड़ा को माताएँ भूल जाती हैं इसी प्रकार परज्योति स्वरूप अपनी आत्मा के चितन में मगन मुनि जी क्षुत् पिपासादि परिपहो को भूले। तीव्रकर पुराण श्रवण के बाद कुदकुदाचार्य के समयसार को सिद्धांत चक्रवर्ति नेमिचन्द्राचार्य से पढ़वाया। अजितसेन से और एक बार उसे पढ़ाकर चाव से सुना। इस प्रकार शुद्ध जित धर्म में तन्मय बने। जिस प्रकार शिकार के लिए तैयार खड़े हुए साही

के पास कोई भटक नहीं सकता उसी प्रकार महर्षि के पास माया मोह मात कोम जाति नहीं भटक सके। बीरे धीरे सब निबिडस्य समाधि में रहते हुए ब्रह्मसामर की बबतारा की भाति बन गए।

सस्तेसन का तीसरा सप्ताह बीता। भ्रम उठता बैठता कष्टकर प्रतीत होने पर सोए रहते थे। पर उनका चित्त पञ्चपरमेष्ठिनी में स्थित था। शरीर कष्ट बना पर दृष्टि तेज थी। कभी कभी मोठा पर मुस्कान सिध जानी थी। जिस मस्तिष्क में मुनिजी बैठे थे वह औरों के लिए एक बड़ा पवित्र तीर्थ बना। हजारों की संख्या में लोग आ जाकर भक्ति पूर्वक दूर ही से मुनि जी के दर्शन पा कर सब उमड़ उमड़ कर आननास मन्मथ को जबड़ देते हुए, जा रहे थे। एक ही बाबू पर सोए हुए मुनि जी की देह ठठरी मात्र बनी रही।

इसके नाममय निव अत्र संनर कम करने का अनुष्ठान किया करता था। मन्मथ और पोसमय अन्य सभी व्यवहारों का शान करके फिन्-सरा में ही रहने लगे। उसी के साथ सोठ-जमोद पहले उनको सिखाकर आप छाते। पोषणवर्षीय अतिमय और पुद्गुमय हाथों को अज्ञान करके सब को माताजी के साथ मिल आहार किया करती थी। एक ओर सबका अन्न-वस्त्र का त्यागकर पड़ गए जिनचन्द्रजी थे। दूसरी ओर प्रतिदिन नियत रीति से एक एक और कम सेवा करनेवाले नागमय थे। इस कठिन द्रष्ट के अनुष्ठान को देखते रहने पर भी बीरे धीरे अतिमय जीवन के परम रहस्य को समझने का सफल प्रयत्न करती रही। उन्पर मोहोपभोग पर उसके मन में विरक्त भाव नष्ट होता था। इस पुद्गुमय की दृष्टि में मीठ डरानेवाले नहीं रही।

जिनचन्द्रजी के सस्तेसन किए तीर्थस्थ चित्त बीत गए। नागमय का सकल पूर्ण हुआ। अतिम दिन पूर्ण निराहार बीता। पर उनके चित्त में बरा भी कोम नहीं था। समसारा को पड़ाकर दूना करते

ये और आत्मचिन्तन का अभ्यास किया करते थे। अब उनकी भी समाधि लग रही थी। अत्तिमव्वे और गुड्डुमव्वे वीणावादन सुनाती थी और जित-स्तुति का पाठ करती थी। इन कन्यामणियों के कलकठ ने ध्वनिरूप में परज्योति के प्रकट होने का अनुभव नागमय्य करते थे। एक बार नागमय्य उस नादमाधुर्य में आत्मरूप से लीन हो गए। वीणावादन के अंत में जब इन्होंने दादाजी के मुँह की ओर देखा तो वहाँ केवल मुस्कुराहट थी। शरीर निश्चेष्ट था। दोनों के मुँह से सहसा 'दादा दादा' शब्द निकल पड़ा। मल्लप और पोन्नमय्य दौड़ आए। देखभाल की। तब निश्चय किया कि अब प्राणज्योति शांत हुई है। पप पोन्न आदि सबने आ घेरा। इस झमेले में क्षणभर के लिए जितचन्द्रजी को वे भूल बैठे। मध्याह्न का सूर्य सिर पर चमक रहा था। उधर जिनजन्द्रजी के प्राण भी उड़े। पहले अपने शिष्य को मुक्ति माग का पथिक बना कर आप पीछे से गए।

सब के आंसू वह निकले। नागमय्य के परिवार में खलबली मची। चालुक्कयो का ध्वज उतर गया। राष्ट्रकूटों का ध्वज भी उतरा। गगो का ध्वज झुक गया। मल्लप पर मानो विजली ही टूटी थी। पोन्नमय्य रणधीर था पर अब अधीर बन अवला-सा रो पड़ा। नागमय्य की भतीजू यो रो रही थी मानो उसके पिता ही चल बसे हो। सब के सब पोते आकर दादा के कलेवर से लिपट कर चीखने चिल्लाने लगे। अत्तिमव्वे की दशा ऐसी थी कि मानो उस पर वज्रपात हुआ हो। गुड्डुमव्वे छाती पीट पीट कर रोने लगी। नागमय्य की मृत्यु से जैन समाज की रीढ़ टूट सी गई थी। वेंगिमडल नायक विहीन बना। सब लोगो का दुख एक पलड़े पर हो तो अत्तिमव्वे और गुड्डुमव्वे का दुख दूसरे पर था। क्योंकि इन दोनों का शैशव, वचपन और तारुण्य माता-पिता के पास नहीं दादाजी के पास बीता था। दादा की गोद इनका सिंहासन था। दादा के साथ सँर सपाटे के

जानी तो भी उनकी कबोपर बहकर। बाबाजी के भाव बायीं पीठी बाबा की नीब खोटी। यो कहूँ कि बाबा ही उनके लिए सब कुछ था। ऐसु बाबा से बिहीन यह लोक उनको कभीपाक सा डरावना बिछाई दे रहा था। सभी जमी योजन में परार्पण करनेवासी इन नव श्रमियों पर बाबा की मृत्यु बप्पाबात बन कर आई।

महामुनि का पवित्र कमेन्वर उठाया गया। उठानेवाले ने मारसिंह पप और राज्जको के कम्मराय एवं त्त्वमय्य। भक्ति भाव से उन कमेन्वर को हाँप जा रहे थे मानो विनम्य की उत्सव-नामस्ते से जा रहे हों। और एक बात थी। भक्ति के धर्म में राजा और एक का बंध कहा? यहाँ यह बात चर्चिताथ हुई थी।

इस जमी के पीछे पीछे नायमय्य की जमी निकली। जतिमय्ये मुहमय्ये जय्यकमे और मस्सप उसे हो रहे थे और किसी को कूल तक नहीं दिया। स्त्रियों को हटा देने का सब का प्रयत्न जय्ये हुआ। जलस का भाव बाँधू से छिपित था। जलता पीछे पीछे जा रही थी और ज नी बाप्पाबाकी बती जा रही थी।

स्मृदान में जवन कर्पूर की चिताओं पर रखकर दोनों की अत्यष्टि की गई। विनम्यकी की चिता को पप कविने अधिस्वर्ग कर दिया नायमय्य की चिता को मस्सप ने। इस कार्य में उनके पुरोने भी हाथ बँटाया।

विनम्य और नायमय्य दोनों महात्मा थे। जब तक जीवित थे सब तक लोकहित की साधना में उत्पर रहे। जब मृत्यु आई तो उत्पूर्व ही लोक हित साधना में अपन धियो को नियोजित किया। और मृत्यु के पश्चात भी अपनी उसी लोक कल्याण कामना-ही सुगंध फैलाकर जा रहे थे।

कलक हित कामना की सुगंध कोशों तक पहुँक रही थी।

नागमय्य के मरण से सारा पुगनूर अनाथ बना । लोग रो रहे थे । पर जनता की स्मरण-शक्ति उहुन शीघ्र क म्ति हो जाती है । जिसका जितना निकट सवध रहता है उतना ही अधिक उसका दुख होता है । पर काल का लेपन सब दुखों को भुला देता है । मल्लप तथा पुन्नमय्य को पितृ-वियोग का दुख भूलकर राजकाज सभालना पड़ा । अब्बकब्बे का दुख अवश्य इन दोनों के दुख की अपेक्षा अधिक दिनों तक बना रहा । कारण यह कि नागमय्य उसके ससुर नहीं थे मानो पिता थे, पिता से भी अधिक थे । सर्वाधिक दुख अत्तिमब्बे और गुड्डुमब्बे को था । दादा ही मानो इनके जीवन का सवस्व था । दादा के कमरे में जाती तो आँसू फूट निकलते । दादा के साथ ही खाया करती थी, अब भोजन के लिए बैठती तो खाते नहीं बनता था । उठकर बिना खाए यो ही चली जातीं । दिन दिन कृश बनती गई । शरीर की कात्ति फीकी पड़ी । जीवन में अब कोई आकर्षण नहीं रहा । उत्साह तो बिल्कुल नहीं था । प्रायः दादा की चिंता पर ही जीवन के उत्साह को भी जलाए आई थी । इनको देखकर अब्बकब्बे की चिंता बढ़ने लगी । सोचा करती कि उनका शोक कैसे दूर करें ? उसे भय था कि कहीं शोक के मारे कुछ और अनर्थ न हो । अतएव मन-बहलाने का प्रयत्न करने लगी । अपूर्व रत्नाभरण बनवा कर दिया । आशा थी कि और लड़कियों के समान ये लड़कियाँ भी इस पर मुग्ध हो जाएंगी और अपने दादा को भूलती जाएंगी । पर बात उलटी निकली । उन गहनो को देखते ही रत्नवृष्टि करानेवाले उस दादा को स्मरण करके फूट-फूटकर रो उठीं मानो अपने दादा पर मोतियों की वृष्टि करने में लगी हो । नाना प्रकार के दुक्ल भगवाकर पहनने का आग्रह करते हुए अब्बकब्बे कहती कि लो य तुम्हें फबते हैं । इन्हे पहनो

पर बलिपक्षे कहती कि अब कौन हमें सजी हुई देखकर ऐसे म सुयोनेवाला है। मुझमें बोक जठरी अब यह सब स्थान है। बाबा ही बही रहे तो हमें लेकर क्या करें। याता ने जाग्रह कर के एक बार बदेसी की कछियों से बेनी पिरोई। ये बाबा को सिखाने के किए घुंकर, उनके कमरे की ओर सीक पड़ी। वहाँ पावे पर ही इनको होश आया कि बाबा जी अब इस संसार में नहीं। बहाम से कटे हुए केले के समान फिर पड़ी। बाह्यर की यात्रा प्रति दिन कम होते देख बन्धकमें विरग्रास हुई। शेषमें कभी क्या वे कहीं बाबा जी के समान ही बन्धक कम करने का संकल्प कर ली है। अब से बाबा जी की मृत्यु हुई तब से घुंकर उन्होंने बीचा पर हाथ नहीं डेरा। यमुर स्वर में बाबाबाकी इस युवतिमो ने अब भीष बारण किया। यमुरी जी मस्त होकर यमुर-नृत्य करनेवाली इस को बाबा की मृत्यु ने पंशु बना दिया था। ये अब बृंभुक बैठ कर बाप बाली। बाबाजी के कमरे में बाबाजी के बहुरे पर बीचा बृंभुक बाहि पड़े-पड़े बृंभुक वृत्ति हो गए थे। पति से एक बार बन्धकमें ने कहा—

देखो ! बाबाजी के शोक में कछियाँ कींचे चुकती जा रही हैं।

इनका क्या होगा ?

क्या करें ? कुछ समय में नहीं आता।

— बन्धक ने निश्वास हो कर जतर दिया।

पर क्या यों ही जीव हैं ?

छोड़ना नहीं चाहिए। मैं भी मानता हूँ। पर कदाबो तो बारी कि क्या किया जाए ?

देखो गुम्हाय साय बन्धक बाह्यर कर जाता है। कुछ इमाज डू प क्या पावो ! आठों पहर पर में पड़ी हुई मैं जानती हूँ। मुझे यह देखा नहीं जाता। कभी कुछ क्लेश हो जाय तो पछतावोने।

क्या ऐसी बात है। ऐसी विचित्र स्थिति है ?

क्या और कुछ बताना होगा ? मैं ही रहे हो कि पत्नी
जैसे खाती नहीं और पहनती भी नहीं । गहना देखते ही इनका गला
बैठ जाता है । हमेशा चुपचाप बैठी रहती हैं । बसत मास्त के शीत-
स्पर्श से झूलानेवाली माधवी लता सी ये लडकियाँ जब भूलकर भी
नहीं हँसती । इनकी ऐसी दशा हुई है कि मैं क्या कहूँ, सदा मैं इसी
शोक में घुल रही हूँ । सोचा करनी थी कि इनका विवाह बड़ी रात
से करूँगी । पर न जाने हमारे भाग्य में क्या बदा है ?

क्या विवाह कर दें ।

देखो, जो चाहे करो । मैं केवल यही चाहती हूँ कि वे पत्नी
जैसे थीं वैसे बन जाय ।

योग्य वर कहाँ है ?

क्या बिना पूछ-ताछ किए वर हमारे पास जाप आएँगे ?

हाँ, आप ही आएँगे । पर समय चाहिए । जल्दबाजी में यह
काम नहीं होगा ।

जी हो, पहले ऐसा कुछ तो करो कि ये शोक भूल जाय
नहीं तो अवश्य ये पागल हो जाएगी ।

--- दुःखता के साथ पनि को चेतावानी दो ।

और एक काय आ पडा है न, नहीं तो —

लडकियों के विवाह से भी अधिक जरूरी काम है क्या ? उन
कौन-सा है ? सुनूँ तो ।

जरा असमाधान सूचक ध्वनि में पूछा ।

जिनचंद्रजी की इच्छा थी कि कन्नड में शांति-पुराण सुनूँ ।
जीते जी आप की इच्छा पूरी नहीं हुई । कम से कम अब उस
महात्मा की इच्छा पूरा करनी होगी ।

करो । कौन मना करना है ? पर लडकियों के विवाह और
इस को एक ही पलड़े में न रखो । किसी कवि को बुलवाओ और

मिस्त्रबाबो पर एक प्रश्न था । मैं अलग हूँ ।

मैं भी मानता हूँ । पर माँचो तो सही था काबू मिस्त्रबाबो कोई साधारण बात है ? क्या इस सुझाव मानती हो ? क्या जब चाहें एक हमें पावनी मिलेगी ? और ! इच्छानुसार कभी हमारे भी सुझाव करने ? किसी के कहने मात्र में वसुध मातुल बह निकलेगी ? यदि चाहो तो एक इच्छा के अन्तर्गत ही व्यापक कर सकता हूँ । पर माँचो मंत्री के अनुसार जिम्मेदारताएँ कि को कौन से काटें ?

मैं स्वयं नहीं बगल में बात कह रहा हूँ ।

क्या कहें । किसी के उर मन्त्रित हो तो भी वह भी के लिए तरसता रहे तो उसे कौन से समझ आ रहे ।

यह तो सकारण ? मुझ्हाए मतलब ?

तुम एक बार घाई पड़ से कह दो क्या बेमही मानेंगे ? पोत्र भी से प्रार्थना करने पर यह काम नहीं बन सकता ?

— अस्वच्छ ने मार्गदर्शित किया ।

ठीक है । इन शोभा

अतिम अमिताभ काज हो
हो धातिपुराज की रचना
तब रंग की जाएगी ।

मस्तक न अ

काम पर

राज ही हो

तो ही शिप

जस्वी

र ?

किन्हीं के

ताना म

र ?

ऐसी वीर

राजों । पोत्र को मर्दि की

ध्यान

दखार

। पो

र

दिना

राज

र

र

।

रहे त

रहे

र पा ३

र १

।

देखो तुम्हारी सात्वता के लिए एक ही ग्य। ना विमाह कर देने की बात कही थी, उस बात को लेकर अब मुझ पर ताना नारती हो और पछुती भी हो नादान सी, कि मैंने क्या कहा ।

ताना नहीं मारा । मैंने केवल तुम्हारी शक्ति का स्मरण दिलाया ।

जैसे कैंकेई जोर दीपदी ने स्मरण दिलाया था ?

शांत पाप । शांत पाप । कैंसी बात कहते हो । यह अश्रुपात है ।

बोहो । अब तक कवयत्री बनकर दौल रही थी । अब

ठीक है, जब तुम मेरी स्फूर्ति का स्रोत हो आर सामने हो तो मैं क्यों न कवि बनू ?

अव्यक्त की बातों में उलाम की दस्ता थी । और उमी धुन में मल्लप वहाँ से उठे ।



पपकवि और पोन्नकवि दोनों पुननूर पयारे । उनके सामने मल्लप ने चद्रसागर की मनीशा कह सुनाई । उस दिगवरयति की बात वेद विवि के समान मान्य है । कुछ भी हो शातिपुराण की रचना हो जानी चाहिए । जब यह काय समाप्त हो तब मैं उसकी सा प्रतिमाँ लिखवा कर वेदियों के निवाह के अवसर पर मुवातिनियों में प्रितरित करूँगा ।

—मल्लप ने विनय पूर्वक निवेदन किया ।

इस युग के महाकवि पप जी हैं । आप ही को शातिपुराण लिखना होगा । जिमचन्द्र जी भी यही चाहते थे ।

— पोन्न ने कहा ।

महानुभाव । आप मेरे मम पर क्यों मरना चाहते हैं ? अरिकेसरी के साथ ही मेरी लेखनी की शक्ति चली गई है । उस महाप्रभु के पीछे मेरी प्रतिभा लुप्त हो गई है । मेरी कल्पना शक्ति

कहिय हूँ । सब मद्रसं स्थिते नहीं बनता । पोसभी आप स्वामी है
महारमा ॥ आप का चित्त निर्विकार है । आप समभारत स सुख दुःख
में स्थिते । आप स्थितप्रज्ञ है । इस समय के कवि पद्मकवि भी आप हैं ।
मैं व आप ही शक्तिनाथ के भक्त्य चरित पाहुन । मैं केवल उस बृहत्
गर्भ में व स्थित हूँ जो काम करेगा । जिस व्यापारी का बेटा
उस गंगा हो कर शिवाना निकला हो उस के पास गीतना उचित
न । इससे उसे दुःख मात्र होगा । आप कविपद्मकवि हैं । शक्तिनाथ
ने बने से चरित है । आप उस सुन्दर गाथा के कवि हैं नामक
— यही मेरी प्रार्थना है ।

—पद्म कवि ने निवेदन किया ।

चन्द्रमय ने नमस्कार किया और कहा— जब तक अवसादन
नहीं मिले तब तक यहाँ से मैं उठूँगा सोल भी व ग्रामनी बैठ गया ।

जब उसी समय सोल भी अलौकिक प्रेरणा का अनुभव
करने लगा । निरपेक्ष ही की आशा-सहाय फूटती हुई दिखाई दी ।
जब लोक कल्याण-शान्ति ने शक्तिनाथ पुराण शिखरों की इच्छा उस
स्वामी महारमा में आती उस बड़ी का महत्त्व समझते में उस पद्मनाभना
में लज्जित होत में सोल भी जो बेर न लगी । उस समय ब्रह्माचारी समझ
करि मानव ने पश्चिन्न हुए । बड़ा विरूपित हुई । जोधो के सामने
माना समभारत उतर आया । उनके गले से मानो सुवीर स्वयं
मान ॥ १ ॥ ॥

वे आग्रह पर्यक्त बाल—

गुरु है । मैं प्राणितार पुराण रचूँगा । शिवभक्तों की प्रतिम
अभिप्राय एव हो । और साथ ही साथ पर्यवी की इच्छा सफल हो ।
गमन की मनीषा एव हो । पद्ममय की भनीया सार्थक हो । शक्तिमय
जोर इन्द्रिय व जीवमं शक्तिनाथ पुराण से शक्ति-प्राप्ति का
बीजगोपन हो ।

नागमय्य के घर पर पड़ा हुआ शोक का कुहरा पप और पोन्नजी के आगमन से दूर हुआ। ससार सारोदय नाम से विख्यात पप के रहने समय उदासी कहाँ रह सकेगी? निराशा के लिए जगह कहाँ? अत्तिमव्वे और गुड्डमव्वे के लिए मानो पपजी के पास रहने समय अपने दादा के पास रहने का सा आनदानुभव होता था। पप जी से विक्रमार्जुन विजय और आदिपुराण सुने। सुन सुनकर कठ पाठ किया। पप महाकवि के चरणों में रहकर झा दोनो ने भारतीय नारी के कन्य का ज्ञान सीखा। कला में कला सी तन्मय बनी नीराजना के पात्र की गरिमा से अवगत हुई। नव यौवन में पदापण करती हुई झा दोनो लड़कियों ने समझा कि अपना सौंदर्य, अपना लावण्य, अपनी प्रतिभा, अपना ज्ञान, अपना धनकनक आदि की मार्यता तभी है जब वे परमात्मा के चरणों में अर्पित हो। यौवन के प्रारंभ में योग्य धार्मिक सत्कार नहीं मिले तो मानव दानव बन जाएगा। पप कवि ने इस रहस्य का भी निष्पण किया कि यदि दैहिक सौंदर्य पर पारमार्थिक मन्कार का रंग नहीं चड़े तो सुरमंदरी भी विपकन्या बन जाएगी। यदि यौवन की मस्ती पर भक्ति का अंकुश नहीं हो तो ये इन्द्रियाँ हमें परमभ्रष्ट करके गड्ढे में गिरा देगी।

उन्होंने यह पाठ भी पढ़ाया कि पहले व्यक्तिगत रागद्वेष को कुचल देना चाहिए नहीं तो, स्त्री का जीवन आसू का समुद्र बनेगा।

एक ओर पोन्नजी लाव्य-कन्या को नचा रहे थे। दूसरी ओर पप वनि कर्नाटक के स्त्री रत्नों को कर्नाटक मस्कान के चाक पर उदात्तर चमका रहे थे, उनके जीवन को रन्वलश बना रहे थे।

दूसर मन्त्रप योग्य वरों के अन्वेषण में लगे रहे। पट्टी लिखी शास्त्रकृत न्यायों के अनुष्ण वर पाना बड़ा कठिन है। अत्तिमव्वे और पपजी ने दो घराने की लड़कियाँ लीं। चालुदय महामंत्री की लड़की पोन्नजी थी। गौतम की जान नीन बहे। कहीं ये पण चोरह मिगार

ये सदाबद्ध बन पायी हो जानी तो आकाश के खबर विमान तक
 लड़ हो जाते और इनका अनपम सौंदर्य देख कर खबर बाजारों
 मॉलिन हो जानी। इन दो तरुणियों को देखने से ऐसा लगता था
 मानो कमा जीन कमनीयता की सजीव प्रतिमा हैं। यदि नृत्य करते
 समय इनको देखें तो ऐसा लगता मानो इन्द्रधनुष पर चढ़कर मयूरी
 झुंझ रही हो। इन की शान्त नृत्य की पनि बनी। इनका बोल
 संगीत होता। जिस पर ये आत्म्य और साहस दोनों में गारुण्य थी।
 ऐसी लड़कियों के लिए योग्य घर पाना सुकम-साध्य नहीं था।

पपरेडबी हमारी कल्पना के योग्य घर चाहिए न ?

एक बार मास्टर ने विचार किया।

राजकुमारों में से बेचना होना। कम स्तरवालों को नहीं।

पर हम कहाँ और राजकुमार कहाँ ? यह कठ होना ?

देखो ! तुम्हारी इन कन्याओं से विवाहित होकर कोई भी
 राजकुमार अपना दाँ बन्ध मानेगा। समझे ?

वाप मछ ही अपना पास के सोन को अपरबी कहें पर इस
 का मूल्य प्रायः समान लव न ?

पर क्या सोना कभी भी खूँ खरा ही कनेगा !

हाँ ! राजकुमारों में ही सही। फताहए । इन के योग्य
 दौन है ? कोई नहीं बिलाई बना !

क्या रायकट के कर्ज मुबराज हैं। ऐसे ही पप बरख भाउसिंह
 के छोटे भाई राजमल्ल भी हैं। पूराठन काक से रायकट और राम
 से सबकी रहे हैं। परस्पर बौरख रज्य हैं और बाहर भी बैठे हैं।
 बराण सबियों से बोलो बस समूह बन सके हैं। जिस पर ये बोलो
 पानबाग जैन-भाग के आवागस्त्य से हैं। इनके राज्य में बहिष्ठा
 की बड़ कम गई है। ऐम राजकुमारों के होते हुए हमारी शम्भु
 ब्रह्मजी-भी यं कवरियों क्या घर पर पनी रहे ?

देखिए, वे क्या हमारे यहाँ विवाह करने के लिए तैयार हैं ?
मुनो। पहले पूछ लो कि अन्तिमव्वे और गुटुमव्वे उनसे
विवाहकर लेने के लिए तैयार हैं या नहीं ।

— ऐसा कहकर हम पड़ ।

दो-एक दिन बीत गए । एक बार एकाएक चालुक्य महामंत्री
दल्लप पुगनूर आए और सीधे मल्लप के यहाँ पधारे । दोनों में कुशल
प्रश्न हुआ । खान पान का प्रबंध अतिथि के योग्य श्रीमंत ढंग में किया
गया । अन्तिमव्वे और गुटुमव्वे ने मिलकर परोसा । भोजन करनेवाला
को लग रहा था कि कहीं देव लोक से नुरमुन्दरियाँ आकर अमृत
परोस रही हैं । इसी कल्पना में दल्लप ने कुछ अधिक ही खा
लिया । पर कवि के मन में पुरानी स्मृति जागृत थी । अरिकेमरी और
आप एक साथ जेवनार करते तो महारानी अपने हाथ से परोसा
करती थी, आज फिर ऐसा ही अनुभव किया ।

भोजन समाप्त हुआ । पान दिया गया । तब दल्लप ने मल्लप से
अपने मनाप को व्यक्त करते हुए कहा—

मल्लप, नागमय्य की मन्त्रु में अपा-नष्ट हुआ है । इस दुःख
में हम सहभागी हैं ।

हा । यह बात सही है । पर हमारा क्या बस है ? एक बात
अवश्य है । आप ही जब हमारे समाज के वृजुग हैं । आप के माग-
दशन की प्रतीक्षा हम लोग कर रहे हैं ।

— मल्लप ने विनय-पूर्वक उत्तर दिया ।

आप मेरे माग-दशन की प्रतीक्षा में हैं खूब, खूब ।

क्या हमते हैं ? आप मुझसे बयोवृद्ध हैं और अनुभवी भी ।
न केवल आप माग-दशन दे आप अनुग्रह भी करें । आप की आज्ञा
निर ओंको पर रखकर पाओ जाँगी । घर पर एक वृजुग ज्यपित का
रहना योग्य है । उन पर मागे निम्नदारी रहती है । और हम लोग

मात्राधारी बन कर आराम से रह सकने ह।

मरकप ! मेरी समझ में आप ही बुद्धर्न हैं। अपनी समझ के अनुसार चरिण। योगमय्य जैसे साम्बिक मूर्तिवाले महापुरुष की सरन मन्त सामाध की ही पबिष् खूयी। आप और आप के छोड़ आ स्वनाम बय पोत्रमय्य हमारे समाज की हो आये हैं। आप दोना हमारे गुरुकाज के हो पय हैं।

मरकप जी ! आप हम को पना रहे हैं। और ! आप की बात मान हम जौल और पक हें तब ही आप हमारे समाज के मस्तिष्क ह इस बात को न भूमिण्या। तेन हो चाह पक हो मस्तिष्क के इनारे पर ही वे काम कर सकत हैं।

—मरकप ने उत्तर दिया।

मम्मपनी कौन आप से मुनापन में जीत सकता है ! पोत्रमय्य जैसे पुरुष के मधान में लकवार के बनी है

उम में बाता का बनी ह ?

—मरकप ने बाक्य पना किया और हस। दोना बूब हस।

मुनिप मम्मप जी में आपका कार्य ही मुक्त बना पा।

बहिण ! क्या जाना है ?

आपने हमारे मानदेव का देवा ह

हो हा ! बना है।

बत बिबाह के योग्य है। कह्यो से नारियल जाए हैं। पर एक बात है। स्वर्गीय नाममय्य ने एक बार हम से कहा था कि हमारा मधकी आप को बनना ही होया। तब मैं भी कहा था कि बिना आप की पत्राय में पकक की धावी बोडे ही करनेवाला ह। आज नाममय्य उठे दो बात ही बूधरी थी। आज आप ने भिक्कर नाममय्य की इच्छा वह देने और आप की इच्छा भी जगत के लिए मुझे जाना पडा।

दल्लप ने बड़े सकोच से अपनी बात कह सुनाई ।

दल्लप जी, आप का मतलब समझ गया । पर एक बात है । यदि हमारे पूज्य पिताजी ने कुछ कहा हो तो हम क्या उसे टाल देंगे ? हा । दो-एक दिन आप यही ठहरिए । एक बात मैं अपने घर में पूछ लूँ । लड़कियों की इच्छा भी जान ल । आप का आना बड़ा ही अच्छा हुआ । आप मौके पर आए हैं । ब्रान न हो जाय । इससे ढढ़कर और क्या चाहिए ।

दमरे दिन चामुंडराय पुगनूर पधारे और मल्लप से मिले ।

राव जी, आप के आगमन की सूचना मिली होती तो राजमर्यादा पूर्वक आप की अगुवानी कर सकते थे । आप गगराजा के राजगुरु ह । धीरमार्ता ड हैं, महामंत्री हैं, रण-कलि हैं । ऐसे महानुभावों का बिना पूर्व सूचना दिए आना केवल आप का सौजन्य और वात्सल्य का प्रतीक है पर हम तो स्वागत करने के सदबकाव में वंचित हुए ।

— मल्लप ने कहा ।

देनिए । जब आप के पूज्य पितृवाद स्वगुरु हुए तब हम पुत्र के मैदान में व्यस्त थे । उहा ने जा न मते । केवल हमारे-माता-पिता ही जा सके थे । नागमय्य जी मय ने हमारे समाज ने एक अनपेक्षित ही छोड़ा है ।

— चामुंडराय ने मनाप वक्त ब्रिया ।

हाँ, हाँ, फिर भी आप जैसे हितपियों के होने हुए हम पितृ विहीन हो कर भी जनाय नहीं दते हैं -- यही गावना की बात है ।

— मल्लप ने निश्चय पूर्वक कहा ।

नागमय्य के गुणगान में हमारी माताजी अकली ही नहीं । हमारे पिताजी या तो कहना है जीना है तो नागमय्य जैसे जीना चाहिए । स्तुति में जीना और मना दोना जानते थे । उन की याद ने दोनों की अभी तो पड़ने है । सबकुछ एक व्यक्ति जा न रहा हमारे

कर्नाटक के लिए अपार नष्ट हुआ है। हमारा शीर्षम्प है।

आप जैसे महाधर्मो से सम्बन्धित पाने के कारण मैं तो बड़ी बड़गा कि हमारे मिताजी मने मही जमर हुए है।

— यह कहते समय मन्त्रप की पसन्द भीय गई। अपने शीर्षम्प को छिपाने के लिए बात बदलकर बोले —

जय श्रीराम। मुझे क्या हुआ है। दूर से आए हुए आप की बातों में कसाए रहा आशिय का समुचित प्रबंध तक नहीं किया। उठिए उठिए। अपना स्नानादि से पहले निवृत्त हो जाएँ।

रसोई घर में हलचल मची थी। कुछ ही आभक्ष्य प्रधान का दरबार समारम्भ हुआ था। आज यहाँ के प्रधान बामुंडराज का स्वागत सत्कार के योग्य प्रबंध करना था। यशस्वित्वावलि होता ही है। पर धीमती का बाध्य उन्हें हर कभी जमरपुरी का भोग देना ही है।

कर्नाटक के महान व्यक्तियों का यह प्रीति भोज था। उठ प्रीति भोज में सम्मेलन अभी अभी आए बामुंडराज बड़े बहुत दिनों से रहनेवाले पण्डित शरत्चम पोन्नमय्य एवं मन्त्रप के सत्री पुत्र सम्मिलित थे। मन्त्रप की पत्नी ब्रह्मकम्प और पोन्नमय्य की स्त्री शीतलम्प परामन लगी। अतिथिम्प और दुधम्प की पत्नी समय इनके साथ हाथ बँटा रही थी। सोने की बाली में बरा हुआ जल जलपट्ट मोगी छा लगा रहा था। सोने के बरतन और चाँदी के कमठ बाँधे थे। इनमें जलम भाँस पायसादि पक्वान्नों को ऐसे मचाकर भाँती थी कि देखने में आँखें अचाली पड़ी थी। कभी कभी अतिथिम्प और दुधम्प अपने अपने कमठ कर ली जाती थी। इन के आभरण में ऐसा कम रहा था मानो फूलखरी कपलगा अपनी ओर झुकी आ रही हो। अतिथि सोने की बाली में खा रहे थे। उन के चारों ओर सोने की कनोरियाँ थी। उन में चाँदी के जमर रखे गए थे। मन्त्रप और प्रेम का मकर साक्षात्कार था। परीसर्वालों का प्रेमपूर्ण

मृदु भाव और उनके नूपरो की मयूर ध्वनि से सुंदर संगीत का ठाट जम गया था और आनंद भी मिल रहा था।

ससार का सच्चा सुख भोजन ही है।

— चामुंडराय ने पप से कहा।

केवल भोजन ही सच्चा सुख नहीं दे सकेगा। आप जैसे महानुभावों की सहपत्ति प्राप्त हो तो मुझ जैसा अभागा कवि भी सचमुच ससार सारोदय का नाम साथक मान सकता है।

—पप के होठों पर मुस्कुराहट विली, पर ध्वनी में खिन्नता थी।

पप जी आप महाकवि हैं। फिर भी अपने को अभागा कहते हैं। आप कृपाण-हस्त बनकर चतुरंग बल भयकर रूप दिखा चुके हैं। तब उठाकर विश्व कविश्रेणी में जगणी बने हैं। आप के श्रीमुख से निस्सृत वाक्य दुन्दुभिनाद है। भोजन समारोह में तो सचमुच ससार सारोदय है। विश्वकवि, हमारी हस्ती किस गिनती में है बताइए?

— चामुंडराय ने तब किया।

आप की हस्ती 'चिरस्माई' है। आप जजर और अमर हैं। आप का साहस, आप की सहृदयता, इस से बटकर आप की जिन-भक्ति — हमारे जैसे दसों कवियों की वण्य वस्तु है। आप का साहस देश के कोने कोने में शिला फलकों पर जन्ति मिल रहा है।

पप कवि ने चामुंडराय के वास्तविक गुणों का उल्लेख किया।

आप दोनों की बात में एक बात स्पष्ट हुई।

— दल्लप दीक्ष में बोध उठे।

स्पष्ट हुई? कोन सी बात?

— चामुंडराय का मुह दल्लप की ओर था।

आप के शब्दों में पप जी महाकवि हैं और अमर हैं। पप जी के कर्मानुसार आप साहस, सहृदयतादि के कारण जजर और अमर हैं। आप महानुभावों के साथ रहने का सीमाय पाकर हम पुनीत बने ह।

कर्नाटक के विष अगार नष्ट हुआ है। हमारा शोर्मास है।

आप जिस महापयो से मायबाद पाने के कारण मैं ठो खी कह गा कि हमारे पिनाबी भरे नहीं अमर हुए है।

— यह कहते समय मरुप की पलके भीम गई : अपने शीर्ष को स्थिरान के विष बाग बरसकर बोल —

धमा कीजिए। मुझे क्या हुआ है! दूर से आए हुए आप को बता मैं फसाप रहा आतिथ्य का समुचित प्रबंध तक नहीं किया! जठिष्ठ जठिष्ठ! कपया स्वागतार्थ से पहले भिक्षुत हो जाएँ।

रमाई घर में हलचल मची थी। कुछ ही क्षणक प्रबल का सरकार समारम्भ हुआ था। आज वगैरे के प्रबल चामुडराय के स्वागत सरकार के योग्य प्रबंध करना था। यथानुबन्धो बलि होना ही है। पर भीमतो का नाम उन्ह घर कहीं अमरपुरी का मांव देता ही है।

कर्नाटक के महान व्यक्तियों का वह प्रीति भोज था। उच्च प्रीति भोज में सम्मेलन अभी अभी आए चामुडराय वही बहुत दिना से रहनेवाले पणवति मरुप पोन्नमय्य एवं मरुप के सभी पुरुष सम्मिलित थे। सम्मेलन की पत्नी ब्रह्मकर्म और पोन्नमय्य की स्त्री शौचकर्म परीक्षण मयी। अतिमय्य और चामुडराय भी यथा समय इनके मांव हाथ बैठा रही थी। छोटे की वाली में भरपूर हुआ ब्रह्म बनकर माली का कम रहा था। छोटे के बरतन और चाली के कपड़ों आदि थे। इनमें भयम भोज्य पायसादि पक्वान्नों को ऐसे पत्राकर छापी थी कि देखने में आँखें जवाती नहीं थी। कनी कनी अतिमय्य और चामुडराय चपला ही चपककर चली जाती थी। इन के आनमन से ऐसा कम रहा था मानो फूलमयी कल्पवृक्षा अपनी ओर झुकी जा रही हो। अतिमय्य छोटे की वाली में जा रहे थे। उनके चारों ओर छोटे की कनोपिया थी। उन में चाली के चपक रहे गए थे। मरुप और प्रेम का पञ्च पाठाचरण था। परीक्षणवालों का प्रेमपूर्ण

मृदु भाव और उनके नूपरो की मधुर ध्वनि से सुंदर संगीत का
छाट जम गया था और आनंद भी मिल रहा था।

समार का सच्चा सुख भोजन ही है।

— चामुंडराय ने पप से कहा।

केवल भोजन ही सच्चा सुख नहीं दे सकेगा। आप जैसा
महानुभावों की सहपत्ति प्राप्त हो तो मुझ जैसा अभाग कवि भी
सचमुच समार मारोदय का नाम साथक मान सकता है।

—पप के होठ पर मुस्कुराहट खिली, पर ध्वनी में सिन्नता थी।

पप जी आप महाकवि हैं। फिर भी अपने का अभाग
कहते हैं। आप कृपाण-हस्त बनकर चतुरंग बल भयंकर रूप दिखा
चुके हैं। ऊठ उठाकर विश्व कविश्रेणी में जगती बने हैं। आप के
श्रीमन्त्र से निस्मृत काव्य दुन्दुभिनाद है। भोजन समारोह में तो सचमुच
समार मारोदय है। विश्वकवि, हमारी हस्ती किस गिनती में है बताएं।

— चामुंडराय ने तर्क किया।

यह अवलोकन अवलोकन पादस-गालर हो ना वनाग-भाहा भाहा-अना रह सक्या ?

—वस्तुतः त्वम्

सुख साग ह । आप अवलोकन मोह की मति ह । वस्तु में
आ के पड़े में साग हुए । न ही में पड़ना चाहिये । आप उनके
स्वप्न में भी निमित्तिक म स्मरण है ।

—आम-इराय कह सक्याय ।

हाँ । मैं अवलोकन मानना ह कि अब बीमा खरन अपन धेव
म निमित्तिक ह । वस्तुतः कवि निमित्तिक ह तो आम-इराय जी और
साई बाबर न निमित्तिक है ।

—मन्तर न बाकी को ।

आप के बनी । म न क्या तोना-इराय म का गता ही बहा
बिना ।

—यप न बूझते हमने बहुत ।

हेलिए कवि पत्रगी की । म न वेवस पहरन का ज्ञान है ।

—मन्तर त्वम् ।

नीक तो है अत्यन्त का आधार वस्तु ही है ।

—वस्तु का पोषाच छन ।

ऐसे हास्य और विनोद म सब का भाजन समाप्त हुआ । सब
क मुहपर प्रसन्नता झलक रही थी ।

बुधवार की तपती धूप बसने लगी । और एक बार मन्तर
के यही समावन म सब एकत्रित हुए । सब के बीच में यप महाकवि
तिलक प्राय घोषा ब रहे थे । आप की वयस में तबिए के सहारे
झी पर आम-इराय विचारमाण थे । बूझती वयस में देख ही वस्तु
हैठे थे । मन्तर सब की दृष्टि का केन्द्र बन बैठे थे । अक्यात का प्रवच
हुआ था । वरर वह समाप्त हुआ उभर पोषाचि की पधारे । उन को
आवा आगत दिया गया । जोबुद्ध होते हुए भी वर महाकवि ने

पोत्र को साष्टांग पणाम किया क्योंकि वे जटाधारी समण थे। उनके पीछे उपस्थित अन्य सज्जनों ने भी नमस्कार किया।

धमवृद्धिधरस्तु

—यह आशीर्वाचन गज ठठा।

पोत्र ने चामुडराय से पश्न किया—

नेमिचन्द्राचार्य जी कैसे हैं? स्वस्थ हैं न?

जी हाँ। मानद हैं। आप के कुशल-क्षेम की बातें लाने की आज्ञा हुई है।

—चामुडराय ने उत्तर दिया।

नेमिचन्द्राचार्य जी आज के साधु समाज के तिलक हैं। जैन सिद्धांत के पारंगत आचार्य हैं। जैनगमों पर उनकी जैसी अधिकारवाणी और किसकी है? वे हमारे युग के बीरसेन महर्षि हैं।

-- पोत्रकवि आचार्य जी के गुणगान करने में अघाते नहीं दिखाई देते थे।

आप जानते होंगे कि हाल ही में नेमिचन्द्राचार्य जी ने गोम्मटसार नामक ग्रंथ की रचना की है। इस में जीव और ब्रह्म के विचित्र एवं निगूढ़ सवय का वैज्ञानिक विवरण दिया है।

—चामुडराय की ध्वनि में अभिमान था।

जी! बहुत अच्छा। आप कब यों ही बैठे रहने देते हैं। कुछ न कुछ महत्व का कार्य कराते रहते हैं। कहिए, क्या हमारे लिए भी उस ग्रंथ-रत्न की एक प्रति मिलेगी?

अवश्य, अवश्य मिलेगी।

—पोत्र कवि के प्रश्न का समाधान जनक उत्तर देते हुए चामुडराय ने कहा—

लेकिन अब नहीं। उस की एक सौ प्रतियाँ बनाई जा रही हैं। मेरे पुत्र जिन के विवाह के शुभ अवसर पर उस का प्रकाशन

कहना। जाया है कि उस पुत्र अक्षर पर आका गन आतीबाँर हम
अवश्य पाएंगे।

राजकी आका जायें बना ऊपा ? जी आरम्भोष है।
यदि बिल भाल अपन अपन जी म बिबाह पञ्चोपवीत आदि पुत्र
अवसरो पर हथ पञ्चोपवीत का मान्यता भी करण तो जन-मानस का
अविश्व उन्माद ही बना रहेगा। विवाह नाम धार है पर धर्म के
अनीन आलावरण म काम प्रग अमगा हो लाग्ड भी। यही हम स
म सिखा रहे ह।

अप्य माग। आप का सर्वक नामा-वचन और पत्रवि के
विक्रमार्जुन बिजय घ-बो वे हम गुरु प्रसादिनह मातमी भी उन मरु है।
हमारा विश्वास बड़ा है। योठ। यह कैसा घ-प ? जीर गग कावचन
पकड़े पकड़े गन पीछ उठा था। उसी बुन म हमर गहम्य क्रिया वा कि
मर एक बुष्ट-अभिया का समय किया व। हमने से भिदिन हुआ
कि दूध बड़ा कर कर्म है। जहाँ तक हो सके उसम वु जी खुला
बाहिए। सामन की बागडोर समानतावासी को हम रा मात्र अवश्य
बाहिए। और कपया बताएँ कि आप कीन भी रचना कर रहे हैं ?

— बामुहराम से कुतूहल व्यक्त किया।

बिलचनबी धातिपराज मूनता बाह्य व पर आपकी दृष्टा
कीबिल छडे समक पून गही हुई। पराज म ही मही यह कार्य
समाप्त करके जनको अपित कर हम उद्देश्य से पाछम ओर पोषनम्य
हम से धाति पुराज सिखा रहे ह।

ध-व कहा तक जाया है ?

अब तो समाप्त ही समझिए। अलिम्ये के पुनर्निपाह क
अवस पर हथ घम्य का प्रकाशन होगा। धातिनाम पञ्चमस्याप मूर्ति
है। उन की गाथा का प्रकाशन अपनी पुथियो के प्रकाशन सहोत्सव
पर कराना चाहते हैं। यह बहुत ही योग्य सक्रम्य है।

पोन्नकवि की मधुरस्मिति ने वातावरण में मधुरता धोल दी। क्या अतिमन्त्र की सगाई कही पक्की हुई है? वह भाग्यवान् वर कौन है?

चामुंडराय ने आश्चर्य से मल्लप में जिज्ञासा की।

अभी सगाई पक्की नहीं हुई है। पर दल्लप की सवारी उम्मी उद्देश से आई है। उनके स्वन्तामधन्य पुत्र नागदेव भी हमारी लडकी के योग्य वर हैं।

मल्लप की बातें सुनकर दल्लप फूले नहीं समाए।

आप दूसरी लडकी का भी विवाह कर दीजिए। यो तो ये यमज कन्याएँ हैं। इनका जन्म एक साथ हुआ है विवाह भी एक साथ हो जाय।

चामुंडराय ने गम्भीरता से मुझाया।

योग्य घर मिल जाय तो वह भी संभव है।

— पप महाकवि ने कह ही दिया।

क्या आप की लडकियों के लिए वरों की कमी है? विलंब करने से वचित रहने का भय सब को बना ही रहता है। यही सोच कर हमारी मातृश्री ने हमें यहाँ भेज दिया है। जब बहुत दिन पहले एक बार हमारे माता-पिता यहाँ आए हुए थे तब सुनते हैं कि श्रीमती अब्बकम्बे ने प्रस्ताव किया था, और हमारे माता-पिता ने इस सबध को स्वीकार भी किया था। आप की दो कन्यामणियों में आप जिसे चाहे दीजिए। हम सन्तुष्ट होंगे। अतिमन्त्रे दल्लप की पतोहू बने, योग्य ही है पर गुड्डमन्त्रे हमारी पतोहू बन जाय। हमारे माता-पिता वृद्ध हैं। पोते के विवाह के लिए आग्रह कर रहे हैं। यदि आप महानुभावों की अनुमति मिले तो दोनों विवाह श्रवणबेलगोल में ही हो। पवित्र क्षेत्र में शुभ कार्य संपन्न हो। सारा प्रबध हम कर देंगे।

करूँगा। धारणा है कि उस मूल अंगक पर जोरही जान आतीबारी इन
अवस्था पाएँगे।

राक्षसी जाका शायन बना ऊसा १ वी जाकाजीम है।
यदि दिन प्रकट रूपसे जणत गो म बिबाह प्रतीतकीन जादि गुम
अवसरो पर उध गकाशन का मन्त्राय भी करन गो इन-मन्त्राय का
प्रतिष्ठा सम्भस ही बना रह्या। बिबाह नाम प्रधान है पर प्रम के
बन्धीर बातावरण म काम प्रोग बनवा ओर मानक बी। यही हम म
म लिखवा रहे हैं।

धन्य भाग ! आप का धन्यवाद समाग्रद्वय जीव तमससि के विक्रान्तार्जुन विजय धन्या मे हम गुरु प्रसादित है। मातृगी भी उल सके है। हमारा विस्वास्त बड़ा है। जोत ! यह ईसा धन्य है। जीव तम का बचन पढ़ते पढ़ते जन बीस उल बा। उमी धन्य मे हमारा गुरुप्रसाद का कि घर सब दुष्ट-खलिका का धन्य किया क। हमने मे विदित हुआ कि दुष्ट बड़ा कर कर्म है। बड़ी तक हो सके। तमस धन ही गुरुता चाहिए। मातृगी की बावडीय सभाजनबासी को हम हा जान बचस्य चाहिए। ईश कपडा लगाए कि आप को भी रचना कर रहे हैं।

— बामुहय ने कुतूहल व्यक्त किया ।

विश्वनाथजी प्रतिपक्ष सुनना चाहते हैं पर आपकी दृष्टि
बीधित रहने समझ पूर्व नहीं हुई। परंतु यही नहीं यह कार्य
समान करके उनको अपित करे इस उद्देश्य से माछव की प्रोत्तम
क्रम ने प्रतिपक्ष सिद्धांत रखा है।

बन्ध कहां तक आया है ?

अब तो समाप्त ही समझिए। मलिनस्य के पुनर्विवाह के अवसर पर इस ग्रन्थ का प्रकाशन होना। आशिनाथ सचरस्यमाय मूर्ति है। उन की भाषा का प्रकाशन अपनी पृथिवी के अस्याय महोत्सव पर करना चाहते हैं। यह बहुत ही योग्य सम्भव है।

पोन्नकवि की मधुरस्मिति ने वातावरण में मधुरता घोल दी। क्या अत्तिमब्बे की सगाई कही पक्की हुई है? वह भाग्यवान् वर कौन है?

चामुडराय ने आश्चय से मल्लप से जिज्ञासा की।

अभी सगाई पक्की नहीं हुई है। पर दल्लप की सवारी उसी उद्देश से आई है। उनके स्वनामधन्य पुत्र नागदेव भी हमारी लड़की के योग्य वर हैं।

मल्लप की बातें सुनकर दल्लप फूले नहीं समाए।

आप दूसरी लड़की का भी विवाह कर दीजिए। यो तो ये यमज कन्याएँ हैं। इनका जन्म एक साथ हुआ है विवाह भी एक साथ हो जाय।

चामुडराय ने गभीरता से सुझाया।

योग्य घर मिल जाय तो वह भी संभव है।

— पप महाकवि ने कह ही दिया।

क्या आप की लड़कियों के लिए वरों की कमी है? विलंब करने से वचित रहने का भय सब को बना ही रहता है। यही सोच कर हमारी मातृश्री ने हमें यहाँ भेज दिया है। जब बहुत दिन पहले एक बार हमारे माता-पिता यहाँ आए हुए थे तब सुनते हैं कि श्रीमती अब्बकब्बे ने प्रस्ताव किया था, और हमारे माता-पिता ने इस सवध को स्वीकार भी किया था। आप की दो कन्यामणियों में आप जिसे चाह दीजिए। हम सन्तुष्ट होंगे। अत्तिमब्बे दल्लप की पतोहू बने, योग्य ही है पर गुडुमब्बे हमारी पतोहू बन जाय। हमारे माता-पिता वृद्ध हैं। पोते के विवाह के लिए आग्रह कर रहे हैं। यदि आप महानुभावों की अनुमति मिले तो दोनों विवाह श्रवणबेलगोल में ही हो। पवित्र क्षेत्र में शुभ कार्य सफल हो। सारा प्रबध हम कर देंगे।

बामुन्दराय बोक रहे व उनकी बामुन्दरा पर सब के सब स्थिति सु व ।

मध्यम सोचन नम बचानक रोना क्यारानो की भाव वा योग्य करो व हो रही है - इसका क्या पता है ? इसका का नावमय स बचन मिला है तो अत्यन्त न काल्पनिकी को बचन दिया है । रोना बन्द कर है । बामुन्दराय जी नम राज्य की रीत है राज्य का राज्य के अनधिकृत महामान्य है । बुरा कर राज्य का है वे बालक राज्य के आचारधर्म है और नावमय स बचन के साथी है । कहियो का भाव्य है कि येम करो स भाव धाई है । नम भाग ।

और यदि ये दोनों विवाह सुपन्न हो जाय तो कर्नाटक के सभी राज बरानो की स्तह सूत्र न बच जान का भीका मिलेगा । अंत संस्कृति के फूलने और फलने का सु-बपसर भी प्राप्त होगा ।

मन्त्रन यह जानकर मन ही मन फूले नहीं समा रहे व । पर वा न-समय मिलते हुए जोषिय पूर्व उत्तर दिया —

बात की बात है फिर भी मुझे एक बात पर में विचार करने ीजिए ।

क्या विचार करना है ? मान ली । बचाई है बचाई । तुम्हारा और तुम्हारी कहियो का महोत्सव है । मतिमय राज्य के पर भी सोचा बजो और मुहमम बामुन्दराय के पर की । कर्नाटक में धाति फिर होगी और अब मूर्ख ही नहीं होगा । पग और राट डट पकडे वैन है । वे राजा मूर्ख-मूर्ति से है । राज्य और तुम दोनों बामुन्दरा के रसाकषण हो । बहिमा सूत्र में अब मारा कर्नाटक बच जाय ।

पप कवि की भावना मूर्च्छित हो उठी ।

पप कवि की में मन्त्रतम्य विचारों के रहा है ।

— पप न ईसा हमसे कहा ।

नव्य चैतन्य ! सच है। इस विवाह की बात से मैं अवश्य पुलकित हो उठा हूँ। इतना आनंदित हूँ कि कुछ कह नहीं सकता। क्योंकि हमारे महाप्रभु की इच्छा उससे पूर्ण हो जाएगी। कर्नाटक में अब शांति और मुक्ति नामावशेष हो गये हैं। महाप्रभु अरिकेसरी का दिवंगत होना क्या था क्षुद्र शक्तियों का सिर उठाना था। वे अंतिम दिनों में मुझसे कहा करते थे। पप, कुछ तो करो पर व्यर्थ के रक्तपाता से कर्नाटक की रक्षा करो। कर्नाटक की नदियों में वीर पुत्रों का रक्त प्रवाहित हो रहा है, इसे यत्न-पूर्वक रोक दो। राजा-महाराजाओं की झंझी प्रतिष्ठा की बलि वेदी पर सारी प्रजा की सुख-शांति चटाई जा रही है।

ऐसे ही विचार करते करते वे चल बसे। इन विवाहों से मेरे प्रभु की वह अंतिम आशा पूर्ण हो जाएगी, जो सवि-विग्रह से भी पूर्ण नहीं हो पाई थी। विवाह से वह सम्पन्न होते देख कर मैं तृप्तकृत्य हो रहा हूँ।

इस प्रकार पप जी ने एक व्याख्यान ही दे दिया। और कर्नाटक के राजकीय जीवन पर इन विवाहों से पड़नेवाले पभाव का स्पष्टीकरण किया।

आप का कहना यथार्थ है। मैं भी यही सोचकर आनंदित हूँ। फिर भी मल्लप जी घर में एक बात पूछ लें।

—चानुडराय ने कहा। यह सुनकर मल्लप का मन उल्लसित हुआ।

मल्लप अपनी पत्नी से मिले। उसके चेहरे पर विचित्र शांति विराज रही थी। जीवन्मुक्त के समान वह दिखाई दे रही थी जाने जीवा की सब समस्याओं का उत्तर पाकर कतकृत्यता का अनुभव कर रही थी। इन घुन में बैठी हुई अव्यक्त को तब तक पति के आगमन का पता नहीं चला जब तक उन्होंने उसका

नाम नहीं किया। अरना नाम मतबर वह बीकी।

नाम समाधि स बहिमन्न होते ही उस क मुह से निकला —
ओह! तुम।

और कौन यहाँ आया?

नहीं गरी मैं कल और ही घात म भी।

मुह ही बला पड़ा है।

क्या म ह पर कल मया है?

मयकन्दे न जोचन से मुह पोछ किया।

येना कल नहीं लगा है। ओ पाछने स जानेवाला हो।

क्यो क्यं कष्ट उठानी हो।

एकाएक कई बड़े बड़ मेहमानों के आ जाने पर भोजनार्थ
का व्यवस्था करना पड़ा। इस व्यवस्था में समय है कि कल न कल
मुह पर वा अम्बन लगा हो।

ये दिन किये जाए हैं जाननी हो?

मे क्या जानूँ?

जाननी हो। फिर भी कियानी हो।

मला तुम से भी कियार्थ?

सुना कि तुमने कालकाहेवी को बचन दिया था।

क्या? नहीं तो।

राजगी के पत्र से सवाई श्री बाठ कभी तुम बीरछो मे बली
बी और तब मगले हैं कि तुमने अपनी बंटी होने की बात मानी
बी। अब बात पक्की करने के लिए ये आए हैं। क्यो हम से इतने
किया के रखा?

यह बात है। वह तो कोरी बात बी। यदि तुम्हें पसंद
न हो तो कल को मल नहीं हो सकता। हमारी कोई आपत्ति नहीं।

तुम बचन के कर पर बुझाओ और मैं ना कहकर निष्ठुर

वनू। खूब।

तुम लोग राजा महाराजाओं से सगाई पक्की करने की धुन में हो? मैं तो रावजी का स्तर अपने योग्य मानती हूँ।

तुम जो मानती हो वही हमारे लिए भी मान्य है।

उस समय की बात है। उस समय मानने न मानने का प्रश्न नहीं था। अब विचारलो।

क्या? नहीं मानती हो।

मानती हूँ। अब भी मुझे यह सबघ पसंद है।

अगर मैं नहीं मानूँ तो ?

जब नहीं मानते हो तो मेरा क्या बस है। यो ही मैंने वाग्दान किया था। अब वह पूरा नहीं हो सका। मैं थोड़े ही जीभ काढ़े बैठी हूँ। पति ही बात न रखें तो नारी क्या कर सकेगी? अधिक से अधिक आसू वहायेगी और आप ही मन को सात्वना दे कर चुप हो जायेगी। सोचा था कि बेटी के व्याह में मेरा भी हक रहेगा।

— अब्बकच्चे की पल्लें भीगी सी दिखाई दी।

क्या मेरी बेटी नहीं है ?

है। किसने ना कहा।

तब तुमने पहले इस का जिक्र मुझसे क्यों नहीं किया? मेरी भी सलाह ले लेती।

ऐसा कौन बुरा काम मैंने किया है? अच्छे कार्यों में सलाह मशविरा क्यों? मैंने बात की है तो काळलादेवी से, न कि रावजी से स्त्रियों की बात है। जब परस्पर मिलती हैं तो ऐसी बातें आती रहती हैं। यो ही बात आई यो मान लिया था। अब लाज रखना न रखना तुम्हारे हाथ है। यो तो दूमरी लडकी ह। उसे जिसे चाहे दे दो मैं चू तक नहीं करूँगी।

— अब्बकच्चे ने हताश भाव में कहा।

तम जाननी हो दम्पत जी क्यों जाण है

मे क्योंकर जानूँ ?

छन्द है कि पश्य जितानी में उन के घर कम्पाशन करने का वचन दिया था। अब उसी वार दिखान आण ह। एक के बारे में लड़की के शरा ने इसरी के बारे में लड़की की माँ ने निर्णय कर लिया है। अब लड़कियाँ का बाप कुछ करना भी चाहेगा तो स्वा कर पाएगा। मानो उमकी हम्मी ही नहीं।

मन्मथ न मंथीरता का स्वाग करते ब्रम्हे कहा।

हेनो! मेरे समुद्र ने जिनका भण्डा घर बुना है। पहले से ही लड़कियों का मिलना स्वाक रखते थे। और यहाँ तक सोचा है कि लड़कियों के विवाह के समय में उनके पिता को खेद मात्र भी बि। न रहन पावे।

मन जी का मन गान लगी।

नर क्या होनो घर तुम्ह पसब है ?

पहले तुम अपना अभिमत बताओ।

मेरा अभिमत? लकर क्या करोगी? एक और दम्पत ने करना दिया है दूसरी जोर उमकी की माँग है। इन में से किसी एककार करते बनता है क्याओ तो सही? हम भी तो बुरी की होवनी है।

क्या मारे मन के लड़की केना चाहते हो ?

वही मन्मथो। अब अपने बाप भाव आई है। घर की खोज में बूढ़ फरने की नीकत नहीं आई। फिर भी तुम अभिमतने और मूढमन से एक बार पूछ लो। उमकी स्वीकृति मिल तो ये मूम विवाह अवसरबल्योक्त में सज्ज हो जाय।

सब ? नहीं बना रहे हो।

नहीं तो। अवसरबल्योक्त में ही होवे।

तब तो हमारी लड़कियों का अहोभाग्य है। अच्छा घर मिला है और पवित्र तीर्थ में विवाह होनेवाले हैं। धन्यभाग।

कहती हुई हिरन सी चौकड़ियाँ भरते अब्बकब्बे अदर गई और लड़कियों को आवाज दी। दो-एक बार बुलाना पड़ा तब लड़कियाँ दुमजिले पर थी उतर आई। ऐसा लग रहा था मानो देवलोक से देवकन्याएँ आ रही हो। इनकी आँखों से चपला सी दृष्टि इधर उधर पट रही थी। उनका हाव-भाव बड़ा मोहक था। इठलाती हुई आकर माताजी के समीप खड़ी हो गई।

बेटा। क्या कर रही थी इतनी देर?

— अब्बकब्बे के स्वर में वात्सल्य घुल रहा। उसने लड़कियों के मुँहपर लटकी घुघुराली अलकों को पीछें सवाग, मानो चाद से कलक पोछने का प्रयास किया। और आगे बोली —

अब तक रावजी तुम दोनों की राह देख रहे थे।

लड़कियाँ घबड़ा गई।

कौन? चामुंडरावजी? क्यों माँ?

— अत्तिमब्बे ने चकित होकर प्रश्न किया।

नहीं हमारे रावजी।

क्या पिताजी?

गुड्डुमब्बे ने स्पष्ट किया। पर उनके मुँहपर हँसी खिल उठी। हा बेटा।

पर बताओ माँ। पिताजी कब से राव जी बने?

अत्तिमब्बे ने परिहाम करते हुए पूछा। अब्बकब्बे भी उमकी बातों में छिपी ध्वनि को समझकर हँस पड़ी।

चामुंडराव भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अब्बकब्बे हँसते हँसते बोली।

हमारी? क्यों? अभी विदा हो रहे हैं?

भास्वर्य का अन्तिम करने हुए अन्तिमस्थ ने पूछा।

आज ही तो आए। आज ही जाने लग क्यों? मित्राजी ने

रो-फूट रिन छराने का आग्रह नहीं किया।

मित्रा और करन भी। पर क्या तुम जानती हो वे किन
मित्र आए हैं?

बसकमरे हँसी नहीं गेल मकी। उस हँसी का आग्रह
समझकर भी अनन्यवादी भी अन्तिमस्थ बोली --

मे बखोडर जाऊँ। हम छोटा का आना जाना बर है।
किसीसे बोलना एक मना कर रहा है। जिस दिन हमारे दादाजी पर
उन्हीं के साथ हमारा स्वागत भी बना पड़ा। अगर वे खुने तो
बा कर बामदराब से ही लौटें बार्ते करके आन लीनी।

ही ही बसकमरे ही ऐसा करती। बामदराब का बया उनके
बात का भी मय होने नहीं। हाय। हम इस भाषितियों का स्वागत ही
क्या रहा है। दादाजी के पीछे ही बसा पड़ा।

— बसा भी हो बसकमरे बोली।

बामदराब भी जो क्या समझ गया है बरा। आप यम
साक्षात्कृत के बर्तनार हैं।

मजे ही बसकमरे ही हो। इससे हमारा क्या बिबडेया? क्या
हम उनमें लोहा केना है। जो ही बसकमरे की बात करन में
क्या है?

— अन्तिमस्थ ने बसकमरे से कहा।

कोडा बसाने के लिए भी नैवार दिखाई देती हो। तुम बोलो
डाएन हो।

— बसकमरे ने जोर काट किया।

पूछा लोग स्वादी है। हमारे हाथ में बीजा देकर बिबब
बिबब रहा है। नहीं तो कानों में ही पूछों की बपदरी कर सकती

थी। या तो मर कर वीर स्वर्ग पाती या जी कर अमर कीर्ति पाती।

— गुड्डुमब्बे वीरमहिला-सी गरज उठी।

यह सब तुम्हें सिर चढ़ाए रखा है न, उसका परिणाम है।

— अब्बकब्बे झूठा क्रोध दिखाते बोले।

दादा जी रहते तो इससे भी अच्छा परिणाम निकलता।

— अत्तिमब्बे ने निस्सकोच कह दिया।

जाने दो। अब हम मतलब की बात करें।

— अब्बकब्बे ने बात काटकर कहा।

हाँ हाँ, अवश्य करें। किसने मनाकर रखा है ?

— गुड्डुमब्बे बोली।

देखो बेटा। दल्लपजी नागदेव की सगाई पक्की करने आए

हैं और

अब्बकब्बे की बात काट कर अत्तिमब्बे बीच में ही बोल उठी।

रावजी अपने बेटे की।

फिर तीनों अपनी हँसी नहीं रोक सकी।

तुम दोनों डाइन हो डाइन। पहले ही ताड़ लिया है।

— अब्बकब्बे ने कहा।

माँ, हम क्या तुम्हारी ? बेटियाँ नहीं हैं। यह भी नहीं समझ सके।

— हँसते हँसते गुड्डुमब्बे ने कहा।

इनकी वानो से अब्बकब्बे को अतीव आनंद मिल रहा था।

फूली न समाती हुई बोली —

बेटा, हमारा विचार है कि नागदेव से अत्तिमब्बे की और जिनवण से गुड्डुमब्बे की बात पक्की कर दें।

— लडकियों के भाव पढ़ने लगी।

मेरी कोई आपत्ति नहीं। इन दोनों में से चाहे किसीने वाने पक्की कर लो।

जगिम रे न स्वीकृति थी।

रुम न मी प्रसन्न हुई। मुझ न की भा देना।

क्या येही बात मानी जाएगी

— गहमझे ने उलटा प्रश्न किया।

क्या बह। मुझ पर भी सख्त ? हम लोग चाहते क्या है।

तुम्हारा सुख ही हमारा सुख है। तुम जिन चाहे पसंद कर लो।

मैं हम दोनों समझ-संतान है। बार माथ प्रेम लिया।

साथ ही साथ बिबाह में। कर सकना ?

तुम तुम्हारी बात समझ में नहीं आई। और जिन दिन
तुम बाद छु मरोगी ? अगर बात बाद में भी बसा हो उसे मोहन
के लिए तुम्हें समझना तो जाना ही है।

अबच्छे ने कन्हाया को भीमन पाग को तानत्रिपि सप्ट
क थी।

देख ले। जहाँ बीबी की मगाई पड़ी हो वहीं मरी मो हो
जान लो

गहमझ ने गंभीर ध्वनि में कहा।

क्या कह रही हो तुम ? क्या ऐम बरसुर पर भी मज्जाक करती हो ?

— अबच्छे ने जरा जोर ल कहा।

मज्जाक नहीं कर रही हूँ मैं। बीबी के बिना मैं पल भर
भी जीवित नहीं रहना चाहती। बीबी के साथ एक ही दिन एक ही
मुर्त में एक ही तुम्हें के हाथ धीप लो।

क्या बहली हो नह ? दिल्ली की भी कोई दूध होनी है।
मन सब बनाओ।

दिल की बात ही कर रही हूँ। दिल्ली नहीं।

तब तो तुम नाशान हो बंटा। छुटने बिना एक तुम्हारा शक्ति
पोषण लिया। अब तुम्हें बिबा करना ही पड़ेगा। विधवा है बंटा।

बनार का नियम जैना है वैसे हमको चलना पड़ना है। लड़कियों को सन्तुल्य भोजना ही है क्योंकि वही उनका घर है। दो-एक दिन तुम जीजी के बिछोह में अवश्य दुखी रहोगी पर जमे जैसे पति से प्यार पाकर घर गृहस्थी में फँस जाओगी तब सब ठीक हो जाएगा।

मा, तुम्हारा कहना सच है। मैं मानती हूँ। पर मैं नहीं चाहती। क्या हम दोनों तुम्हारी कोख में नौ महीन साथ न रही? क्या एक ही पालने में रहकर शंख और वज्रपन नहीं बिताया? साथ ही साथ इतने दिनों तक आनंद में रहते आई। अब भी मा, जो जीजी का पति होगा वही मेरा भी पति होगा यह निश्चय मानो।

गुड्डमन्त्र ने दृढ़ता से कह दिया।

यह तुम्हारी भावुकता है। बेटी, क्षणिक भावावेश में क्या जीवन भर पड़ताते रहना चाहोगी। तुम नादान हो। चाहे जो कहो पर हम जानबूझ कर ऐसा क्या-क्या हानि देग? एक म्यान में दो खड्ग रखने की मूर्खता कौन करे।

जव्वक्त्र ने समझाया।

मानाजी। यह मेरी व्यक्तिगत बात है। आरो की बात लेकर मैं क्या कह। मानती हूँ पूरी जिम्मेदारी मेरी ही होगी। पर यह तो निश्चिन्त है कि जीजी का पति मेरा भी पति होगा।

बेटा अब रहने दो। तुम्हारा यह आदर्श प्रेम सराहनीय है। पर जब मोन बन जाओगी तो यह बात नहीं रहेगी। समझी?

जव्वक्त्र ने भविष्य का चित्र स्पष्ट किया।

मोन बनकर भी हम यह नीति निराला न करेंगी।

गुड्डमन्त्र ने दृढ़ता से कहा।

पगली कहीं की। चप रहा। ज़िदगी काट पालना नहीं जहाँ आगम से मो सको। तुम मचमच पगली हो। समझी।

-- गुड्डमन्त्र पर तर्क खाने हुए फिर भी समझाया।

बहनक बलिगच्छ सब मन रही थी । पर कुछ न बाँझा थी
बहन के प्रति उसका प्रेम उमड़ प ।। बोली —

मा ! कुछ के कलन के अनमन ही हो जाय । हम रत्ना
साथ जाएगी । क बूझ का सहारा बन कर रहूँगी ।

को । एक और पागल निकल आई । समझ रही थी कि यही
एक पापक है । दसों यह सब न बसेमा । जब जो कड़के है । उनमें से
अपनी अपनी खिच का पसंद कर को और आनम वही प्रीति दूर
रह कर भी निभाती हुई सुखी रहो । बाना को एक ही घर हम नहीं
मंच सकते । शायदी ।

अधकम्बे निर्धारक रत्न म बुझा से कह दिया ।

तब तो हम किसी को पसंद नहीं करती इसे विवाह नहीं
करना है ।

— बोलो के सत्र में एक साथ मिलन पडा ।

इस मास पडी रहो तो जानोपी ।

— अधकम्ब ने राज पीसीले हुए कहा ।

इस ही गया । बाहे जिनन साक पडे खुना पड पडी रहमी ।
विवाह करेनी तो एक ही घर से । नहीं तो ऐसे ही रहगी ।

बोलो न अपनी बलितापा को दुखता पसंद बता दिया ।

— अधकम्बे स्तब्ध रह गई । कुछ देर बाद बोली —

कम यही सुझाए खलिम निर्धन है ।

पी ही । यही अठिम है । यह कभी नहीं बदलेमा ।

— बोलो ने उसी दुखता से बुझाया ।

अधकम्बे पर माता आसमान ही टूट पडा । कुछ देर ठक
मिर सुकाने बीठी रही । एक पर पिता की रेखा खिच गई थी ।

जब तुम बनी जाओ ।

— बोलो लज्जिता से कहा ।

वे दोनों चली गई । उनके चेहरे पर प्रसन्नता नहीं थी ।

जब मल्लप ने यह सुना तो वज्राहत सा बैठ गया । कैसे इस जटिल समस्या को हल करें । यह टेढ़ी खीर है । ऐसे सोचते सोचते रात भर करवटें बदलते रहे । नीद नहीं आई । अतिम पहर में झपकी सी आई ।

मल्ल । अतिमब्बे और गुड्डुमब्बे एक सिक्के के दो पहलू हैं ।
उनकी इच्छा पूरी करो बुरा नहीं होगा दोनों को एक ही वर से ब्याह दो ।

नागमय्य मानो कह रहे थे । मल्लप की आँखें सहस्र उसके खुली । सर्ज निकल आया था । धूप चढ़ रही थी । उठकर हाथ मुँह धोया । सीधे पप कवि के पास गया । अपनी लडकियों की नादानी और अपना स्वप्न दोनों कह सुनाया । सुनकर पपकवि का रस-सपुट खिल उठा । भाव तर्ग उठने लगी । ऐसी बहनें । धन्यभाग । इन्हें आँखों देखने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ । तुम धन्य हो मल्लप । यह परमात्मा की लीला है । लडकियों की इच्छा के अनुसार ही करो ।

खैर । लडकियों की इच्छा ही रत्नो क्या यह बात इतनी सीध है ? सोचिए तो सही । लडकियों को मागते हुए दो सज्जन आए हैं । किसको दें और किस को नहीं दें ? दल्लप चालुक्य साम्राज्य की नींव हैं । उपर रावजी गग साम्राज्य-लक्ष्मी के मर्वस्व हैं । इन दोनों में से किसी का भी मन दुखाना नहीं चाहता । यदि यह बात नहीं आती तो दो लडकियाँ थी । दोनों को देकर सन्तुष्ट रह जाता । वह सौभाग्य मेरे भाग्य में नहीं बढ़ा ।

यो कहते कहते सिर पर हाथ धरे बैठ गया ।

मन्त्र, यह समार हैं । थोड़े ही सारी बाने हमारे इच्छानुसार बनेगी हमें विवि के इच्छानुसार नाचना पड़ता है ।

अब क्या करें ?

वह मैं मोवूंगा । मुझ पर छोड़ दो । आज भोजन के पश्चान्

कूछ रास्ता निकाला जाय। अब और किसी के जाना में इसकी बनक
तक न पड़े सुनसो ?

अतिमय्ये और बृहमय्य पर ही यह सार डाल दें तो ---

यह ठीक नहीं। हम जान बूझकर क्या अपना को लकड़ में
डालें। मीच रास्ते में यह काम नहीं बनना। ऐसी व्यक्ति करें जिसने
दूरा परिचाम में निकले और दत्तक तथा राजजी भी बग न मान।
तुम निश्चित रहो।

इन सबों में परकवि ने मन्त्रप को मान्यता दी।

मोजन में सब निमग्न हुए। पिछले दिन का सा ही वैभव और
सन्मपण का। अतिमय्ये और बृहमय्ये समान सुनाने की। उन में हमारा
बान्य का कि कभी कभी माता पिता की बृहमय्ये और अतिमय्ये में बहक
कर बैठने तक और लोग कैसे पहचानते। बामुहराय के मन में इन बहिनों
को देखकर यह भाव उठ रहा था कि कैसे इनको अपना करें ? तब
भी तोच रहे थे कि नहीं इन दोनों का विवाह एक ही व्यक्ति में ही
जाय तो। यही सोचते होपते होन कर रहे थे।

मन्त्रप के यहाँ पुनः को बनावत बैठक हुई। सब एकांत
हुए। मन्त्रप और बामुहराय साथ और दोनों कुछ व्यस्त थे।

मन्त्रप और कितने दिन तक यो ही आ-वीकर रहे जाय ?
मुस्कुराते हुए शक्य न विज्ञाता की।

आरे जिसने दिन। पर जान को कोई कष्ट तो नहीं हो रहा है।
थप न उत्तर दिया।

ऐसा भोव भिन्नता रहे तो कौन अपना जाना चाहेगा ?

बामुहराय न हँसते हँसते कहा।

तब बसती बसो। कुछ दिन और और बाहर।

हो मैं बाराम करना चाहता था। हजर कई बप (स) हमारा
बाराम नहीं भिन्न था। युध और कोकाहक के मारे नाचो हम की।

यहा क्या आया, बस, सब चिताओ से मुक्त होकर निश्चित हूँ ।

ध्वनि में हार्दिक प्रसन्नता झलक रही थी ।

मल्लपजी अब हम मतलब की बात करे । कहिए कब विवाह निश्चित करेंगे । और कहाँ करेंगे ?

दल्लप ने जिज्ञासा की ।

जी हाँ मुझे भी लौट जाना है । बताइए लॉट नर मैं माता जी से क्या कहूँ ?

— चामुडराय बोले ।

मल्लप पप की ओर कातर नेत्रों से देखने लगा ।

राव जी, एक बड़ी समस्या उठ खड़ी हुई है

मल्लपजी ! यह क्या ? निस्सकोच बताइए न । घरगृहस्थी की सैकड़ों झझटें होती हैं । क्या घर में कुछ प्रतिकूल परिस्थिति है ?

सहानुभूति पूर्ण आश्वासन देते हुए चामुडराय जी ने कहा ।

ऐसी कोई खास बात नहीं । अत्तिमब्बे और गुडुमब्बे यमज सतान हैं । साथ साथ पाली पोसी गई हैं । अब वे बिछुडना नहीं चाहती ।

पप ने सूचित किया ।

उनकी ओर देखते समय मुझे भी यही लगा । तरस आई । आम के जोड़े सी लगती हैं । इनको अलग अलग रहने के लिए कहना बड़ा कठिन काम है । पर करे क्या ? लडकियाँ कौं दिन साथ रह सकेंगी । बिछोह उनके भाग्य में बदा हैं । एक बात हो सकती है प्रारम्भ में कुछ दिन के लिए वे चाहे यहाँ या वहाँ साथ साथ रहें । धीरे धीरे ससुराल का मोह बढेगाता तब बिछोह नहीं अखर यह प्रकृति का नियम है ।

— चामुडराय जी ने सहज ढंग से कहा ।

पर उनकी बात समाप्त होते ही पप जी बोले —

यह बात नहीं है । और जो है वह इननी सीधी भी नहीं है ।

कहकियों का विचार कुछ और है। ये सोच रही हैं कि साब साब
सैकड़ों में रह गयी है तो समयकाल में भी साब साब रह सकती ?

यह समझकर चामरराव तो स्तब्ध रह गए। उस मौन में
एक नमस्कार हुआ। किसी ने मौन तोड़ने का साहस नहीं किया।

मन डग्ला है न जान जात्र भोजन करने समय भर मन में
ये क्या ऐसी ही बात उठ रही थी। साब रखा का कि इन कयाबों
को एक ही घर पर रहने का स सम्भव प्राण ही तो क्या ही सम्भव
होना। इन युवक तारिकासा को एक साब एक ही घर में एक सपात्र
को दिया जाय तो कैसे रहेगा। एक ही गहनी कबो फसो छी रहनेवाली
इन दोनों को अपने घर की सोचा बहाने रखकर हीन अपना जहोनाम
नहीं मानेगा ? आश्चर्य तो यह है कि कहकियों का विचार भी
ऐसा ही है।

चामरराव ने भावावेश में कहा। उन की मश में ऐसा मन रहा
का कि वे इन दोनों को अपनी पत्नी बनाने पर तुले हुए हैं।

यह गाड़कर दम्पत्य बोले

मन्सप राबड़ी छ पड़के मैं यहाँ आया था।

दम्पत्य ने मनु सप्रदाय की धरम लेकर कहा।

देखिए, यहाँ आये पीछ की क्या बात है ? जिसे कन्याएँ
पसंद करेंगी उन घर में।

चामरराव बोले। उनका विश्वास था कि कहकियाँ जबस
उन्हीं के घर आना पसंद करेंगी।

कन्याओं ने उस पर ही यह जार छीन दिया है। यो तो
उनके सामने ही घर है। दोनों में हय जिने चाहे पसंद कर ल वे
बनने को तैयार हैं। पर दोनों किसी एक ही से स्नाह करणा चाहती हैं।
असिमन्ने और नुहुगन्ने की बात स्पष्ट है और सीधी-सी लगती है।
पर हमारी समस्या बड़ी टडी है। कबो कि दम्पत्य यो भी हमारे

आत्मीय है और आप भी। हमारी लटकिया दोनों के वात्सल्य-भाजन बनी हैं। और आप महानुभाव हमारे समाज के जगम हिमालय हैं। हमें तो कुछ नहीं सूझ रहा है। रमण्या आप के सम्मुख रख चुके। अब आप जो भी माग निकाल दें उस पर चलने को तैयार हैं।

पप जी ने मल्लप की ओर से निवेदन किया।

दल्लप और रावजी दोनों एक दमरे की ओर देगते हुए अवाक बठ गए। दोनों की इच्छा थी कि इन कन्या-रत्नों में अपने अपने घर की शोभा बढ़ा लें। पर बात बड़ी जटिल थी। उन दोनों के जीवन में ऐसी समस्या अब तक कभी नहीं आई थी, क्योंकि यह शक्ति और समर्थ की बात नहीं थी। युग्मि भी काम नहीं दे सकती थी। मघि-विग्रह में दोनों नामी थे पर इनकी बुद्धि यहाँ काम नहीं दे रही थी।

दल्लप जी और चामुंडराव जी। आप दोनों की दुहाई है। मैं अत करण की बात कहना हूँ। आप दोनों में मेरे मन में किंचित् भी भेदभाव नहीं है। चाहता था कि आप दोनों के घर कन्यादान कर मैं कतकृत्य हो जाऊँ। पर मेरी आशा की जड़ कट गई। मैं आप दोनों में किसी दो भी ना नहीं कह सकता। अत्तिमव्वे और गुडुमव्वे मेरी कन्याएँ नहीं हैं, समझ लीजिए कि आपका हैं। आप दोनों विचार कीजिए और जो भी निणय दीजिए वह हमारे सिर-आँखों पर होगा। केवल हम यही चाहते हैं कि आप दोनों की कृपा बनी रहे।

• मल्लप का गला रूँध गया।

मल्लप। छि। क्यों इतना व्यग्र होते हो? समस्या उठी है तो हल करना ही होगा। व्यग्र होने में थोड़े ही काम दनेगा। हम पपजी पर यह भार छोड़ देना चाहते हैं। वे ही मार्ग-दर्शन करें। वे वयोवृद्ध है और ज्ञानवृद्ध भी। उनकी बात मान लें। कम से कम मैं सहर्ष उनका निणय स्वीकार करूँगा।

चामुण्डराय जो न अपना निश्चय मनाया ।

रत्न को भी यह बात पम्व आई ।

पप ने नहीं सोचा था कि निजय रत्न का भार उन पर आ
पड़ेगा। कष्टएव दण भर मन ही मन विचार करते रहें। बोले —

यह मेरा बहोयाय है कि आप मठानवालों ने मेरा विस्वास
किया है। इस के लिए मैं सदा आप का कर्ज रहूँगा। अब मेरा मत है
कि —

पप की बात रुक गई ।

कहिए, कहिए— एक ही स्वर में चामुण्डराय और रत्न बोले ।

पप ने अपनी सलाह सुनाई। रत्न ने स्वीकृति दी ।

उन पप जी ने चामुण्डराय और रत्न का नाम जलन जलन
पूजा पर लिखा। एक सा मोठा और एक कटोरी में धानिबिंद
के समूह रख कर पूजा कराई। कम कनेरी को डक कर ख
हिजावा। फलफूल से उस की भी पूजा की। रत्न और
चामुण्डराय ने मरवा मल्लि के साथ उस पर फूल पहाए। तीन साठ
का एक बाछक बुझाया गया। उसने कनेरी से एक पूजा उठाकर
पगेहिज जी के हाथ में भर दिया। पुराणि जी ने इसे खोलकर
सब को दिखाया। उस पर रत्न का नाम लिखा था। रत्न ने रत्न
का नाम दिया ।

पपदेव में भाव्य-मरीजा में जलनीय हुआ ।

चामुण्डराय ने खिर होकर स्वीकार किया ।

राजनी अब रत्न ने इन दोनों कथाओं को मुझे से दिया है ।
अब इन पर मेरा अधिकार है। आप खिन्न न हों। अब भी क्या
विमर्श है? आप की प्रसन्नता के लिए मैं इन दोनों को आप को सौंप
सकता हूँ। आप खिन्न न हों। आप सत्य मेरे प्रस्ताव स्वीकार कीजिए ।
रत्न ने निवेदन किया ।

दल्लप की उदागता से चामुडराव की विव्रता दूर हुई। बोले—
 दल्लप जी, हमे दैवैच्छा के सामने सिर झुकाना ही पड़ेगा।
 व्यक्तिगत लाभ-अलाभ की बात अलग है। पप देव के सामने, इस
 उल्ल में कैसे झूटा निकलूँ? असंभव है। जोर एक बात है। नागमय्य
 की पोती मेरी भी पोती है। पतोहू न बन सकी तो क्या हुआ? मैं
 चाहता हूँ ये दोनों सुखी रहें। अबिक क्या कहूँ? आप भाग्यवान हैं।

चामुडराव की बातों में सच्चाई की झलक थी।

दल्लप ने दोनों हाथ जोड़कर उनको प्रणाम किया। यह निश्चय
 हुआ कि अतिमन्त्रे और गुडुमन्त्रे का विवाह दल्लप के एक मान पुत्र
 नागदेव से हो। चारों ओर चामुडराव का गुणगान होने लगा।

१

इस विवाह में दल्लप अपनी सारी संपत्ति पानी दे
 बहा देने को तत्पर था। पोल्लमय्य की अपनी मतान नहीं।
 वह स्वभाव में भी बड़ा उदार था। अद्वकन्त्रे की
 संपत्ति भी कुछ कम नहीं थी। इस के अतिरिक्त नागमय्य
 पोतियों के नाम पर काफी संपत्ति रख छोड़ी थी। मतलब यह कि
 मैं जो दहेज की बात उठा करती है वह वहाँ उठ ही नहीं सकती।

विवाह की नैयागी इस पैमाने पर हो रही थी कि
 महाराजाओं के यहाँ भी कदापि संभव नहीं हो। सारा पुगनू
 विवाह मंडप बन गया था। हाट बाट सब बदनवार से शोभित हुए।
 कस्तूरी, केसर, चंदन आदि सुगंध द्रव्य से सारा वायुमंडल मत्क उठा।
 प्रायः जंगल में एक भी वृक्ष या एक भी फूल नहीं बचा होगा क्योंकि पुगनूर
 की सजावट में सब खप गए थे। खम्भे के स्थान में सुपारी के

वेद कन्वाए मण ने इन पर पान की स्नान भी समार्न गई थी। हेरने में
 ऐसा छग रहा था मानो कितन ही बरमा में हम बिबाह के ही
 उपकार से यह मन्त्र नैवार कर गए हो। जगत जगत आम के वेद
 और किए ऐसी सोभा से रहे थे मानो कामदेव रक्त-वर्ण के साथ आ
 पधारे हो। इन पर मनी हुई मधारकलाओं में वापस्य जीवन का आदर्श
 स्पष्ट हो रहा था। आत्म-से वह अवलोक पाकर स्नातृ इठला रही थी।
 अमृतकला की ओर बर्जमासीत थी। रग बिजग फला की इस रूप से
 स्नाकर गला था कि बहो मरा इह अनुप वा भ्रम बना रहता था।
 पूजो की सजावन में कई विभिन्न विभिन्न आपर्पण थे। अधिक कम
 कहे कला वही स्वीकृत हो रही थी। इन फला के मकरद से आकण्ट
 मनुमकिहारी अबह कमठ छना बनाकर महरा गी थी। और इन के
 शाय एकचित मकरद की भाक में वायुदेव का पञ्चदशम सार्वक संलग्न
 रहा था। इन की मुजल संसार बालाकरण मकर और सरम सुगीत मय बना
 हुआ था। बिबाह मकर की बाल कोन रह। कर्नाटक के प्रसिद्ध कलाकार
 उसके निर्माण में मने हुए थे। गण-अथ के विद्या से मकर बनाया गया था।
 कर्नाटक की सारी कला और वसनीयता का वह अनन्य नमूना था। प्रायः
 इह का समा नवन ही इस के सम्पूर्ण कम ही आकर्षक रहा होगा।

बिबाह शुरू महुर्न में उपनत हुआ। कैलासगिरि पवापुरि
 पंचापुरि, अम्नोष धिक्कर गन ऊबेवन जैसे पवित्रतीरा से विनयबोधक
 मन्त्राया गया। वपु कर की छाया बेखदबाजो की विषय
 होकर विमला की ओरला गया था क्योंकि वसन वा ही जाने ही
 थी। नामदेव के धातुन में अतिमय्य और बाप में मुहुमये विराज रही
 थी। नायकम्याओं के समान इन कलाकारला की सजावा था। जब
 हीरक का लमरोवन हो तो रसरजन का प्रवाह क्यो न उमड़े ?
 नलसिद्ध सिंगार सं यं दीप धिक्का ही लप रही थी। नायक
 की आँखें एक ओर मुहुमये की दृष्टि और अतिमये की

देवकर विल उठी। ज्योतिलना-सी शोभायमान् इन कन्याओं की कानि ने दीपशिखा को मलिन कर दिया था।

पप कवि ने चामुंडराव से कहा —

देविए। आदि देवजी के भी दो रानियाँ थी। ये दोनों यशस्वती और मुनन्दा सी लगती हैं। बीच में बैठे हुए यह नागदेव साक्षात् आदिदेव लाते हैं।

कवि चन्द्रवर्ती जी। क्या ही अच्छा होता यदि आप इनको देखने के बाद आदिगुण की रचना करते। उनको भी यमज सतान बना सकते थे।

— चामुंडराव ने हँसते हुए कहा।

उधर दल्लप की पत्नी पद्मवत्से उद्वकवत्से से बोली।

— तुम धन्य हो बहन। न जाने कितने जन्मों का सुकृत-लफ़ इस रूप में प्राप्त है। तुम बड़ी भाग्यवती हो।

पर बहिन आज स हमारा भाग्य समाप्त समझो। इन चादनी की पुतलियों को केवल तुम्हारे घर की शोभा बढ़ाने के लिए ही इतने दिनों तक मैंने प्रोहर के रूप में रख लिया था। अबतक जो कुछ हमारा या वह सब तुम्हारा बना।

उद्वकवत्से की आँखें बरसने लगी।

यह क्या? रो रही हो बहन। मंगल अवसर पर आसू बहाना नहीं चाहिए। जब चाहो तब इन्हें भेज दिया करेंगे। आप की चादनी की पुतलियों पर ठूटी हवा का झोका तक लगने नहीं देने। हमारे आँगन की शोभा बढ़ाने के लिए तुम्हारे यहाँ से इस दीपशिखा की जोड़ी लिए जा रहा है। इनकी लो कभी मद नहीं पड़ेगी।

पद्मवत्से ने सन्त की नाम ली।

फिर भी हम अभागों की ये ही मनाने थी। अबतक हमें सतान-होना नहीं अगर रही थी जब सचमुच हम अभागों बने।

का गर्भावस्य प्रारंभ हुआ। तब देवगणों ने अव्यक्त रहकर ऐरावती की सेवा की थी। महल में प्रतिदिन सुवर्णवर्षि होने लगी थी। नव मासों के पूरा होते ही ऐरावती के गर्भ-सुधानुवि से शातिनाथ भुवि पर अवतीर्ण हुए। ईश के दशन के लिए देवगण इस पृथ्वी पर उतर आए और उन्होंने जन्माभिषेक महोत्सव मनाया। धीरे धीरे शाति देव का गर्भव और दास्य समाप्त हुआ। यौवन में पदार्पण करते ही शातिनाथ नव मन्मथ से मोहक दिखाई देने लगे। हजारों बन्ध्यारत्न उनके पदतल पर आ लुटे। शातिनाथ ने दिविजय करके छोटी खडो में जना मित्रका जमाया। इस उपलक्ष्य में वृशभाचल पर विजय स्तम्भ पर विजयगाथा लिखवा ने का सक्त्त करके जैसे ही वहा गए तो वहा तल से लेकर चोटी तक पूरवती चक्रेश की विजय गाताए पाई। एक ओर आचय हुआ। दमरी ओर मन में यह विचार उठा कि आखिर मैंने कौन सा बड़ा काय किया है। मेरे पूरवती राजा-महाराजों ने यह कर ही दिया था। ऐसा विचार कर विता अपनी विजयगाथा खुदवाए लौट चके।

इस घटना का बड़े म्दर ढग से पोन्नकवि ने वर्णन किया। शातिनाथ चक्रवर्ती के रत्नवाम में कोई छियानन्द हजार लल्लारें थी। शातिनाथ चन्द्रश रत्नों के अधिनायक थे और पट्टवड के शासक। इस महाभाव को पूर पुण्य से दश त्रिव भोग प्राप्त था। महावर्ति ने इस का ऐसा रोचक वर्णन किया कि श्रोतागण फूँके नहीं समा रहे थे। भीतल महासागर के बीच में जिस प्रकार उष्णोदक का गवाह बहता रहता है उन्ही प्रकार शातिनाथ के जावन के गसरण में तरंगों में ही विरागभाव भी छिपा हुआ था। सद्मदतिवर्तों पात म्दवि ने इस का बड़ा मागिक वर्णन सुना दिया।

एक बार जब शातिनाथ दाग में मन्त्र देख रहे थे तब उनके मन में जन्म जन्मजमाना की स्मृति जाग उठी। समुद्र

वराजमान हुए। इस का वणन सुनते सुनते श्रावक इतने खिल उठे मानो स्वयं भी मिद्धशिला के दर्शन कर चुके हो और अलौकिक आनंद का आस्वादन करते हुए रोमांचित हो उठे।

विवाह ममारोह में सम्मिष्ट मुमगली-वृन्द को भेंट के रूप में अत्तिमब्बे और गुडुमब्बे ने शातिनाथ पुराण की प्रतियाँ दे दी कोई सौ एक प्रतिलिपियाँ बनी थी, अतएव सब को प्रतियाँ नहीं मिल सकी। जिन्हें प्रतियाँ नहीं मिली वे अत्यंत उदास दिखाई दे रही थी। उन के उतरे हुए चेहरे को देखकर अत्तिमब्बे और गुडुमब्बे भी खिन्न हो उठी। मत्तप ने यह सहा नहीं गया। उन्होंने सब के सम्मुख हाथ जोड़कर निवेदन किया कि कृपया कोई निराश न हो। शीघ्र ही हजारों प्रतिलिपियाँ कलाई जाएँगी और प्रत्येक के घर भेजी जाएगी।

यह देखकर और सुनकर पप कवि की आत्मा फड़क उठी वे कहने लगे —

अत्तिमब्बे और गुडुमब्बे कर्नाटक-जननी की दो आँखें हैं।

अपनी कृति की, अपनी आँखों के सामने ही हजारों प्रतिलिपियाँ बनते देखकर पोन्नकवि फूले नहीं समा रहे थे।

अत्तिमब्बे और गुडुमब्बे दोनों ने सब सुहागिनियों के आँचल को मोती और हीरो से भर दिया। इनके भाग्य से अक्षय धनराशि प्राप्त थी। अतः करण उदार था। इस अक्षय पात्र को रिक्त करने में उदारमन असमर्थ बन गया कि फिर भी ये दानचिन्तामणि कहलाई। इन का अंतरंग सम्बसरण से अकिण था अतएव ये सम्यक्त्व च्छादामणि कहलाने लगी।

५

फलों से सजी हुई थाली लिए जब अपनी प्रियतमा को कमरे

रोनो के माथे पर घुबसा हुआ ?

—मागदेब ने अपनी प्राइ स्पष्ट की।

हमें हिस्सा पढ़ाने के लिए एक ओझाजी भाया करते थे।
माने विषय के नामी पंडित थे। हमारा अहोभाग्य है ऐसे विज्ञान के
वरदा से बैठकर यजिन सास्त्र पढ़ने का सीमाम्य प्राप्त था। हमारे
घर पर एक बहुत ही सुंदर बिल्डी थी। उस बिल्डी और उसके
बच्चों को हमने प्यार से पाला था। जब कभी हम बलिष्ठसास्त्र पढ़ने
बैठती तब वे आकर मियो-मियाँ करते ऊबम मचा बैठे थे। एक दिन
ओझा जी को इतना क्रोध आया कि तुरंत बहई को बुलाया और दरवाजे
में दो छेद बनवा दिए — एक बड़ा और एक छोटा। दूसरे दिन हमने
ओझाजी को प्रसन्न होकर पूछा कि क्या एक ही छेद से काम नहीं
चल सकता था ? उस पर बोले— देखो तुम अभी भठकी हो। क्या
इतना भी समझ में नहीं आती कि बड़ा बड़ी बिल्डी के लिए है और
छोटा छोटे के लिए है। उसकी बगीरबाजी सुनकर हम अपनी हँसी
नहीं रोक सकी थी फिर भी किसी तरह हँसी दब कर बोली—

बहा पंडित जी ! बहा छेद से छोटे नहीं निकल सकते ?

इससे पंडित जी का चेहरा लमलमा उठा। बोले— क्या
मुझे मूसरबद मानती हो ? देखो बाइबल बर्रवर्ती ने मूल मण्डितसास्त्र
पारफुट माना है और सम्मान लिया है। ऐसा करते हुए अपने जेब
से सुवर्णपत्र निकाल कर दिखाया। चहरे से उनका आत्माविमान
टपक रहा था। वे बोले ही रहे थे कि एक बात हो गई। बड़ी बिल्डी
बड़े छेद से कमरे के बाहर नहीं गई और उसके बच्चे उसी छेद से
माँ के पीछे चल पड़े। फिर उसी प्रकार आकर मेरी ओर से बोलने लगे।
हम अपनी हँसी नहीं रोक सकी पर ओझाजी भाये से बाहर हो गए।
बोले— वे भी मूर्ख हैं और तुम भी हो। मेरा मतलब ही उनकी
समझ में नहीं आता तो क्या कर — करते करते घर चले गए।

कहानी सुना कर मुस्कुराते बैठ गई।

तुम्हारे ओझाजी का व्यावहारिक ज्ञान थोथा था।

— नागदेवने ओझा जी की मूर्खता पर तरस खाते हुए कहा।

खैर, वे इस दृष्टि से कुछ भी हो, पर आप तो व्यवहार कुशल हैं ?

— फिर मुस्कुरा उठी।

इस क्षेत्र में कौन मेरे टक्कर का है ?

बिलकुल सही बात है। इसी लिए तो आपने दोनों के माथे पर नाम खुदवाने की योजना बनाई है ?

कुछ तो करना ही था। अगर यह बन जाय तो दोनों को पहिचानने में बिलकुल दिक्कत नहीं रहेगी।

— नागदेव ने दृढ़ता से दुहराया।

जी, क्या एक के माथे की खुदवाई में दोनों को पहिचानते नहीं बनता ?

कैसे ? बताओ तो सही ?

खूब ! खूब !! आप हमारे गणितशास्त्र विशारद के बड़े भाई साहब हैं !

यह बात सुनते ही नागदेव को अपनी बेवकूफी समझ में आई। खुद हँस पड़े। तब तक दसरी भी आकर उसकी बगल में बैठ गई। नागदेव के आनंद का पारावार उमड़ने लगा। सौंदर्य-राशि के बीच में अपने को पा, फूले नहीं समा रहे थे। एक को देखने के लिए दो नेत्र कम थे तब दोनों के सौंदर्य देखे कैसे ? दोनों ललनाओं ने महीन साड़ी पहनी थी। ऐसा लग रहा था मानो नन्ही सी लताएँ चादनी के परिधान में इठला रही हों। दोनों चादनी को साचे में ढालकर बनाई गई पुतलियों सी लग रही थी। नागदेव के दोनों हाथों में सौंदर्य की दो पुतलियाँ थी। कस्तूरी पर सान चढ़ाए कुसुम-शर के समान ये दोनों कुम्भ कोमल लतागिनियाँ थी। अत्तिमब्बे और गुडुमब्बे के

माता नागदेव । मन्त्री विगल गिर । गम्भीर उवाच । तस्मिन्
 कृता । ए । त्वं कृतकृत्यासी इति की नायदेवी । वे माता नागदेव
 रोष रता वा । उन बानो ने नागदेव को नृप रमाया । बाना जब नागदेव
 के कबी पर मि रग कर बैठ गई तो नागदेव दांतों के मिर पर
 अपनी झपुली करने करने । माधित हो उर और वे भी आपाव-मन्त्रक
 मित्रर उनी ।

5

विवाह के पश्चात् एक महीना बीता । मन्त्र्य न उनसे बामार
 को आगत-पूर्वक घर पर उद्वग्न के लिए चुपी कर किया था । इसर
 अतिमवे और मुहमब्ब नित्य गए गए इन से उनकी रगरेस्त्रो में
 रग बना रही थी । इस विद्या में बानो ने हाथ लगी हुई थी । पति
 के साथ हर बात में प्रतिस्पर्धा करती हुई बाना रगभियों न उन्हें अपन
 हृदयपर बना किया । कभी पति के साथ बन बिहार करती और
 कभी जल-झीला करती जिस से कि उनका प्रयत्न सूझने न पाव । इन
 प्रयत्न रगिकावा ने एक बार बन्प से ऐसी टकार मित्राल की जिससे
 नागदेव का सारुष भी पड़क उठ्य था । इसी प्रकार बानो नृपाप-हन्त
 होकर अपनी विद्या बिकाने लगी । नागदेव को ऐसा लगा कि ये
 देवियां तत्कारों की छाह में लगी हाकर उन्हें नृपा रती हैं । जब
 कभी दोनो बीना के तागे से विविध स्वर छेड़ती तो नागदेव फूले
 गही समारो बे । उनके कठ से निकलनवासी स्वर कइरियां मरिक्का
 प्रकट से भिगक कर आनेवासी ठंडी हवा थी सुक्य लवती थी । वे इस
 प्रकार मर्जनाएँ टेडती मागी पारिजात की गड शिवाकर चारा ओर

हमारे बीमा करा के छोड़ना तक नहीं था। जब शपथियों का रसरंज
 खमी दिन हुआ रात चौपुना बह रहा था। ऐसे समय में पुनर्मय
 की भाव आई। विवाह मंडप में ही धरती उतारी गई। मस्त्रप न
 पिता को को शिवा था जब आई से भी बधित हो गया। अपने को
 जनाब समझत गया। मस्त्रप के लड़कों के लिए पुनर्मय पिता न
 भी बहकर प्यारे थे। जब वे रो रहे थे। पुनर्मय मस्त्रप के का
 रीवर था। पर उनमें आई बहुत का-सा प्रेम था। उधु के शोक का
 पारवार प्रभुत्व हो उठा। कौसल्य के चिन्तु-भी रो रही थी। छाती
 पीट पीट कर रो रही थी। अतिमध्य और नुडमध्य पूरों की धम्या
 से उठकर बाहर आई। अते ही इन्हे यह भीकर दृश्य बंजना पड़ा।
 उन पर मानो बन्ध ही दू पड़ा। जीवपूर्व पर प्रतिष्ठानों का
 भीकर परिवार भीखो देखा गया। वे शोक रही थी कि परीव भी मरते
 हैं पर उनकी मृत्यु सहज होती है। पर पर प्रतिष्ठान प्राप्त व्यक्ति
 भी मरते हैं कहां? कैसे? और कब? - यह कल्पना कठिन है।
 उनको अकाल में ही मौत का बरती है। यह कहीं बिजबना है।
 वे रो रही थी। उन नम्यानों का रोना सुनकर परपर भी पिबन
 जाता। स्वभावतः दुःख सामयिक होता है एक का दुःख दूसरे
 का दुःख क्या होता है।

नामदेव अपनी प्रसक्तियों के दुःख से दुःखी थे। वे भी जानू
 रहा रहे थे।

पुनर्मय भी पिता सबाई गई। कौसल्य के सहस्रमन की टैप्यारी
 करने लगी।

क्या कहिए हमें छोड़कर जसे जाकोनी ?

-- कौसल्य के को कानी से कनाकर अन्धक के धोक कातर हुई।
 बीबी। मृत्यु से को भी अचरित हुआ हो तो क्षमा कर देना।

कौसल्य के निर्विकार चित्त से बिगती कर रही थी।

वहन ! तुम सचमुच मेरी सगी बहिन ही थी । मुझसे कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा करो । भूल जाओ ।

अव्वकव्वे का गला रुध गया । दुख अपार था ।

अत्ति ! विदा दो ।

इतना कहते कहते कौसलव्वे का गला बैठ गया । आगे बोल नहीं सकी ।

मां ! क्या हमें अनाथ छोड़ दोगी ? हमें ससुराल भेज देने तक कम से कम रह जाओ ।

— अत्तिमव्वे ने रोते रोते प्रार्थना की ।

गुडू बुम्हें तो छोड़ते नहीं बनना । पर क्या करूँ ?

— कहते कहते कौसलव्वे चटपटाने लगी ।

चाची ! दादा के बाद तुम ही हमारे लिए सबस्व थी । अब हमें अनाथकर जाना चाहती हो ।

— कह गुडुमव्वे रो पड़ी ।

मल्लप की अन्य सतानो ने भी ऐसे ही दुख शोक में चाची को विदा किया ।

चिता पर पुन्नमय्य की पार्थिव देह धरी गई ।

मल्लप ने अग्निस्पश करा दिया । सूखी लकड़ी धाँय धाँय कर जल उठी । कौसल्यव्वे ने चिता की परित्रमा की और हँसते हँसते उस पर चढ़कर पति की बगल में गलवाही देकर सो गई । चिता की लपटों ने थोड़े ही समय में सति-पति के दोनों शरीर को स्वाहा कर दिया ।

अत्तिमव्वे और गुडुमव्वे ने समझा कि नारी-जीवन का अर्थ आँसू है । अभी विवाह की हल्दी सूखी तक नहीं थी दोनों ललनाओं को स्त्री जीवन के भयंकर परिणाम से अवगत होने का मौका जा पड़ा । दादा के मरण से ही दोनों खिन्न थी । उसे किसी तरह भुलाने का प्रयत्न कर रही थी कि चाचा की मौत हो गई । इसने भी भयंकर

वा धार्ज वा सह्यमः । दादा न दादा-पानी छाँकर मय का स्वागत किया था । अब तो बाभी को हुम्ने हुम्ने जम्नी बिना पर चढ़ते देखा । इतम बहू सहा मही गया और जब बाभी को राक्षस के उद्देश से ये बात बही मुख और जाना न इन दोनों का कगड़कगड़ किया । य ऊँच मही कर म । एक को धर्म के नाम पर मरते देखा था तो दूसरे को ममदाय के नाम पर । क्या मौल बिबयी म भी प्यारी है ।

७

बूँदियाँ पाछी बूँदिया । जान पीका काये नीली बूँदियाँ ।
सुहायिनिदा की सुहाय बडे — बूँदियाँ ।

यह दर्शन मनकर पद्मवती ने पीकरानी को भंडकर पूँडीबाने को बसा लिया ।

कहाँ के खनेवाले हो ?

यह पत्र सनने ही पूँडीबाने घुँटी ने ऊँ से अपना बोन उताया । सबी घोंस छोड़ी और बही बैठ । बगने म बहुत बहा मारा मप रहा था ।

क्या बहुत दूर से आए हो ?

— पद्म व ने फिर प्रश्न किया ।

जी हाँ पेट के बास्ने गता पड़ता है ।

— जग मनील उवाच हो कर कहा ।

मेरी बहूबा को बूँदियाँ चाहिए । पहले मायाम छो—

कहनी मुई पद्मवती ने छाक मारा कर पीने दिया ।

छेनी को बहा जानव देमा । उसे पीकर बसीस दिया

मा ! तुम्हारा घर फूट फले । मरना पड़ रहा है ।

तब तब पद्मन्वे ने अग्नि' कह जावाज दी । नगरानी ने बिछाए गए मग्नमली दरी पर जन्मिन्म आ पड़ी । उस के हाथ में किमी तेल की दो चार उद नार पर अच्छी तरह मल लेने की मरहा दी गई । उस मर-मुदरी का हाथ अपने हाथ में लेकर खूब मल मल कर मुलायम किया । हाथ पर ठीक वैटनवाली चूनिया छान कर पर दिया । उसके पमद की चूनिया को लेकर चटाने लगा । एक साथ चार चार चूडियाँ चढाता था । और मन बहाने ने शिफ डवर उधर की वागे भी खूब कर रहा था । यो ही महज कोमल हाथ पर ओपनि मिश्रित तेल डाल देने से और भी कामल बने थे । चडिया चग देने में कोई कष्ट नहीं हुआ । हाथ भर चूडिया पहनाइ ।

देख ! इन दिनों में कंगी चूनिया बनती है । घड़ी दा घड़ी भी हाथ पर नहीं टिकती ।

पद्मन्वे ने कहा ।

लेकिन माँ जी, मेरी चडिया ऐसे नहीं होती । देख लीजिए ।

— सेट्टी ने उत्तर दिया ।

हाँ, ऐसे ही तो हर कोई कहना है और पैसे ले जाता है ।

— पद्मन्वे ने अनुभव की बात बताई ।

इस बार परीक्षा कर देखिए । पहली बार मरहा आया है ।
कहाँ से आ रहे हो ?

बहुत दूर से । क्या जमखडी का नाम सुना है ? उसके पास मुदुवोळलु नामक गाव है — वही मेरा जन्मस्थान है ।

ओहो ! दूर से आए हो ! क्या चूडियाँ ढोकर इतनी दूर पैदल आए हो ?

ढोकर तो नहीं आए । हमारे पास एक बैग है । उस पर चडियाँ लादी जाती हैं और हम तीन जादमी उसके पीछे पीछे जाते हैं ।

— कहते कहते अत्युत्तम चूड़ियाँ चुनकर चढ़ाने लगा।

सुनो, आज शाम का भोजन हमारे यहाँ करो। अपने दोनो लडको को भी साथ बुला लाओ।

— पद्मवत्से ने न्योत दिया।

आप कितने अच्छे लोग है। आप ही के यहाँ मेरे दुर्भाग्य ने मुझे झूटा ठहराया। खैर भाग्य का फेर है।

— जिनवल्लभ की ध्वनि में आत्मग्लानि थी।

गुडुमवत्से चूड़ियाँ घर चुकी थी।

शाम को आओगे न? कहते हुए पद्मवत्से ने दाम दिया।

भला आप की आज्ञा टाली जा सकती है?

कहते कहते जिनवल्लभ जाने लगा। और रुककर बोला —

आपने दुगना दाम दिया है। जो टूट गई टूट गई, उनका दाम मैं कैसे लूँ। धम-कम की बात तो सोचना चाहिए।

आधा दाम लौटा दिया। तब पद्मवत्से बोली —

रख लो। यह चूड़ी टूटी नहीं यह दोनो यमज सतान हैं।

क्या सच है। मैं तो बिल्कुल नहीं पहिचान सका। या आप की भानजी हैं?

— बात काटकर जिनवल्लभ ने पूछा।

मेरे पुत्र नागदेव की दहलए हैं।

क्या दोनो सौत हैं?

जी हाँ, हम अपने पुत्र के लिए कन्या मागने गई। हम इन में से एक को भी पाकर सतुष्ट रहते। पर भाग्य ने दोनो दिया। बात यह हुई कि दोनो बहिनो का जाग्रह था कि हमारे पुत्र से ही विवाह करें। मेरा मन इनका परस्पर प्रेम देखकर पिघला और हमने स्वीकृति दे दी। हमारा पेटा कभी हमारी बात का उल्लंघन नहीं करता। ये मचमुच मोने की पुतलिया हैं और हमारी जाँखो के तारे। मेरी ब

गद्दी बेंटी है बटी।

इस प्रकार पद्मसम्ब न स्त्री-स्वभावानुसार छोटा सा भाषण ही ब हाजा।

माँ की आप का अहोमात्म है। यक्षस्वती और मूनदा ही बहुएँ मिली है।

— कह कर वह बूढ़ीबाका पल पडा। उसका मन आश्चर्य चकित था।

सूर्यास्त से थड़ी भर पूर्व ही दिनवन्धन अपने हलों बेंटी के साथ बस्त्र के यहाँ आया। बस्त्रप हनकी प्रतीक्षा कर रहा था। यद्यपि बस्त्रप महामात्य का अधिकार का सब इनके सिर गद्दी चडा था। मानवोचित सूत्रों से हाथ गद्दी जो बँठा था। अपनी सब सशक्तियों की बात रखने कीबिए कोई भी अतिथि भोजन के समय जाता तो उसके साथ ही भोजन किया करता था। यदि अतिथि बर्म माई भी होना तो उसके साथ वस्त्र में आए बिना नहीं कोहता था। पद्मसम्ब पति के योग्य पत्नी थी। पति की मानवीयता का पीपन बड़े यत्न पूर्वक करते आई थी और अपने घर को सुसंस्कृति का केन्द्र बनाने में कोई कसर जाने नहीं देती। बहुएँ जो आई थे तो रत्नवृष्टि करनेवाके नागमय्य की पोतियाँ थी। ज्वारता की पृथिव्याँ थी।

आजो दिनवन्धन।

— बस्त्रप ने चिरपरिचित से उनका स्वागत किया।

तीनों ने हाथ मूँह बोया। जैसे ही हाथ मूँह भोकर स्नानाचार से बाहर आए तो देखा कि बस्त्रप स्वयं तीक्ष्ण किए सेवा प उपस्थित है। महामात्य की इस सम्मनता ने दिनवन्धन पर कभीर प्रभाव डाला।

कहा वह बोनी तुम्हारे पुत्र है ? — बस्त्रप ने प्रसन्न किया।

जी हाँ यह जो बडा लडका है राक्षस्य है और यह छोटा रज।

ये ही दो सताने है वा और भी है ?

जी ! इन दोनों के बीच का एक घर पर ही रह गया है ।

— जिनवल्लभ ने कहा ।

राज्य आजानुबाहु और गझीछा बदन का था । रत्न केवल तेरह वर्ष का तरुण था । चेहरा बड़ा अकर्षक था । उस पर ध्रुवतारा से दो नेत्र चमक रहे थे । ये तीनों गरीब अवश्य थे पर दानता उन्हें छू तक नहीं गई थी । इस कारण से स्वाभिमान उन में कूट-कूटकर भरा था ।

दल्लप तीनों को घर के अंदर ले गया । एक साथ भोजन करने बैठे । सोने की थालियों में खाना परोसा गया था । ज्वार के सफेद फुलके और कई प्रकार की साग-सब्जियाँ परोसी गई । अत्तिमब्बे ने जब ताजा घी परोसा तब भोजन प्रारंभ करने की प्रार्थना की गई । सब भोजन करने लगे । ऐसा राजभोज पाकर रत्न अत्यंत प्रसन्न हुआ था । उसके आनंद को कौन कहे ? फुलको के बाद बढ़िया भात और रस परोसे गए । और उस पर दो चमच घी दिया गया । सब चुपचाप खा रहे थे ।

रत्न को यह रस तीता लगा । एक बार रत्न के मुँह से सहसा ची ची शब्द निकला । तुरंत अत्तिमब्बे आई और वात्सल्य भरे स्वर में पूछा —

कहो भैया क्या चाहिए ?

जोजी ! रस कुछ तेज लगता है । मुझे और कुछ घी दे दो । निस्सकोच भाव से रत्न ने घी माँगा ।

जिनवल्लभ को यह बुरा लगा । अपमानित सा आहत होकर रत्न की ओर कुछ क्रोध पूर्ण भाव से घूरने लगा । दल्लप ने उसे ताड़ा । अत्तिमब्बे तब तक घी लिए आई ।

दल्लप ने उससे कहा—

देखो बेटी ! बड़ों के साथ वच्चों को नहीं परोसना चाहिए । वच्चे निरातक भोजन नहीं कर प्यने । इस वच्चे को साथ ले जाओ

दीर्घ अरु ही त्रिभाषो ।

अतिमन्त्रे अ बत मन्त्रा हा रम्भ का हाथ पककर अरु से गई। कामदेव के पीछे बछनबासे बास के समान यह रम्भ चला। रमाई घर में उस बिठाया। वही उसका पीका म्मा। वह बतला क्या है बागो ओर तरु तरु की मिठाइया सुजाकर धी गड ह। एक बार बागो ओर बंसा। इतना सुन न हुआ माना कपयुध का छाया में बैठ हो। अतिमन्त्र के कृत्य में सुष्ठु ही तापुशात्मन्व उमड़ रहा था। वह पास ही बैठकर अपने हाथ से बहुत पर यह बास सवारि हुई सिजान छली। बीच में एक व प्रिजाना की —

रग गुम्हरा नाम क्या है ?

मेरा नाम रत्न है। पर प्यार से मा रत्न का । रानी प्र ।

— बड़े गठ से बजाय दिया।

बच्चा ! रत्न रत्न ही बहुत सुंदर नाम है।

— अतिमन्त्र न बख्ख्या ली। और प्या से बोली —

बैय्या बजाओ नहीं। जो चाहो माया। माइ पूरी पिरोटी पकोडा भादि यहाँ जो कुछ है उस में जा पादो निस्मकोच सँको। मैय्या अब क्या है ?

रत्न को कुछ नहीं मन्त्र रहा था। अपने पर में अकनक अरु की रोटी के सिवाय और कुछ भी दान नहीं देया था। रत्नों में केवल करसानी की पचड़ी बनती थी सो भी कभी कभी। रूप रही मादि का नाम सुना जकम्भ का पर लाया नहीं था। बड़ी भाइ करने सामने अनगिनत माति के पकवाणो का दर देखा। क्या माया जाम ? पका या तरा बचारा क्या से क्या नहीं के ! समग्र मीत्रिण उस समय रत्न की बजा ऐस ही नी जैस नव रत्नो की राशि के । १२ मरीच पहुँच गया हो और उस जो चाह के जाने की अनुमति मिली हो।

क्यों चुप हुए ? माग लो जो चाहे।

अन्तिमव्वे ने प्यार से फिर फुसलाया।

तुम जो अच्छा समझो खिलाओ वहन।

— रत्न ने सहज ही उत्तर दिया।

अन्तिमव्वे उसकी मनोभावना से जवगत हुई। गुड्डुमव्वे ने बोली—

देखो वहन, मठ पक्वान्ना को थोड़ा थोड़ा चखा दो, वाद को जो भी पसंद करे खिला देना।

दूधरे कमरे में एक बाली भर मिठाइयाँ आईं। इनकी ओर देखते ही बनता था। क्या ही बढ़िया सजावट थी। रत्न के मुग्ध चेहरे पर निष्कलक जाभा चमक रही थी जिसे देखकर गुड्डुमव्वे प्रभावित हो उठी।

जी-ी ! यह कितना सुंदर है देखो।

बहती हुई बँठ गई और प्यार से एक एक का नाम और स्वाद बताकर खिलाने लगी। इन दोनों स्त्रियों को अपनी औरस सन्तान को प्रियान वा-सा आनंद मिल रहा था। उनका अतृप्त मातृत्व आज कृतकृत्य हो रहा था। इधर रत्न भी खूब खाकर अघाया। अपनी निदगी में उनका धी कभी नहीं खाया था। उनका दूध भी नहीं पिया था।

रत्न तुम क्या पढ़ रहे हो ?

अन्तिमव्वे ने सहज ही प्रश्न दिया। यह बात काना पर पड़ी कि नहीं रत्न की जाग्रो से जास उमड़ पड़। दो-एक बूँद गालों पर भी पड़ी जिन्हें अन्तिमव्वे ने देखा। वह चांगी। जो कल्पवृक्ष पर चढ़े हुए में जानकर मग्न था वह एकाएक उठा वे फिस्कर गिरे हुए सराने लगा। क्या ? क्या ? क्या बात है ? क्या रो रहा है ? अन्तिमव्वे चला गया उठा। गुड्डुमव्वे जाती जानती आवाज से उसे उसका नाम पुकारा। —

यह ही अपनी बीबी के साथ था। वह गुन्मय के मह
त निकला —

बीबी ! तुम कम खाओ और चावनी । हाथ लो । मनुष्य
सादर हो । चाव । कुछ कहें ।

तुम सो जाओ नहीं । मैं तुम्हें देखने लाता हूँ मन्त्री ।
यदि इस तरह की रही होगी ।

अब मैं का हाँ का दिना ।

तब तो मैं सास बी तुम्हें । मैं पहन की उम्मापन
एक छोटी लड़की । काम में लगा । तो बना सस्याप होगा ।

गुन्मय व रहा ।

रत्न की चिन्ता हर काम के लिए अतिमय न जा जान
रिवा और बड़ा —

रत्न चिन्ता न करो । तुम हमारे परी रहें जाओ । हम
पहले ही प्रदय करेंगे । तुम के बारे में सोचो ।

रत्न की बाबों से शान्त का कबाग ही पू निकला ।

रत्न जीवन समाप्त कर गया था । भय में दृष्टि में हाथ
निकलती है । सी प्रकार अतिमय न दूर उसका हाथ पुराना ।
गुन्मय में अपने जीवन में पोछा । इन माताओं के साथ रत्न चिन्ता
बन गया । उनके किसी काम का विरोध नहीं किया । यह विनम्र के
समान सब का स्वीकार करते जा रहा था ।

इस विनम्र को अब घर स्वयं में रहने का-या अनुभव
हो रहा था । एक तो दरवाजे की पकड़ में भोजन हुआ । बाह को
एक साथ याद कर जानूँ-बर्षन करने छय । बैठने के लिए पहिया
मकाम में बैठ जा रही बार बाधन था ।

यह सचय की धारी हुई है

रत्न ने समापन आरम्भ किया ।

जी, हुई है, जब छ सतानो के पिता भी है।

खिन्नता उसकी ध्वनि में थी।

बहुत अच्छा ! हर्ष की बात है कि कुल-श्री बढ़ रही है और बढ़ते जाय ! दूसरे लड़के का ?

जी हाँ। पिछले ग्रीष्म में उसका विवाह किया।

छोटा अभी पढ़ रहा होगा ?

जी नहीं ! कहाँ हम और कहाँ पढाई ! गरीब हैं। सोचा कि अभी से अपने घघे का परिचय करा दूँ और इसीलिए साथ लिए फिरता हूँ।

ओहो ! यह तो ठीक नहीं। अभी बच्चा है। सर्दी-गर्मी में यो दुमाना ठीक नहीं है। — दल्लप ने कृष्णा में कहा। कुछ देर बाद फिर बोले—जिज्जल्लभ जी ! आप हमारे अतिथि है। हमारे घर का संप्रदाय है कि पहले अतिथि को भोजनादि से सत्कृत करेंगे बाद को कुशल भेज पूछकर परिचय बढ़ा लेंगे। मेरे दादा और परदादाओं के जमाने से यह बात चली आ रही है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य होते हैं। आप तो श्रावक हैं। योग्य सेवा करने का सु-अवसर दीजिए। निस्संकोच कहिए, मैं आप की क्या सेवा करूँ ?

दल्लप ने कहा।

जी ! अब कुछ नहीं चाहिए। आप के सत्कार और सौलभ्य से मैं सन्तुष्ट हूँ। अब लोभ न बढ़ाइए। यह अनुचित होगा।

जिज्जल्लभ ने उत्तर दिया।

आप अतिथि हैं। यो ही भूले भटके हमारे यहाँ पधारें हैं। गेभ बढ़ाने की बात नहीं, दैव योग से कुछ ले देने की स्थिति में हूँ। जान लूँ तो जो कुछ करते बने करूँ।

दल्लप ने जाग्रह पत्रक प्रायना की।

आप जैसे उदाररिया को हमने देखा ही नहीं है। हाँ भी तो

की लाय या उस लाय में उपाय। आप महाभाग्य है। आपमें हमारे जैसे सामान्य व्यक्ति का पगल में बिटाकर भाजन किया और कष्ट प्रप्त किया—इससे बहकर और क्या चाहिए। मोन की बाभी में महाभाग्य के साथ भोजन करना ही सबसे बड़ा लीभाय्य है।

बिनबन्धन हुआ काम से बोल रहा था।

वह तो हाँ बरा। जब सांग की कहिए। हममें और आप में क्या अंतर है जो कुछ है वह केवल भाग्य का फल है। वास्तव में ऐसा ज्ञान तो क्या हम एक ही पाठि के नहीं? जीवमात्र पर क्या विचारने का आदेश महावीर प्रभु न दिया है। आज मैं धीमग्न अवस्थ हूँ। पर एक की बात कौन जाने? अब भी महावीर प्रभु के आदेश की ध्यान में रहकर हो-एक व्यक्तियों की सहायता नहीं की तो क्या बड़ा अपचार नहीं होया? और एक बात में स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। जो उपकार की बात कह रहा था वह किसी उपकार को अनङ्ग्य करने के लिए नहीं इस में मेरा ही स्वार्थ छिपा है। अपने ध्येय के लिए करना चाहता हूँ। आप मधुसूत अपने हृन्मनुसार कुछ मायकर मुझसे से छ तो मैं अपना बहोभाग्य समझूँगा।

महाभाग्य की बात हृदय की सच्चाई का प्रतिफल का रही थी। बिनबन्धन इस बन्धन-कल्पकता के सामने गठ-मस्तक हो गया। क्या मर्दे? किन्ता मरे? कुछ नहीं सूझ रहा था। सोचा कि राम के अविनय का कुछ ठिकाना क्या ज्ञान तो पर्याप्त है। ऐसा विचार कर बोल —

प्रभो! मेरे शरीर का सङ्कट क्या है। अपना पेट भर किसी प्रकार कमाले हूँ। सबसे छोटा जो है वह बड़े दिग्गज अवस्थि है। उसे आप की मोच में रख दिया। आप जो चाहे कीजिए। उसका मार्गदर्शन आप पर है। मैं यह भी चाहता हूँ आप उससे कुछ काम लें और हम रीखी की आवश्यकता पर करने के लिए ज कुछ बैठ बने कीजिए।

इस प्रकार जिनवल्लभ ने एक पत्थर से दो पल गिराने का यत्न किया।

किसको छोड़ने की बात कहते हैं? उस छोटे लटके को जो हमारे साथ खाने बैठा था?

जी हाँ।

ठि। वह क्या काम कर सकेगा? यदि ऐसे वालों को नौकर रख ले तो परमान्मा की आँखों में हम अपराधी नहीं होंगे? आप चाहे तो इस बड़े लटके को ही यहाँ छोड़ जाइए। सेना में हम के योग्य पद दिला देंगे।

प्रभो, अपना कहना भी ठीक है। पर हम बड़े गरीब हैं। यह नौकरी करेगा तो क्या पायेगा? अधिक से अधिक अपना पेट भर लेगा अथवा बड़े बड़े नगरों में रहने के कारण संभव है कि अपने घर गृहस्थी को किसी भाँति चला पाएगा। पर हम वृद्धों का दया कर सकेगा?

ठीक है। आप का कहना यथार्थ है। पर इस मुनू को कैसे काम पर रख लें?

— दल्लप ने अपनी चिन्ता स्पष्ट की।

आप किसी भी काम में लगाइए। चिन्ता बर्बाद करते हैं। जब वह कुछ सीख लेगा और जब आप समझेंगे कि यह कुछ योग्य बना है तब आप जो पसंद हो देना प्रारम्भ कीजिए। तब तक हम कुछ नहीं माँगते।

अच्छी बात है। आप कम से कम इतना तो कह दें कि आप उसे क्या बनाना चाहते हैं?

हम क्या चाहेंगे। हम गरीबों को चाह करने के लिए कुछ फुरसत मिले तब न। हमारी चाहे रोटी कपड़े तक सीमित रहती है। इन दोनों के अतिरिक्त हमें और कुछ मशाना ही नहीं।

— इन पाँचों में गरीबी की शरम कड़ानी मूना दी ।

तब मोहित क्या प्रसन्न उसे रसोई घर में स्त्रियों के काम में हाथ लगा के लगा है । प्राण की कोई आपत्ति तो नहीं ।

बिनबल्लभ के बहूत घर का भाव पड़न की इच्छा में उस घर में ही गलत होता है ।

औ ! क्या ध्यान घर में जीवित जीव बाड़े जो काम दीवित ।
बल्लभरहित महाशय के दरबार में दीवान बनने की शरणा दयाम के
घर का दरबार बनना योग्य है । कम से कम मैं तो यही समझता हूँ ।

— बिन बल्लभ ने अपना बिचार सुनाया ।

तब तो ठीक है । आज से रस रमाए बना । घर में पड़ना छ
करके उसका बैसन छुट्टाएँगे । आप इस ओर फिर क्या आएँगे ?

बल्लभ ने प्रसन्न किया ।

हफ्ते भर दूर उबार फेरी लगा कर अपने घर लौट जाने
का बिचार है । घर जाने के पहले यहाँ आकर आप के दरबार में ।

बिनबल्लभ ने अपना करंक्रम सुनाया ।

तो कम आज हमारे यहाँ भोजन करके जा सदा है ।

— इनका कहकर बल्लभ उठे ।

बिनबल्लभ ने रस से अपना बिचार कहा । रस का चरित्र
जिस उठा । सोचा कि अपनी छोटी समस्याएँ एक कम दिन गई ।
इस कारण से वह फूट नहीं समाता छया । पर इसका बल्लभ ने जैसे ही इस
शान का बिक्रिज तो पड़म से ने अपना विरोध व्यक्त करने शुरू कहा—

क्या उस तरह से हम रसोई का काम करेंगे तो इसका
परीच है । हमें कुछ सोच समझ कर ही काम करना पड़ेगा न ?
कोन उक्त विगके माध्य में क्या क्या रहना है ? समझ है कि यही
आने बल्लभ इस बल्लभ में जानने योग्य महाशय बन छया है ।
जाना मोक्ष कर बैविए भिन्न काज पुरुष में पड़ नहीं दिखने ?

ठीक कहती हो । मुझे भी यह बात मालूम । यह न समझान कि मैंने इतना भी नहीं सोचा । पर एक बात है । इस के पिता बड़े कष्ट में है । यदि हम नहीं रख ले तो इसे और किसी के यहाँ नौकरी पर लगा देगा । उसको पंसा चाहिए । इस कारण से मैंने सोचा कि इस लड़के से आखिर क्या काम करते वनेगा ? फिर भी किसी घर के काम का बहाना बनाकर रख लिया तो उसके पिता के अभिमान को टेंन नहीं लगेगी । चाहे तो तुम अपनी बहूओं से कहकर इसको पढ़वाओ लिखवाओ तब पता लगेगा यह सच्चा रत्न है या कोरा काच का टुकड़ा है । योग्य हो तो जो चाह बने । हम उसके दायाद लिलादगे । कौन कहता है कि यह अत तक रनोदया ही बन कर पड़ा रह ?

बालन की बात सुनकर पद्मव्य ने अपनी स्वीकृति दी । रत्न को रख लेने की बात तै हो गई ।

इधर नागदेव ने सबेरे का नाश्ता किया । अतपुर मे उमे पान लगाकर खिलाती हुई अत्तिमव्वे ने कहा—

आप से एक निवेदन करूँ ? आप से मैं ना नहीं सुनना चाहती । आशा है कि आप अवश्य मेरी बात मानेंगे ।

इन बातों को अत्तिमव्वे ने इस ढंग से कहा कि सुननेवाले का मन सहसा स्वीकृति दे बैठे । और एक बात थी । आज तक कभी इन दोनों बहिनो ने कुछ नहीं मागा था । क्या मागे ? गहना कपडा तो ढेर का ढेर पडा था । छोटी-मोटी बातें पद्मव्वे से कहने पर पूग हो जाती थी । नागदेव को कभी यह सौभाग्य या सु-अवसर प्राप्त नहीं था कि प्रेयसियों की माँग पूरी कर सतुष्ट हो । अब जैसे ही यह प्रार्थना सुनी वह खिल उठा उसे आश्चर्य भी हुआ और अपार हर्ष भी ।

अनि । यह क्या मेरे सामने यो, क्यों गिड गिडाती हो ? तुम्हारी इच्छा जान कर अब तक मुझे ही उसे पूरा कर देना चाहिए था । पर क्या करूँ, मैं योद्धा हूँ, रनिक नहीं हूँ । म्हो तो

गमभी गुम्ह क्या चाहिए ?

— प्यार न नागवैब न उसका हाथ अपने हाथों में भिन्न
बधाया ।

स्वामी ! आप इतना क्यों मन में ऊन मानते हैं ? जब स
में और दुः इस घर में बाई है तर न हवे आराम ही न राम है ।
हम समझती हैं कि हम असुराज्य में नहीं सुनकर की छाया में हैं ।
आप की माँ हमारी भी माँ है । माँ सँ बचकर प्यार करती है ।
आप के पिताजी तो हमारे स्वर्गीय बाबा को मकान में समर्पण हुए
हैं । इतना सादर प्यार करते हैं । रही आप की रुचिकता ! आप रसिक
नहीं होते तो क्या बो बो स्त्रियों को सुवा प्रसन्न रख कर समाप्त
करते थे ?

प्रिये ! तुम और बुद्ध दोनों माँझी की मजदूर हो । और
तुम्हारी सब शक्ति तुम्हारा सबक है । क्योंकि बैब मकान जहाँ भी
होवे बरतों को बकायत की छाया में ही मानते हैं । अतएव यदि तुम
वहाँ आगम स हो तो इसका अर्थ तुम लोगों के सात्त्विक स्वभाव
को मिटना चाहिए न कि मने । यदि मुख्य कमी पूरक हो आप
तो तुम दोनों में यह वेना है कि बो ही मर सहे वेना । नृते
बदाकर छड़ी जस्त प में बछना । यह घर तुम दोनों पर है ।
बुनिया आनती है कि मैं रणवीर हूँ और कर हूँ फिर भी पूर्व
कर्म के धुंझ का फल तुम्हारे रूप में मिला है । यही मेरी चारपा
प । नम मेरे आत्म की कल्पकता हो ।

— ऐसा कहते हुए अस्मिन् के माक प मीठी चुम्बी ली ।

बात मया बैब में आप बड़े बूढ़क है । इसमें मिरूप होता
है कि आप केवल रणवट ही नहीं बाकपट भी हैं ।

— कहकर अतिमन्त्रे हँस पड़ी ।

तब तो अमली बात पर आओ प्रिये ।

— कह नागदेव भी हँस पड़े।

हमारे यहाँ एक नया लडका आया है —

हाँ हाँ आया है। वही जो आज स्नानागार में तौलिया देने आया था। — नागदेव ने बात काट कर कहा।

जी हाँ वही।

अच्छा ! अब कहो क्या बात है ?

जानते होंगे कि इसके पिता ने उसको हमारे यहाँ नौकरी पर छोड़ रखा है। क्या वह रसोई का काम सीखे ?

यह बात है ! तो सीखने दो। तुम भी सिखा दो। ऐसी बातों में मैं कभी दखल नहीं देता। घर के अंदर की बातों को मैं क्या जानूँ ? तुम लोग देख लो।

अपनी बात कहने देंगे कि नहीं ?

कहो कौन मना करता है। तुम चुप हो गई तब मैं बोला। क्या बात कुछ टेढ़ी है ? खैर, जो भी कहो तुम्हारी बात अवश्य मानी जाएगी।

नागदेव ने आश्वासन दिया।

बात यह है कि लडका पटना चाहता है। वे गरीब हैं, पढ़ा नहीं सके। इसी लिए उसे हमारे यहाँ काम पर लगा दिया है। लडका तेज है। प्रायः पढाई में भी तेज निकलेगा। आप चाहें तो

क्या मैं उसे पढाते जाऊँ ? उस तुम्हारी बात मैं मानूँ तो उसकी भलाई नहीं होगी। याद रहे यदि मैं कुछ पढाऊँ और वह याद नहीं करें तो मैं अवश्य आगे से बाहर हो जाऊँगा और कह एक जमाद तो चारों खाने चिन हो जाएगा। अर्त्ति, तुम अपने पति को जितना कोमल चित्त या मृदुल गात्र समझती हो वसा वह और मे नहीं माना जाता। मेरे सैनिक मुझ देखकर थर थर कांपते हैं। महाराजा तक मुझमें बोलते समय सजग रहते हैं। मेरे साथ मनचाही

रमणा तुम्हें क्या जानिए ?

प्यार से नामस्मरण न करना हाथ अपना हाथों में लिए

बनाया ।

स्वामी ! आप इतना क्यों भय न उन मानते हैं ? जब उ
में और कुछ इस घर में आई है तो वे इसे आराम ही आराम है ।
इस समझनी है कि इस समुदाय में नहीं समझ की छाया में है ।
आप की माँ हमारी भी माँ है माँ से बनकर प्यार करती है ।
आप के पिताजी तो हमारे स्वर्गीय दादा को भक्तान्त में समर्थ हुए
हैं इतना साहजिक प्यार करते हैं । रही आप की रसिकता ! आप रसिक
नहीं होते तो क्या वो वो स्त्रियों को सदा प्रसन्न रख कर संभाल
सकते थे ?

शिवे ! तुम और कुछ सोचो साध्वी की सतत हो । और
तुम्हारी सब भक्ति तुम्हारा धर्म है । क्योंकि ईश्वर सत्त नहीं भी
होने मरने की कल्पना की छाया में ही मानते हैं । अतएव यदि तुम
मैं आराम में हो तो इसका अर्थ तुम लोगों के साधनिक स्वभाव
को मिथ्या जाहिर न कि मूल । यदि मुझमें कभी भूल भूल हो आप
तो तुम लोगों से कह देता हूँ कि वो ही मूल वह हैना । मुझे
बठाकर सही जगह पर के चलना । यह भार तुम लोगों पर है ।
हुनिया जानती है कि मैं रणवीर हूँ और ऊपर हूँ फिर भी पूर्व
जन्म के पूरुष का कल तुम्हारे रूप में भिन्न है । यही मेरी चारणा
है । तब मेरे आत्म की कल्पना हो ।

—ऐसा कहते हुए अतिमन्त्र के शास्त्र पर गीतों बूझनी ली ।

आज मला ईश में आप सब कुराण है । इससे सिद्ध होता
है कि आ । केवल रणपट ही नहीं वाक्यद भी है ।

— कहकर अतिमन्त्रों हैं न पत्नी

तब तो अमली बाग पर जानो शिवे ।

— कह नागदेव भी हस पड़े।

हमारे यहाँ एक नया लडका आया है --

हाँ हाँ आया है। वही जो आज स्नानागार में तौलिया देने आया था। — नागदेव ने बात काट कर कहा।

जी हाँ वही।

अच्छा! अब कहो क्या बात है?

जानते होंगे कि इसके पिता ने उसको हमारे यहाँ नौकरी पर छोड़ रखा है। क्या वह रमोई का काम सीखे?

यह बात है। तो सीखने दो। तुम भी सिखा दो। ऐसी बातों में मैं कभी दखल नहीं देता। घर के अदर की बातों का मैं क्या जानूँ? तुम ठोग देख लो।

अपनी बात कहने देग कि नहीं?

कहो कौन मना करता है। तुम चुप हो गई तब मैं बोला। क्या बात कुछ टडी है? लैर, जो भी कहो तुम्हारी बात अवश्य मानी जाएगी।

नागदेव ने आश्वासन दिया।

बात यह है कि लडका पढना चाहता है। वे गरीब हैं, पढा नहीं सके। इसी लिए उसे हमारे यहाँ काम पर लगा दिया है। लडका तेज है। प्रायः पढाई में भी तेज निकलेगा। आप चाहें तो

क्या मैं उसे पढाते जाऊँ? वस तुम्हारी बात मैं मानूँ तो उसकी भलाई नहीं होगी। याद रहे यदि मैं कुछ पढाऊँ और वह याद नहीं करे तो मैं अवश्य आप से बाहर हो जाऊँगा और कह एक जमाद तो चारों खाने चित हो जाएगा। अति, तुम अपने पति को जितना कोमल चित्त या मृदुल गात्र समझती हो वंसा वह और मे नहीं माना जाता। मेरे सैनिक मुझ देखकर थर थर काँपते हैं महाराजा तक मुझमें बोलते समय नजग रहते हैं। मेरे माय मनचाह

तो आप क्या आज सेनापति पर पर निबल रहने ?

और बड़ा कष्ट उठाने से गलाम की हड्डी और
बा बंधन में सीजे हूँ तो सेनापति अब जान पर भी तुम बा रमजिदा
बोले ही मुझे बरन कर लेगी ।

— नामदेव अपनी भाषा पर आप हम पडा ।

औरो वे सबक न थी लेया ही बाधिए । हम मुविबा करिफ
कर हैं । तिस पर अपना अपना भाव्य नाच देगा ही ।

— अतिमग्ने बोली ।

अति ! जब उन लड़के को इनका चाहती हा ता दलक
कर को ।

आप के मानने भर की बेगी है । हम नैय्यार हैं ।

— अतिमग्ने बाक उठे ।

हमारी कोई सनान नहीं होगी ?

— बिछ होकर नामदेव ने निहाला की ।

मैंने इस सबक में तो कुछ नहीं कहा ।

— अतिमग्ने न सफाई दी ।

क्या दलक केन की लताह मान की ?

— नामदेव ने फिर प्रस्न किया ।

बेसिए, होनहार लड़को को बेसकर किमका मन नहीं लकचना ?
वे समान और राय्ट के अनर्थ निधि होते हैं । वे जाने बलकर हम
हूँ वे उठे अभी कीन कह सक्ता है ?

— अतिमग्ने ने पूछा से कहा ।

अति ! मैं तुम्हारी बात टाकना नहीं चाहता । मैं एक बा
बाध कर देखता हूँ । अगर यह बात निकला तो तब तक जमका बा
कल मुँहा कि यह तक वह कथिचकमरी न बन जाय ।

नामदेव की बात से वह फन उठी ।

रत्न घर पर कखहरा सीख चुका था । अक्षर सुंदर थे । जहाँ कही से माँग कर ताड़पत्रों पर ग्रंथों का नकल भी किया करता था । उसके अक्षर स्फुट और मोती से लगते थे । प्रतिलिपि बनाते समय उन प्रतियों को पढ़ने और समझने का भी प्रयत्न किया करता था । पप और पोन्न की कतियों की भी प्रतिलिपि बना चुका था और कभी कभी उन्हें पढ़ते हुए स्वयं कल्पना जगत में तन्मय हो जाता था । उस की अभिरुचि पढ़ने लिखने की थी । पर परिस्थिति इस के विपरीत थी । उन दिनों में पढ़ेलिखे लोग बहुत कम थे । जो थे वे राजा महाराजाओं के आश्रय में रहते थे । नगरों में निवास करते थे । रत्न की विद्या-दाह बुझा देनेवाले विद्वान् मुधोल जैसे ग्राम में नहीं थे । रत्न के पिता अपने दारिद्र्य जनित सैकड़ों शत्रुओं में इस ओर ध्यान ही नहीं दे सकता था ।

नागदेव ने रत्न की परीक्षा ली । रत्न ने अपने हाथ से लिखे गए आदिपुराण, विक्रमार्जुन विजय, भुवनैक रामाभ्युदय, और शांतिपुराण को दिखाया तो देखकर नागदेव दंग रह गया । सुंदर लिखावट थी । मोति की लड़ी सी सुंदर पवितर्यां थी । और उनको उससे पढ़वाकर देखा । सिंहगर्जन सा स्फुट कठ ध्वनि से एक दम प्रभावित हुआ । नागदेव यद्यपि रणपटु था । पर उस में सहृदयता की कमी नहीं थी । तलवार, भाले, तीर, कमान और गदाओं पर जैसा अधिकार रखता था वैसे ही काव्य सौष्टव समझने का भी अधिकार प्राप्त कर चुका था । कही वीर रस प्रधान काव्य मिलता तो पूरा पढ़वा लेने या खुद पढ़ डालने तक उसे कल नहीं पड़ती थी । पप और पोन्न इसके तकिए के नीचे सदा रहते थे । युद्ध के मंदान में भी अपने साथ कन्नड ग्रंथों को रखा करता था । मौका पाने ही सैनिकों के साथ बैठकर उन वीरगाथाओं को पढ़कर सुना देता था और उनकी व्याख्या भी करता था । ऐसे नागदेव ने रत्न की परीक्षा ली । रत्न के

को भिला हा।

दल्लप जी इस लेडके को बकापुर भेज दीजिए। वही अजित सेनाचार्य के चरणों में रह कर पढ़ लें। लडका होनहार है।

पप ने सलाह दी।

पपदेव ! यह अत्तिमब्बे की आँखों का तारा है। वह प्राणों से भी अधिक इससे प्यार करती है। इसके पिता हमारे यहाँ इसको रसोई घर में चाकर छोड़ गया था। पर जैसे ही अत्तिमब्बे की कृपा दृष्टि उस पर पड़ी यह कवि रत्न बनने योग्य हुआ। यहाँ सब कुछ नाटकीय ढंग से उसके अनुकूल बन रहा है। अत्तिमब्बे और गुड्डुमब्बे उसकी पढाई का खर्च अपनी ओर से देना चाहती हैं। इस पर नागदेव भी इस लडके का पक्ष ले बैठा है। मेरी पत्नी भी इसका पक्ष लिए बोला करती है। आशा थी कि कम से कम आप हमारे पक्ष में होंगे। पर वान उलटी निकली।

ऐसा कहते समय दल्लप के मुँह पर हँसी खिल उठी।

दल्लप, आप के घर में सब के सब सुकृती हैं।

पपदेव के नेत्र आनदाश्र से सजल हो गए

जी हा, पर एक अपवाद भी है। सो मैं हूँ।

— दल्लप ने हँसते हँसते कहा।

आप ! आप तो इस कल्पवृक्ष की जड़ हैं। वह सदा गुप्त रहती है। पर उसी के बल पर फल-फूल-पत्ता आदि खिलते रहेंगे। तभी तो लोग इस पेड़ की शोभा देखकर फले नहीं समाते।

पपदेव ने दल्लप को वास्तविक प्रशंसा की।

पपदेव, क्या यह समझ कि यह रत्न जागे चलकर आप का उत्तराधिकारी होगा।

दल्लप मुस्कुराए।

जी, हो सकता है। ऐसा ही हो। यदि कोई भी योग्य व्यक्ति

इस विह्वल पर विराजमान गला था जो मैं मरणा उग बिगड़र
 आस भर देखता चाहता हूँ । अब बड़ गाली पड़ा है । होना-बना
 पनबर्ती । फिर मैं इसकी भय झाड़ फूँट कर मज्जा मगता हूँ । पर
 के बाद पोस पोस के पाद रक्त — इस प्रकार भिन्न विधा बना रह ।
 सरस्वती का निवास कभी गाली न रह । — बड़ी मरी प्रायता है ।
 परदेह के भीमन से चिन्मय वाणी निवृत्त । मर मर
 हा बाहर न मन रहा था ।

अब बड़ सन्तान का मर विनमरुध इच्छा के पत्रा मोट
 आया । भोजनार्थ न निद्रा द्वार नालक फिर दसक और परन्त
 लविष्ट के सहारे बैठे थे । विनमरुध तथा रापर का काना बड़ा
 और उनके आते ही पश्चिम विद्या ।

परदेह ! मैं हूँ विनमरुध उभ न के पिला जीर यह
 राज्य है उस न बड़ा भारी ।

फिर वस्त्र न परदेह का पश्चिम कपन हुए कहा --

विनमरुध मैं आप समार के सागेद्वय परदेह है मरुद्वि ।

इतना सुनते ही विनमरुध का फिर उसके सामन द्रष्ट
 गया । इपर राज्य ने समुद्र के ल आदिपराज पर विनमरुध
 विनमरुधों से एक एक पक्ष बनाकर परमार्थना का ।

विनमरुध ओ ! यह राज्य बड़ा सद्भव है ।

— परदेह ने मुक्तपति हुए कहा ।

हम सद्भव हैं और सब कुछ है । पर हमारी गुरुवर्णा
 बलिष्ठा के आरम्भ में सिंगी पड़ी है ।

विनमरुध ओ बातों से विनमता उपर रही थी ।

विनमरुध ओ आप का रक्त हमारे बहाँ रोग्य । पर रक्त
 रक्त है । बलाहक कि विनमरुध आप हमारे यहाँ से छोड़ने के लिए
 नम्यार हैं । पहले यह या न हो आय तो बहू --

दल्लप ने प्रश्न किया

आप चाहे जितने दिन अपने यहाँ रख लीजिए ।

— जिनवल्लभ ने उत्तर दिया ।

खूब सोचिए, बीच में कभी आकर यह तो नहीं कहेंगे कि लडके की माँ का आग्रह है कि बुलवा लें । इत्यादि ।

प्रभो, मैं एक बार कहता हूँ तो सोच समझकर ही कहे देता हूँ । यह समझिए कि यह आप का लटका है । मेरा नहीं । आप जो चाहे कीजिए ।

— दल्लप ने पूछा कि जिनवल्लभ ने कहा ।

राचय्य जी, तुम्हारा अभिप्राय क्या है ?

— आप के यहाँ रन्न को रख छोड़ने में मेरी कोई आपत्ति नहीं । पर क्या वह कोरा रसोइया बन कर रहेगा ?

राचय्य खिन्न होकर बोला ।

बेटा ! दल्लप जी कल्पवृक्ष हैं समझे । आप के पास हमारा रन्न चाहे जैसे रहे ग़ुल में रहेगा । आज भी और भविष्य में भी समझे न ?

— ऐसा कहते कहते जिनवल्लभ ने अपने बेटे की ओर घूर कर देखा ।

तुम लोग व्यर्थ चिन्ता मत करो । रन्न रसोइया नहीं बनेगा । आज तक रसोइया नहीं था । आप की पतोहू अत्तिमब्बे इस को अपने छाटे भाई के समान मानती है ।

कुत्ते कहते 'इधर आओ रन्न ! ओ कविरन्न' ॥ कहकर पपदेव ने आवाज दी । रन्न उसी प्रतीक्षा में आड़ में खड़ा था । चाहता था कि अपनी वेश-भूषा पिताजी को दिखा दें । कोई न कोई बहाना निकाल कर उन लोगों के सामने आ जाना चाहता था । पप की आवाज क्या सुनी हर्ष से छलाग भरते हुए आ पहुँचा । चिथड़ो

के अगले रक्त अब संभवतः गहरी गाराक ग बसा रहा था। नया
कराहा था। छाती में कुछ भय था। उबड़िहा में अगले थी। और
सिरपर बंधा हुआ भी लोपी थी। जाने ब को इतकर दिनभरम 'कूरे
नहीं समान। गोब में उतकर ग नी में मगार गार किया। अगली
गोब में बिगार गारम की भी कडा म देवा।

उस को जाने की भाई की।

—कहल हुए उसकी गोब में रक्त को दिया। दिनभरम की
बाँकी ग जानराक गार रक्त। गारम गारम गारम की उग था।

अब कहाँ बेटा। रक्त को यहाँ न छाँड़ भवना माँ के
बच? प्रथममान लड़को को दब रही थीर भी आदि पाणि। हमारे
मरीं प्राम मीं का दूब उा और दूर दगा तक न था।

—उप्रकार ज में कटल लगा था बिगारम। क्याकि जानर
के मारे दूब दब गरी जानरा का कि दब दगा बाक रहा है।

गारम। तुम्हारे छो भाई को रक्त के लिए हम बकापूर
सेवता चाहते हैं। अब तक हम बारम नहीं दब दबे तक तक कोई
दब बूझा नगे जान। पडा जाने नहीं होती चाहिए।

—बलर की स्वामादि गारिका दूब दइराभी मनकर
एकमर सेपन दगा। उले अगली पहल बिना निबारे नहीं नई जान पर
कडा हा रही थी।

प्रमो। न जानें किप जद बनी में मिन उम छा को सुनी
पाबिनी का बूझी पहनाई। हमारा भाग्य ही बवल गवा। एष मातिप
अब से रक्त बाग का बेटा है।

—कह कर दिनभरमम बलर की गोब में उम गद दिया।
बलर की जानर हर्ष हुआ। धम बनने पास बिठा किया। माँ-बाप
का हृदय दगा कभी अपने पराम का और जानना है।

दिनभरम भी दमे स्वीकार नीबिए।

कह कर एक थैली उसके हाथ में थमाने का प्रयत्न दल्लप ने किया ।

प्रभो ! मेरा दाम मुझे मिल चुका है । यह क्यों ? आप मेरे लड़के के भरण का पोषण भार उठा चुके हैं । आपने मेरे वश का नाम ही उज्ज्वल कर दिया है । आपने तो गरीब की झोपड़ी पर सुवर्ण का कलश लगा दिया है । मुझे अब इसकी आवश्यकता नहीं है ।

—इस प्रकार अत्यन्त दीनता और हर्ष दिखाते हुए जिनवल्लभ ने थैली लेने को इनकार किया ।

जिनवल्लभ जी ! यह महामात्य का आशीर्वाद है और इस प्रमाद का तिरस्कार नहीं कीजिए ।

कह पाने जब आगह किया तो विवश हो कर जिनवल्लभ ने राक्षस की ओर देखा । राक्षस ने भवित पूर्वक उस थैली को हाथ में लिया ।

अब जाना हो तो लौटेंगे । हम आप के ऋणी हैं । हमारा वश और हमारा रोवा रोवा आप का ऋणी रहेगा ।

कह कर कृतज्ञता के भार से सिर झुका कर जिनवल्लभ चले हो गए ।

कुछ दिन में रत्न को ब्रकापुर भेजा जाएगा । मेरे पुत्र और पत्नी साथ जाएंगे । — दल्लप ने बताया ।

रत्न जाओ । अपनी जी जी से कहो कि ये विदा हाना चाहते हैं ।

दल्लप की आज्ञा मानकर रत्न जदर गया । आर आदेश सुना दिया ।

उपर पदमव्रत ने कहा कि बहू, देवों कुछ बलेवा आप दा । वह भाग्याला नई । पीछे पीछे रत्न भी गया । एक बड़ी

नखना से अतिमन्त्रे बोली —

महाराज ! हमारी सारी संपत्ति क्या आप की पाद-धूलि की बराबरी कर सकेगी ?

भक्ति-भाव से झुककर आचार्य के चरणों में नमस्कार किया । और पद रज को सिर आँखों पर लगाया । और अपने मागल्य में भी लगा लिया । ऐसे ही गुड्डुमन्त्रे के माथे पर इस का तिलक लगाया ।

अतिमन्त्रे के भक्ति-भाव से वहाँ उपस्थित मुनिवृन्द गद्गद् हो उठा ।

जबड़े ! तुम इस राष्ट्र की रक्षामणि हो । राष्ट्रकूट सम्राट के समक्ष रह कर तुमने आश्रम की ओर सुवर्ण-प्रवाह ही बहा दिया है । गगराजा के दान के बराबर है तुम्हारा दान । अधिक क्या सचमुच तुम दानचिन्तामणि हो ।

अजितमेनाचार्य ने मुकन कठ से उस का सम्मान किया ।

आचार्य जी, मैं केवल मामान्य स्त्री हूँ, अज्ञान की पुतली हूँ । मारी संपत्ति मेरे स्वामी की है । उदारता से आपने अनुमति दी हमें और यह मेरी छोटी बहन उसे यहाँ तक पहुँचा देने के लिए आई है ।

— ऐसा कह अतिमन्त्रे ने कृतज्ञता-गूण दृष्टि से पति की ओर देखा ।

गुमाई जी ! यह धन हमारे घर का नहीं है । मायके से अपने माय लाई है । आप जानते ही हैं कि हम इतने श्री संपन्न नहीं हैं ।

नागदेव ने स्पष्ट शब्दों में यथायथ का परिचय दिया ।

आचार्य जी ! जान ही बताइए जिस दिन मैं और गुड्डुमन्त्रे इन की दासी बन गई और इनके घर आई तब से हमारी स्थिर एवं चर सभी संपत्ति के मालिक ये बने हैं कि नहीं ?

अतिमन्त्रे का तर्क जवाब था ।

— अजितमेनाचाय जी वाटे

मै क्या जानूँ आचाय जी ! आप ही समझ हैं । आप परीक्षाकर देख लीजिए । यह ज़िम्मे योग्य नित्ये वही रहे ।

इतना कहकर एक बार नागदेव और समरी पार गुम्बदे की ओर अन्तिमद्वे न दृष्टिमान लिया ।

गुम्बदे बोली —

आचाय जी, मेरी प्रश्न चाहती है कि यह जन्म करि प्रन जाय ।

रहा इसे पप महाकवि का उत्तराधिकारी बनना है ।

— आश्चर्य सूचित करने हुए अजितमेन जी बोले ।

हमारे मामा पपदेव वदव हो गए हैं । इन के बाद कन्नड सारम्भत रचित रही होना चाहिए । आप आशीर्वाद दे कि यह रत्न कवि चक्रवर्ती बन जाय ।

— अन्तिमद्वे के मुँह से हृदय की बात निकल पड़ी ।

मानवर अजितमेन जी की दृष्टि रत्न पर जम गई । पल भर में अपना भिर हिलाते हुए मुस्कराए । उसे गुरुकुल के व्यवस्थापकों के साथ जबर भेज दिया । तब बोले -

बेटी, तुम्हारा यह लडका कवि चक्रवर्ती बनेगा । चिन्ता मत करो ।

अजितमेनाचाय की भविष्यवाणी पर विश्वास करो । आप वाक्सिद्धि सपन्न ह । आप के श्री मुग्ध से आज जो बात निकली वह अवश्य सत्य होगी ।

— अन्तिमद्वे को आश्वासन देते हुए गभीरभाव से पपदेव ने कहा ।

पपदेव की बात सच है प्रेमी । मुझे सब मिद्धियो प्राप्त हैं । पर एक बात की कमी है । पपकवि जैसे दो-एक महान व्यक्ति मेरी

निश्चय तो दो । अब यह सारा विष्ट । उससे माना व मागस्य
 के म सहायिता अन ल बन गए हैं । प मी जो था बटी हु ।
 मरका मरिय उठा करता हु । जमा प्रक्षिप्त पधार नहीं सरा ।
 मर बीमा या शत्र भी बना तो रह था ।

रुद्धर तो म रूप पड ।

आचार श्री । इनका आचरण आप मीछा । रिधा
 कि पपरेव आप के धिप्य हैं ।

— हमने हुए ब लम-इ यो ।।

बलक । य मेरे निप्य तो ब । अब न भी है । रिश्त ब-पात
 है । ऐसे व्यक्ति को बनना रिप्य बहुत सत म मेरा योर बड़ना न ?
 अविनाश श्री मरक य ।

आचार श्री अब भी आप का धिप्य बहुत म मरा असर
 गिर है । आप का स्थान मून बमो म ऊरा नहीं होवा । स्पद ऊँपा
 है । क्योंकि आप कवि चक्रवर्तियों के बच्चा हु । निमता ९ ।

य महुाकवि न पछाईय होकर कडा ।

अविनाशनाथार्व भी भव्य रमाओं की मरका बहने बंदकर
 जयन उहीप्य ई और आत्मानेश का मरमव कर रहे थे । अतमम
 पा परिवार बेचकर आरन दुबन पाव से छुनू- कामवत के समान मरा
 मरुद उपदेसाभूत की चारा बहा ही ।

/

रामका । मुम्हारे समधी री पछाई मुकदा मर ।

— मरक ने मरकाही ।

पोममम श्री मर्य या पाव अभी हरा है । के रोतो मरई

वासुदेव और बलदेव जैसे थे ।

दल्लप की ध्वनि शोक में भारी थी ।

हमारे ही कारण पोन्नमय्य की मृत्यु हुई । चालुक्य साम्राज्य की स्थिरता के लिए न जाने कितने वीरो को, कितने जिनघर्मावलवियों को प्राण न्योछावर करना पड़ेगा ।

— ऐसा कहते समय तैलप की आंखों से दो-चार बूंदें टपक पड़ी ।

राष्ट्रनिष्ठा से बढ़कर और क्या धर्म है । राष्ट्र-रक्षा से बढ़कर और क्या कर्तव्य होगा, प्रभो । राष्ट्रहित के लिए प्राणार्पण करना भी एक दृष्टि से समाधि-मरण ही मानना चाहिए ।

यदि पोन्नमय्य नहीं होता तो उस परिस्थिति में गोज्जिग के कूटयुद्ध से बचना असंभव बन जाता है । पोन्नमय्य की सेवा चिरस्मरणीय रहेगी । गोज्जिग के बाणों का निशान मैं ही था । बाण पर बाण बरसाए जा रहे थे । यदि पलभर भी पोन्नमय्य आगा-पीछा करते तो हम चारों खाने चित हो जाते । उस महात्माने हमारी मौत अपने गले लगाई । हम उनके चिर श्रेणी हैं । सुनते हैं कि उनके कोई आठ तानें हैं — कभी उन्होंने इस बात का जिक्र किया था ।

— तैलप ने कहा ।

उनकी तो औरस कोई सतान नहीं थी । हाँ, हाँ ! पाय अपने भाई की सतानों के बारे में कहा होगा ।

— दल्लप ने स्पष्ट कर दिया ।

क्या यह सच है ? उनकी निजी सतान नहीं हैं ? तब क्या अपने भाई की सतानों को इतना चाहते थे । उनकी बातों में हमने समझा था कि वे निजी सतान की बात कर रहे हैं ।

जी हाँ प्रभो ! जब उनकी पत्नी ने सहगमन किया तब अपनी सपत्ति को दल्लप के तीन पुत्रियों में बाँट दिया था । हर एक

को सोना है। राजा ने कहा कि जाना गया कि हम इस गाइश पर से बड़ी। मरी ने नियम वाली गाइश का स्मरण करके बाव भी जासु बहाली है। प्रजा यह है आबज परिवार पा। और उस बगन का प्रति ध्याता कामवन या उज्ज्वल से होइ कर्मशाका ।

— कर्मशाका ने कहा भगवान् से बड़ा ।

इसमें जो रिश्ता भी उज्ज्वल था। मरी तो अपराध होता। इस गाइश में कि वह पाठ या नहीं था। हमारा कर्मशाका है कि पहले से यह भी नहीं उज्ज्वल था। यह काम था जो कर्मशाका होता। हमारे अमात्य से यह भी प्रमाण था। और कर्मशाका उज्ज्वल था। पगल ने कहा साग परिवार में यह भी था। इस पित्राचार में ही यह था। हम अपने छोटे से काम उज्ज्वल कि यह था।

— मरी ने अन्तिम निर्धारण मनाया ।

प्रजा ! हम सोच समझ कर काम कर। राज्य के प्रमाण से पर हम प्रकार कर्मशाका का उज्ज्वल भी को कर्मशाका मनाया ।

— कर्मशाका ने राजा को नीचे की बात कही ।

कर्मशाका बहुत ज्ञान या धर्म का प्रमाण बोझी है। जो निष्ठावान् हो पुनी हो उस की निष्ठा और गुण पर तो विचार कर रहे । पालाय साम्राज्य के लोग के लिए पालाय उज्ज्वल अब तक कर्मशाका न खुद का पसीना बहाया है। मरिया से ये लोग हमारे साम्राज्य की हितायता से कम है और आज भी उज्ज्वल है। मरि मरुतमर मरी होते है कर्मशाका के समय में ही साम्राज्य साम्राज्य का लूट अलग हो रहा है। राज्य-भोग ने मरुतमर को बना बना दिया था। हमने मरि के लूट उज्ज्वलपिकारी पुष्पेशी को पद पाल करन के लिए कहा नहीं किया बनाइए । उज्ज्वल पुष्पेशी का छोटा पाल विष्णु पद का । पुष्पेशी तो पुष्प भीषा की बात मानकर बहुत लूट करने भाई

को चैन में रहने नहीं दिया। ऐसे अवसर पर यदि समनभद्र की सहायता नहीं मिली होती तो पुलकेशी क्या कभी राज्य पा सकते थे? पुलकेशी के दो नेत्रों में एक समनभद्र थे तो दुमरा रविकीर्ती! पुलकेशी की कीर्ति रविकीर्ती के कारण भगवद्भक्त भर में फैल गयी। रविवर पण्डित्या तक जाकर रविकीर्ती ने पुलकेशी की कीर्ति फैलाई। नहीं तो वहाँ चालुक्य साम्राज्य का नाम कौन जान पाता? तब ही अचानक बादामी पर चोह्ला का सैनिक-आक्रमण हुआ तो पुलकेशी की रक्षा के लिए समनभद्र और रविकीर्ती दोनों ने प्राण पण में युद्ध किया और जन में रणभूमि में ही दूर हो गए। वे दोनों जीत-प्राप्त के अनुयायी थे। वह बात गौण है।

तब ही ये प्रश्नो! कौन इनकार करता है? फिर भी एक ही जाति या धर्मविरुद्धिया के हाथ में राज्य की वागडोर दे देना उचित नहीं है। हमने अनावश्यक ही औरों का दिक् खटफने लगाया। संभव है कि हम अनौपके पारेगाव स्वल्प साम्राज्य का अस्तित्व ही पाप-प्रसन्न बन जाय।

राजनीति की दृष्टि से दल्लप ने सलाह दी।

दल्लप! आप फिर जाति पाति की बात पर विचार करने हैं। पर यह भ्रष्ट जाते हैं कि हम केवल निष्ठा और नेत्री पर ध्यान देने हैं। आप लोगों की नियुक्ति इसी आधार पर हुई है। गैर-धर्म के जाने नहीं। यज्ञ, धर्म की बात पर नहीं, कर्म पर दृष्टि है। पप महाकवि अरिकेसरी के दाहिने हाथ थे। अरिकेसरी के रत्नवास तक पपदेव की पहुँच थी। क्या कभी पपदेव ने अपने पद या प्रतिष्ठा का दुरुपयोग किया था? महारानी के भाई, अरिकेसरी का माला और चालुक्य साम्राज्य के हितचिंतक बन कर जीवन बिताया। जाति पाति को लेकर क्या कीजिएगा? सब से प्रमुखस्थान योग्यता को मिलना चाहिए। योग्य व्यक्तियों की सख्या चाहे जितना बढ़े, उमने राज्य का हित ही सिद्ध होगा। अविकल सोच विचार

की आवश्यकता नहीं है। शीघ्र ही दम्पत्य 'मन्थन' को हमारी ओर से खोला भविष्य।

मैलम में खासतः पर्वक कहा ।

॥ समयमत्र का बन्धन है ।

अभिमान पूर्वक दृष्टयः न कदा ।

मह शास्त्र ३ ।

पी हौ ! मगधरा !

सुख तो मण्डला ही हुआ ।

हम पक्केसी के पाल के पोले के गोल हैं। आप समझाइए
की पीसी के हैं। पुलिसिंगी के बरखार में समझाइए की जो वह
प्रतिष्ठा की गयी हमारे बरखार में बरखार की हुयी।

नीका न हृयं चित्त होकर बोधया की ।

मन्त्रों को पृथ्वी पर छोड़कर अपने परिष्कृत महिम्न शास्त्रों के राजधानी विजयपुर को जाना पड़ा। राजमर्मादिनी में इनका स्वागत उत्साह हुआ। उप प्रधान का यह देकर ही अपने उमर का सम्मान किया। मन्त्रों के पापी पत्रों को योग्यता के अनुसार पर प्रतिष्ठा दी गई। शास्त्रों के प्रमत्त केशों में भी मन्त्रों के स्थानों में मन्त्रों का उनके समोच्च की निशान्ति हो गई।

एक गहन भूमिजो ने मिट्टा एक साथ करके अनिमज्ज्ये कलकमत्ता का अनुभव करने लगी। वह तो कुत्ते नहीं समा रही थी। यहाँ से कुछ दूर लम्बी आँक तो अकस्मिन् बिनाकन मिट्टा यहाँ हमारी रसमिन्न ऐसे मासित हो रहे थे कि मन पृथक् हो जाता।

ऐसा लग रहा था मानो चादनी को ही साधे में ढालकर शीतल पवन के चाक पर चढ़ाकर बनाए गए हो। अत्तिमव्वे ने उस समय अनगिनत शिशुमडली में रहने का-सा आनंद पाया। उन सहस्र जिनबिबो को एक साथ क्षीरामिपेक करने का प्रबंध था, जिसे देखकर वह आनंद से रोमांचित हुई। नवरत्न के उन बिंबो से वण वर्ण की किरणें ऐसे बिखर गई कि मानो हजारो इन्द्रधनुष के झूलो पर एक साथ अनगिनत भव्यात्माओं को झूला रहे हो। जिनबिबो का अभिपेक देखकर अत्तिमव्वे विदेहक्षेत्र आई। अपराजितेश्वर के समवसरण के लिए मानो देव-ऊलनाजों ने उसका स्वागत किया। समवसरण में एक ओर दिव्य सगीत हो रहा था, देवागनाए गा रही थी। अत्तिमव्वे ने कभी ऐसा सगीत सुना ही नहीं था। वासती की सुगंध मानो सगीत लहरी बन महक रही थी। आगे आगे चली। वहाँ खेचर कन्याओं का ननन हो रहा था। कभी लास्य, कभी ताडव । लास्य नृत्य की भगिमाओं में मलयानिल में इठलानेवाली माधवी लतासी खेचर कन्याएँ लगती तो ताडव में बिजली सी चमक कर वज्र सा टूट पड़ती और भयातक रस की बाढ उमड़ा देती। वहाँ से आगे बढ़ने पर हजारो मुनिवृन्द मुक्त्यगना की गोद में शिशु से भोलापन लिए प्रशांत चित्त विराज रहे थे। हजारो आर्यिकाएँ थी जो साक्षात् कृष्ण के कोमल पौधों के समान लग रही थी। इन पवाडों को देखने के लिए लक्षोपलक्ष भव्यात्मा एकत्रित थे। जिन्हें देखते ही लग रहा था मानो शशि का मौंदय देख मुग्ध बने चमकीले नेत्रों से देदीप्यमान नक्षत्र हो। वहाँ सहस्रदलवाले सुवर्ण कमल पर धम-रूपी मकरद विराज रहा था। कमल पर जैसे भ्रमर आ आकर न्योच्छावर होते हैं उसी प्रकार अपराजित के चरणों पर भव्यवृन्द आ आकर न्योच्छावर हो रहे थे। अत्तिमव्वे भी परमात्मा के सन्निकट आई थी। तीर्थेश के पादारविंद पर नतमस्तक हो गई। ऐसा लना, मानो अपना त्रयताप वही फेंक चुकी हो। चरणस्पर्श से

उसके तनमन में पसकानकी प्रसक्तुत्त ज्ञान । ज्ञाना रूप हुआ मार्ग
 दिव्य ध्वनि स्त्री पयोधिय से अवसाहन कर रही हो । बहो मैं उठकर
 मर मारुन सी दृढभाती हुई निश्चिन्ता के पाग जा । निश्चिन्ता से
 बहो भी बेह परम्योति की मृतिमा ही मति । शिवाई स्त्री थी ।
 श्योति से श्योति सी या हम से बनाम के समान य निश्च एक दूसरे
 से मिल रहे थे । समस्त होकर भी अवतपन को बनाए रखकर
 जानव तहिल होनेवाले करोड़ों निश्चायमाया या गमन दर्पनीय था ।
 कुछ खड़े थे । कुछ बैठे थे । चाहे गड रहे चाहे बीरे रहे सब का मिर
 एक ही स्तर पर रहता था । निश्चायिक निश्चिन्ता उन निश्चा में किसी
 किसी के चरको ही की बहना अनिमग्न कर लगी । उमें समय
 सिद्धचरस में मोलप्रोत थी । उसन मग्न होकर चास धीर निश्च
 कोक पर दृष्टिगत किया । चारो ओर चारों चपक परमिणी सी
 बह रही थी । इस अहिका को मगरन निकासे नयनीत के डर के
 समान इतर उतर पुदपक्ष में बिहार करनेवाले सिद्ध-गरमेलियो का
 दिव्य दृष्टि चित्तार्थक था । वे अहिका ये भी अधिक कानिचक और
 कीमती से भी बहकर कोमल गगन रहे थे । आत्मा की पवित्रता की
 पराकाष्ठा ही तो निश्चावस्था है । ज्ञान ही श्योति बन श्योति ही मृति
 बन प्रकाश पीठो पर महिमास्त्री अवगुहन बारण किम् निश्चरली-जी का
 स्नोम विराजमान था । उस महिमागोक में अनिमग्न स्वय महिमास्त्री बन
 कर समरसता का अनुभव करन लगी थी । उसे जय ती मृध-वच तक नहीं थी ।
 बीबी ! बीबी ! उठो ! बहो तो सही सूरज जितना ऊपर तक
 चढ़ जाता है ।

ऐसा कहकर मुहुमग्ने ने मधिमन पर मोई हुई अनिमग्न की
 हिमाया । अनिमग्न के मुखाधिवि पर वैदिक ज्ञानिनी । मग्नदर्शन से संपन्न
 थी । वह निश्चित एक निश्चिन्ता मात्र से सोई हुई थी । मला कीन सिद्धमोक्ष
 से ऊपर आता चाहता है ? स्पष्ट चावभी सा मग्नस अनिमग्न के

मुखमडल की शोभा बढ़ा रहा था। उसे देखकर गुड्डुमब्बे का हृदय आनंद से पुलकित हो उठा। मुग्ध होकर उसको देखती रह गई गुड्डुमब्बे अत्तिमब्बे के मुख मडल से घुघुराले केशों को सँवारने लगी। चंद्रमा पर रखे शुरु तारा के समान मुख मडल पर नट्यू चमक उठा। सम पर वजनेवाली वीणा-सी अत्तिमब्बे की मास वासनी उपवन से बहकर आई हुई गंधभार-भरा गंधवह सी चल रही थी।

जीजी! यह कैसी नींद है! कितनी गहरी! सब उठे, नहाए, धोए। तुम भी उठो।

—गुड्डुमब्बे ने फिर उसे हिलाया। किसी अज्ञान लोक से उतर आई सी, जागकर अत्तिमब्बे ने चारों ओर देखा। पानी से बाहर काढी गई मछली सी वह बेचैन हो गई।

अत्तिमब्बे की ठुड्डी पकड़ कर प्यार से अपनी ओर मुँह घुमाकर गुड्डुमब्बे ने प्रश्न किया

जीजी, क्या सपना देख रही थी?

गुड्डू! तुमने अच्छा नहीं किया .. ।

अत्तिमब्बे ने इस ढंग से उत्तर दिया मानो अपार नष्ट पाकर खिन्न हुई हो।

क्यों जीजी! सब नहा धुला चुके। पूजा पाठ से निवृत्त हुए। तुम अभी सोई हो! सास जी ने जगाने के लिए मुझे भेजा। जाओ हाथ मुँह धो आओ।

कह कर छोटे लड़कों को फुसलानेवाले ढंग से, प्यार से जगाया।

गुड्डू! मैंने विदेहक्षेत्र को देखा। अग्राजित का समवसरण भी देखा। जिनदर्शन पाया। सिद्धलोक के परमानंद में मग्न थी। कितना अच्छा था! कैसी प्रभा थी।

यो अत्तिमब्बे कह ही रही थी कि पद्मब्बे वही आई और

शान्त की आवाज में बोली —

पुत्र ! यह क्या ? जगा कान भरा तो यही आकर बैठ गई ।

बुधमन्त्र ने उनसे अपनी बहन का स्पर्श कष्ट मनाया ।

बस जानव की बात है बनी । अब हमारी अतिमन्त्र के
छाया पास है । प्रसन्न के दिन तक तेरा ही स्पर्श देना कर ।

बुधमन्त्र परमेश्वर के बचन आनन्द मन में मिश्र होकर
बसे आ रहे थे । आर बोली—

अनि ! निम्नकोष क्या होकर कहा करो । तुम्हारी आशा
पूर्ण कर दूँगी ।

—अनिमन्त्र से इस वन में एक रूढ़ि भी माना अपनी उठी
से ही बोले रही है ।

क्या मन्त्रमुक्त पूर्ण करनी ?

— समय व्यर्थ करनी हुई अनिमन्त्रे बोली ।

क्या मुझ पर संदेह है बनी मेरे वन की ज्योति तुम्हारे
दर्शन में है । अब जो भी तुम्हारी इच्छा होगी वह अक्षय में उस मेरे
साधने की होगी समझी । माँ ! तुम जो चाहे माँगे बने ।

— परमेश्वर ने वयस का मन्त्र विसाधना ।

आदमी को अतिमन्त्र के छाया में हाकड़र आनन्द भर करने
की इच्छा हो रही है ।

— अनिमन्त्रे ने बिना द्विचक्राकर कष्ट दिया ।

धीधी ! क्या अभी तुम सिद्धचक्रों में रहनी हो ? इन
मार्तन्दीक में उतर आओ ना । चाहे मन्त्रालो की मूर्तिमा बनाया है ।

— बुधमन्त्रे ने सज्जा की ।

उह ! मन्त्र आदमी की ही मूर्तिमा चाहिए ।

— अनिमन्त्रे ने कहा और मन्त्रकुरावा ।

कैसी मूर्ति महवानी होगी ? इच्छा दाया तो करो ।

पद्मब्दे ने गभीर भाव से कहा ।

माताजी ! मैं उसे क्या जानूँ ? यहाँ कहाँ से लाऊँ ? ऐसी करोड़ों मूर्तियाँ मैंने स्वप्न में अवश्य देखी हैं ।

— कह कर अत्तिमब्दे फिर अतमुखी हो गई ।

अत्तिमब्दे ! आज रात को फिर वही स्वप्न देखना । हो सके तो नमूने के लिए एक वैसा ही जिन-विव बनाने का प्रयत्न भी करो । उस की हजारों प्रतिकृतियाँ मैं बनवा दूँगी । अब उठो । यो भूखो रहना नहीं चाहिए ।

— ऐसा कहकर वह को साथ लिए पद्मब्दे चली गई ।

अत्तिमब्दे पर उस स्वप्न का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा था । उसकी कल्पना अत्यंत सजग हो उठी थी । वह कभी कभी विदेह क्षेत्र एवं परमौदारिक-काय जिनेद्र मूर्ति को अपनी आँखों के सामने चित्रित करने का प्रयत्न करने लगी । सिद्धलोक की मोहकता को मानसपटल पर अंकित करके कल्पना में लीन होने लगी । पहले उसकी रूप-रेखा खींचकर उस में रंग भरने का प्रयत्न करने लगी । घर पर रहनेवाले सोना चादी में जिनमूर्तियाँ ढलवाने के लिए बेचैन हो उठी । सहस्र मूर्तियों को एक साथ बिठाकर अभिषेक कराने के रमणीय दृश्य की कल्पना उसे आनंद विभार कर रही थी । अकृत्रिम जिनालयों की भाँति स्वयं कई जिनालय बनवाने की बात सोचने लगी । गगनचुंबी सहस्रकूट जिनालय बनवा दे तो वह चंद्रिका पर्व में नहाते हुए कैयें गोभायमान रहेगा । अमावास्या के गहरे अग्रकार में उस जिनालय को नीचे से ऊपर तक अंदर-बाहर घी के दीपों से जगमगा दें तो उस ज्योति मालिका में क्या ही सुंदर लगेगा । ज्योतिर्लोक ही मानो इस धरातल पर उतरा सा नहीं लगेगा ? ऐसी कल्पना उसे तन्मय बनाए रखने लगी थी । अत्तिमब्दे अपने गभावुधि में स्थित प्रवर्धमान शिशु को लिए विहार कर रही थी ।

ऐसे विचारधारा से कभी भी उबरने तो काव्यरङ्गन की विहारिणी बन जाती थी। महाकवि पद्म के आधिपत्य में स्वर्ग के मनमोहक वर्णन पढ़कर तन्मय हो उठती थी। स्वर्ग तो या मर्त्य जब तक पूरी आत्मा नहीं हो और वर्म मार्म पर चसते हुए र्व की कला पर विश्वास नहीं करें तो वह जीवन सार्थक नहीं होता। इन मनान्त सत्य पर उसका विश्वास बूढ़ होना गया। टहनी से टहनी पर उछलनेवाले कवच मर्कट से छूनेवाले मन को सन्तुष्ट सहसा जिनजिहो के सौम्य दर्शन में खगाए जाने लगी। और कभी-कभी काव्योद्यान में विहार करने का मौका भी उसे दे बैठती थी। कभी-कभी वह कल्पना करने लगती कि समस्त काव्यो और प्रास्था की हमार हमार प्रतिमिति बना कर एक साथ रख स। वो भी माने उन्हें साहित्य या शास्त्र का शान हैं। इस प्रकार उनके प्रचार कर्म में हाथ बटाते। वह सक्रम करती थी और चाहती थी कि स्त्रियों को साहित्य शान हैं। बस ही सुहायिणियों की गोब खोने की विनमृति से भर है।

अतिमध्य ! कबो सदा कल चितित थी रखती हो ? क्या पहले के जैसे हंस हसकर बातें गती करती ? मन में मूम मार सकोच के कोई भाषा रस का और उस परा होने नहीं हो तो मेरा लाडला भी मुन्हाटी पोष में है बिना हो जाएगा। बोलो तो सही।

— ऐसा पवमन्ने पूछा करती थी।

क्या मैं अपने मा की भाषा बता दं। मृतकर आप हंस पर्वनी। जाने सीधिए।

अनिमन्ने ने सेंपते सेते उत्तर दिया।

इस कोक भी बात हो तो कहो। यदि पद फिरना की पतस्त्रिा की बात नहीं हो तो अवश्य मैं मुन्हाटी रक्का पूज करूंगी। वह-फिरना कीम बटोर सकेया और कीम साचे में शककर मृतिमा बना सकेया। अपने मन में भी ऐसी मृति को प्रयत्न करके भी

मुझमे ढालते नहीं बना। चाहे तो कहो सोना चादी या रत्नों की मूर्तियाँ बनवा लें।

पद्मव्हे ने कहा।

ऐसा ही हो। क्या, जैसे मैं चाहती हूँ वैसे बनवा के देगी?

अत्तिमव्हे की बाणी में अभी मदेह था।

क्या, सोने की बनवा दूँ? अवश्य तुम्हारी इच्छा पूरा कर दूँगी। चाहे तो उस में मेरी पूरी संपत्ति ही क्यों न खप जाय। मेरे पैसे मे बढ़कर तो यह संपत्ति नहीं।

पद्मव्हे बोली।

अच्छी बात है माताजी। एक हजार सुवर्ण जिन प्रतिमा बनवा दीजिए। एक साथ सबका अभिषेक करवाना चाहती हूँ।

-- अत्तिमव्हे की बात अभी पूरा नहीं हो पाई थी पद्मव्हे की हिम्मत ने जवाब दे दिया। बात काटकर बोली

बेटी, तुम्हें क्या हुआ है? बोलेगी तो हजार की ही बात किया करनी हो। अब हजार मूर्तियाँ बनवाने का वान कर रही हो शायद हजार मंदिर बनावने की बात कहोगी। यह कैसे संभव होगा? बेटी, कुछ विचारकर बोलो। मानवी की शक्ति सीमित होती है न? अब कहो क्या करना चाहिए।

पद्मव्हे ने प्रश्न किया।

अपनी धुन में अत्तिमव्हे बोली

और एक लाख श्लोकवाले प्रबलजयधवल की हजार प्रतियाँ बनवानी ह। पप, पोत्र आदि कवियों की कृतियों की भी प्रतियाँ बनवानी होंगी। तभी तो हजार मुखों से कन्नड काव्यश्री मुखरित हो सकेंगी।

— अत्तिमव्हे भाव परवश हो बोलती जा रही थी।

जीजी! तुम्हारी बात मैं रखूँगी। तुम खिन्न न हो।

गुडुमव्हे ने आश्वासन दिया।

बुद्ध ! क्या तुम्हारा भिर भी पकल गया है ? तब तुम्हारा मे कम की बात सोचनी ही नहीं । तुम बिना आगा पीछा सोचे करवाने की बात के पीछनी हो । मनमाना इसी को कहते हैं । तुम दोनों दिग्भ्रमर बाबल में प्रियभी लगाने जानी हो ।

पद्मस्य ने हाटते हुए कहा ।

माताजी ! आप के आग्रह पर ही तो कर रही हूँ । आपने आस्थासन भी दिया था ।

— अतिमग्ने ने स्मरण दिलाया ।

आस्थासन दिया था । पर तुम तो हवागने से कम की बात करती ही नहीं । तुम इन काठ की नती बेबशोड़ की बात करती हो मतलब है कि ब्रह्मा कामदेव कल्पवृक्ष विनामसि आदि है जो मानव पर प्रामता पूर्वक होती है ।

— पद्मस्य ने कहा ।

मेरी जीजी की मानव परी करण के लिए कामदेव की आवश्यकता है ? बखिए आप बिना नहीं कर । सहज दिवो को एक नाच अभिवेक कराना कोई बहुत कठिन बात नहीं । मैं करा दूँगी ।

— बुद्धस्य ने सपरवृष्ट आस्थासन दिया ।

तुम दोनों की बातें समझ में नहीं आती ।

— कलूनी कलूनी पद्मस्य ने लगी गई ।

बुद्ध के चरित-विकास में स्वयं-वर्तमान की कमावती बुद्धस्य की । वह अतिमग्ने के मातावेध की जबरन कम से परिहार कर देनवाली जादूगरिनी थी । होता गजसंज्ञ के मुख्य के समान थी । अतिमग्ने की इच्छा और के लिए पागलपन ही लगती थी । पर बुद्धस्य के लिए वे आत्मचर्य की बात नहीं बस अति परवृष्ट और सहजता से प्रेरित प्रियाई के रती थी । अतिमग्ने का सुख लक्ष्य सुख का अतिमग्ने का सुख उगता हुआ था । इस प्रकार अपनी बड़ी बहुत के

जीवन में अपना जीवन नैवेद्यवत् अर्पित करके, अपनेपन का स्वधा त्याग किए वह निश्चित रहने लगी थी। उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती थी। पर बहन के लिए सबकुछ चाहती थी।

गुडुमव्वे ने सकृप किया कि अभिनव सिद्धलोक का निर्माण करा दे। इस काय के निमित्त अपने सभी भाइयों को बुलवा लिया। अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए दस-एक दिन माथा पच्ची करती रही। अंत में अत्तिमव्वे की कथा का वास्तविक जगत की वस्तु बनाने में सफल हुई।

एक बार दुपहर को अपनी बड़ी बहन को साथ ले जाकर सिद्धलोक के दशन करा दिया। एक शीश महल बनवाया था। उस में चारों ओर बड़े कलात्मक ढंग से आइनों को सजाकर रखा था और ऐसे ही रत्नों की जिनमूर्तियाँ भी सजाकर रखी गई थी। इन मूर्तियों के शिरोभाग में इस प्रकार नलिकाएँ बंधी हुई थी कि जब आवश्यकता हो तब अपने आप मूर्तियों का अभिषेक हो जाय।

अत्तिमव्वे को शीश-महल के मध्य में बिठाया। जहाँ वह दृष्टि क्षेप करती वहाँ करोड़ों जिनमूर्तियाँ देख पाती थी। वह एक मायालोक-सा था। उस माया लोक की महिमा वर्णनानीत थी। रत्नबिंबों से छिटकनेवाली कांति दण्डों द्वारा प्रनिफलित होकर दसगुना, सौगुना क्यों हजार गुना बढ़ जाती थी। इसी अनुपात में जिन मूर्तियाँ भी प्रतिविवित हो रही थी। अत्तिमव्वे की कल्पना इसमें और निखर हो उठी। उसकी भावना पुलकित हो गई। उस दृश्य को देखने में मानो उसका रोवा रोवाँ नेत्र बना था। सारा शरीर माना अतः करण बन कर आनंदित हो उठा। वह मानो आनंद रस का कलश बना। उसकी गति प्रवाह बन कर वह चली। वह उम में तन्मय हो गई।

नलिका स जब उन रत्नबिंबों पर सुद्ध जल का अभिषेक होने लगा तो ऐसा लग रहा था मानो निर्गमक सुग ही जड़ी सी

यत्न कर न शक्य रह निकलना । देखने देखने ऐसा मानित होने
 लगा कि ऊरोने बिना देख-गल की करोड़ों बागएँ एक साथ बह
 सी । नलिका में जल बह न आता तो बहना ही क्या स्वयं
 गीत गा। उदर उमंग जगमाँ पक करन के लिए ग्रामन बात
 नाच प मग गलभारा य रहने न थीर घीरे आ चला हो। ममानु
 मइत में बहल गिरवाँ को ममे-कर जिनाधिवेक लेगन के लिए
 ब्योला देती बाने । उतरनी हूँ भी रमगीगता बहूँ छा गई।
 जल माना बहबाने उन जिनाधिवेक न दूर बह पकर तो गला के
 निबर रस की उग में बुरा पारा नि बर बहबाकी मुरगवा सी गती।
 जब बह नीचे घीरे बहने रमनी तो ऐसा लगता कि हबबगा
 हठबानी हुई बगलक पर आ रही है। कभी उभी ऐसा लग रहा था
 कि जित बिह ही पलकित हुंकर लोक कल्याय निमित्त जमात में
 निकल पड़ हो। अहिना बर्य ही माना हीरकारिणि सा लहुरा उठा
 हो। अबबा रमावेक को मानो भक्ति का परिषेक भी मिला हो।
 गजानिवेक के अघसर पर नीला लोक महक उठा होया। अलिमब्दे
 को ऐसा लगा कि वह स्वयं सुगम में भोग्योत हो गई। उसने माना कि
 यही तेरा का मनेगवह है और गार को नाक कहना मार्चठ है। अत्रिवेक
 समान्य हुआ। तब रस बिबो के निकल सी भी बगिची प्रचार गई। तब
 देवता का लल रला की मनोहासिता। उसही कमनीयता से जब
 भी पुजकित होना बिबाई हो रहा था। तब अलिमब्दे के स्रव में
 बपा ऊहूँ। तमन एक बार ऐसा हो बुर्य देखा था। पर प्रत्यक्ष
 मी स्वयं में देखा था। यह को रप्रवाले बुर्य से हवारकुना अविह
 आकपंड था। वह स्वयं का पर यह यवार्थ वह बलना भी पर
 बह शान्तिक। मारे हर्ष के गुह्यमब्दे को बर बह बसे जगकर
 मान्य न कहने लगी—

गुह । गुह्याने बिना यह मसार मेरे लिए सुखप्राय होना ।

तुम ही मेरी जीभ हो। तुम ही मेरी आरा हो। तुम मेरे तान हो। मेरे लिए अपना साम्ब त्याग किए रहनेवाली त्यागमयी तुम ही मेरी आत्मा हो। मेरे स्वप्न का यथाथ रूप देनेवाली तुम हो। तुम्हारे ही कारण मेरी कल्पना काय रूप में साधक बन गयी है। तू मनभरानी। तुम्हें क्या कहूँ। तुम मेरे भाव की भाषा हो। भाषा का सादर हो।

—ऐसा कहती हुई अपनी वहन को बाता में बाँध लिया।

अन्तिमव्रत की घड़ी बड़ी जाजा-जमिलाशाओ की तान नुनकर अजितमेनाचाय जी अत्यन्त हर्षित हुए। आचाय जी ने अन्तिमव्रत का कलियुग की जनेन्द्र-जननी कहकर मन ही मन यशोगान किया। जात्रम में जितनी ताड़पत्री पुष्पोंके धी मल की एक एक प्रति त्रैलगाडिया पर लदवा कर रत्न के साथ विजयपुर भेजा। तमा गाडिया पर जाण सब ग्रथों को सजाकर विजयपुर में एक पस्तक भंडार खोला। अन्तिमव्रत के अमृत हस्त से उसका उद्घाटन समारोह मरना हुआ। हजारों ताड़पत्री के ग्रथ देखकर अन्तिमव्रत अत्यन्त प्रमत्त हुई।

रत्न। देश का सौभाग्य इन्हीं गया से है।

— अन्तिमव्रत ने सौभाग्य की कलापूर्ण व्याख्या सुना दी।

मानाजी। आप हमारे देश की शारदा माता हैं। आप नसी महत्वाकांक्षिणी, युग युग में एक ही बयो न मिल कर्ताटक कनकवृक्ष हो जयगा। कन्नड भाषा की सुहाग अन्तिमव्रत का आचार पर निर्भर है।

— रत्न की बातों में भारुकता टपक रही थी।

तात। केवल अन्तिमव्रत के जन्म लेने से ही क्या होगा? तुम्हारे जैसे तरुण कन्नड भाषा प्रेम से पागल होकर कविचक्रवर्ती बनने का स्वप्न देखने लगे तो कुछ सम्भावना अधिक है। हम केवल मार्ग को स्वच्छ एवं स्वस्थ रख सकेंगे। कवि के रस प्रवाह में वही से कुछ गदगी न जाने पावे इतना हम देख लेंगे। वातावरण को

स्वच्छ रत्ना हमारा कर्तव्य है। हम चाहती हैं कि हमारे कभी भाता कवि चरित्रियों का जन्म यहाँ हो। गुरुभय्ये ने दिनबिना के सत्र में जो मेरी कल्पना थी उसे पूर्ण कर दिया। तुम कविचरित्रों बन कर काम्य रत्ना का निर्माण करो। उन में से प्रत्येक की सहस्रों प्रतिमा बनवाकर मैं बांट देना चाहती हूँ।

इस प्रकार अतिमय्ये ने भाता कल्पना के दूसरे पहलू को भी स्पष्ट कर दिया।

भाताजी! आप की क्या कहने का फल है। आप बात बात में हमारे की हो चर्चा किया करती हैं। आप अवश्य हमारे मुद्रवादी मारवा हैं। आप सहस्र जोषनवनी बीजा गयी हैं। आप सहस्र मुद्रावा वाली बरसनी हैं।

रत! तुम्हारी प्रतिभा मेरे दयावाक में ही समाप्त न हो। वाद यह पपरेट के बाहर गोल। और पोन्त के बाहर रत्न को यह स्थान देना है।

यह कर रत्न को जून चुनौती की और प्रोत्साहित किया।



कवि कहते हैं तुम्हारे लिए क्या एक कोई बच्चा हो तो बनाओ बटी।

कह कर उस पवित्री का कल्पकय्ये ने दास्वास्तन दिया।

अन्त्यय्ये की बात सुनकर अतिमय्ये ने उत्तर दिया —

पठ जी! आज्ञा ममिताभाजी की क्या कमी है? तुम्हारे जल्दी रहती है। उन्हें सनाऊ तो सायब मुझे पावल मानने केनेगी।

दीपन-संस्कार ने जाई हुई अतिमय्ये का संकोच पूर्ण उत्तर भाताजी ने मना। उस समारोह में गमिगित होने के लिए आमुदराव की मादूने झलकावनी। पचागी थी।

अत्ति ! सकोच क्यों करती हो ! क्या हमारे रहने हुए भी तुम्हारी इच्छा पूरा न होने पावेगी ? बताओ बेटी !

-- काळलादेवी ने आश्वासन दिया ।

मामी ! सब लोग मुझे पागल ही समझने लगे हैं । मेरी गुड् मेरे अतः करण की बात समझ सकी है ।

-- अत्तिमव्वे ने उत्तर दिया ।

ऐसी बात है ! बेटी सुन तो तुम क्या चाहती हो ? मैं राव की माँ हूँ — जो चाहे तुम्हारी इच्छा हो, चाहे जितनी बड़ी हो मैं पूरा कर दूँगी ।

मामी एक हजार अच्छी अच्छी गाभिन गायों का मैं गरीब गभवतियों को दान करना चाहती हूँ ।

अत्तिमव्वे की बात काटकर जव्वकव्वे ने कहा —

जी ! आपने सुना ? कौन इसकी इच्छा पूर्ण कर पायेगा ? नर मनुष्य के बूते कि बात करती ही नहीं ! ऐसे ही मानवशक्ति के परे की जाने इसको सझा करती है ।

— ऐसा कह कर जव्वकव्वे हँस पड़ी ।

जव्वकव्वे ! साधारण बूते की बात यह नहीं है । मैं मानती हूँ । पर इस की इच्छा सुनकर सतुष्ट होना चाहिए । सोचना चाहिए कि यह भी सौभाग्य की ही बात है । ऐसी ऐसी महान आशा अभिलाषाएँ ऐसे गौरी के मन में जाग नहीं सकती । समझी ?

— कहकर अत्तिमव्वे से कहा

बेटी ! मैं तुम्हारी आशा पूर्ण करूँगी ! बल एक हजार गाभिन गायों का ढेर यहाँ जमा किया जायगा ।

-- अत्तिमव्वे ने मोचा की काळलादेवी की उदारता ही बोल उठी है । फिर जव्वकव्वे को मबोधन करके काळलादेवी ने कहा

सुन अब्बे ! एक हजार गभिणी साध्वियों को तुम न्योता दो ।

हता भी कर सकोयी वा नहीं ? येही हम साहसी की भाषा
 भाषाभाषी को मिला समझे तमन हम सकोय मे हास रगा है।
 बहानी मन माने रूख जाती है।

इस प्रकार सब को एक ही छाठी में बाँध दिया।

बिजयदर की झोपड़ियों में रजनेबाछे खरीदा वो काठनायेवी
 ने प्रीति भोज दिया। उन में से भठा लगा गयाऊर एक मुख्य अस्वत
 हरिद गन्धनी माधिया को छोट किया। उनके लिए एक हजार दामित
 मन्ना को एकत्रित क रखा जा। हरिदला के एक एक में फसी उन
 माधियों को ठहरन अवाक्य नहकाया। नए नए बरना बाहि ग तिवार
 किया। बनेली का तल लगा कर बाछो को सवारा और बूझ डीठा।
 और सब के बूझो में फूल सरोप गए। ऐसा लग रहा था माना
 हरिदला की कमर तोड़ बाकल का ही प्रबल हुआ हो। जो मद्भागिन
 हरिद मुहलभी सी जब रज़ी की जब माध्यामभी बनकर बैठी थी।
 अतिमन्त्र ने इन माधियों के पास खय जाकर उन से कसब प्रश्न
 किया। सब के वैयक्तिक कल-मन्त्र वि जान किया। एक एक करके
 उनको बदन पास बुलावा और बाही की नकल और तोन ही सीपवाली
 एक-एक बाय को उसे जान दिया।

वह भी अतिमन्त्र की इच्छा! हम रूप में पूज किया
 काठनायेवी ने।

यह एक अनन्तर मद्भाग्य था। चार दिन के बाद
 अतिमन्त्राचार्य भी अपने सैकड़ों मणि सिन्धों को साथ लिए बिजयदर
 आए। अतिमन्त्र ने सब को भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। इन पगम
 मिनेत्रों को बीच घर देखा सत्पुत्र हुई। जानव भार से बड़ी हुई सी
 सिर मुकाए उनके गम्मुख बैठ गई।

येही! तुम्हारी एक एक भोकोतर अयिमायाओ का बिबरन
 रत्न में जाना है। येही उबार आत्मा को देखन की प्रबल इच्छा हुई।

स्वयं चला आया। मुझ बैरागी में तुम्हारी कोई इच्छा पूर्ण हो सकती हो तो बताओ बेटी, सकोच मत करो।

अजितसेनाचार्य की वाणी वात्सल्य से सनी हुई थी।

एक इच्छा है। एक हजार जिन-मुनियों को भिक्षा देना चाहती हूँ। सो भी एक साथ।

अत्तिमब्बे की यह बात सुनकर सब अवाक रह गए।

अत्तिमब्बे, तुम सचमुच मूर्तिमती मोक्ष-लक्ष्मी हो जो इस धरातल पर भूले भटके उतर आई है। तुम ही सहस्र नेत्रा, सहस्र वदना, सहस्र हस्ता, सहस्र कर्णा और सहस्र रसना हो।

इस प्रकार अत्तिमब्बे का यशोगान करके अजितसेनाचार्य जी ने अज्ञात रूप से स्थित जैन तपस्वियों को कहला भेजा। विजयपुर में अजितसेनाचार्य जी के दर्शन के लिए कोने कोने से जैनमुनि चले आए। अत्तिमब्बे की आशालता मानो लहलहा उठी। हजार से भी अधिक मुनियों को एक ही छप्पर के नीचे शास्त्रोक्त विधि में अन्नदान दिया। क्या ही अद्भुत दृश्य था। लग रहा था सिद्धलोक इस धरातल पर उतर आया हो। अत्तिमब्बे की आशा पूर्ण हुई। इस अन्नदान महापर्व में सहस्र मुनियों के बीच में अत्तिमब्बे इस स्फूर्ति के साथ हाथ बँटा रही थी मानो हवा में पर लगे हो। इस प्रकार भरसक इस पुण्य काय में दैहिक श्रम उठाकर भी वह नहीं थकी। पुण्य भाजन बन कर विराजमान हुई। प्रशांतचित्त की प्रसन्नता मुख मंडल की शोभा बटा रही थी।

अत्तिमब्बे ! तुम्हारी मान कामनाएँ सफल होगी। वह काल दूर नहीं है जब की तुम औरों की सहायता लिए बिना ही हजार जिनालय बनवाओगी, खुद ही सहस्र जिनविद्वों का प्रतिष्ठापन कराओगी, सहस्रों ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ बनवाकर दान दोगी। अथवा क्या कहें तुम ही कर्नाटक की कल्पलता हो।

— कहकर ज जगमेन च प श्री ने मुक्त कठ म उमका
 योजन किया। आचार्य श्री बकापुर चले गए। द्विम प्रकार काष्म
 म रघामिष्यन्ति म पोषक बनकर अनन्तरादि आते हैं और रम
 निष्पत्ति के साथ श्री साहसियों के ध्यान में बोझ बन जाते हैं इसी
 प्रकार अजितमेनाचार्य के साथ जिन-मुनि-बन्ध थाया और अतिमध्य
 की महात्माकाया के पक्ष में ही अपने अपने स्थान पर चला गया।



बोहो! यहोभाग्य है! अथानक आज इन देवकन्याओं का
 प्रवेशमन हो रहा है। प्राय आज इस भवन पर क्या दृष्टि पड़ी।

— वे नागदेव के वचन थे। अपनी पत्नियों को अपनी ओर
 आते देखा तो प्रेम विह्वल हो बोल उठे थे।

जी हा। आज देवराज के दर्शनार्थ आई हैं।

अतिमध्य ने मनोहर उत्तर दिया।

औदार्य मूर्ति का स्वागत करता हू। कसकटा को स्वागत
 है। क्या तुम्हीं ने घघार की बरिहवा की कमर तोड़ देने का
 धकत्व किया है? बड़ा उलम विचार है। घब की पाठ यह है कि
 इन कोटोपकार की भूम में इस अपाहिज का भूल पड़े। यह बेचारा
 इस कारण से मुकटे पा रहा है।

नागदेव ने परिहास्य किया।

दिया तले अंबरा होता ही है।

— पुत्रगर्भ ने उत्तर दिया।

क्या देवराज के दर्शन के लिए आई हो?

— नागदेव ने अस्मिन्ग्रे से प्रश्न किया।

जी हा।

— दोनो ने उत्तर दिया ।

कब से हम देवराज माने जाते है ?

कुतूहलवश पूछा ।

जब हम देवकन्या बनी तभी से ।

उन दोनो का उत्तर था ।

ऐसी बात है । समझा । तुम देवकन्या हो तो मैं देवराज बनूंगा । यदि तुम कामधेनु वनो तो हमारी क्या दशा होगी ?

हँसते हँसते जिज्ञासा की ।

आप ही जानते हैं ।

— मुस्कुराकर अन्तिमव्वे बोली ।

क्या तुम कामधेनु और हम काम वृषभ होंगे ?

फिर मुस्कुराया ।

देविए, यो उपमा से खोवा-तानी करना नहीं चाहिए ।

अन्तिमव्वे बोली ।

खैर । आआ देवियो । तुम उपमातीत हो ।

नागदेव ने स्वागत किया ।

हम भले ही उपमातीत न हो आप की मतोनीता तो अवश्य है ।

गणी । इस जन के योग्य कुछ सेवा की आज्ञा हो ।

कानरता का अभिनय करते हुए बात बदलकर पूछा ।

अभी जो सेवा की है वह क्या कम है ?

कान भी सेवा हुई है ?

जनमाने से तक किया ।

क्यों हृदयेश्वर । कुछ नहीं है ?

हमारी समझ में तो कुछ भी नहीं किया है । गुडुमन्वे ने तुम्हारे लिए मिदल्लोक का निमाण समार पर कर दिया जिसे देखकर हम दण रह गए । राल्लादेवी ने आपा स्वर्ग-पुद्राओ को पानी की

मरुत गब किया। हमारा बहुत लड़का मर उधने जो सरस्वती का
महार हो लोककर तुम्हारी मनोशामना परिरूप की। तुम्हारी इच्छा
के अनुरूप सहस्रो मनिवृष का नमस्कार भी हुआ। हमारे लिए राम
कठ भी नहीं बचा होगा।

वह नागदेव मस्कराए।

बड़ सारी बात सही है। य सब आप की कृपा पर ही तो
सम्भव हुआ। उस के परक के रूप में य सब महाकाय हुए हैं।

अतिमध्यम न मरुट किया।

बलि ! तुम्हारी बातें पहेली ही लगती हैं। यह बड़ा गपार
है। इस जन से पहेली बुझोवक क्या संभव है? जो कुछ कहना
हो सीधे कहो तो कल समझे।

ऐसा नागदेव कह ही रहा था कि बुधुमध्य इन के
समापन में शामिलित हुई।

बुधु ! सुना न ! तुम्हारी बहन कहती है कि मैंने उस पर
बड़ी क्रोध की है जिससे यह सब हो सका। मेरी समझ में नहीं आता
कि वह कौन-सी कथा है। यदि तुम जानो तो कहो।

— आश्चर्य व्यक्त किया।

क्या बात है बीबी ?

आप मेरे लिए कुछ करना चाहते हैं। चाहते हैं कि कुछ
कहें। पर मैंने कहा कि अब तक आप जो कर चुके हैं वही पर्याप्त
है। इससे अधिक और कुछ नहीं चाहिए। मेरे जतर सही है न ?

— अतिमध्यम बोली। और मस्कराई।

ठीक तो है प्राणेश्वर ! आप से मेरी बहन का बड़ा उपकार
हुआ है। आप के अनुग्रह से ही उनका सम्मान बड़ सका है।

— ऐसा कहकर बुधुमध्य भी मस्कराई।

बोहो यह बात है ! अनुग्रह से तुम्हारा यत्नक सम्भव

लिया। गुड्डू, क्या तुम भी अनुग्रह चाहती हो? तुम्हारा भी सम्मान बढ़े।

नागदेव हँस पड़े।

पहले मेरी बहिन को आप की गोद में अपनी भेट चढ़ाने का मौका दीजिए, तब विचार करें। बाद को हम अपनी बात सोचें।

— ऐसा कहकर गुड्डुमब्बे हँस पड़ी।

फिर बहिन की ओर ममता भरी दृष्टि से देखती हुई बोली— वहन, रहने दो ये बातें। अब बताओ और क्या इच्छा है?

गुड्डू! एक बार शस्त्रागार देखने की बड़ी इच्छा हो रही है। क्या आप दिखा देंगे?

नागदेव से प्रार्थना की।

चलो! यह कौन बड़ी बात है।

कहकर दोनों देवियों को साथ लिए सीधे शस्त्रागार आ खड़े हुए। वहाँ हजारों तेज तलवारें थी। उनकी चमक चकाचौंध कर देती थी। अत्तिमब्बे ने एक को हाथ में लेकर उगुली से धार की जांच की। उसको कमान से झुकाकर परीक्षा ली। क्षणभर नागदेव और गुड्डुमब्बे ने तलवार चलाकर वीर रस का दृश्य सजाया। तलवारे चंचला सी चमक रही थी। बिजली से टूटकर गिरती थी। इन की नाना भंगियाँ देखकर अत्तिमब्बे चमत्कृत रह गई। मृत्यु देवता की जीभ-सी लगनेवाली तलवारों को यथास्थान रखा। तब भालों पर अत्तिमब्बे की दृष्टि गई। उसके इशारे पर नागदेव गुड्डुमब्बे के साथ भालों से कुछ देर खेलते रहे। अत्तिमब्बे परीक्षक के समान खड़े खड़े निरीक्षण करने लगी। ऐसे ही गदा उठाकर नागदेव और गुड्डुमब्बे ने भीम दुर्योधन के गदायुद्ध का अभिनय किया। वही स्थित धनुष उठाकर उसकी टोरी बाध दी और ठकारा। तब ऐसा लगा मानों धीन का नाग महमा टड़ा हो। ऐसे ही शस्त्रागार के नए नए शस्त्रास्त्रों

की परी-करके अतिमयई हर्ष चित हुई।

अनि । समय गया था कि तुम बबल गाबनालोफ से बिहार करनवासी कामिनी भाव हो। अब मेरी धारणा गलत निकली। वता बला कि तम्हारी माहसिकता मज्ज नहीं हुई है। सोच रहा था कि तम छेने छेनीने का या निी कवि का जन्म है होगी।

— नागदेव न अपने मन की बात कहकर चुटकी ली। क्या कग मेरी गोद में कोई कवि जन्म लेगा? धर्म धर्म! अतिमयं जानचित हुई। तम का हृदय मृदु पर अक्षिप्त था। वला तम्हारी सनान मम जैसा पराजमी दिक बतता चाहिए। समझी न

नागदेव न अपनी हक़्ता गक़ की।

बहु भी हो प्रियतम! मग मृदु कवि भी हो और कवि (री) भी हो।

अतिमयने ने कहा।

क्या कहा कवि और कवि? अर्थात् बात न केवल कलम के धनी हो बल्कि तत्काल के भी बनी बने। बूब! कम्पना बड़ी मृदु है।

—नागदेव हँसा। प्राय नागदेव ने सोचा होता कि ये शोर्ता गुन कभी एक में नहीं रह सकते।

क्यों ऐसे सफ़रि बनू? पय देव को देखिए। वे क्या मद्राकवि और मद्रा पद्यकमी दोनों नहीं हैं? कवि होने से यह नियम नहीं कि वह सदा कलम ही पियता रहे।

—और एक बात प्राचीन कवियों के कलाकृतों का स्वास्वादन करनेवाले छात्रय भी एक वर्ग में यदि कहे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए आप ही की ओ। और ये। जीजी है जो हमार हमार प्रियमाँ के एक वाक्य की बतवाकर पाँटना चाहती है। वह फिर

कवि की कल्पना से कम है ? कवि को महा सौध कहे तो प्रकाशक उन सौधों की नींव है। और सहृदय समूह उन सौधों के कलश है। आप दोनों कवियों के आश्रयदाता हैं। इस पर बड़े सहृदय हैं और काव्य रस रसिक हैं। कवि, प्रकाशक और सहृदय तीनों सारस्वत लोक के रत्न-त्रय होते हैं। रस प्रवाह का त्रिवेणी-मगम है।

— इस प्रकार गुड्डमन्वे ने भावावेश में आकर कवि शब्द की व्याख्या की।

तब तो मैं अपने को आडदा महाकवि कहने लगू तो क्या हज है ?

कहते हुए नागदेव ने अपने पीठ ठोक लिया।

क्यों नहीं ?

गुड्डमन्वे ने हँस कर जवाब दिया। उसकी हँसी में हँसी मिलाते हुए नागदेव बोले —

पर एक बात ! मैं रनवास का महाकवि हूँ। किसी राज दरबार का नहीं।

ठीक तो है प्राणनाथ ! गुड्ड मुझसे बड़ी चालाक है।

अन्तिमन्वे ने कहा।

जीजी ! तुम चाद हो तो मैं सागर हूँ - समझी।

— गुड्डमन्वे ने स्पष्ट किया।

तब ! तुम दोनों देवियों के बीच मेरा कोई स्थान नहीं ?

— नागदेव ने घबड़ाए हुए से सशय व्यक्त किया।

आप का स्थान ? वह तो यहाँ है ?

गुड्डमन्वे अपने हृदय की ओर दिक्कते हुए हस पड़ी।

मेरी बात सुनो ! तुम सागर हो और अन्ति चद्र ! पर मैं क्या हूँ।

तुम ? सागर में तरंग और चद्र में चन्द्रिका।

— गृहमन्त्र ने मुस्कृष्टकर उत्तर दिया ।

गृह । तुम्हारी वह उपमा ठीक नहीं बैठती है ।

— नागवेश ने आक्षेप उठाया ।

कोई बन्धी उपमा हो तो महाकवि ही बताए ।

— दोनों बेवियों के गृह में सहापा निकल पड़ा ।

तब क्या था ? तुम दोनों ने मुझ महाकवि मान लिया है ।

महापद्म ने ही मुझे बड़ा बीर माना है । तो मैं बीर महाकवि हूँ ।

— नागवेश ने गंभीर स्वर में कहते हुए सिर हिलाया ।

पर तब की उपमा तो बरी खूब गई ।

अतिमन्त्र ने चेष्टा ।

बन्धा ! जिन ! बूझ गया था । क्या कहा था गृह ने ?

तुम ही बादल ! तुम अंध हो तो मैं कब हूँ । बीर बूझ सामर हो तो मैं गारर हूँ ।

— अतिमन्त्रे बीर गृहमन्त्रे दोनों हँस पड़ी ।



विजयपुर में बड़ी रूम थी । शक्य का महल मानो चम्पाबाना बना था । सभी स्थितियों अपने लहूँ लहूँ बन्धों को कबो पर सुकाकर काष्ठ उच्च महास्तम्भ के लिए बने हरे चप्पर में बैठ गई थी । चप्पर के बीचबीच चाली की लकीरी से लटके हुए सोने के बोले में अतिमन्त्रे का बन्धा सजाया गया था । नागचरण सत्कार का महोत्सव था ।

बाहूँ बन्धा ! जन्म से ही तुम्हें उबार बीर मिच्छाचार ।

तभी तो समकालिक बन्धों को बुला लिया है ।

सभी निमन्त्रितों को प्रीति भोज दिया गया । सब बन्धों को

एक एक बांस की डोली, सोने की चमसी, चादी का प्याला, दिया गया । प्रत्येक माँ अपनी अपनी सतान गोद में लिए अतिमव्वे को देखने आई और उसके बेटे को असीस दिया । बच्चों को ऊनी ओढ़नी और मखमली दरी देकर अतिमव्वे ने कृतज्ञता प्रकट की । साथ ही साथ प्रत्येक साध्वी के आंचल को मट्टी भर सोने की मुहरो से भरकर विदाई दी ।

माँ, तुम सचमुच इन शिशुओं की माँ हो । तुम्हारी गोद सदा भरी रहें । तुम्हारी सौ सतान हो और सौ सौ साल तक जीए तुम्हारी सतान भी तुम जैसी कल्पलता बनें ।

वे सतुष्ट होकर ऐसे आशीर्वाद देती और विदा लेती ।

अतिमव्वे सबसे मिलकर प्रीति से कहती —

देखो बहन, तुम अपना स्वास्थ्य सभालो । बच्चे को कुछ कष्ट होने न दो । निस्सकोच तुम मुझसे जब चाहे आकर मदद ले लो । इन दो-तीन महिनो में धी आदि की कमी नहीं होनी चाहिए, समझी न ? कुछ कमी हो तो कहला भेजो । कम से कम कष्ट में इस बहिन को याद करना । ऐसा कहकर विदा करती थी ।

ऐसी ममतामयी बात सुनकर स्त्रियों का हृदय आनंद से भर उठा ।

तुम सचमुच देवी हो देवी । गरीबों से कौन सहानुभूति दिखाता है और उनका दुख दद सुनता है ? माँ, जब से तुम्हारी गोद भरी तब मे इस नगर में गरीबी की कमर टूट गई है । तुम्हारा बेटा राजा बने । हमारा कष्ट सदा के लिए मिट गया है ।

घर लौट जाते जाते स्त्रियाँ आपस में बोलने लगी —

अतिमव्वे बड़ी तपस्विनी है सुनती हैं कि इसे द्रौपदी का अक्षयपात्र मिला है । नहीं तो कहाँ से इतने लोगों को देने के लिए इतना धन आता ? दोनों हाथों से उलीचती जाती हैं । खैर हम गरीबों का

आश्विन हो जाय खाना और जन शीतल को कहा मिले तो बस ।
 पाते या अक्षय्यार्द्र न जाने पाम ही रय न । सिद्धासन उन्ही का रहे ।
 कन चापर आदि भी उन्ही का हा । हमारे लिए तो सूना जग
 और कर कवग भग जिने तो काफी है ।

एक न कहा ।

किन्ती इसी न कहा

समनी है कि प्रतिदिन अतिमन्त्रे की पूजा किया करती है
 और शर्यना करती है कि तरीखों का कष्ट दूर हो । अब ठठकर
 पारिवाट दूध पो हिकानी है अब बहाँ फूला क बदले सोने की झडी
 बनती है । सब ।

भक्षा किस से सुना यह किस्सा ?

—और एक ने इनहुक से बिजासा की ।

मेरी पक्षासन इन के यही नीकयानी है । परसो उसीने
 कहा था । मनली है कि कभी कभी वह सिद्धमन्त्रे जाती है । सब ।
 पठ पा । उने भी बनने साव सिद्धमन्त्रे के यही थी

बदनी बात का योग्यार अम्मा में समर्पण कर दिया

अतिमन्त्रे का बन्ना जाने सब कर हमारा राजा होगा ।
 बनी मे अपनी सेना जुटाने कहा है । आज बितने बन्ने यही जाए
 न वे आज बालकर अपनी अपनी योग्यता के मुताबिक कोई मनी
 कोई समाय कोई अधिकारी बनेग । मैंने तो अपने मूर्ख का फिर
 ठमके चटखों में अपना दिया । कोन जाने अविध्य के बर्ष में क्या क्या
 किया पना रहता है ?

—एक ने अपने बन्ध के अविध्य का स्वयं देखने का प्रयत्न
 किया ।

एक बात तो बहिन सुन लीक कहा । सबस्य यह राजा
 बनेगा । मेरी तो यही प्रार्थना है कि वह दिन अम्मी आर्य । अम्मी सेने

लेते जो गरीबों की सुध लेनेवाला हो वह क्या राजा बनने पर किसी को भूलेगा ? अभी देखो बरसों तक हम आराम से रह सकती हैं । उन्हीं की दी गई गाय है । कपडा है । काफी धनराशि भी मिली है । अब चैन की बसी बजती रहेगी ।

अरे पगली ! यह चैन की बसी कितने दिनों तक बज सकेगी ?

कुछ सोचा है ?

और एक ने छेडा ।

क्यों दूसरा बच्चा होने तक ही सही ।

— दूसरी ने उत्तर दिया ।

पगली कही कौ ! कितने दिनों तक ? यो बयो पूछती हो, नकद जो कुछ मिला है उससे साल दो साल तो कट ही जाएंगे और तब यह सोने की चमसी बेचा जाय तो और कुछ दिन काट सकेंगे । इस गाय को भी बेच डाले तो और कुछ दिन चलेगा । फिर वही जाने का मौका मिलेगा जहाँ से यह अब मिले । ऐसे सौ सौ मौका मिला करें । हम गरीबों के भाग्य मे खाली हाथ रहना क्यों न बदा हो पर उनका घर फूले फले और सदा भरा रहे ।

सबने इसका अनुमोदन किया ।



अतिमन्त्र के पुत्र का नाम अणिगदेव रखा गया । सुहागिनियों ने बच्चे को गोद में उठा कर प्यार मे एक एक अंग का चुम्मा लिया और पुचकारा । वह मानो मर्त्यलोक की ममता देख किलकारियाँ भरने लगा ।

मुन्नू ! तू अभी से किलकारियाँ करता है ? बयो ?

— एक ने बलेंध्या ली ।

मानो यह साक्षात् जिनविव है । अभी अभी इस लोक मे

बाप। जाते ही उसने किन्ती बूम मचाई है। बेटी पुरानों में
बर्भावतरण और जगमावतरण का वर्णन सुना था। अब इसने शब्दकण्ठ
करके दिखावा दिया।

यह धुनकर अतिमन्त्र ने प्रसन्न होकर कहा —

यह सब बाप की कृपा है।

मेरे बेटे। अभी से घर में ऐसी लट मचायी है। न जाने
बापे क्या कर बैठेगा।

— एक ने प्यार से उसका चुम्मा लिया।

बच्चे का हाथ उस समय उस महिला के बठहार से लगा।
उसे बच्चे ने पकड़ लिया। तब बिकामयल के स्वर में अतिमन्त्र से बोली —

बेचो बेटी। यह अभी से मेरे बठहार छीन लेना चाहता है।

उसे कष्टी हुई उसे बच्चे के मल में पड़ता दिया।

अतिमन्त्र ने मना करती रह गई।

बेचो बेटी। ठेरा यह मन्त्र देता भी जानता है और
लेना भी।

— और एक ने कहा और अतिमन्त्र को हँचाया।

हाँ माँ को पता है न यह। पर अब बाप ख्य हो है।

पर मैं समझती हूँ कि नाक बाही की-सी है।

यह पैर। हाँ हाँ बाबा भी का ही है।

— इस प्रकार बच्चे के वर्णन में कई सुझावितें लग गई थी।

देखा बाही। तुम्हारा यह लाडला किमियाँ के मल पर अभी
से हाथ भरता है।

एक बड़ी महिला ने पक्ष्यमन्त्र से कहा।

पक्ष्यमन्त्र ने न ओष का अभिनय करते हुए बोला

तुम किसे बाही कहती हो बेचो मेरे बाप भिरे नहीं है ?
मेरी कमर सीधी है ?

जाने दो दादी । जब वह ने बेटे को जन्मा तभी मे तुम दादी बन गई । तुम्हारे दात और कमर की वान रहने दो । क्या अब नवेली बन सकोगी ?

— पहली स्त्री ने अपनी बातों का समथन किया ।

खैर । मैं अपने मुन्नू की दादी हूँ । दुनिया भर की दादी थोड़े ही हूँ ।

पद्मन्वे ने उसी धुन में कहा ।

रहने दो दादी । तुम्हारे मुन्नू से ही पूछ ले । ऐमा कहती हुई बच्चे को गोद में लेने गई तो उसने सहज ही पैर उछाल दिया । मानो गोद लेनेवाली को लात जमा दी ।

हाय रे बाप । यह देख, मुझे लात मारना है ।

• वह बोल उठी ।

देखा । तुम लोगो का मुझे दादी कहना यह पसंद नहीं करता है । समझी ? मैं केवल मेरे इस मुन्नू की दादी हूँ । अकेले मुन्नू की ।

-- पद्मन्वे इसे गोद में लेकर इठलाने लगी ।

ठीक है, अब अकेले मुन्नू की दादी हो और -----

एक ने छेडा ।

तुम बड़ी चुड़ैल हो

पद्मन्वे ने उमे डाटते हुए बच्चे को डोली में सुलाकर डोरी पकड़ने का प्रयत्न किया ।

सब ने बच्चे को बारी बारी से झुलाया ।

अणिगदेव को भेंट के रूप में ढेर के ढेर सोने या चादी के कटोरे, तश्तरी, प्याले कगन खिलौने आदि आये । जैसे यात्रार्थी अपने आराध्य के सम्मुख अपनी गाड़ी कमाई न्योछावर कर जाते हैं उसी प्रकार अणिगदेव के सम्मुख सब की भेंटों की बौछार होने लगी । कपड़े लत्तों की बात कौन कहे ? नगर भर के लडकों में बांटने पर भी

काफ़े माना में बहकल जाता। सोने के न जान कितने दिनों में भट में आए। राजा महाराजा की ओर से भी हैसियत के मुताबिक भट आई थी।

अतिथियों को कहीं बहर बकावट न हो यह सोचकर गुड्डुमारे उस के स्थान में बाहर बैठ गई और अतिथियों को आराधना करने बिना किया। पर यह रहस्य किसी की समझ में नहीं आया। सब पूर्ववत् आनंदोत्सव चला रहा।

सभी विनाशों में बिना पृथा-पाठ हुआ। बन्ने का जन्म जिस दिन हुआ उस दिन से पञ्चकल्याण आदि महोत्सव मनाए गए और जिनमूर्तियों की स्थापना कराई गई। अश्विन द्वेज का तुला भार सोने में करमा और दस-एक महिलाओं को उसके बदन पर सोना नैट किया। इतना करने पर भी संपत्ति बरा भी कम नहीं हुई मला जहाँ एक द्वेज पर दो दो आदमियों को बाटा जाँस हो? अश्विन के अमोत्सव पर दसवें ने लाखा खर्च किया। बेलो हाथा छूट दिया। पर तामकरन के अक्षर पर भट के रूप में दुगुना जमा हो गया। महाराज इमेमा उबार होता है। मेमो के द्वारा अपनी संपत्ति बसराधि हो कर कर गली-मली नगर द्वार से बाहर बरसा देता है। इस बहाने सारे सवार को सुख आति का विशेष भंड देता है। पर कुछ दिनों में सारा जल हवर हवर बहते बटकते अंत में उड़ी सागर में आ समाता है।

अतिथियों वास्तव उबारता की धृष्टि थी। उसका तो राजपौष था। जहाँ कोम का नाम नहीं था संपत्ति भी कमी नहीं थी। जहाँ कोम नहीं संपत्ति गाना माति की रहती है यह बात चिंतार्थ हुई थी।

दसवी सदी के प्रारम्भ में चालुक्य राष्ट्रकूट के अधीन थे। राष्ट्रकूट और गंग परस्पर सहयोग रखते आए थे। अतएव दोनों की श्रृवृद्धि हो रही थी। गंगवंशज मारासिंह मानो शत्रुओं के लिए सिंह ही था। उसका अमात्य था चामुण्डराय। यही सेनाधिपति भी था। इसे समर-परशुराम और अरिभयकर आदि कहा करते थे। राष्ट्रकूटों का कर्क स्वयं दुर्बल था। अतएव गंगों के कृपा-बल पर राज्य करता था।

यद्यपि राष्ट्रकूट और चालुक्यों में नाता-रिश्ता था, फिर भी कभी कभी आपस में संघर्ष भी कर बैठते थे। अरिकेसरी द्वितीय के जमाने में राष्ट्रकूटों में परस्पर फूट पैदा हुई। गोज्जिग ने अपने बड़े भाई को सिंहासन से उतार दिया और स्वयं राजा बन बैठा। वह प्रजा पीडक बन कर कुख्यात हुआ। तब अरिकेसरी द्वितीय ने विवश हो कर गोज्जिग पर घावा किया और उसे हराया। राष्ट्रकूट साम्राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में गोज्जिग के चाचा बद्देग को अभिषिक्त किया। तभी से अरिकेसरी राष्ट्रकूट प्रतिष्ठापनाचाय नाम से प्रख्यात हुए। कृष्ण तृतीय के जमाने में राष्ट्रकूट साम्राज्य सुभद्र था, पर जब कृष्ण का पुत्र सिंहासन पर बैठा तो साम्राज्य में विघटन-कारी शक्तियाँ बल पकड़ती गईं। परिणामतः राष्ट्रकूट और चालुक्यों के संघर्ष साम्राज्य की सीमा में कभी कभी संघर्ष होने लगा।

तैलप के हितैषियों ने सलाह दी स्वामिन् ! आप जितना सतर्क रहें उतना कम है। राष्ट्रकूट जैन हैं और आप के सचिव और सेनाधिपति भी जैन हैं। अब लड़ाई में कहीं धोखा दे बैठें तो बड़ा अनर्थ होगा। समझिए सर्वनाश हो जाएगा।

उसके ऊपर मैं तैरकर ने कहा था जिसके बारे में यह कह रहे हैं। और किससे? बालक साधक की नींव किसने डाली? हम यद्यपि इसके छात्र हैं पर सोचिए इस साम्राज्य का हाथ उनके हाथ में अलग सुरक्षित रहा है। अतः हमने जीवनभावभावों में रणश्रीह की यह तक नहीं पाई है। अपने धर्म के प्रति आस्था रखते हैं तो योग ही है। कबल इस बातें उन पर संकेत नहीं करना चाहिए। आप अपनी बात मन में ही रखें रहिए। किसी के सामने बहने का साहस न कीजिएगा।

इस मन्त्रालोकन करने के निमित्त वस्त्र और मांस को कहना क्या और वे सुरत का उपस्थित हुए।

यह गच्छकृष्ण से दुःख अनिवार्य बना है। आप में से एक पर राजधानी की रक्षा का भार होगा। हमारे को एक धेन का भार सहायता पड़ेगा।

— तैरकर ने अपना आदेश सुनाया।

जीमान जी! यद्यपि अन्धकार में मान तो मैं अपने मन की बात कह देना चाहता हूँ।

— वस्त्र ने भी संकोच से प्रार्थना की।

वस्त्र जी! मैं यद्यपि सचिन हूँ पर हमने सदा आप की वद और अनुभव बनकर अपने पिता-पुत्र ही माना है। आप अपने विचार निरस्तकोच कह सकते हैं।

प्रभो! परिस्थिति बड़ी घनी और अटल है। दूर में हार हो या भीत दोनों के लिए तैयार हो रहना पड़ेगा। अब हुई तो कोई बात नहीं पर कहीं हार गए तो समझिए कि भारत जोक हमें अपना भी छोड़ा।

— वस्त्र की बात बीच में ही रुक गई।

वस्त्र जी कहिए। आप अपने मन की बात कहें बाकि तो—

तैलप ने व्यग्रता दिखाई ।

अब राज्य के सब पदाधिकारी जैन हैं । सेना मेरे पुत्र के अधीन है । कहीं कुछ हुआ तो हम बदनाम होंगे । सारा जैन-समाज बदनाम होगा । लोग कहने लगेंगे कि जान बूझ कर हम राष्ट्रकूटों से मिले, इस हार में इनके हथकड़ा है आदि कह कर निंदा करने लगेंगे । राष्ट्रकूट भी जैन हैं और उनके सहायक गंग भी जैन हैं । उनसे युद्ध करने मुझे और मेरे पुत्र को ही जाना होगा । हम भी जैन हैं । अतएव आप कुछ दिनों के लिए सचिव एवं सेनापति पद से जैनो को निवृत्त कर दीजिए । इस प्रकार प्रभो हम को बदनाम होने से बचाइए ।

दत्तलप ने साग्रह प्रार्थना की ।

मल्लप जी, आप अपना मत बताइए ।

तैलप ने उनकी तरफ मुड़कर उन का भाव ताड़ने के लिए पैनी दृष्टि से देखा ।

प्रभो ! आप जानते हैं कि मेरे भाई ने आप के लिए प्राण-त्याग किया है । मैं और मेरे पुत्र चालुक्य साम्राज्य के सेवक हैं । इतना होते हुए भी परिस्थिति को देखते हुए कहना होगा कि यह बड़ी नाजुक है । अपने विचार में तब जैन पदाधिकारियों को नजर बंद कर रखना योग्य है । अब की वार युद्ध की वागडोर अपने हाथ में सभालिए । मानव मन का क्या भरोसा । कौन जाने कब किस प्रलोभन में आकर वह पलट जाएगा ?

इस प्रकार मल्लप ने अपनी समझ में अपूल्य सलाह दे दी ।

आप दोनों समझी हैं न ? बड़े सचिवोत्तम हैं । बड़ी योग्य सलाह है ! धन्य भाग ॥

— कटकर तैलप ठठाकर हस पड़े ।

फिर बैचैनी से उठ खड़े हुए और बोले

दत्तलप जी, हमने पहले ही कहा है कि आप हमारे लिए

पितृ-मुक्त है। आपही ने हमारा पावन पावन किया है। इन्सप भी समझिए कि आप हमारे बाबा हैं आप का पुत्र भावबंध हमारे बंधेरा भाई है। अब यदि आप बुद्ध करना नहीं चाहते हैं तो एक काम कीजिए इसी को कायमूह में ज्केल कीजिए। जानकर साम्राज्य अपनी को एम्पूहूटो के द्वार खीर कीजिए। जीने की सहायता से तन्त्र होतबाही बयभी की बपेबा अबतक हमारे आत्मीय रखकर हम महापद्म की मही पर बिद्वत्कर, हमारे यज्ञ के लिए कारण बने हुए आप लोगों के सम्मिश्रित होकर बोझा देने पर निम्नेबाही द्वार हमारे लिए तैयार है। इस द्वार को हम अपना महाभाष्य मानें। अब युद्ध सन्निहित है। हम किसी को भी पबन्धुत करना या बबधना नहीं चाहते। बेटा आप के द्वार में है। आप बोझा ही देना चाहें तो कौन रोक सकता है ?

इतना कतुकर तीक्ष्ण व्यपत्ता में बसे गए।



नागदेव महा साहसी था। एक बार युद्ध के हाथी पर गत्ता प्रहार करके उसका कुनस्तक तोड़ बाका था। इस साहस कार्य में प्रमत्त होकर तीक्ष्ण महापद्म ने नागदेव को बरी सभा में भ भ महल की जगति बैकर सम्मानित किया था। कई राजाधरो ने नागदेव के कारण ही तीक्ष्ण बिजई बन सके थे।

एक बार की बमासान कबाई में एक बात हुई। तीक्ष्ण की सेवा परास्त होकर भावने लगी। तब नागदेव नेबल बकपति था। तीक्ष्ण ने उसे बुझाकर अपनी समस्त सेवा का सेवानी बना दिया। नागदेव ने ऐसा साहस दिखाया कि युद्ध का पाखा ही पकट गया। वह धन को गोमा मूही के समान बमकर लकवा था। बिपक्षियों की बबमना बब

लड़ाई करने आई तो घड़ी दो घड़ी के अंदर अपने असीम पराक्रम से उन्हें केले की भाँति काट काट कर मैदान को फाट दिया था। उस समय दुश्मनों को लग रहा था कि अब खैरियत नहीं है। भाग जाना भी मुश्किल है। उन्होंने विवश होकर कई मतवाले हाथियों के साथ एक ढ़म हमला किया। वे चिगघाड़ते हुए नागदेव पर झपटे। नागदेव को पकड़ने के लिए वे अपनी सूँड ऐसे हिला रहे थे मानो कृष्णसर्प चारों ओर से आ घेर रहे हो। नागदेव अग्निपर्वत सा जाज्वल्यमान था। दोनों हाथ में तलवार लिए उन सूँडों को काट काटकर गिराना शुरू किया। जिस हाथी की सूँड कटती वह चिगघाड़ते चिगघाड़ते अघा घुघ भागने लगता। आपस में टकराकर गिर पड़ते। गज-सेना की हिम्मत छूट गई। शत्रुओं के छक्के छूट गए। कटी हुई सूँड चटपटा रही थी। लहलुहान हो गई थी। नागदेव की तलवारें आग की लपटों के समान चमक रही थी। कोमर युद्ध में जय-वधू ने तैलप के गले जयमाला पहना दी। तभी प्रसन्न होकर तैलप ने नागदेव को 'दिग्गज' की खिल्लत दी और सम्मानित किया।

दिन ब दिन नागदेव की पद-प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। पाचाल सेना-सागर के लिए बड़वानल बनकर नागदेव ने विजय प्राप्त की थी। करहट में मल्लप का मुकविला करके सुभट-अग्नित्र बन विराजमान हुआ। नागदेव के चरण-चिन्ह देख कर विजय-श्री उसके पीछे पीछे जाने लगी। नागदेव ने न कभी हिम्मत हारी न कभी हार ही इनके पाले पड़ी।

ऐसे साहसी का समादर करके, स्नेह सपादन करके तैलप ने उमका उत्साह बड़ा दिया था और उम में राज-भक्ति की जड़ जमा दी थी।



रक्षक और मारक दोनों के लिए यह परीक्षा का समय था। राष्ट्रकट और उसके सहानुभूत वा दोनों जीन थे स्वयं जीन होते हुए सबसे मोझा बनाना था। अतएव दोनों ने अपने अपने पुरों को पकड़ा रखा। उनके साथ दोनों ने बहुत जलम विचार किया। उनका अभिमत जानना चाह्य।

गिताबी ! बुद्ध छन में जीन अपना होता है ? यदि इस समय पर हम बस-बहुत नहीं करे तो अब तक जो कुछ किया है सब व्यर्थ हो जायगा। सब पूछा जाय तो बर्ष और राजनीति में गड़बड़ नहीं करना चाहिए। अब तक हमें जायब बेकर पर और प्रतिष्ठा बेकर सम्मान किया है तो बाबुज्यों ने। मला राष्ट्रकटों ने हमारे लिए तो क्या किया है ? अब राष्ट्रकट चुकाने का मौका आया है क्या बर्ष के बहाने हम पीछे हट जायें ? तब तो हम न हम बाट के होने न उस बाट के। इन्हें-र दोनों से भ्रष्ट हो जायेंगे। जीन बर्ष ने कहीं राष्ट्रकट करने का आदेश दिया है ? अपने बैरी से डरकर कड़ने का आदेश बुद्धज्यों को महावीरस्वामी ने दिया है। मैं मर सकता हू पर बचलाम नहीं कम सकता। क्या नमक हृदय बन कर नागकीय कीड़ा बनूँ ?

नामदेव ने इस प्रकार अपना अभिमत ज्ञात दिया।

मत्स्य के पुत्र जी राष्ट्र निष्ठा में अतिशील थे। राष्ट्र की पुकार पढ़ते युनी-दाय बाव को और कुछ—इस निष्कम के माथ राष्ट्रकटों के मुआबिका करने का संकल्प किया गया।

अतिमन्थे का पुत्र एक बाघ का था। अभिनन्दन घर घर बंध के पीने हाथों हाव जाना जाता रहा कभी बारी की पीठ पर सवार होकर बाघता कभी नामदेव को बैठाकर बाबू जी बाबू जी कह उसके कंधों पर बड़ बैठा और तानी बसा बजाकर किछटारियाँ भरता था। बुद्धज्यों और अतिमन्थे दोनों को भी कह देता। यह

मुनकर लोग हँसते, फिर भी वह बुरा नहीं मानता था। उसका अरबराकर चलना क्या ही अच्छा लगता था। दल्लप को देखते ही उसे घोड़ा बना कर सवारी का खेल खेलता था। दल्लप को झुकना ही पड़ता था। वह पीठपर सवार हो जाता, पद्मब्बे दौड़े दौड़े आती और मुन्नू को सँभालती ताकी वह लुढ़क नहीं जाय। गुडुमब्बे और अत्तिमब्बे इस दृश्य को देखकर फूले नहीं समाती थी। क्योंकि नटखट घोड़े के समान उस समय दल्लप का उछलना और कूदना क्या ही अच्छा लगता था। चालुक्य साम्राज्य के अमात्य और मेनाधिपति अण्णिगदेव का वाहन बन कर खेलते थे।

एक बार तैलप के यहाँ उसे ले गए थे। तब अण्णिगदेव तैलप को ही घोड़ा बनाने का आग्रह करते हुए मचल पड़ा था। वच्चे का मन रखने के लिए वात्सल्य-हृदय तैलप ने घोड़ा बन कर खेला भी था। अण्णिगदेव का जन्म दिन से दल्लप का घर स्वर्ग सदृश बन गया था। सदा हँसोल्लास की तरा उठनी रहनी थी। घर का सर्वाधिकारी मुन्नू बन गया था। मुन्नू के सार्वभौम अधिकार में किमी को हस्तक्षेप करने का हक नहीं था। सच तो है कि वच्चे के साथ खेलते समय चाहे कोई राजा हो या मंत्री अपना व्यक्तिगत स्थान-मान पद-प्रतिष्ठा आदि भूलकर तन्मयता से खेलने में ही तो आनंद है। इससे बढ़कर घर में सुख सतोष और क्या होगा?

एक बार नागदेव पत्नी और पुत्र के साथ उपवन गया वहाँ वच्चे को पेड़ की छाया में बिठाकर स्वयं पत्नियों के साथ आँवमिचौनी खेलने लगा। कभी कभी बदरो के समान पेड़ पर चढ़ते, छलाने भरते। इन को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदते देख कर स्वयं बदर भी लजा जाते। अण्णिगदेव के आनंद की सीमा ही नहीं रहती। माना पिता को देखकर स्वयं छोटे छोटे पेड़ पकड़कर उछलना और कूदना था।

रत्नय और मत्स्य दोनों के लिए यह परीक्षा का समय था। राष्ट्रकूट और उसके सहायक पा रोमो जैत ने स्वयं जैन होते हुए उनसे बोझा बसाना था। अतएव दोनों ने अपने अपने पुरों को ब्रह्मा बोला। उनके साथ दोनों ने बलम अलम विचार किया। उनका अधिमत्त बातना था।

पिताजी! युद्ध अब में कीज अपना होता है? यदि इस बखतर पर हम अस्त्र-वृत्त नहीं करे तो अब तक जो कुछ किया है सब व्यर्थ हो जायगा। सब पूछा जाय तो बर्म और राजनीति में बहबह नहीं करना चाहिए। अब तक हमें आभय देकर पर और प्रतिष्ठा देकर सम्मान किया है तो चाकूत्यों ने। भला राष्ट्रकूटों ने हमारे लिए तो क्या किया है? अब राष्ट्र खल चुकाने का मौका आया है क्या बर्म के बहाने हम पीछ हट जायें? तब तो हम न इन बाट के होंगे न उस बाट के। छूँकर दोनों से भ्रष्ट हो जायेंगे। जैन बर्म ने कहीं राष्ट्रबोध करण का आदेश दिया है? अपने बीटी ने बन्दर करने का आदेश बृहस्पते को महावीरबाणी ने दिया है। मैं मर सकता हूँ पर बचनान नहीं बम सकता। क्या तमक हृदय बम कर नारकीय बीडा बन्?।

आदेश ने इस प्रकार अपना अधिमत्त सुना दिया।

मत्स्य के पुत्र भी राष्ट्र निष्ठ में अधितीय थे। राष्ट्र की पुकार पहुँचे मुनी जाय साथ को और कह—इस निश्चय के मान राष्ट्रकूटों के भुजाबिहा करण का संकल्प किया गया।

अलिमम्बे का पुत्र एक साधु था। अलिमम्बे पर बर बर्म के बीने हाथों हवन आता जाता रहा कभी बारी की पीठ पर सवार होकर खेकटा कनी नामदेव की देखकर बाबू जी बाबू जी कह उसके कपो पर बह बैठता और ताकी बया बजाकर भिन्नभाषिणी बरना था। मुहुमम्बे और अलिमम्बे दोनों रो गी कह देता। यह

सकता है सब कर रहे हैं। एक प्रात के राजा बना देने तक का प्रलोभन दिया है।

— नागदेव की बात बीच में ही रुक गई।

आपने क्या उत्तर दिया ?

— गुडुमब्बे ने कुतहल से प्रश्न किया।

तुम दोनों की राय जानना चाहता हूँ।

— नागदेव ने कहा।

श्रियतम ! हमारी राय किस लिए ? क्या यह ऐसी कोई जटिल समस्या है कि हमारी राय लेकर ही उत्तर दें ? जान लीजिए आप की इन दो सदर स्त्रियों में कोई एक को माग बैठे तो क्या हमारी राय लेकर उसे जवाब देने की बात सोचिएगा ?

— गुडुमब्बे की बात कुछ कठोर ही थी।

देव, क्या हमें स्वामिद्रोह करके शत्रुओं का पक्ष लेना होगा ? तब क्या हमारा वश रह सकेगा ? हम क्या जीने योग्य रहेंगे ? न। न॥ हमें उनका राज्य नहीं चाहिए ? क्या वह राज्य आचद्राक टिका रहेगा ? शत्रुओं के छवके छुटा कर ही अपनी तलवार नीचे रखिए। नहीं तो देख लीजिए कि कौन आप का आदर करेगा और कहाँ आप का गौरव रहेगा ?

अग्नि । क्या ही बच्चा होता कि हम भी बंदर होते तब तो मुन्नु को भी साथ लेकर उछल सकते थे ।

नागदेव ने गमीरवा से कहा ।

प्रियतम । क्या इतना सा सुख पाने के लिए बन्दर बनें ?

क्या उसे भी अपने साथ लेकर घूमने की इच्छा है ? क्या मिन्नारिनी को अपने बच्चे को थोड़ में किए फिरने नहीं देखा है ? बाहे तो मैं भी अग्नि को ऐसे ही बांध के जा चाहूँगी ।

— अतिमन्ने ने कहा ।

नहीं यों ही कहा ।

नागदेव ने उत्तमा उत्साह नहीं दिखाया ।

प्रायश्चारे । बाब बाप अनमन क्यों है ? आखिर बात क्या है ?

— बुद्धमन्ने ने कूटुम्बवध प्रश्न किया ।

अग्नि में ममता और आत्मीयता का कूटकर मरी थी ।

ठीक ठाढ़ा मुद्दू । बाब एक अटिछ समस्या सजा रखी है ।

नागदेव ने उत्तर दिया ।

समस्या ? अटिछ ? — अतिमन्ने ने आश्चर्य से झुरावा ।

एष्टकटो से छोड़ा बबाला है ।

संक्षेप में नागदेव ने कह दिया ।

क्या मिमिषिक भी पानी से डरेगा ?

मुद्दू ने आश्चर्य प्रकट किया ।

बामुडराय का सामना करना है ।

— नागदेव ने चिंतित मंश बना ली ।

सधि कर बीबिए — अतिमन्ने ने सज्जाह दी ।

यह बात सीधी गई । पर बात नहीं बनी । वे कोप मुझे राख्खी का पत सेने के लिए फुसला रहे हैं । जो कुछ करते हन

सकता है सब कर रहे हैं। एक प्रात के राजा बना देने तक का प्रलोभन दिया है।

— नागदेव की बात बीच में ही रुक गई।

आपने क्या उत्तर दिया ?

— गुडुमब्बे ने कुतुहल से प्रश्न किया।

तुम दोनों की राय जानना चाहता हूँ।

— नागदेव ने कहा।

प्रियतम ! हमारी राय किस लिए ? क्या यह ऐसी कोई जटिल समस्या है कि हमारी राय लेकर ही उत्तर दे ? जान लीजिए आप की इन दो सुंदर स्त्रियों में कोई एक को माँग बैठे तो क्या हमारी राय लेकर उने जवाब देने की बात सोचिएगा ?

— गुडुमब्बे की बात कुछ कठोर ही थी।

देव, क्या हमें स्वामिद्रोहकरके शत्रुओं का पक्ष लेना होगा ? तब क्या हमारा वश रह सकेगा ? हम क्या जीने योग्य रहेंगे ? न ! न ! हमें उनका राज्य नहीं चाहिए ? क्या वह राज्य आचद्राक टिका रहेगा ? शत्रुओं के छबके छुड़ा कर ही अपनी तलवार नीचे रदिए। नहीं तो देख लीजिए कि कौन आप का जादर करेगा और कहाँ आप का गौरव रहेगा ?

अन्तिमब्बे का विचार स्पष्ट था।

प्राणेश्वर ! कल ही आप कूच कर दीजिए। आ किमी से सलाह लेने की जरूरत नहीं है। हम अपने राष्ट्र के लिए सबस्व त्याग करने को सिद्ध हैं। युद्ध में काम आए तो वीर स्वा प्राप्त होगा, विजयी हुए तो यहाँ सम्मान पूर्वक जिएँगे। दोनों दशा में आप की विशद कीर्ति अजर और अमर होगी। यदि जब आप कन्नौ फाँटे या द्रोह कर बैठे तो न केवल आप बदनाम होंगे बल्कि आप नी सतान निरंतर इस अस्मान का शिकार बन जाएगी।

— गुह्यमन्त्रं न निर्णय मे विद्या ।

प्रियतम आप बिना आवा पीछा किए बाहर उठायें । आप अन्धमन्त्र हैं । क्या हम सूरसियों के पनि बनन मानें हैं आप निर्भीक बन गए ? आप केवल छेला बग कर रहे हैं जर्म कभी हुए यह पसंद नहीं करती । आप किस गौर्वर का इन बातों से डेह रहे हैं यह हम जानेवाला है । मैं नहीं समझती कि यदमन्त्र क्यों युद्ध के अवसर पर मानिसियों की सहाह देने के लिए आया । आप विम्वर हैं ! आप समर विनेत्र हैं ! युद्ध से आप क्यों कर पीछे हटेंगे ?

— अतिमन्त्रे न उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न किया ।

पूछ से पूछ पर उठनेवाले अमर के समान हर्ष चित होकर तीनों अपने अन्धमन्त्र के साथ बूट टहकटे रहे । कोकिल के समान कल कर अन्धमन्त्रे ने सबको बलिष्ठ किया । मयूरी के समान अन्धमन्त्र करके अतिमन्त्र न पनि को पिलाया । रत्नोत्साह से जीतकर तीनों जिताव्य गए । वही अति बार से नमित हो कर बार चले आए ।

उस रात को बड़ आराम से बिताया । पड़े नर्तन हुआ । अतिमन्त्रे ने ऐसा बीजागहन किया मानो स्वर्ग-पुष्प बिखेर रही हो । पद्म सदृष्ट होकर नागदेव ने उसे बागों हाथ में कसकर पले लमाया और तुम ही मेरी बीजा हो— कहते हुए उस से रस गया । जब अन्धमन्त्रे ने बीजा के वार छोड़े तब नाद-तरंग ऐसी उमड़ उठी मानो अक्षय्यता सागर उमड़ पड़ा हूँ । तब बीजों बहिनो ने अन्धमन्त्र किया । कलरी थी उठी । बहती गयी से हलवाई । संख्या की चुन में फल पैसाकर समनेवाली भाविनी थी बूट उठी ।

अनि ! तुम दोनों की कमा का पूर्ण रसास्वादन करने के लिए एक जगम पराप्त नहीं है ।

रत्नोत्साह में नागदेव ने कहा ।

इनी लिए तो हम मित्य प्रार्थना करती हैं कि अन्ध-अध्यातमो

‘‘आप ही हमारे पति हों।

ऐसा कहकर गुड्डमब्बे मुस्कराई।

गुडू ! तुम्हारी बहिन की गोद तो भरी। अब तुम्हारी ..
नागदेव भी मुस्कराए।

हम दोनों बहिनो के आप पति हैं न ? वस उसी तरह
अणिग हम दोनों की सतान है समझिए। अब भी वह पहिचान नहीं
सकता कि कौन गुडू और कौन अत्ति ! दोनों को माँ कहता है।

• गुड्डमब्बे ने निश्चित होकर कहा।

प्रियतम ! कल जय-यात्रा पर जाएँगे न ? अब आराम
लीजिए।

अत्तिमब्बे ने कहा।

अत्ति ! तुम मलय/मार्हत हो और गुडू चादनी रात है।
यह अणिग वसत ऋतु है। ऐसे वातावरण में कहो किसे नीद लगेगी ?
क्या बेचारी नीद तुम दोनों से भी अधिक प्यारी होगी ?

• नागदेव बोले।

अब भले ही आप को थकावट महसूस नहीं हो। पर जब
बिछुड कर जाएँगे तब की बात कहिए।

गुड्डमब्बे ने तर्क किया।

गुडू ! पर पर मैं बालक सा रहता हूँ। बन्नी पुद्ब के
मैदान में पैर रखते ही आग पीछा कुछ नहीं सझता। वहाँ उगलते
हुए अग्नियवत बन जाता हूँ। वीणा हाथ में लेकर जैमे तुम दोनों
इस लोक को भूल जाती हो इसी प्रकार तीरकमान हाथ में लेते ही
तुम लोगो को भूल बैठता हूँ। तलवार हाथ में लेकर चलूँ तो घासफूस
के समान शत्रुओं को काटने के अतिरिक्त और कुछ सझता ही नहीं।

-- इस प्रकार नागदेव ने वीरावेश में कहा।

पी फटी भी दिखाई देती है। अहा ! शीतल पवन का यह

स्पर्श क्या ही सुरज है। उठिए पड़ी वो बड़ी आराम लीविए।

अभिभवड़े न स प्रह निवेदन किया।

अनि रखवा करना निराहार रहना बाधि मेरें किए मामूली
सी बात है। बिना नीब हफ्तो रह सकता हू। बाना पानी क बिना
छड़ सकता हू। सुना है कि सौभाग्य मारवाड़ी को सौदा करते समय और
किन्हीका ध्यान नहीं रहता है। जैसे ही जब मैं तुम दोनों के साथ रहता
हू तो और कुछ ध्यान में नहीं आता अनि तुम मेरी नीब हो। मुंबू
तुम मेरी अन्न। और यह मुम् मेरा थक है।

— नाबरेव की बातों से रसिफता यह निकली।

मोहो! आप सबकुछ कबि बन गए हैं।

मुहमब्दे हुंसी।

मैं कबि भी हू और कठोर कबि भी।

नाबरेव ने अभिमान से कहा।

सारी रात ऐसे ही गपछप में बित गई।

अगर जीवन में ऐसी रात एकाध ही मिले तो भी जीवन
सार्थक है।

ऐसा कह कर अपनी निवृत्तमाया को छाती से लगाकर प्यार
किया। तब तक अकस्मिक हुआ था। यह देख कर नाबरेव ने कहा—

देखा एक बी रबी साथ रहे तो नीब बेचारी भाव जाती है
तब वो वो ऐसी मुरझाहियाँ वहाँ तो फूलना है क्या?

ऐसा कहकर उठा और अपना काम पर चला गया।

बाबुरूप मेता ने समरोस्ताह में कच किया। रणबाघ बंद
उठ। बिम्बोजेयम हाथी हजारा की सख्या में जाने बड़े। एब के
सब ठेक में स्नात थे। जस्ताह से बिम्बाह रहे थे। सवारों को
रोज से ठमूह में उल्लेखाकी उल्लेख हरण-माकाको का स्मरण हो
रहा था। पदातिवो के पदातिवो है उठी बूक से आकाश छा गया।

और स्वयं दिशाएँ दिशाभ्रष्ट हो गई । शस्त्रों की चमक ने चका-चौंध कर दिया । यौवनोन्माद में धनुष टकार कर उठे । तरकसों में समर्द्ध आ गई । चतुरगिनी सेना मान्यखेट पर झपटने चली ।

सेनापति की बरदी पहने नागदेव घर आए । सभी वृद्धों को नमस्कार करके आशीर्वचन पाया । जिनगधोदक को रक्षामणि की भाँति सिर पर धारण किया । वीरगीत गाती हुई अत्तिमव्वे और गुडुमव्वे ने नागदेव की आरती उतारी और सिर पर वीराक्षताएँ डाली । और दृष्टि दोष दूर करने के लिए एक नारियल तोड़ने ले आई । नागदेव ने उमे हाथ में लेकर हथेलियों के बीच में ऐसा दबाया कि नारियल एक दम टुकड़ा टुकड़ा हो गया, पानी चू पड़ा । पद्मव्वे इसे देख कर हँसोन्माद में अपनी बहुओं को संबोधन करती हुई बोली— देखो बहू, तुम्हारे पति की शक्ति कितनी है !

आप बाहुवली के ममान अभिमान-धन बने । शत्रुपर विजय पाकर आप घर लौटें । किसी भी कारण से आप का मन विचलित न हो । आप विजय-वधू के साथ घर आइए !

— वहकर अत्तिमव्वे ने पति का उत्साह और बढ़ा दिया ।

आप लोकैकवीर अर्जुन-से लग रहे हैं । अर्जुन अजेय था, आप भी अजेय रहें । आप युद्ध में काल भैरव हैं । अवश्य अरिपुर भस्म करके मृत्यु दान दीजिएगा ।

गुडुमव्वे ने कहा ।

अणिगदेव को गोद में लेकर नागदेव कुछ क्षण तक खेलता रहा मानो गेंद खेल रहा हो । इस प्रकार सब में विदा लेकर सेनानी नागदेव सेना में मिलने गए । अत्तिमव्वे और गुडुमव्वे की दृष्टि उस पथ पर लगी रही जिस पथ से होकर नागदेव विजय-यात्रा करने निकले थे ।

राष्ट्रकूटों में युद्ध की कोई विराट नैयारी नहीं हुई थी।
 नन्द तनीय के बावसासन सुन भी डीसे पड़ें थे। सेना में
 जनसासन नहीं था। बहुत पुराना सामन्तवा जलपन वह किसी
 मानि बड़ा आ रहा था। राष्ट्रकूटों के सामंत गमों की रक्ति बनी
 बगुन थी। होतो बगो में कई पीढ़ियों से रक्त-सुबध बना आ रहा
 था। गंगों का भारमिह मानों कर्क का बपरतक बना था। अरर ही
 अरर बाकस्य युद्ध की पड़ी सैध्यारी करके अपने अरर बाव
 बोर्डों में यह बात न तो गंगों में साची थी न राष्ट्रकूटों ने ही।
 सत्ता के समान बाकस्यो की सेना आ गई है यह सुनकर कर्क सतर्क
 हुआ सोच विचारकर मान्यकट से निकला और दो-एक दिन में ही
 बाकस्यो को बीच में रोपण का निश्चय किया।

बाकस्य सेना का सेनाधिपति महा पणकपी नावदेव था। उस
 सेना में ऐसे ऐसे धीर थे जो दूनबाकी विजयी को हाथों में पकड़ने
 में भी बापा पोछा नहीं करते। नावदेव अरर रचकर युद्ध करता
 था। इन कर्क में लड़का अपार कोसक था। उसका की दृष्टि से सेना
 अधिक नहीं थी। फिर भी अरर रचना के सब पर उसका बल पुपुना
 सिपुना का लम्बा था। महाब को बहा देनेवाले प्रवाह को बुद्धि
 कथक धिनी मिही की बाव बाककर नियमित कर देता ही है।

राष्ट्रकूटों की सेना लक्ष्मी की दृष्टि से बाकस्यो की सेना से
 कई गुना अधिक थी। मर पूर युद्ध-सामग्री थी थी। पर कोई ऐसा
 सेनापति नहीं था जो इनका उपयोग कर और सेना का सहायन
 बद्धि-मत्ता के साथ कर सके। कोई कामर के हाथ में बकापुत्र हो
 तो क्या होमा? बकापुत्र बकाने की कला में परिणत हो और समय
 पर बकाने की हिम्मत ही नथ न उसका प्रयोजन है?

हस्ते भर चालुक्यों और राष्ट्रकूटों में घमासान लड़ाई हुई। चालुक्यों ने राष्ट्रकूटों पर हमला करके इस प्रकार उनका नाश किया मानो मदमाते हाथियों का झुंड ईख के खेत में पहुँच कर सफा चट कर रहा हो। नागदेव जब कमान हाथ में उठा कर तीर चलाया गया तो कहना क्या एक एक तीर वज्र के समान टूट पड़ता और अपने साथ शत्रु का सिर भी लेकर गिर पड़ता था। वह हाथ में तलवार लेकर झपटता तो देखना चाहिए था, वह युद्धोन्माद में कैसे काल-भैरव बन सकता था। उसकी तलवारें क्या थी मृत्यु की जीभें थी। जहाँ निकलती वहाँ चाहे हाथी मिले चाहे घोड़ा चाट डालती। नागदेव का युद्धोन्माद वणनातीत था। वह पैदल-सिपाही पर वाज-सा झपटता और उसी को उठाकर शत्रु सेना पर दे मारता। वह तो फेंके जाने पर मर जाता ही पर साथ साथ धक्का देकर अपने साथ दो-चार सिपाही को लेकर चल बसता।

कक नागदेव के आघात से ढेर हुआ। सहसा वर्षा होने पर जनता जैसे भाग निकलती है उसी प्रकार सेनापति के गिर पड़ते ही राष्ट्रकूट-सेना व्रतहागा भागने लगी। चालुक्यों का सामना करने के लिए कोई नहीं रहा। राष्ट्रकूटों की राजधानी पर चालुक्यों का झंडा पहराने लगा। शतमानों से संचित अपार संपत्ति तैलप के हाथ आई। उन्होंने दिल खोलकर सैनिकों में उसे लुटा दिया। जो जितना ढोकर ले जा सकता था उसे उतना घन दिया गया।

राष्ट्रकूटों पर चालुक्यों का हमला हुआ है— यह खबर पाते ही मारसिंह अपनी सेना लिए सहायता करने निकला। उस समय चामुंडराय अन्यत्र चले गए थे। अतएव मारसिंह को ही आना पड़ा। पर खेद की बात थी मारसिंह राष्ट्रकूटों की सहायता नहीं कर सका, क्योंकि तब तक राष्ट्रकूट पूणनया हार गए थे। राष्ट्रकूटों के हिर्नपियों ने राजकुमार को किसी तरह बचाकर गुप्त द्वार में पलायन किया था। रास्ते में ही अनाथ राजकुमार को भेट मारसिंह से हुई।

मारसिंह को बड़ा गुल हुआ। सब कट चुका था। मारसिंह के पञ्चांगाय या सगार से सब कट नहीं बन सकता था।

फिर भी बरसा बुकान के सङ्केत से सिंह-जर्जन करके मारसिंह ने चाखस्या पर हमला किया। मारसिंह के साथ लोहा डवाने में नागदेव को विद्रोह मानव पिका। उभरता जस्ताह उमड़ पड़ा। उसने जवन ग्राहस को सार्बक माना। समझा कि अपना जन्म पूर्ण हुआ। सोचा कि उत्तर कुमारो से कट कर बीठने की अपेक्षा जर्जुन से लोहा बचा कर हार जाना भी ध्येस्कर है। इस में हार बीठ दोनों में कीटि है। और ऐसा सोचकर नागदेव ने हथियार उठवाया। मारसिंह के साथ नागदेव का युद्ध बेसा ही था जैसे बीष्म पितामह के साथ भीर अमिमन्पू का था। मारसिंह की वृष्टि में नागदेव बीरता की पुतली था। उस के मटीक बरत देख कर देखते ही लडा रहता।

मारसिंह ने बड़ युद्ध करण का निश्चय किया। नागदेव ने भी स्वीकार किया। दोनों मत्त-युद्ध में उलझ गए। नागदेव का जीव बजाना क्या था माना बिजली का कड़कना था।। जब तर बानो ने परस्पर मानधर्म का अन्तम लगाते हुए एक दूसरे को चर कर देखा। वह भय और काहुवलि के वृष्टि-युद्ध का स्मरण पिका रहा था। दोनों ने बिपक्षी की शक्ति में पाने का प्रयत्न किया। बाद को ऐसे दिडे कि भानो को छाड़ अपनी छीनो को अबाए एक दूसरे को देखना चाहते हैं। मगबाई हाथी के समान भिडे सुँड-सी मृमार्प बिन्धी को पकड़ में लाने को कस्तुर हो उठी पर फिन्धी का मनोरम पर्न नहीं हुआ। जब पचा-युद्ध प्रारंभ हुआ। उनके बरा प्रहार से धिममारियाँ निगल रही थी। अंत में मारसिंह ने एकाएक नागदेव पर सिंह के समान छपट कर बराभीजगह, उसी को छठ बिना और आकाश में फेंक दिया। खबर के समान हुआ में पोछा छपाटे मपाटे समस्तकर जीव ही नागदेव लीचे था रहा था बीने ही बेंब की बाति

उसे पकड़कर मारसिंह ने जमीन पर दे मारा। नागदेव के हृदय में मानो प्रतिशोध की आग भभक उठी थी। सभलकर उठा, शार्दूल के समान देखते देखते मारसिंह पर सहसा आक्रमण किया। और उसे उठा कर इस भाँति मँडारने लगा मानो एक पर्वत दूसरे पर्वत को लिए बल्लर में चक्कर काट रहा हो। इस युद्ध को देखते हुए दोनों ओर की सेना निश्चेष्ट खड़ी थी।

ऐसा लग रहा था कि नागदेव को मारना मारसिंह नहीं चाहता। और मारसिंह को मारना नागदेव नहीं चाहता। सेनाधिकारियों को यह एक वृक्षौल पहेली बनकर सताने लगी। कई बार ऐसे मौके दोनों को मिले। यदि चाहते तो विपक्षी का सहारा कर देते। पर ऐसे अवसरों पर उदासीन से रह जाते पर एक दूसरे पर ऐसा झपटते कि खतम कराना ही चाहते हो।

सहसा एक दुर्घटना हुई। राष्ट्रकूट के सेनापति वही, एक पेड़ पर छिप कर बैठा था। नागदेव को दायें पर पाकर सोचा कि अब खतम कर देना चाहिए। तुरत निशान लगा कर नागदेव के छाती पर एक भाला दे मारा। वह नागदेव के वक्षस्थल में जा घसा। नागदेव परकटे विध्याचल के समान बैठ गया। मारसिंह ने तुरत उसे दोनों बाहुओं से उठाकर सभालने का प्रयत्न किया। उसे बड़ा पश्चात्ताप और खेद हुआ। पर किया क्या जाय ? जो नहीं चाहता था वह हो गया था। मारसिंह पर नागदेव की मृत्यु का गहरा प्रभाव पड़ा। उस दिन से उसे अन्नजल तक में अरुचि हो गई। सल्लेखन-व्रती से वीतराग दिखाई देने लगा। विजय से वैराग्य ! यही तो विधि-विडवना है। होनहार को कोई मिटा नहीं सकता। कारण कुछ भी हो जो कुछ होना है वह होकर ही रहेगा।

दिव्य-श्री ने जासक्यों का वरण किया। राक्षसों के राज्य पर ईश्वर का अधिकार स्थिर हुआ। पर परिस्थिति ऐसी थी कि वीरे ब्रह्म को धम्म लेकर भाँ का स्वर्गवास हुआ हो। क्योंकि नागदेव की मृत्यु ने ईश्वर को बड़ संकट में डाल दिया था। जब नागदेव का पार्श्व शरीर राजधानी में आया गया तब उसे पोख में रख कर ईश्वर इस भाँति दो पड़ पानों प्यय दिखवा बना हो। इत्थन का हाल क्या कहा जाय। हफ्तीठ पुत्र को खो कर पागल बना हुआ था। शस्त्र भी। हमारय अभिमन्यु अब नहीं रहा।

— ईश्वर प्रकाश करने लगे।

प्रभो! जब मेरा क्या होगा? यही एक सवाल था। जब वर पर हो हो दिव्यजनों को मुह दिखाने कैसे बाँडे? उनकी मूर्खता मुदी हम कैसे बीबिठ रहें? आप मेरा भी बंध कर डालिए। यह सब से बड़ा अनुग्रह होगा। जब मैं जीना नहीं चाहता। मैं ही आत्महत्या कर लूँगा।

— कह कर जब मधुसूदन सुनील को अपनी छाती में धोके पड़ा तब ईश्वर ने सहसा उसका हाथ बामकर सुनील की गटके से छीन लिया।

इत्थन भी। क्या मैं आप की शरण नहीं हूँ। जब तक मैं विश्व हूँ तब तक आप अपने की शीत क्यों मानते हैं? आप भी आत्महत्या कर लें तो मैं क्या करूँ? मेरा क्या होगा? नागदेव की मृत्यु से मुझे क्या भय हुआ हुआ है? बाधा करता हूँ कि जब तक मैं जिवा रहूँगा तब तक आप से पुत्र के रूप में ही व्यवहार करूँगा। मेरा पुत्र को कैसे का हूँ?

श्रीग किम का है प्रभो? सुनाए तो जल-जलुर है। और, आप

मेरे साथ पुत्र के समान ही वर्त्ताव किया कर पर रिक्त भाव ।
नर नहीं सकते? मर व्यय का जादनामन है ।

— कह कर दल्लप सिर पकड़कर पड़ गया ।

तब फौज के प्रत्येक जवान ने दग ही पड़े शस्त्र-तात्पर्य ही
देखा । सब की आँखों ने आँसू की धारा पड़ गयी थी । विजय
लक्ष्मी का स्वागत फर-फूल ने नहीं जानू ने कर रह थे । कुम्भ
रोली लुटा कर नहीं सुहाग लुटा कर किया जा रहा था । गगीन तू
शोक और कातरता से । यह विधि विडवना थी ।

सुगंध द्रव्यों में भरी पटी में नागदेव का शव विजयपुत्र
भेजा गया । वहाँ शोक और कण्ठा का सागर ही उनड जाया ।
मे नहीं सुहागिनी स्त्रियों ने युद्ध की भर पूर निदा की ।

गुड्ड, मेरे साथ आने का बड़ा दुराग्रह किया था । तो देगो
अब कैसे जीवन को ही नष्ट करना पडा । क्या सोच रही थी कि
जीजी के साथ रहना माता के साथ रहने के समान है ? अब
देखो न ? तुम्हारा भ्रम दूर हुआ या नहीं ?

इस प्रकार अस्तिमव्वे द्रष्टा करने लगी ?

हाय ! मैंने तुम से युद्ध जाने के पूर्व अवश्य कहा था कि
विजयी हो कर ही दशन देना । वह शाप नहीं था । शुभकामना थी ।
क्या इसे तुमने चुनौती मान कर मयु को गले लगाया ? इस प्रकार
क्या मैं ही तुम्हारी मौत का कारण बन गई ?

— गुड्डमव्वे ऐसा सोचने हुए आँसू बहाने लगी ।

मेरे स्वामी ! क्या मरने के लिए ही हमारी सलाह माँगने
आए थे ? बाहुबली के समान बिना आगा पीछा देखे युद्ध करने की
सलाह मैंने किस कुषडी में दी ?

अस्तिमव्वे पैर के पास बैठकर रोने लगी । नागदेव के
शव से वे दोनों इस प्रकार लिपट गईं थी कि पद्ममव्वे के

पुन का शरीर दिखाई नहीं दे रहा था। पद्मम्ने ने किसी प्रकार बीच के बीच से रास्ता दिखाकर सब के पास जा कर बेसा भीम के समान परछाई पृथ सब एक हीन पीला मुँह लिए घेत बन पड़ा है। यह दृश्य उससे देखने नहीं बना। चँस कर बैठ गई। बेहोस हो गई।

होय गले ही बहबहानं लगी --

बनी मेरे बेटे की बहू बन दूध बटासा जाना चाहती थी। अब मम दूर हुआ न? बोलो बहिनों ने एक ही को पति बना केन का बाबूह को किया अब —

— कहती हुई फिर मुँहिल हो गई।

माताजी! अब हमारा क्या होना अब हम किस लिए जियें? हम से कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा कीजिए। प्राणस्वर के साथ हम भी जाएँगी।

— अतिमम्ने बोली।

साम्रजी! आप ही पद्म-अम्मातरों में हमारी सास रहें। यही मेरी अंतिम प्रार्थना है। अब मुझे सहगमन की अनुमति दीजिए।

कह कर पुत्रमन्त्र बहून के पैरों से छिप्ट गई।

पुद्गु! उठो। उठो। क्या सहगमन करते समय तुम्हें डोड आठेगी। उठो। हमारे। क्या मेरे साथ सहगमन करने माय क किए मेरे पीछे पीछ आई थी। उठो बहून। जो मेरा हाथ होगा वही तुम्हारा भी होगा।

— कह कर अतिमम्ने ने अपनी बहून को बीच कर छाती से लगा लिया और दोते प्लूट प्लूटकर रोने लगी।

हाथ रे बेटा। हम सब को अनाथ बनाकर क्यों चले।

— ऐसा प्रकाप करती हुई पद्मम्ने ने बट के सब को गोद में उठाकर रखा। अम्माकरव छाती पीट पीट कर रो रही थी। बही

पास ही बैठी थी।

इसी लिए तो बेटा हमने कहा कि दोनों एक ही को मत बरो। पर हमारी बात किसे पथ्य थी ? अब तक एक दिन भी तुम को रोते हुए नहीं देखा था। पर अब दोनों एक ही डोली में सुख निद्रा करने का स्वप्न देखते देखते सदा के लिए जीवन को नष्ट कर डाला न ?

अव्वकव्वे बड-बडाने लगी।

अब रोने से क्या होगा ? नागदेव को कोई जिला नहीं सकोगी। शव को बहुत दिनों तक रख लेना उचित नहीं है। उठिए उठिए। क्रिया-कर्म की बात सोचिए।

— वयोवृद्धो ने कहा।

क्रिया ! क्रिया !! कीजिए, कीजिए। पर कैसे देखू मैं अपनी दो दो बेटियों के कर्म को। उनकी सुहाग लुटी जा रही है। पहले हमारी क्रिया कीजिए बाद को जो चाहे कर्म कीजिएगा।

— अव्वकव्वे ने खींचकर कहा।

मल्लप बड़ा घोर था। पर अब वह भी रो पड़ा। तैलप की रानी आई और नागदेव की पाद-धूलि से तिलक करती हुई शव के पास बैठ गई। रोनेवालों के बीच में स्वयं आसू बहाने बैठ गई।

महारानी जी। मेरे बेटे का बलिदान देखिए।

— पद्मव्वे बोली।

माभी, मेरे वम में क्या है ? अब क्या मैं तुम्हारे बेटे को जिला सकूंगी ?

‘ वह रोने लगी।

रानी जी ! आप लोगों की साम्राज्य दाह ने मेरी दो दो बेटियों के मागल्य को मिट्टी में मिला दिया।

अव्वकव्वे ने डाटते हुए कहा।

ठीक कहती हो बहुत ! दर कीम हम स्त्रियों की बात सुनता है अपनी सूटी प्रतिष्ठा के लिए पुरुष आपस में लड़ते हैं और सुहाप छटती है हम स्त्रियों की । हम अबभावा के बाँसू में पुरुष तैरना चाहते हैं । इस में इनकी होठ लगी रहती है । मेरा बच बने तो मैं बुद्ध को सहा के लिए रोचना चाहती हूँ । सोचो न इस विद्या में हमारा और तुम्हारा क्या फरक है ? अब इस साम्राज्य को लेकर भी क्या नावरेव अस बेबर को पा सक्ती ।

— माहारानी ने अपनी अचहायकता का दर्शन किया । साथ ही कर्तव्य प्रज्ञा जगाकर साँवला देने का प्रयत्न किया ।

नावरेव के सब संस्कार की तैयारी हुई । अतिमन्त्रे और और बुद्धमन्त्रे भी तैयारी में लगी रही ।

बहुत ! भक्त अतिम वर दान दो ।

बुद्धमन्त्रे ने याचना की ।

बुद्ध ! कबो इस प्रकार याचना कर रही हो ? मैंने सब के मना करने पर भी क्या अपनी सज का भाषा तुम्हारे लिए नहीं दिया है ?

अतिमन्त्रे बोली ।

जब मेरी बात स्वीकार करे बहुत । यही मेरी अतिम अनिच्छा है ।

— फिर बुद्धमन्त्रे ने प्रार्थना की ।

कहा न बहुत !

— अतिमन्त्रे का कूतहल बोल उठा ।

भीभी ! तुम्हारा बेटा है । मेरा कोई नहीं है । मेरा जीवन अमावास्या की पहली रात है । तुम मुझू के वास्ते जीवित रहो और मुझ निश्चित होकर जाने दो ।

.... बुद्धमन्त्रे की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि अतिमन्त्रे

अत्यंत रुष्ट होकर बोली।

भला, बेटे का वहांना दिखा कर मुझे सहगमन से वंचित करना चाहती हो? क्या पति पर मेरा कोई हक्क नहीं? क्यों तुम ही उन्हें अपनाकर मुझसे सदा के लिए छीन लेना चाहती हो? मैं जिदगी भर जलता रहूँ और निश्चितता से सती बन कर इह और पर दोनों को तुम निभाओ खूब सोचा। सौत आखिर सौत ही तो होगी। मेरा कहना मानो। माना ही पड़ेगा। तुमने वादा किया था कि मेरे कहे अनुसार ही चला करोगी। तभी तो मैंने अपने पति के हाथों तुम्हारी माँग भरवाई थी। अब तुम ही घर रहो, मैं सती बनूँगी। क्या अणिग तुम्हारा बेटा नहीं है?

वहन! ऐसा क्यों कहती हो? आखिर ससार क्या कहेगा? जैसे लोग कहेंगे वैसे करे।

गुडुमब्बे ने असहायक ध्वनि में कहा।

लोग? ससार! अब कहाँ के लोग और कहाँ का ससार? जब जीवन ही वरवाद हुआ पडा है तो मेरा लोगो से या ससार से क्या वास्ता? जब मेरा राजा ही नहीं रहा तो यह ससार मेरे लिए घोर नरक है। अब मैं किसी की नहीं मानूँगी।

— अत्तिमब्बे ने दृढ़ता से कहा।

वहन क्या हम दोनों की प्रतिस्पर्धा में अणिग अनाथ बन जाय?

— गुडुमब्बे यह कह रही थी कि अणिग वहाँ चला आया। अत्तिमब्बे का मातृ-हृदय मचल पडा। बेटे को छाती से लगा लिया। आँसू दुगुने वेग से उमड़ पडा। किसी प्रकार सभलकर फिर बोली—

गुडु! मेरे लिए इतना त्याग और करो। लो, यह तुम्हारा बेटा है। तुम्हें साँप देती हूँ। बदले में मुझे सती होने दो।

अणिग को उठाकर अत्तिमब्बे ने गुडुमब्बे की गोद में डाल दिया।

बीबी ! क्या हमारे बुर्जुन नहीं हैं ? उनके कहने के अनुसार
मं बगें ।

सुई ने गुलाब बी ।

मैं सही बुर्जी ! बुर्जी ! अबस बुर्जी ! इसे छोड़ कर
बीज कुछ कहना हो तो कहो ।

अतिमन्त्र ने अपना निरुपय दिखाया ।

उसी हिरोन्सु कृष्णराओ ने पिछकर निर्धन दिया कि बुद्धमन्त्र
सहमन करें और अतिमन्त्रे अन्विष्ट के पास पोषण का भार संभालें ।

पद्मन्त्रे ने समझाया —

अति तुम अन्विष्ट की मां हो । अन्विष्ट के बास्ते तुमको
किया रहता ही होगा । क्या मेरा कुछ कुछ कम है ? ऐसे बेट को
को कर बीने में क्या मुक्त है ? फिर बी मैं उसके पीछे जा पाऊँगी ?
हम दूरे हैं । सहमन की बात बूझ जाओ । हमारे लिए भीषित रहो ।
उसके पुत्र के बास्ते भीषित रहो

सुनिए, सच्चार बाब में जाय । मैं लेकर क्या करूँ ? किसी
पर मेरा विश्वास नहीं है । अकाल में पति की मृत्यु हुई । और बेटे
में न जाने क्या क्या भोगना पड़या ? मैं पाँच पछती हूँ मुझे न
रोकिए । कुछ मोचने के लिए मैं जीना नहीं चाहती ।

अतिमन्त्रे ने दृष्टा से कहा ।

सोचो तो सही अन्विष्ट का क्या होगा ? माता का कर्तव्य
है कि मंगल की देख रेख कर । नारी की जिम्मेवारी बँटी है ।
नारी के जीवन में एक और पति है तो दूसरी और सदान । दोनों
को निभाना होगा बँटी ।

पर मैं ककसी क्या निवाऊँ । वे हमें छोड़कर क्यों पक बसे ?
हम क्यों पीछे रह जायें ।

हाँ वह तो जल बसा । पर मंगल की रक्षा तो करनी

? अब उस पुत्र के लिए रहना पड़ेगा। हाँ! गुड्डुमब्बे की दूसरी है उसे अनुमति दो। पीछे आई थी, आगे जाएगी। तुमने साथ दिया वहाँ वह ———

आगे बोलते नहीं बना फिर भी पद्मब्बे ने उचित सलाह दी।

अति ! कौसी अबोध बातें करतो हो ? इस दुध मुँह बच्चे छोड़कर सहगमन करने से क्या तुम्हें शांति मिल सकेगी ? क्या का हृदय इतना नीरस रेगिस्थान बन सकता है ?

अव्वकब्बे ने डाटनेवाली आवाज में कहा।

अत्तिमब्बे ! तुम्हारा हठ करना उचित नहीं है।

तुम्हारा और तुम्हारे बेटे का भार हम सभालेंगी। तुम्हारे य जिदगी का भार ढोने के लिए हम सब बैठे हैं। लोक हित धना में मन लगाओ। सहगमन ही एकमात्र कर्तव्य नहीं है। यदि तुम्हारे कोई मतान नहीं होनी तो कौन तुम्हारे रास्ते का रोड़ा बनता ?

— कह रानी ने भी समझा या बुझाया।

सब का मन एक-मा था। अत्तिमब्बे को उसे मानना पड़ा।

गुड्डुमब्बे ने नवेली के जंसे साज सिंगार कर लिया। जितना। मका उतना फूट निर पर प्रारण किया। सोलहो सिंगार से पज्जित हुई। उठे बूटों को नमस्कार करके आशीर्वाद पाया। णिग को गोद में लेकर पुचका। तब उस के बर्य की बाँध टूट गई। धण भर के लिए विचलित हो उठी। फिर किसी तरह सभाल उठे उसे उनारा और अत्तिमब्बे से छाती में कसकर लगाया। तब ही बाध फिर टूट गई। जगमगाते हुए चदन की चिता के समीप चिता जल रही थी। उमी दशा में उसकी तीन बार परिश्रमा जिनगरेदक लिए मिर जायो पर उगाया। पचपरमेष्ठियों का

नाम अगले अगले बिठा में इस प्रकार प्रवेश किया मार्गों छाता-मंडप में प्रवेश कर रही हो। उस समय उसका म हू अचानक क्रांति से बमक उठ। नम आद में आतंवाकी पतिवा को अदक-बगल सरकाते हुए कोई कति कब में जाता है उसी प्रकार कपटो को लोगों हाथो से सरकाली हुई हंसते हंसते बिठा पर जमी और पति की बगल में सो गई। बिठा की छत्र पर पति को गले लगाए रम गई !

भोगते शरीर एक दम दुर्बल बन गया। वह बेचैन थी क्योंकि उसे मरने के लिए स्वातन्त्र्य नहीं था। कभी कभी उसका नन्हा सा बच्चा पास आता, गोद पर चढ़ता और सूखे स्तनों को चूस चूसकर निराश लौट पड़ता। कभी कभी ठूँठ से पड़ी हुई माँ को हिला हिला कर जगाने का प्रयत्न करता और न हिलने पर शरीर की टटोलकर जाँच करता। पर अत्तिमब्बे यह सब जानती हुई भी अनजान सी पड़ी रहती थी। क्योंकि अब उसके लिए ससार में कोई आकर्षण नहीं बचा था।

अत्ति । बच्चे का मुँह देखो । उठो । वह बार बार आकर हताश लौट रहा है न ?

— पद्मब्बे कह देती । पर स्वयं अपना दुःख सह नहीं पाती थी । रो पड़ती थी ।

मुझे न रहने देते हैं , न मरने छोड़ते हैं ॥

अत्तिमब्बे कुड़बुड़ाती ।

क्या कहती हो वह ! क्या तुम्हें हम लोग सता रहे हैं । तुम्हें हमी लोगो ने अवश्य मरने नहीं दिया पर क्यों ? । हमारे लिए तो नहीं । उस मुन्नू के लिए तो ।

अब मुझे छोड़ दीजिए । मैं जी कर क्यों धुलू धुलकर मरूँ । और कौन-सा सुख बाकी है कि मैं जिंदा रहूँ ।

अत्ति । उठो । जरा अण्णिग को तो देखो । बेचारा सूखता जा रहा है । जिस प्रकार चड मारुत के झोको से उखाड़े गए पेड़ के कोपलों की दुर्गति होती है वही दुर्गति अण्णिग की हो रही है । अब इस कुल का वही एक मात्र आधार है । अगर उस की रक्षा नहीं की तो क्या होगा सोचो तो सही ?

— पद्मब्बे ने दीन और खिन्न हो कर कह दिया ।

तब तक वहाँ अण्णिगदेव चला जाया । अपनी माँ को हिलाते हुए 'माँ, माँ' । कह पुकारने लगा ।

अति । कैसे सख् । हबब बिहारक है बटी । उठो । बेटा तो हम ना। रखा तुम नहीं बहती हो कि इस सभ मे इस इकठ्ठीये पोते को री बेबा बँदू ? इसकी रखा हमारे किए ही सही करो ।

— कगार हो रो पडी ।

बीर माताजी । मैं बीर किस किए बियू । बिबबा हू । समाज का शत्रु हू । अमपक पुति हू । येरा न रखना ही बचका है । अमबल मे बूति बब कर बर्ये—कर्म से हीन होकर बीना सी क्या बीना है ? सहाइ सचमुच सीबाप्यबनी थी । बर कर अमर बनी । सखी साबित्री नी । मैं जीकर नरक मातना भोग रही हू ।

— अतिथ्य बटपटले लगी ।

बिरा अति । क्या हम भी नहीं रहे हैं ? पून को लो कर कौन को ना बडा सुख हम भोग रहे हैं ? हम बिरा हैं तो केवल तुम्हारे किए हम बीर तुम्हारे इस बन्ने के किए । तुम अन्धिय की माँ हो । सोचो उसकेबर वेब ही अपने फका की उपला करने क्ये तो उसका क्या हाल होना ? यदि तुम ही अपनी सतागकी उपेक्षा करो तो बेचार क्या करें बर पीर कही नाब । तुम्हारी इस उरीखा का क्या परिणाम होना ? लोग से न बा कहने ।

रोझ पद्मपद्मे ने कर्णव्योम्मुड करने की बन्धि से अतिमब्धे कहा ।

हो—एक दिन बीब बए । एप कबि बिबबदूर बाए । फिर है बिबबा की बाब बहू बकी । बई—पुरानी स्मृतिथी बासू की बाघ बन गयी बाधित हुई बस्वन का कुछ फिर बाघत हो बडा ।

को कि परदेब हम मुर मए । अब व्यर्थ की लास होने बिरा है ।

जाने ब पार्षी प्राब बीर क्या देखना चाहते है । इनाप लबना हम गयेब आप को बहुत मानता बा । आप के बाप्य का कठपारु किया ।। अम्मुन का लाहल बाहुबनी का पराक्रम उसका दिव माग बा ।

उन्हें पढ़ते पढ़ते स्वयं फल्गुन या बाहुबली बनने का स्वप्न देखा करता था। अब हमें आंसू की धूँट पीने छोड़कर स्वयं चल बसा ! बाप के सामने बेटा मरे ! माँ-बाप को शोक-सागर में ढकेल दे। वह अभागा है नहीं, नहीं, हम अभागे हैं ! — पुत्रशोक में दल्लप अटसट वकने लगा ।

सात्वना देते हुए पप बोले —

दल्लप जी ! आप का दुःख मैं समझ सकता हूँ । कहा जाता है कि पुत्र-शोक चिर-स्थायी होता है। पर शोक करें तो किसके लिए ? आप का बेटा जीना और मरना दोनों जानता था । कायर सौ सौ बार मरते हैं। आप का नागदेव कायर नहीं था। वह तो हमारे फल्गुन और बाहुबली के समान ही वीर था और वीतराग भी था । उसकी मौत पर लाखों की ज़िदगी न्योछावर है । ऐसे पुत्र को जन्म देकर आप अमर बने हैं । मरना तो अनिवार्य है जरा सोचिए, आप का बेटा मर कर भी अमर बना है कि नहीं ? कौन आप के बेटे का शीय-पराक्रम नहीं जानता ? शत्रु तक सराहते हैं । ऐसे व्यक्तित्व पार्थिव शरीर के बंधन तोड़कर यश काय बन कर अमर होते हैं । वीर पुत्र के योग्य वीर पिता हो कर आप आंसू पोछ डालिए । अप अत्ति को सात्वना दीजिए और अण्णिग को सुयोग्य बनाने का कर्तव्य पालन कीजिए ।

पपदेव ! हम कगारे पर के पेड़ हैं । अब हम किसकी चिंता करें ? हम सूखे पत्ते हैं । किसी तरह हमारे दिन कट जाएंगे । पर अत्तिमब्बे को सभालना असंभव बन गया है । हम प्रयत्न करके हार गए हैं । वह सुन्न-सी बनी है । खाना, पीना, सोना भी बिना दवाव डाले नहीं हो रहा है । आप महाकवि हैं । रस ऋषि है देवलोक से ले कर भूलोक तक आप की पहुँच है । आप पत्थर में जान फूँकने की प्रतिभा रखते हैं । आप पत्थर से भी सभापण कर

फन्से है। कुछ तो कीजिए कि अतिमन्त्रे लोक-व्यापार में प्रयुक्त हो
आप ताकि बन्ने को सहायक हों।

— बन्धु ने अपनी विवशता व्यक्त करते हुए प्रार्थना की।

पर जी ने अतिमन्त्रे से घोंट की। बड़ी बह कुसुमकमी
और कहाँ बह काँगा। उसे मैं किसी के जाने की लहर रखती
न जाने की। बिना मैं बच रही थी। जिसकी ही जिसके लिए दुर्भर
बनी हो वह मोहों की बस्त छेकर क्या करे ?

अति ! बंदी ! मेरी ओर देखो ! मैं आया हूँ।

— पण्डित ने अतिमन्त्रे का ध्यान खींचने के लिए कहा।

बंदी ! जो होता नहीं चाहिए था वह हो गया। किन्तु क्या
है ? जो पण्डित बन्धु है ? जाव-जी तो बन्धु जाना है। यहाँ का कर्म
समाप्त होते ही हर किसी को जाना पड़ता है। यहाँ किसका बन्धु
है ? ऊँ बंदी ! तुम क्या ना समझ हो।

पर महाकवि ने सात्वता पूर्वक बगाया।

मामा जी ! आप अब आए ? पर यहाँ सब समाप्त हो चुका
है। बताइए तो सही अब इस दिवंगी की अपेक्षा मीठ लाल भसी है
कि नहीं ? आप अरिकेमरी की मृत्यु से संतप्त थे। मैं आप को
सात्वता देने का प्रयास कर रही थी। अब मैं समझ नहीं। मामा जी !
मेरी बेवना किसी के मिटाए नहीं मिट सकती ! लोप जाते हैं।
सात्वता देते हैं। पर क्यों लात्वता नहीं मिलती ? आप कवि हैं। कवि
की दृष्टि से विचार कर बताइए कि क्या इस आशुत को सह कर भी
जिवा रहे और क्यों ?

अतिमन्त्रे ने जगमा हुआ कण्ड सुनाया।

बड़ी ! जीवन बहुमूर्खी जाँता ॥ पति और पुत्र उसका एक
मग माग है। जब तुम्हारा पति माग नहीं रहा। और सब कुछ
तुम्हारे सामने पड़ा है। जिसकी के कई पसगमों को बधा देने के लिए

तुम्हें जीना ही होगा । आतंघ्यात नरक का द्वार है । तुम बरसात की
बूंद से डरकर बाढ़ में बह जानो चाहती हो । यह उचित नहीं है ।

पप कवि ने समझा ने का प्रयत्न किया ।

मामा ! मेरी आवश्यकता किस को पड़ी है ?

— अतिमत्वे के स्वर में निराशा जनित कपन था ।

बेटी । आदिदेव के सन्यास स्वीकार का प्रकरण तुमने पढा
ही होगा । तब उनकी रानियाँ, यशस्वती और कुमद्वती क्या पति के
होते हुए भी पति-हीन नहीं बनी ? उस का जो अकथनीय दुःख था
वह क्या इस दुःख से कुछ कम था ? क्या उन्होंने सहन नहीं किया ?
इतना ही नहीं अपनी सतानों की रक्षा करने के लिए और उनके
उज्ज्वल भविष्य के लिए दिन-रात परिश्रम नहीं किया ? पति के
सन्यास लेन में रूठ कर उन्होंने अपनी सतानों की उपेक्षा तो नहीं
की ? उठो बेटी । अणिग की देख-भाल में पति वियोग का दुःख
भूल जाओ और देश भी तुम्हारी मेवा की प्रतीक्षा कर रहा है ।

मामाजी ! मैं क्या कर सकती हूँ ?

ऐसा निराश मत बनो । क़न्नड-साहित्य की श्रीवृद्धि और
विकास तुम पर निर्भर है । और

कैसे मामाजी ! मैं कवि थोड़े ही हूँ । मैं क्या लिख सकूंगी ?

अतिमत्वे ! कवियों का अस्तित्व तुम जैसी कल्पलता पर
निर्भर है । साहित्य की रक्षा करने के लिए समय समय पर उसकी
प्रतिलिपियाँ बनवानी होंगी । कवि काव्य लिखें और तुम उनकी
प्रतिलिपियाँ बनवाकर रक्षा करो । दानों का महत्व है एक निर्माता है
दसरा सरक्षक । सृष्टि करनेवाले सृष्टि करें । पालन करना तुम्हारे
हाथ है । नहीं तो सृष्टि नष्ट हो जाएगी । बेटी तुम जैसी साहित्य
की प्रतिलिपियाँ कराओ । देश के कोने कोने तक पहुँचाओ । हो सके
जहाँ कहीं आवश्यकता हो वहाँ जिनालयों का निमाण कराओ ।

देखो तुम जैसे शक्तितामसियों पर निर्भीक है जैन साहित्य और संस्कृति ।
 जैन धर्म और विनायक तुम्हारे जैसे उदार चित्तवालों का मुह
 टाका पड़ा है ।

पप कवि ने इस प्रकार कर्तव्य-योग का परिचय करा
 विद्या और अतिथि के धर्म जीवन को काये। ये घर हैं का
 प्रकाश किया ।

पर माया भी ! वह काम बन से होता है मुक्त से नहीं ।
 मैं विनित्त मान हूँ । मैं न पड़ूँ तब भी बन खींचा हूँ । जब मुझे
 वह पद धर्म का बखतर-सा लगता है

और एक बात है बेटी । मानवैव पुरुष मे मरे ?

पप देव ने दूसरे पक्षर के समझाने का प्रयत्न किया ।

बाउ काट कर अतिथि बोली —

मरे नहीं ! किसी ह्वाये ने फिर घर पार किया और
 ह्वाया भी ।

देखा ही सुना है बेटी बड़ा बन्धन हुआ और बन्धन भी ।
 फिर भी पुरुष में न जाने मिलने जवान कद मरे ?

माना जी । मैं क्या करूँ ? ह्वायों डेर हो गए ।

बेटी । हमकी भी बहिन और बहनों का दुःख कोन दूर
 करें ? उन में से बहनों को वो नीर जब तक नहीं मिलता होमा ।
 मानडी हो बहिन उनकी बिंदवी जैसे दुर्बल है ? कठो उनकी सेवा
 करो । भवभाव की कृपा से तुम्हारे पास अक्षर संपत्ति है । उन
 बन्धनों की सेवा में कर्म करो । उन ह्वायामियों के बाँटूँ बँडो ।
 उनका दुःख तुम समझ सकती हो । तुम ही दूर कर सकती हो ।

— पप देव की बातों का उस पर जबर पड़ने लगा ।



चालुक्यों के द्वितीय तैलप ने राष्ट्रकूटों को पराजित किया और विशाल साम्राज्य के साम्राट बने । आपने राजकुमार इरिववेडंग को युवराज बनाया । अभिषेक का महोत्सव बड़ी धूम से मनाया गया । इस अवसर पर साम्राट ने लक्कुडी और मासवाडी के कुल एक सौ चालीस ग्रामों के राजा अण्णिग को घोषित किया । नागदेव को जो जो राज-सन्मान प्राप्त थे उन सभी सन्मान को सब-रोनाविपत्य के साथ उस अण्णिग को दिया ।

अत्तिमब्बे के सबधी, नातेदार रिस्तेदार आदियों ने समथोचित सदेशादि भेजकर, साधुवाद दिया । इस प्रकार हर एक ने उसका उत्साह बढ़ा देने का प्रयत्न किया ।

अत्ति । तुम्हारा यह लाडला कैसा भाग्यशाली है ।

पद्मब्बे ने बलैय्या ली ।

हाँ हा । सब का भाग्य बिजली-के समान चकाचाँध करनेवाला अवश्य होता है पर कितने समय के लिए ? यह सब इद्रचाप-सा आकर्षक अवश्य है पर मन में आने के पूर्व ही विधि उसे मिटा डालता है । तब उसका नामोनिशान तक नहीं रहेगा । गहरा अधिकार छा जाएगा ।

अत्तिमब्बे ने अपने अनुभव की बात कही ।

जब तक रहता है तब तक वह आकर्षक है । इस आकर्षण में ही सच्चा जीवन है । अण्णिग अब राजा बना — यह सत्य है । जब तक धर्म पर उसका राज्यशासन टिक रहेगा तब तक वह धर्म हमारी रक्षा करेगा ।

— पद्मब्बे ने अपना विचार स्पष्ट किया ।

वह ठीक है । राज्य हो या कोश जब तक धर्म से अनुप्राणित हो तो सार्थक रहेगा । सभी उनकी शोभा है । माँ ! एक बार हम लोग राज्य की सैर कर आवें ।

सुनाया कि वह अनुभव का वह क्षण मानो वे स्वयं स्वर्ग से वंचित हुए हों।

तदनंतर ५५ कवि ने स्वयंप्रभा के विरह का वयन किया। इनसे धोताबो का कोमल वत करण पिघल कर बह उठा। यव को बस बहाते देवकर अतिमध्मे और बुबुगम्ब भी बाँधू पहान लगी।

अक्रिया का वयन जयमानधोनि में हुआ। मर्य में उसका नाम बख्शबा पड़ा। स्वयंप्रभा असह्य विरह ताप से बल बसी। वह भी इस लोक में आई। उसका नाम धीमती था। महाँ धीमती और बख्शबा का विवाह हुआ। उन्होंने स्थापित रीति से अलगकाल तक जनतसुख भोगा। एक दिन की बात है। रोमको नान के कलनागार ने सुवच बूम बनाकर पचास बँबे बिबा। ऐसा भित्त किया करते थे। पर उस दिन घुघी अधिक उठने लगा। दूसरे दैव प्रेरणा से उन्होंने मित्रियों को इस भांति बह किया कि सब मायल तक हाक कर इन के प्रलय भूम में बाबा नहीं बाल सके। परस्पर बकबाड़ी किए रात भर बिहार करते रहे। पर उसी मूढ़ा में न जान कर इन दोनों के प्राण पलोक उठ गए थे। लहरे देवको को कनेबर मान मिने। यही तो प्रलय जीवन का आवर्त है। ५५ कवि ने इस अभ्यास को समाप्त किया। धोताबो की भावुकता रस-वारा बल बह लगी।

अबसे काम में इन वपनियों का जन्म भोग भूमि में हुआ। यहाँ चारण मुनियों को वंचित से पिछा-बान करने के पुष्प प्रभाव से लाले काम में भोगभूमिवा स्वयंप्रभा रही बय्य से निकल होकर स्वयंप्रभा देव बन गई। तदनंतर काम में सीधरदेव सुविधि नामक महाराजा बने। स्वयंप्रभा सुविधि का पुत्र केशव बना। इस प्रकार पर कवि न जादिरेश बनने तक श्री नवाबकी का निरूपण संक्षेप में सुना दिया।

जादिरेश बह राज रसिक ने उनकी रसिकता में उनकी

चालुक्यों के द्वितीय तैलप ने राष्ट्रकूटों को पराजित किया और विशाल साम्राज्य के साम्राट बने । आपने राजकुमार इरिववेडग को युवराज बनाया । अभिषेक का महोत्सव बड़ी धूम से मनाया गया । इस अवसर पर साम्राट ने लक्कुडी और मासवाडी के कुल एक सौ चालीस ग्रामों के राजा अण्णिग को घोषित किया । नागदेव को जो जो राज-सन्मान प्राप्त थे उन सभी सन्मान को सर्व-सेनाविपत्य के साथ उस अण्णिग को दिया ।

अत्तिमब्बे के सबधी, नातेदार रिश्तेदार आदियों ने समथोचित सदेशादि भेजकर, साधुवाद दिया । इस प्रकार हर एक ने उसका उत्साह बढ़ा देने का प्रयत्न किया ।

अत्ति ! तुम्हारा यह लाडला कैसा भाग्यशाली है ।

पद्मब्बे ने बलैय्या ली ।

हाँ हा ! सब का भाग्य बिजली-के समान चकाचौंध करनेवाला अवश्य होता है पर कितने समय के लिए ? यह सब इद्रचाप-सा आकर्षक अवश्य है पर मन में आने के पूर्व ही विधि उमे मिटा डालता है । तब उसका नामोनिशान तक नहीं रहेगा । गहरा अधिकार छा जाएगा ।

अत्तिमब्बे ने अपने अनुभव की बात कही ।

जब तक रहता है तब तक वह आकर्षक है । इस आकर्षण में ही सच्चा जीवन है । अण्णिग अब राजा बना — यह सत्य है । जब तक धर्म पर उसका राज्यशासन टिक रहेगा तब तक वह धर्म हमारी रक्षा करेगा ।

— पद्मब्बे ने अपना विचार स्पष्ट किया ।

वह ठीक है । राज्य हो या कोश जब तक धर्म से अनुप्राणित हो तो सार्थक रहेगा । सभी उनकी शोभा है । मां ! एक बार हम लोग राज्य की सैर कर आवें ।

— अतिमन्त्र ने अपनी इच्छा बना ली।

अनि । तुम्हारी इच्छा ही हम भोग की इच्छा है। हम केवल तुम्हारी हींसी देखना चाहती हैं। तुम हँसती रहो तो बस हम डोर कछ नहीं चाहिएं।

ऐसा पद्मम्ब ने कहा। यात्रा की तैयारी हुई।

पद्म देव ने उस जलसुर पर साबुबार देने के साथ साथ हीन दुलियो के प्रति अतिमन्त्र का ध्यान अर्पित किया।

अतिमन्त्र ने पूर के राज्य को देख लिया। नीब मोर में गजोचित स्वागत संसार हुआ। राजा अम्बिग की माताजी के साथ ही था। प्रत्येक मोर को अतिमन्त्र ने दर्शन दिए। सक्ति भर भर आकर बनना के सज कुछ की बात जानने का प्रयत्न किया। उस पद्म देव की बात उसके चित पर बड़ी रहती थी। कहीं मरिच चाहिए कहीं बुझा चाहिए कहीं बरबसाया चाहिए — यह सब पूछ-ताछ कर के जान लिया। जनता की पीणों को पूरा कर दिया। कबी ना नहीं कहा बाहे मीम व्यक्ति की हो वा समाज की। जनता ने भी राज शक्ति से अंतर पल राखि अर्पित की थी। अतिमन्त्र ने इससे बड़ी कछ न कुछ अनोपयोगी शानिक कामा में जपा दिया। कहीं सत पर्याप्त नहीं थी तो सुरत बड़ी के जनको से आवश्यक हिस्सा माफ करके दू-हीन दिवानो के घर बसा दिया तो कहीं किसानो के लिए आवश्यक बीज बाँट-दे दिखाकर इनकी सहायता की।

अतिमन्त्र ने घोषा जनकुटि राजधानी बनने योग्य स्थान है। सब से पहले वहाँ विनाश की नींव डाल दी। आखिरे स्वयंभूराजो को लप करके विनाशक बनाने का संकल्प किया। उसका मार्गचित्र बनवा लिया। उसके समुपस्था होते ही अम्बिग के लिए महल की बनवाया बाहु।

एक बार उस विजयदूर आया। अतिमन्त्र से मिलकर

नागदेव की मृत्यु पर अपना शोक व्यक्त किया। अतिमग्ने को सात्वना दी।

रत्न ! हमारी यह दशा हुई। तुम्हें कवि चक्रवर्ती बना देने का स्वप्न देखते देखते उन्होंने ओंखें मूढ़ ली। उनकी 'जाशा' पूरा होनी चाहिए।

— ऐसा कहते हुए अतिमग्ने रो पड़ी।

माँ, आप का दुःख कौन दूर कर सकता है? उसे आप कर्णव्य में भूलने की चेष्टा कीजिए। मैं कवि चक्रवर्ती बनूँ या नहीं बनूँ सो बात दूसरी है। जब ऐसे कवि चक्रवर्तियों का आश्रयस्थान ही नहीं रहा।

— रत्न ने खिन्न होकर कहा।

तात ! हताश होना बुरा है। वे होते तो तुम्हारी प्रतिभा और विद्वत्ता से अवश्य आनंदित होते और तलप चक्रवर्ती के दरबार ले जाते। वहाँ तुम्हें सम्मानित देख कर फूले नहीं समाते ॥

— कह कर अतिमग्ने आनी आहायकता पर रो पड़ी।

आप आँसू न बसाइए। जब वे ही नहीं रहे तो अब मैं मान-सम्मान ले कर क्या कहूँ।

बेटा, निराश न बनो। वे चल बसे। पर उनकी अधूरी आशा-अभिलाषाओं को पूरा करना हम लोगो का कर्तव्य है। तुम जिस दिन कवि चक्रवर्ती बनोगे उसी दिन मेरे प्रियतम की आत्मा को सच्ची शांति मिलेगी।

माँ मैं कैसा अभाग हूँ। पितृ-तृप्य मेरे स्वामी का अंतिम दर्शन तक नहीं पा सका। उस समय धूप देने तक मेरे भग्य में नहीं वदा था। कम से कम आप कहला भेजती।

बेटा ! उस अपार शोक में मुझे एक भी नहीं सूझा।

— अतिमग्ने का गला गद्गद हो गया।

का घने धाप को सोच नहीं दिया। मेरे दुर्भाग्य की बात कही।

रघु ने कहा।

क्यों बात। कुछ बिजब खे हो।

— अतिमन्त्र ने पूछा।

अभी नहीं पर मिलने की बात सोच रहा हूँ।

परमात्मा पर बरोसा छोड़कर किन्ना प्रारम्भ करो। मामाजी से कहकर अवश्य मे वक्तव्यी के पास बिजबा दूँगी।

— अतिमन्त्र ने प्रोत्साहन दिया।

अब मेरी एक प्रार्थना है।

— रघु ने विनयी की।

कहो बेटा। मेरे लिए तुम और अन्धिये दोनों एक में हो। जो चाहे भावो। पैर की बन्दी हो ली को कितना चाहूँ उतन। इकोव बन करना।

एसा कह कर तिमोरी की हाथियाँ उस के हाथ दे दी।

मामाजी। आप के आशीर्वाद से स्वयं ईश्वर के लिए मुझ भली बुर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। आप का नाम केन ही आपको हमने मिला करते हैं। हाथ ही मैं चामुबराह जी बकपुर आए थे। इधर जो कुछ सबक-मुकक बना सब पन्नी से जाना। पन्तुको के पतन और सप्याजी की धूम्र की बात भी आपने बड़े सकट से कही। धुनकर अभिषेकनाथजी की रो पड़े। आचार्य जी न मुझे आप के पास भेजा है।

आचार्य जी की आज्ञा शिरोधार्य है। अवश्य मे उसक पावन करूँगी। हाँ मुझ से क्या अपराध हुआ है तात। कि पहले

— अतिमन्त्र की आज्ञा अपराधी की ली लखवा रही थी।

माताजी, अब भूल चूक की बात नहीं। उमें भूल जाइए। जो होना था हो चुका। अब जैन-धम, जैन-साहित्य और जैन-संस्कृति का नाश नहीं होना चाहिए। ये रत्न-त्रय हैं। अब इन की रक्षा का भार आप पर है। अब राष्ट्रकूटों के पतन से अपार क्षति हुई है उसे आप भर सकती हैं। यही अजितसेनाचाय जी का संदेश है।

— रत्न की ध्वनि कथित थी।

तात ! कैसे भार मुझ पर लादा जा रहा है ! सो भी एक विधवा पर, इतना भार ? याद वे रहते तो मैं बिना आना-कानी किए हामी भर देती। मैं ही अनाथ हूँ। मैं क्या आश्रय दूंगी ? मैं धर्म-कर्म हीन विधवा हूँ। मैं कैसे धर्म की रक्षा कर पाऊँगी ? संस्कार बिहीन विधवा में संस्कृति का बचाव होगा ? मैं एक दुबल नारी हूँ। तिसपर पति हीना दीना दुखिनी हूँ। मुझसे कवियों को आश्रय मिल सकेगा ? जैन साहित्य अपार है। उसका पुनरुद्धार क्योंकर मुझ हत भागिनी से संभव है ? जो भार राष्ट्रकूट सार्वभौम संभाल रहे थे उसे इस भाग्य-हीन नारी पर लाना क्या उचित है ?

— अत्यंत हताश हो कर अतिमन्त्रे बोली।

माता जी ! आप हीन-भावना का त्याग कीजिए। क्या सुमेरुपर्वत को एक कछुए ने पीठ पर धारण नहीं किया ? बृशसुर की पीड़ा से संसार को किसने बचाया-एक मामूली हड्डी ने तो ? आप तो महा महिमामई हैं। उदार हैं। आप सुसंस्कृत महिला हैं। आप से क्या नहीं होगा ? आचार्य ने सोच-समझकर ही आप को इस कार्य में नियोजित किया है। शुभ-संकल्प कीजिए। शुभ ही होगा।

— रत्न ने आत्म-विश्वास जगाने का प्रयत्न किया।

रत्न ! तुम भी ऐसा कहते हो ? वत्स ! मेरी योग्यता ही कितनी है ? मैं अकेली क्या कर पाऊँगी। आचार्य का आदेश

टकाते नहीं बग़ता। क्या करें ?

असिमबने तिर पर हाथ धरे बैठ गई।

माताजी। बाप के समासेवीन समाज अब समस्त सफ़्त है।
समाज्य की प्रतीक्षा से बैठे रहना उचित नहीं है। जनता स्वयं वह
मार उठे। बड़े जन-सक्ति समा महासमाजों से भी बड़ कर ऐसा
कार्य कर सकती है। इसका प्रमाण आप से सकती हैं। आप मारी
रत हैं। आप सब के सम्मुख एक पीठा पधठा आदर्श बन कर
दिखने। इसीलिए मैं आप की ओर से आचार्य जी को आस्वादन
से बुला हूँ।

— रत्न ने कहा।

रत्न। क्यों तुमने ऐसा किया ? बिना सोचे-समझे ऐसा बचन
दे देना क्या उचित है ? आखिर मेरी अस्ति और सामर्थ्य को क्या
जानते हो ? बकली मैं क्या कर पाऊँगी ?

माताजी यदि आप चाहें तो सी सी साफ़ाट भी नहीं कर
सके इतना कर सकती हैं। मुझे पूरा विश्वास है।

रत्न। मेरे पिताजी कहा करते थे कि कवियों का व्यवहार ज्ञान
शून्य-सा रहता है। आज उस कथन का अर्थ समझ गई। क्या एक
अबका मारी साफ़ाटों की बारबरी कर पाएगी ?

जब से हुई पड़ी।

माताजी। आपने देखा है कि युद्ध से कैसा जनरल हुआ है ?
ज्ञान के आँसू अब बरखाल बने। आप जनता में अपने धार्मिकत्वकार
आत्मने का प्रथम श्रीलिए। हिता को मिटा आत्मने के लिए महिदा
का प्रचार कीलिए। इस गर-हृत्वा को रोकने के लिए कोपी को
सुसक्त बनाइए। अब जो पति बूज हीन बनकाए है उन्हें आपन
दीलिए। उनकी बहामता से ज्ञान धिबुओं की रक्षा का बारबरीए
और नव निर्माण की नींव आलिए। यही आचार्य के बरिस का

तात्पर्य है आप हँसी में उसको न उड़ाएगा ।

तात ! आचार्य जी तपस्वी है । उन के आदेश का पालन करना हमारा कर्तव्य है । मैं अपनी सीमा से भी परिचित हूँ । फिर भी इतना अश्वासन दूँगी कि हा अपने जीवन के प्रत्येक क्षण मैं सस्कृतिक काय के लिए अर्पित कर सकूँगी । अपनी सारी संपत्ति का उपयोग उम के लिए कर दूँगी । इतना मेरी ओर से आचार्य-चरणों में निवेदन करना ।

तब रत्न ने अत्यंत दीन भाव से कहा

माँ, मेरी भी एक प्रार्थना है । आप उसे स्वीकार करें ।

रत्न ! तुम ही मेरी पहली सतान हो । अणिग से बढ़कर तुम को मानती हूँ तुम्हें क्या सकोच है ? मन की बात कहो ।

— वरदायिनी माता सरस्वती के समान आश्वासन दिया ।

माताजी ! चामुंडराव जी अत्यंत आदर के साथ मुझे निमंत्रण दे रहे हैं । आप की अनुमति मिले तो मैं उनके यहाँ कुछ दिन रहना चाहता हूँ

रत्न ने निवेदन किया ।

रत्न ! मेरे रहते औरों के यहाँ जाने की आवश्यकता क्या है ? किसी का मुँहताज क्यों बनना चाहते हो ? जो चाहे मुझ ही से ले लो ।

— अंतिमव्रत् की ध्वनि में तिरस्कार का भाव था ।

माताजी ! आप से निराश होकर थोड़े ही मैं चामुंडराव के यहाँ जा रहा हूँ । उनकी प्रार्थना स्वीकार करके वहाँ जाने का आदेश आचार्य अजितसेन जी ने दिया है । पर आप की अनुमति के बिना मैं कैसे जा सकता हूँ । मैं गुरुजी के आदेश से बढ़कर माँ की इच्छा मानता हूँ । आप जो भी कहें मैं मानने को तैयार हूँ ।

— रत्न ने स्पष्ट किया ।

रत्न ! आखिर तुम्हारी क्या इच्छा है ? जाना चाहते हो तो

जाओ। पर निराश्रित मानकर वहाँ भ्रष्ट जाया। जब तक मैं जीवित हूँ तब तक तुम आश्रय से यहाँ रहो। अश्वत्थ की अनाथ मानने का कारण नहीं। समझो।

माताजी। क्या मैं आप पर संदेह कर सकती हूँ? आप ही के कपासप से आज मैं एक मनुष्य हूँ। नहीं तो न जाने किसके वहाँ पानी भरते या रसोई पकाते पडा रहता। आप की कपा से पडा-ठिन्ना हूँ। आप की कपा है कि आज आनुकूल्य देने महानुभाव मुझे अपने वहाँ बुला रहे हैं।

— रत्न की ध्वनि में कूजता सनी हुई थी।

प्राण। काजी। कबि हूबह में जबह अपहू भ्रमण करते रहने की इच्छा बनी रहती है। राजजी तो बड़ महानुभाव हैं। पर एक बात बार खाना कि जब तक तुम्हारा आदर स्तकार होता रहेगा तब तक वहाँ रहना। कहीं किसी भी कारण से जरा सा अनाचार देखा तो वहाँ ही चले जाना। तुम्हारे लिए मेरा मन मरा चुका रहेगा।

इतना कहते कहते अतिथि के का गला बँठ गया। आँसू बह निकले।

रत्न ने शुक कर आप की पर नुनि उठाई और उसे सिर बाँधो पर रख।

प्राण। राजजी के साथ जा रहे हो तो न आने फिर कर हमारी ओर तुम्हारी भेंट होगी। इसीलिए चाहती हूँ कि तुम बिदाह कर लो। तब कहीं मैं निश्चित होऊँगी।

इस प्रकार अतिथि ने रत्न के बिदाह का प्रसन्न छोडा।

जैसे आप की इच्छा। मैं कभी आप की बातों का उत्तर नही कर सकता।

क्या कहीं कम्पा देवी आप?

माताजी एक बात मागिए। मेरे पिताजी को समाचार भेजिए।

संभव है कि कहीं आपने कन्या देखी होगी ।

— रन्न ने कहा ।

‡

जिनवल्लभ की बहन की यमज सतानें थी । बड़ी का नाम शांति छोटी का जक्कि था । इनके सगे-सबधियों में अधिक पढ़ा लिखा रन्न ही था । कन्याओं के पिता आदिराजु का आग्रह था कि या तो दोनों कन्याओं का पाणिग्रहण करें या नहीं । विजयपुर में ही विवाह महोत्सव संपन्न हुआ । रन्न का विवाह उस ठाट बाट के साथ संपन्न हुआ जैसे किसी राजकुमार का हुआ करता है ।

जक्कि और शांति के साथ रन्न का चामुंडराय के दरबार जाना निश्चय हुआ ।

१४

रन्न को विदा करते समय अत्तिमब्बे ने अपने और गुड्डुमब्बे के गहनो को अत्यंत उदारता से शांति और जक्कि में बांट दिया । निर्धन परिवार की वे कन्याएँ इतना आभूषण पाकर कृतकुल्यता का अनुभव करने लगी । उनकी दृष्टि में अत्तिमब्बे सामान्य मानवी नहीं साक्षान् देवी थी । तलकाडु जाने के पूर्व उनको उतना ही दुःख अत्तिमब्बे को छोड़ते हुआ जितना नहर छोड़ते हुए हुआ था ।

उन बहूओं की बिदाई के बाद फिर अत्तिमब्बे के जीवन में उदामी उतर आई । विवाह की घूम स्तब्ध निराशा में बदल गई । अत्तिमब्ब सदा यही सोचा करती थी रण्टकूटों का पतन हमारे ही कारण तो हुआ । इस से समाज और धर्म का जो भी नष्ट हुआ है उसे क्योंकर भर पाएगी ? ऐस अवसर पर गुड्डुमब्बे की सलाह और आश्वासन बड़े काम का होता । पर वह अब कहाँ ? एक बार अपनी सास से मिलकर अत्तिमब्बे ने प्रश्न किया

क्या हमारे ही कारण राष्ट्रकटों का नाश हुआ ?

बलि ! क्या व्यर्थ माया पत्नी कर लेती हो ? क्या कोई किसी का नाश कर सकेगा ? राष्ट्रकटों का पुण्य भय हुआ । अभी उनका समय मिला । साम्राज्य गया । क्या तुम पद्मसूताधिवृत्ति भरतेश की क्या नहीं जानती । भरतेश का दावा था कि उनके समान पद्मसूतो पर किसी और का आधिपत्य पहले नहीं हुआ था और चापल ही जाने हो । अपने नाम पर बीरसाधन कुरुवान के उद्देश्य से बर्मर के साथ वृषवाहि गए । वहाँ अपना यक्षोवान क्षिप्तवाना चाहते थे पर वहाँ क्षिप्तवाते ? वहाँ देखते हैं कि कई पूर्वज कथवृत्तियों के कई लेख पड़े हुए हैं । मिलते गए पर वही उसका भय दिखाई नहीं दिया । देखी हम जिसे गया समझते हैं वह न जान किन्ने बार हुआ चला है । उन्होंने कई बार चाकूत्यों को हरा दिया था ? अब उनकी बनावट का काक न था । हार गए । हम कैसे अपने घर पर इसका विस्मा उठा ल ? पद्मसूते ने इन सब में छात्रता की ।

माता जी ! अतिमर्त्योनाचार्य जी न रस के द्वारा कहना मना है कि

क्या कहना मेरा है ? क्या आचार्य जी पधारेंगे ? या आश्रम का घन चाहिए । पद्मसूते ने बात काट कर पूछा ।

आश्रम के लिए कुछ नहीं माया है । कहना मेरा है कि बर्मर सत्कवि और साहित्य की रक्षा का बार हम अपने कथा पर लें और

— अतिमर्त्यो की बातें पढ़ना शुरू करें ।

बलि ऐसे कामों में हाथ बँटाना हमारा कर्तव्य है । कील गुम्हाए हाथ रोकेगा ? न मैं रोऊँगी न वे । वो जाइ करो । मरवान का विवाह है काहे के लिए ? जितना बने कपड़े जाओ

सर्व प्रथम अहिंसा का प्रचार करना चाहिए । अब लोगों को अहिंसक झूठी प्रणिप्ता की बात नूतने के लिए प्रणिप्ता करना होगा ।

इस-प्रतिस्पर्धि का परिणाम देख ही रहे हैं। युद्ध कभी न हो ऐसा कुछ करना होगा। अब जो उजड़े हैं उनको बसाना होगा। अनाथ शिशुओं की देख-रेख का प्रबंध करना होगा। दीन दुखियों की सेवा करनी पड़ेगी। इस पर धर्म सस्कृति और साहित्य का भार भी उठाना हो तो न जाने कितना धन लगेगा।

अत्तिमव्वे ने अपनी समस्या बयाई।

अत्ति । धन की चिंता मत करो। अपने पास जो कुछ है, सब खर्च हो जाय तब भी चिंता करने की बात नहीं। तुम्हारा बेटा अब राजा है। समझो कि हमें कल्पवृक्ष की छाया मिली है। हम अब जो चाहे कर सकते हैं।

— पद्मव्वे ने भरोसा दिया।

अत्तिमव्वे ने देश की सुव्यवस्था का प्रबंध करके सैकड़ों लिपिकारों को बुलवाया। वक्रापुर से मंगाए गए ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ उतारवाने लगी। प्रत्येक ग्रंथ की सौ सौ प्रतियाँ तैयार होने लगी। यह देख कर दल्लप दग रह गया। मल्लप प्रसन्न हुआ। हाथियों पर लदे ताडपत्र देख कर सब आश्चर्य चकित हुए। हजारों कठ (धातु की कलम) बनवाए गए। कठ भी लोहे या चादी के नहीं, सिंसे के बनवाए गए। प्रतिलिपिकारों से ताडपत्र पर जैन आगमों और शास्त्रों की प्रतियाँ बनने लगी।

इतने बड़े पैमाने पर कभी किसी न प्रतिलिपियाँ बनवाने का प्रयत्न नहीं किया था। अत्तिमव्वे ने सहस्रों प्रतिलिपियाँ बनवाकर जैन मठों को दान दिया। जैन सन्यासियों को शास्त्र दान किया। जिन ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने में आठ आठ साल लगते ऐसे धवल जयधवलादि ग्रन्थों की भी सैकड़ों प्रतियाँ बनाई गईं।

अत्तिमव्वे की दृष्टि लोक व्यवहार से उचट गई। आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होने लगी। घर पर रहते हुए अनर्मुखी रहनी।

तपस्या करती। तीन मुनियों की सेवा में लगी रहती। एक ओर से त्रिनाम्नो की मरम्मत का प्रबंध किया। जहाँ कहीं वीर भावक अधिक संख्या में रहते थे वहाँ स्वयं त्रिनाम्नो बनवाने लगी। सन्तुष्टी का त्रिनाम्नो इस देव से बनवाना क्या कि वह हर दृष्टि से असंख्य बन जाय। कई अधिहार बनवाए। भक्तिरों का निर्माण हुआ। अन्नदान का प्रबंध किया अन्नदातृ बनवाए। शास्त्र प्रवचन और काव्य-वाचन की व्यवस्था बड़े पैमाने पर हुई।

अतिथयों ने कन्नड साहित्य की ओर विशेष ध्यान दिया। संस्कृत प्राकृत तथा अर्धमागधी ग्रन्थों का आधर समस्त घाट में हुआ करता है। अतएव इन ग्रन्थों की प्रतिक्रिया कहीं न कहीं होती रहती हैं। पर बुद्धिनील पदमचू, कुमरचू, गुणवर्मा जैसे कारे कन्नड के कवियों के कविग्रन्थों का तथा पद्मदेव के आदिपुरुष विक्रमावर्त विजय पोन्न भक्ति के प्रवर्तक रामानुजय और आदिपुरुष का आधर कर्नाटक मान में प्रचल है। इनकी प्रतियाँ कन्नड बनवा ही बता सकती हैं क्योंकि वह जल्दी के काम की होती। अतएव कन्नड बनवा की चेष्टा इस प्रबंध में क्यापि नहीं होनी चाहिए। ऐसा सोचकर जहाँ अन्धग्रन्थों की ली ली प्रतियाँ बनवा रही थी वहाँ कन्नड ग्रन्थों की हजार हजार प्रतियाँ बनवाने लगी। राजा-महाराजाओं ने भी इतनी प्रतियाँ नहीं बनवाई होती। इस प्रकार अतिथयों के लिए कुछ के लिए चित्तमणि बन गई। जनता के लिए बालचिन्तामणि बनी। डेढ़ हजार मोने के जिन प्रतिमा बनवाकर बड़-बड़ियों को निमंत्रित करके ग्रन्थों और विभिन्न प्रतिमाओं का दान किया और धर्मप्राप्ति — देखो ! तुम बारसँ बापत्य जीवन बिताओ। जिनो की पूजा करो ग्रन्थों का पाठ करो। तुम्हारे कष्ट दूर होने। ऐश आशीर्वाद देकर बिदा करती थी।

वे कहते — जी आप के आदेशानुसार हम पदा संभव करने का प्रयत्न करेंगे।

और एक बात । तुम अपने जीवित काल में, जब कभी सभव वने तब, किसी न किसी ग्रन्थ की कम से कम पाँच प्रतियाँ लिख कर दान करते जाओ । यह आश्वासन तुम लोगो से चाहती हूँ ।

माताजी ! आप के शुभाशीर्वाद से पाँच ही क्यों पचास प्रतियाँ बनवाकर दान करेंगे । यह तो हमारे उद्धार की बात है ।

इस प्रकार सहर्ष वादा करते और बिदा लेते थे ।

इस प्रकार अत्तिम्बे का दान एक को दस, दस के सौ के हिसाब से बढ़ाते बढ़ाते व्यापक आंदोलन सा बन गया । कन्नड प्रदेश में ग्रन्थों के प्रसार का इतना व्यापक आंदोलन कभी नहीं हुआ था । नव-दपतियों के लिए यह एक आवश्यक कर्तव्य बन गया । इस प्रकार जब जनता में साहित्याभिरुचि बढ़ गई तो यह बहने की आवश्यकता नहीं कि कवियों के जीवन पर क्या ही अच्छा प्रभाव पड़ा करेगा । वे सोचने लगे अब राजाश्रय की आवश्यकता ही क्या है ?

अत्तिम्बे बकापुर गई । अजित सेनाचार्य के दर्शन पाए । अपने पुत्र अधिग को श्री-चरणों में अर्पित करते हुए निवेदन किया कि आचार्य जी ! यही हमारे वंश की एक मात्र ज्योति है । यह सौ वर्ष तक प्रज्वलित रहकर धर्म का प्रकाश फैलाते रहे— ऐसा आशीर्वाद दीजिए ।

क्या पूरा सौ साल का जीवन चाहती हो बेटी ?

— आचार्य जी मुस्कुराते हुए बोले ।

स्वामिन् ! हम लोगो के कारण राष्ट्रकूटों का पतन हुआ । नहीं तो उनसे धर्म और समाज । बड़ा उपकार हुआ होता । अब मैं और यह सौ सौ साल जीवित रह कर समाज की सेवा करना चाहती हूँ । राज सुख भोगने के लिए नहीं । जीवन के प्रत्येक क्षण को अहिंसा-धर्म के प्रसार में लगाने के निमित्त चाहती हूँ । आप के आशीर्वाद में धर्माभिरुचि अत तक बनी रहे ।

बेटी ! तुम साधारण स्त्री नहीं हो । आदिदेव की जननी

मस्केरी के समान तुम भी जोक-कस्यान मार्ग में लगी हुई हो। तुम इस अन्विष्ट के बरोसे जनता के अपार दुःख रोग को दूर करके जोक कस्यान पथ पर अग्रसर हो रही हो। कर्मात्मक का कोई भी घामक तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकता। तुम व्यक्तिगत धीम पारिव्य से क्रांटिक की आदर्श महिला भवि हो। इससे भी बढ़कर भक्त सिरोमणि हो। और तीन बर्य एव सस्कृति की ही मुकटमणि हो। हमने सोचा था कि राष्ट्रकूटा के पतन से तीन बर्य का मान्य दूब गया पर तुम्हारी योग्यता बढ़ा कार्यो से विश्वास हुआ कि तीन बर्य और सस्कृतिका नाश अशक्य है।

प्रबो ! आप मुझे न बनाइए। आप की बातों से इस दुर्बल नारी का सिर चकरा जाएगा।

— अतिमन्त्र ने बबलते हुए कहा।

देखो बेटी। तुम पत्नी हो। कन्वी नहीं। सदियो मे पर्वन के लक्ष में पडे पड मुकतर मार छह छह कर कोवला अमूमन हीरा बन जाता है। तब उसकी शक्ति असदृश हो जाती है। तुम ऐसे ही हीरा हो हीरा। तुम्हें बनाने के लिए नहीं कहा रहा है। सत्कर्म देख कर साबुदाव देना चाहिए। तुमने कर्म के मवलम्भ स्वकर्म का रक्षण कर लिया। तुम्हारा जीवन चितना कस्यानमय है उससे भी अधिक कस्यान मय तुम्हारे पुत्र का जीवन होगा। अतिमन्त्रे तुम फही भी छोड़ रही तीर्थ वनेमा। तुम्हें वाक्पिषि का वर प्राप्त है। तुम्हारे स्पर्ध से मिट्टी का डंका भी धोना बन जाएगा।

— आचार्य के हृदयोरपक से शर्ते निकल रही थी।

मैं पिदिष नहीं चाहती न स्पर्ध से धोना बना देना ही। आप की चरण चूषि का मूल्य क्या वह धोना है? आप की पर-चूषि देती आँखों का बजन बने। आप के धी-चरणों के प्रभाव से यह मेरा हृदय भिन्न भिन्न बन पाय। न बन चाहती हूँ न मान कस्यान

चाहती हूँ, केवल यही चाहती हूँ कि मेरी जीभ सदा जिनमंत्र जपा करे । मेरे कान जिनस्तुति से भर जाय । मेरा हृदय समवसरण बने और जिनेंद्र का सिंहासन हो । दीन धर्म की सेवा करने के लिए जितनी बार चाहे मुझे जन्म मिला करे ।

— ऐसा कहते कहते गद्गद् हो गई ।

बेटी ! तुम परम सात्विक हो । हमारे जैसे यतियों के लिए भी तुम्हारे दर्शन से स्फूर्ति और प्रेरणा मिला करेगी ।

— आचार्य जी ने मुक्त कंठ से अतिमन्त्र का यशोगान किया ।

अतिमन्त्र बकापुर के आश्रम में कुछ दिन ठहर गई । आश्रम को चित्ता से मुक्त करने के लिए अपनी सपत्ति का आधा हिस्सा दान पत्र करके दे दिया । अपन हाथ से रसोई बना कर विद्यार्थियों को खिलाया । बीमार विद्यार्थियों की सेवा की । आश्रम से बिदा लेने के पूर्व अजितमेनाचाय से बोली

आचार्य जी, आप हमारे समाज के रत्नों को बटोर कर लाते हैं और उन्हें सान पर चढ़ाकर चमका देते हैं । इन विद्यार्थियों में न जाने कितने अनर्घ्य निकलेंगे । आप बिना सकोच मुझे आज्ञा दे सकते हैं । आप की सेवा के लिए सदा कटि बद्ध रहूँगी । अपनी और आर्घ्य सपत्ति भी चाहे तो लिखवा लीजिए । स्वयं इस आश्रम में परिचारिका बन कर रहने के लिए भी तैयार हूँ । आप के दर्शन से बड़ कर और कोई सपत्ति मुझे नहीं चाहिए । इस नश्वर सिंहासन पर बैठने की अपेक्षा समवसरण के द्वार पर परिचारिका बन कर खड़े रहने में अधिक सुख है । यह श्रेय और प्रेय दोनों है ।

— यह कहते समय अतिमन्त्र पुलकित हो रही थी ।

बेटी ! ठीक कहती हो । एकाध जन्म में समवसरण के द्वार पर परिचारिका करते रहें तो सम्भव है कि जिन ही बन जाने

का पृथक् प्राप्त हो।

इन धर्मों में नव मस्तक अतिमध्मे एवं अन्तिम को हँसते हँसते आधीर्षाव दिया।

१५

अस्तित्वनाशार्थ भी के दर्शन से अतिमध्मे का असाह्य डुगना बह गया। उसने सोचा कि मानव की जायू सीमित है। कब अतिम साध होखती होती यह कौन जाने। अतएव जो भी कुछ धर्म-कर्म करना है उसी से बन्ती करना है ताकि हँसते हँसते बिना के चले। ऐसा सोच कर उसने निश्चय किया कि कोई भी धर्म जिस किसी अति पब या बेसीध का किया क्यों न हो अगर वह कबह में है तो उस की प्रतिक्रियावाँ बनवा लूँगी।

अतिमध्मे का संकल्प अनतिक क कोरे कोरे में पहुँच कर धारण एवं आहित की बाह प्रवाहित कर सक।

धर्म नहीं है जो सब के सुख का साधन हो। इन का स्वल्प समझने पर किसी भी जाया में समझाते बनता है। संस्कृत में ही धर्म प्रत्य रचा का सञ्ज्ञा है जो बात नहीं। देख-अज्ञानानुसार जनता की भाषा में सरल सीधी में आसिक धर्मों की रचना होनी चाहिए। सभी जनता में आसिक साधना आधत होगी जब-विश्वास बुरहोवा। सत्य ज्ञान के प्रकाश में अथर्व कभी अंधकार भिन्न आएगा।

यह अतिमध्मे का कथन था। उसने कबह भाषा केन्द्रों के कष्ट को बुर कर देने की प्रतिज्ञा की। पंडितों से साहस निवेदन किया कि वे जनता की भाषा में रचना किया करें सभी जनता का खुन

चुका सकेंगे। ऐसे व्यक्तियों को चुनचुन कर अपने यहाँ स्वागत किया जो केवल कन्नड में ही रचना किया करते थे। उनका आदर और सम्मान इस कदर किया कि कोई राजा-महाराजाओं से भी करते नहीं बने। कर्नाटक में मलय मारुत के समान चक्कर काटते हुए संस्कृति का पचार किया। उन दिनों में कर्नाटक में शैव, वैष्णव, बौद्ध और जैन संप्रदाय प्रचलित थे। अत्तिमब्बे, इन सभी धर्मों का समादर किया करती थी। मठ मंदिरों को भर पूरदान भी देती थी। अतएव चतुस्समय सरक्षिका नाम से विख्यात हुई।

राष्ट्रकूटों के पतन के साथ ही मालव स्वतंत्र बना। दिन ब दिन इन की शक्ति भी बढ़ती गई। उत्तर के कई प्रदेशों को जिन पर राष्ट्रकूटों का शासन चल रहा था मालव परमारों ने हड़प लिया। बाद को कन्नड जनता पर भी आक्रमण करने लगे। तैलप ने कई बार उनका मुकाबिला किया। उनसे लोहा बजा बजाकर थक गया था। अंत में अपने पुत्र इरिवबेडग के नेतृत्व में बड़ी सेना भेजने का निश्चय किया। इरिवबेडग यात्रा के पूर्व अत्तिमब्बे से आशीर्वाद पाने के लिए आया। मल्लप तथा दल्लप दोनों ने हाथ जोड़कर होनहार चक्रवर्ती सम्राट का स्वागत किया।

माताजी, मैं समर-यात्रा पर निकला हूँ। यही मेरी प्रथम यात्रा है। आशीर्वाद दीजिए। ताकि मैं विजयी बनूँ।

ऐसा कहते कहते अत्तिमब्बे के चरण-रज उठा कर सिर पर चढ़ा लिया।

बेटा ! क्या तुम को मेरे आशीर्वाद चाहिए ? समर में सम्मिलित होनेवालों को आशीर्वाद देने में मुझे मय होता है।

अत्तिमब्बे पीछे हट गई।

माताजी ! आप को हमारे राज्य की प्रत्येक प्रजा देवता मानती है। आप का आशीर्वाद वज्र-कवच होगा। आप के स्पर्श में

सजीविनी शक्ति है। आप की कृपा शक्ति से मृतक भी जी उठता है।

परमेश्वर ने प्रार्थना की।

बेटा ! रहने दो। मैं जानती हूँ कि गृह भयागिनी की योग्यता कितनी है। ज्योतिषी की बेटा बिजबा बन पाती है। तुम्हारे कहने के अनुसार रस्ती भर भी मृत्यु से घबिष्ट होती तो क्या मैं अपने प्राणेश्वर को छोड़ दूँगी ? अपनी प्यारी बहन को अश्विस्तथा पर बैठने की नीयत खाती ? जहाँ जानना मुझे देखी कह कर तृप्ति पाती है। और परमात्मा की कृपा पर यरोसा रख कर जाओ।

देखिए, आप मेरे सिर पर हाथ रख कर कहें कि तुम विजयी बनो।

— ऐसा कहते हुए हरिवन्धन ने और एक बार चरणों में सिर झुकाया।

अभिषेक इच्छित हो उठी। बोली—

बेटा ! धर्म ब्रह्म करो। प्रसन्न मन में मत रहो। जाओ। विजयवन्धु के साथ जाओ। धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा।

अभिषेक के आशीर्वादन और स्पर्श पाकर हरिवन्धन को बड़ा आनन्द मिला। उस उठ कर पास ही बैठे हुए रस की ओर देख कर बोला—

महाकवि की वय ! आप समर-यात्रा में साथ हैं तो अच्छा होना। आप से हुआ उरसाह बढेगा और युद्ध के साम्राट अनुभव से आपका साहित्य समीप बढेगा।

हमारे कविवर्य कीरे केवली विरुनेभावे नहीं हैं। वह सरस्वती परशुराम के शिष्य हैं। इस का परशुराम शक्ति एक बड़ा और रस प्रधान रस कव्य है। बड़ा इसलिए युद्ध कोई अपरिचित बटना नहीं है।

अभिषेक ने कहा।

जी हाँ । मैंने भी परशुराम चरित पढ़ा है। ऐसे कविसिंह साथ रहेंगे तो समर भूमि भी रसागार बनेगी। दो उद्देश्य लिए यहाँ चला आया था। सर्व प्रथम आप से आशीर्वाद पाना था, पाया। दूसरा, इस महाशक्त को अपने साथ ले जाना है। आप की आज्ञा हो तो ये अवश्य साथ चलेंगे।

— इरिववेडग ने प्रार्थना की।

रत्न । क्या कुमार की बात मानोगे ?

अन्तिमव्वे ने रत्न से पूछा।

आप के आशीर्वाद मिले और आदेश हो तो मैं कुमार के साथ समर भूमि की यात्रा कर के लौट आऊँगा।

रत्न ने अन्तिमव्वे पर सारा भार डाल दिया।

रत्न । तुम्हारे द्वार पर भाग्य ही चला आया है। जाओ। देखो, समर में साहस की कमी न हो और धर्म-ग्लानि भी न हो।

— ऐसा कह कर विदा किया।

परमारो के साथ महीनो तक लोहा बजाना पड़ा। रत्न स्वयं शस्त्र उठाना चाहता था, पर इरिववेडग ने अनुमति नहीं दी। बोले—

अभी क्या विगड़ा है कि आप हथियार उठा लें। आप की वाणी सजग हो, आप हमारे जवानों में आग सुलगाइए। उनका समरोत्साह बढ़ाइए — यही हम आप से आशा रखते हैं — माताजी का भी यही आदेश था न ?

युद्ध समाप्त हुआ। इधर रत्न का गदायुद्ध भी समाप्त हुआ। इस काव्य का नाम साहस भीम विजय रखा गया। इरिववेडग और साहस भीम में अभेद दृष्टि रख कर काव्य की रचना हुई। दुर्योधन का छल, निर्व्याज एव निश्छल प्रेम आदि सद्गुणों को भी मुक्त कंठ से सराहकर चरित्राकन में नवीनता दिखाई गई थी। स्वाभिमान का सजीव वर्णन काव्य की विशेषता बन गई। कवि ने इरिववेडग को

काम्य समर्पित क्रिया वा ।

नामक्य साम्राट तैलप रत्न के पशामुद्भव में अपने पुत्र हरिवर्देव के पुद्भव कीटक का वर्जन देल कर प्रसन्न हुआ । कर्नाटक के साम्राट न कवि रत्न को कवि-साम्राट कह कर समादृत किया । सुदर्भ-वद वनक चंचर हाथी भोड आदि सभी राजपोरव कवि को प्राप्त हुआ । बतपाम को जागीर में दिया । रत्न ने इन सारी खिस्मती को का कर अलिमम्मे के घरमा में अर्पित किया और निवेदन किया —

मातारी ! मैं आप का स्नेह-विधु हू । यह सारी खिस्मती आप की हैं । आप के पर रत्न के सम्मुख इनका क्या ऐसे हजारों राजा-महाराजाओं से प्राप्त सम्मान भी मुष्क है । अपना कल्याण इन खिस्मती में नहीं आप के पर रत्न न देखता हू । वही मेरे लिए सब कुछ है ।

रत्न कवि भाव परवस हुए ।

रत्न तुम्हारी कीर्ति से मेरा हृदय पूरे नहीं समाता । तुम्हारा कीर्तिकता बीसे बीसे कह कहा उठती है बीस ही बीसे मेरे हृदय का छरछह उनक पकटा है । मेरे स्वामी का स्वप्रयथार्थ बन रहा है । अब तक तुमन को भी काम्य रचना की वह केवल सीमा है अन्ध धाक है लोक प्रतिविध की मूक मे प्रेरित की । वह अब मिट गई होनी । अब आत्मोच्चार के लिए काम्य लिखो । तीर्थ करो की सरवागति ही मेरे लिए तुम्हारे लिए और समस्त लोक के लिए गतिप्रद है । तीर्थ करो की सीत्ताओं का वर्जन करो । तब मैं अपनी ओर से तुम्हें एक खिस्मत दूँगी — समझे ।

— कह कर मुस्कराई ।

माताया आप के सुवाणीर्भाव ही पर्याप्त है । तीर्थ कर पूराव रचूंगा । अब मैं नरकाध्य की रचना में प्रतिभा का अपभ्रम नहीं होने दगा । औप्यातिषीय आप के आदेश का पालन करके कृतकर

ब्रह्मा फिर मे भुज कर प्रणाम किया और चरण धूलि का तिलक लगा लिया ।

१६

चामुंडराय ने माता जी की आज्ञा मानकर उसकी महादिच्छा को पूर्ण करने के लिए श्रवणवेळगोळ के चद्र-गिरि शिखर पर बाहुवली की वहदमूर्ति खुदवाई । यह समाचार हवा के साथ जासेतु हिमालय फैल गया । अभिनव समवसरण क्षेत्र वेळगोळ बना । धावका की कतार चाटी की कतार सी लग गई । रत्न कवि ने विजयपुर को समाचार भेजा । चामुंडराय के आज्ञानुसार रत्न ने अत्तिमब्बे को सपरिवार भगवद्दशनार्थ आने का निमन्त्रण दिया । राचमल्ल गंग ने तैलप, दल्लप और मल्लप को जलग अलग निमन्त्रण भेजा । अत्तिमब्बे ने निमन्त्रण स्वीकार किया । लक्कुडि की राजामाता को यथामम्मान लिवा चलने का प्रवध रत्न ने कर दिया ।

भगवद्दशन करने तक केवल फल और दूध पर रहने-का सकल्प अत्तिमब्बे ने किया । यह सुनकर उसके नातेदार और रिश्तेदार सब भय भीत हुए । कहाँ विजयपुर और कहाँ श्रवण वेळगोळ । जल्दी से जल्दी जाना भी चाहें तो कम से कम पंद्रह दिन लगेंगे । रास्ते में पडनेवाले जिन-मदिरो के दर्शन करते हुए जाने लगें तो महीने से कम तो नहीं होगा । उतने दिनों तक कैसे फल खाकर या दूध पीकर रहे ? यात्रा के अवसर पर व्रत-नियमोंका पालन कैसे संभव होगा ? शरीर को इतना कसना ठीक नहीं ।

पद्मब्बे ने इन शब्दों में बह को समझाया ।

माताजी ! मैंने सकरप कर किया । उन्नत कुवकुनेश्वर बाहुबली
की प्रेरणा से ही तो ऐसा किया । कुछ नहीं होगा — सब उसकी
कृपा है । आप व्यर्थ चिंता नहीं करें ।

— अतिमन्त्र ने बहता से कहा ।

अति ! तुम बड़ी हठीली बन गई हो । बड़ों की बात मानना
चाहिए । उनके यत्न करने पर तुम्हें किसी अनुष्ठान में नहीं कर्मना
चाहिए । दूध और फल के बरसे रोटी और सब्जि के छो समझी ।

अतिमन्त्र ने सुझाया ।

हाँ ! तुम नहीं खाओगी तो मैं भी नहीं खाऊँगा ।

— अन्विज देव ने कहा । उस समय सहसा उसके आँसु
बह निकले ।

अन्विज ! रोओ मत ! उसकी प्रेरणा से ही तो ऐसा कर
रही हूँ । बस उनकी प्रसन्नता के लिए किया था रहा है बस किसी
को उसका विरोध नहीं करना चाहिए । यह अनुचित होगा ।

— अतिमन्त्र ने बेटे को समझाने के बहाने सब को
समझा दिया । और लोचो ने इस बारे में कहा छोड़ दिया ।

अतिमन्त्र ने नय महाकवि और पोन्न महाकवि को भी
कहा देवा । वे आए । फिर गहर कर मैं वह विरोध पिटवा दिया
कि जो भी बाहुबली के रत्ननाथ उनके साथ जाना चाह निकले ।
उनका साथ उन्हें दिया जाएगा ।

बसहान और निरुपम व्यक्तिओं के लिए अतिमन्त्र कामबन्धु
की । उसके सम्मुख जान पर बलि से बलि भी थी-सम्पन्न बन
जाता । कष्ट में पड़े हुए लोगों का कष्ट दूर हो जाता । कभी वह
रोमियो को देखती तो अपने हाथ से उनकी सेवा करती बसा बेटी और
तुरस्त हो जाने के परचास भी महीनों उनके लिए पुष्टिकर दूध
पत्र खादि का प्रबंध करती । तीन बच्चों की सहायता करना उसका

व्रत था। जाति-पाति की बात सेवा में नहीं देखी जाती थी। ऐसी अन्नपूर्णा जब यात्रा के लिए निमन्त्रण दें तो कौन उस मौके को हाथ से जाने देगा? कुछ लोग यात्रार्थी बन कर आए। कुछ एक परिचारक वर्ग में सम्मिलित हुए। कल्पवृक्ष की छाया में रहते समय राजा और रक्त में विशेष क्या कुछ भी अंतर नहीं रह जाता। अमृत वांटने वक्त जिस किसी के हाथ में पड़ा वह अमर बन गया।

अत्तिमब्बे का यात्रा-दल प्रति दिन दस मिल चलता। सैंकड़ों बैल गाड़ियाँ थीं। बालक वृद्ध और रोगी गाड़ियों पर सवार थे। तत्परता से उनकी देख-भाल होती थी। अत्तिमब्बे, पदमब्बे और अण्णिग एक रथ पर जा रहे थे। औरों के लिए भी यथायोग्य रथ दिया गया था। अत्तिमब्बे केवल दूध और फल ले रही थी। सो भी दिन में एक बार। पर उसकी शक्ति कुठित नहीं हो रही थी। सभी यात्रियों से स्वयं मिलकर सुख-सुविधा का विचार करती थी। उनको हिंडोले पर बिठाए शिशुओं के समान सभाले ले जा रही थी। जिन-मदिरो में पड़ाव डालती। सब ग्रामवासियों से मिलकर दान-दक्षिणा आदि से उनका यथायोग्य सत्कार करती थी।

पंद्रह दिन बीत गए। अत्तिमब्बे के स्वास्थ्य में कुछ ठडवडी दिखाई देने लगी। वह कमजोर बन गई। दिन में केवल एक बार दूध और फल मित मात्र में लिया करती थी। पर बिना विश्राम लिए काम करती थी। परिणाम यह हुआ कि सेहत गिरती गई। इतना दुर्बल बन गई कि लोग घबरा गए।

बेटी ! तुम कर्नाटक की देवी हो। तुम्हारे रहने से यह देश हरा भरा रहेगा। तुम दुबल हो तो देश दुबल होगा। देश की संस्कृति क्षीण हो जाएगी। दूध और फल ही सही कुछ अधिक लिया करो।

— पद्म महाकवि ने समझाया।

माताजी आप मर-ज्वास से दुर्बल बनती जा रही हैं यह किसी को अच्छा नहीं लगता । वह तब आप के बूते का नहीं है छोड़ दीजिए । समसंसार के लिए जानेवाले क्या भिक्षुता नहीं रहे ? विनेस्वर की नहीं आप की ही पिता में बूते रहें । आपन सेवाधर्म की सीखा ली है तो ब्रह्मोपवासो की आवश्यकता आप के लिए नहीं है । पर महात्मा की सलाह मानिए । सोचिए, यदि बुद्धा की वह सूख आप को बूझ कैसे हुए रहे पाएगा ?

— राज ने प्रार्थना की ।

मामाजी । आप और हम ब्रह्मोपवासी हैं । आप जैसे व्यक्ति भी मेरे सम्मुख मे विष्णु हाकने का प्रयास करें वह क्या उचित है ? इस मिट्टी के ढेके को बड़ा महत्त्व दे रहे हैं क्या मेरे पीछे ही प्रक्रम हो जाएगा ? मेरे मुँह के बाकने पर ही दिन शुरूआ और मेरे जमींदारी से सुरुआत पर ही जाना पड़ेगा । ऐसा मान कर नहीं ? क्या आप समझते हैं कि यह सब मैं करती जा रही हूँ । ममता ने आप की सलाह को क्या मार डाला है ?

— अतिमन्त्र ने खिन्न होकर जवाब दिया ।

पोन्न जी । कम से कम आप के कहने पर अतिमन्त्रे मान लें । एक बात कह देजिए । क्या हम लोग खुशामद देखने रहें और कर्नाटक माता को भूलो बल्ले जाय ?

पर ने पोन्न फुसलावा ।

पर जी हम सन्तुष्टी हम ब्रह्मनिष्ठों के पाठ्य में कैसे विष्णु डाके ? कीन बार कि किस व्यक्ति में कीन-सी चरित छिपी रहती है ? ब्रह्मोपवास से बड़े ही वैद्वेषित बूटित हो पर आत्म चरित की बुद्धि होती है । आप पिता नहीं कीजिए ।

पोन्न जी ने उत्तर दिया ।

स्वामिन् । न जाने इस खडार में कितनी बार जगम पहन

किया है । विषय सुख के लिए अनंत काल से अनंत जन्म ले चुकी हूँ । केवल एक जन्म का एक अश परमपद पर अर्पित करना चाहती हूँ तो भा न जाने कितनी विघ्न-बाधाएँ आ रही हैं । हमारे आत्मीय गुरुजन परिजन ही विघ्न डालते हैं तो क्या करूँ ।

— अत्तिमब्बे ने अत्यंत विषाद व्यक्त किया ।

बेटी । तुम खिन्न न हो । चाहे जो परिस्थिति हो व्रत में बाधा न आने दो । ससार की दृष्टि से तुम और हम दोनों बड़े सनकी हैं । हम दोनों के सिर अध्यात्म की सनक सवार है ।

.... इन शब्दों में पोल कवि ने अत्तिमब्बे को आश्वासन दिया ।

करीब एक महीना बीता होगा कि यात्री-दल चन्नरायपट्टण पहुँचा । उस रात को वहीं ठहरे । प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर सब ने अल्पाहार लिया । अत्तिमब्बे ने अपने नियमानुसार दूध-फल लिया । सिद्धि की प्रतीक्षा में सफल हुए योगी के समान उत्साह से आगे आगे बढ़ी । प्रतिक्षण बढ़ी कातरता से परमात्मा के दर्शनार्थ सिर उठा उठा कर देखती न जाने कब मिले । आधे घंटे भर यात्रा की होगी कि सहसा दर्शन मिले । ऐसा लगा कि बाहुवली अपने मुग्ध मुखमण्डल पर मृदुमुस्वयान लिए यात्रार्थियों पर कपा दृष्टि फैला रहे हो । यात्रार्थियों का स्वागत कर रहे हो । सहस्रों कठों से एकाएक जयगोप हुआ । कदम कदम बाहुवली की मूर्ति स्पष्ट से स्पष्ट तर बनते गई ।

अगल बगल में धान के खेत थे मानो हरे मखमल बिछा दिए हो । जहाँ तहाँ कौंच बगुले आदि पक्षी उड़ रहे थे । एक के बाद एक जलाशय मिल रहा था । जलाशयों में अनगिनत कमल खिले थे । परमात्मा के दिव्य सान्निध्य के सूचक थे ये दृश्य । ब्रह्मानन्द रसानन्द के आवरण में अधिक आकर्षक बन जाता है । वैसे ही श्रवणबेलगोळ

बनारस-प्रदूषण के प्रकृति-सीढ़ीय से उत्पन्न आकस्मिक बनता जा रहा था। पप कवि का मन चक्रीक बनकर कमल के चारों ओर मड़राने लगा। उन कानों को देखते ही स्वयं कौंच बन उठते। उभरत इतिहास पर उड़ान का अनुभव करके पृथ्वी हो उठा। अतिमय्य की दृष्टि में प्रकृति के कमल में नयन-मयिनी बोले प्रोत् बिहारी हो रही थी।

रत्न ने सब में आगे बढ़कर चामुंडराय को याता-वत्स के आश्रम की पचना दी। गुरुत परमबेठनोठ के सहर फाटक पर आकर उपनिषद् बखानी करने चामुंडराय बहा हुआ गया। पप महाकवि हस्तप मय्य आदियों का स्वागत किया। पोन्न के चरको में नमस्कार करके पद रख दिया। काठमादेवी ने सब त्रिबो का स्वागत किया। अतिमय्य को अत्यंत दुर्लभ देखकर बय रूई गई। बोली —

अति ! क्या ऐसा बन गई हो ? क्या कोई बीमारी है ? सेहत अच्छी नहीं ? हमारे स्वामी के दर्शन से अचक्षु तुम्हारी सेहत सुधरेगी अमृत पान करने का आनंद मिलेगा। तुम तो फूले नहीं धमाधमी।

काठमादेवी ने प्यार से अतिमय्य के सिर पर हाथ फेरा। अतिमय्य ने झुककर प्रणाम किया और कहा —

माँजी आपने इस कवि दुःख में भी समसहस्र को बचतन पर ठहरा दिया है। लारा बैस आप का आश्रम मानता है। हमारे जैसे हमारे व्यक्तियों की बरका आप जैसे एक ही व्यक्ति हो प्रे-देव का मोक्षार्थ ही मोक्षार्थ है।

— अतिमय्य ने परबानुर्बक कहा।

अति ! तम कहीं और मैं कहीं ? जगम अचक्षु बन कर तम विचार रही हो। तुम्हारी बात सुन चुकी हूँ। तुम ने धन्य जय बचन की सी-सी प्रणियां बगवाई हैं। तुम ही ने तो सब हथार मर्न प्रतिमाई बना कर दाम दिया है। यह क्या कोई चामुंडी सी

बात है ? तुम्हारे लिए सुवर्ण का ढेर लगावें तो ऐसी एक मूर्ति बन सकेगी ।

काळलादेवी ने मुक्त कंठ से सराहा ।

माताजी, आप एक बड़े पर्वत हैं । और अतिमन्त्रे करुणा तरंग पूरित महासागर है ।

— पप महाकवि ने इन महिला-रत्नों का कव्यामय भाषा में वर्णन किया ।

मैं पर्वत हूँ और यह सागर तब तो आप शून्य गगन हूँ —
यही न ?

काळलादेवी की हँसी सब को अच्छी लगी ।

हाय ! हाय ! उन्नत विशाल और व्यापक वस्तुओं को आपस में बाँट लें तो मेरे लिए बचा क्या रहेगा ?

— रत्न ने घबराते घबराते कहा ।

घबराओ मत रत्न ! तुम माताण्ड हो कवि मार्ताण्ड !

— पप न रत्न की पीठ ठोकी ।

जी ! वन्य भाग ! शून्य में भ्रमण कर सकूँगा । और सागर का रस भी ग्रहण कर सकूँगा और पर्वत

— रत्न की बात पूरी सुनी भी नहीं सब हँस पड़े ।

सब गोप्मटेश्वर के दर्शन के लिए चले । काळलादेवी की इच्छा थी कि दुर्बल अतिमन्त्रे को-डोली के सहारे ले चले ।

मामी ! मूझ पर आप का असीम स्नेह है-। मानती हूँ । भला, डोली पर मैं क्यों चलूँ । वच्ची थोड़े-ही हूँ ।

अतिमन्त्रे ने असम्मति दी ।

वच्ची ! तुम बड़ी कमजोर हो । अब हठ मत करो । स्वामी का दर्शन करना मुख्य है । चाहे जैसे उनके पास पहुँचो । वच्ची, बूढ़ो और रोगियों को चढ़ कर अपने पास अनेका आग्रह दयामय गोप्मटस्वामी का नहीं है । जँमे तैसे ही सही उनके पास

पहुँचे यही मुक्त है। अपनी कृपा वृष्टि से संबन्धित है अपने पास जानेवालों को देखते हैं। हम छोड़ छोड़ बोम्बट का भजन करें तो बैठे बैठे घूर्नें। बैठे बैठे चार्पण तो खड़े खड़े घूर्नें। हम खड़े होकर यज्ञोपान कर तो नाचते हुए घूर्नें। हम उन के भजन कीर्तन में मग्न होकर घूर्नें तो अपना साम्राज्य ही देख बैठें। अति तुम मेरी अतिथि हो हमारे कहने के अनुसार चला ही होया। तुम डोली में बैठो।

— कम्बुकारेपी ने आग्रह किया।

बानी! कबला इस विश्व में कुछ पर बला न आये। मैं केवल निमित्त मात्र हूँ। बोम्बटेश्वारी मुझे अपने साम्राज्य में उठा ले जाएँगे। ऐसे कृपा के पास जाने के लिए इन बेचारों के कंधों पर चढ़ें? कबला नाम आप कर जीव कर्म-बानी बतते हैं। क्या वह बहादुर सब नहीं पाऊँगी?

— अतिथि ने बृद्धा पूर्वक कह दिया।

अति क्या तुम्हारी वृद्धि बात करने लगी है? निर्बल निपटार करने से तुम्हारी देख एक बम कमबोर हो गई है। ईश्वर निकलोही तो उनके पास तक पहुँच ही न सकती। बड़ी बर्तों की बात बानी। डोली पर चढ़ो।

— कुछ स्नेह करे अधिकारवादी से अत्यन्त ने कहा।

माताजी आप क्या बात मेंडक की कहानी शुरू करें? जतने महादेव स्वामी का समयसरण देखने की अधिकारी हैं। एक बात पुण्य केकर विपुलात्रि पर जाने का संकल्प किया। वह बुधवार से बुधवार तक चढ़नेवाले महासाधक की अति चढ़ते चढ़ते जा रहा था कि रास्ते में शैलिक महासाधक की सहायी आई। आप हाथी नर सब जा रहे थे। तब एक अनहोनी बरमा हो गई। हाथी से वह मेंडक कुछका पया। अथवा के दर्शन की आकांक्षा किए वह

चल वसा । उसके अतः करण में समवसरण का दृश्य समा गया था अतएव समाधिमरण का फल पाकर वह देवता बना । विमान पर चढ़ कर महावीर के समवसरण समारोह पर श्रेणिक से पहले ही जाकर सम्मिलित हुआ । बीच रास्ते आप जिस अनीष्ट की सभावना देख रहे हैं वह संभव बन जाय । अहोभाग्य है । पर कहां मैं उस योग्य हूँ ।

• अत्तिमब्बे भावावेश में बोल उठी ।

लोगो ने सोचा कि उससे कुछ कहने जाना ही व्यर्थ है ।

अत्तिमब्बे का उत्साह बेहद था पर देह की शक्ति सीमित थी । दस एक कदम चढ़ सकी पैर ने जवाब दे दिया । आगे चढ़ना संभव नहीं हुआ । बीच बीच में दम लेते हुए चढ़ने लगी । सो भी कुछ दूर तक । आगे वह भी असंभव बन गया । शांति और जबकि सहारा देने को तैयार होकर बोली

मामी ! हम दोनों के सहारे चढ़ सकती हो । तुम कंधे पर हाथ रखे रहो । हम संभाल लेंगे । शांति ने विननी की ।

शांति ! क्या नहीं जानती हो कि सब को अपना अपना कर्म फल आप भोगना पड़ेगा ? यह सहारा दे सकती हो , पर भवसागर में डूबी हुई मुझे कौन सहारा दे पाएगा ?

— बड़े मार्मिक ढंग से प्रश्न किया ।

आप तो सारा पुण्य अकेली बटोर लेना चाहती हैं । हम लोगो को भी कुछ प्राप्त कीने का मौका देती जबकी ने आक्षेप किया ।

बेटी ! संकल्प करने पर दृढ़ता से पालन करना चाहिए । जैसे जैसे शरीरिक सुखसुविधाएँ अधिक होती हैं । वैसे ही वैसे हम भगवान से दूर दूर पड़ते जाते हैं । धर्म से घबड़ाने लगेंगे । जन्म जन्मातरो में इस घोरदुःख को आराम पहुँचाने का ही तो प्रयास किया है ? इतना सुख पाकर भी इस देह ने आत्मोन्नति के लिए क्या किया है ? शांति ! मैं देह के अधीन नहीं हूँ देह को अपने वश में

रक्षता चाहती है कि माँ के समान तुम मेरी सुसकायना देने जा रही हो ।

अतिमम्वं न शिघ्रं होकर कहा ।

पहल को कृपकृत हुए आनास मे सिर ठागकर वह बिचट बाहुवली की मूर्ति दर्शनीय थी । विषयकमी-वासनाबाधक उसके माथे पर खेले रहे । उस मूर्ति को एक ही बार देख लेना हमारी आँखों के बूँटों की बात नहीं । अलख दृष्टि घना अविकसित आत्माओं के लिए कैसे समभव हो सकती है ! अल्पकल्प हम कण्ठस्थ दर्शन या देखने । सहज बन कमल पर बाहुवली उठा है । चरणों के चारों ओर बाँधी बने हैं मानो वातिकर्म उस रूप में खड़ा रहे अपने अनाथ बन जाने का दुःख घुमा रहे हो । उन बाधियों के विचारों से सर्व भाग्य रहे है । मदारमत्ता वही पवतल का आश्रय पाकर ऊपर चढ़ती गई है जो बुटना के लहारे चढ़ते चढ़ते किसी प्रकार हाव का सहारा या भिया है वहाँ से बाहुवली झिन्टो हुए घन तब फूलों की गुच्छाओं से सुशोभित है । दर्शकों की दृष्टि भी कठामो का अनुसरण करते हुए ऊपर को चढ़ती जाती है । निष्ठाक बलस्वरूप देयना बहिए लँछे निष्ठाक है । मृदुमम्वं को छोटी मोली के समान फूलन से समर्पण मन्त्रा सक्ति खानी बाहु है । टाँगी कँछे आश्रयक है । बरा ऊपर दृष्टि से जान पर मूर्ति कला की चरम परिणति से सम्बन्धित मृदु मन्त्रास छोटे पर दिखाई देना । मन्त्रास की लहारे अलख धूक की चरणों से दिखाई देती । नाक आँख मोहो और आल भूकुराले दिख - एक से एक बहकर चित्ताकर्षक है । मूर्ति-बला की सीमा बाहुवली का यह पापान्तराल है ।

अतिमम्वं ने मूर्ति की इस सम्प्राकृति की छाँकी पाकर कम कल्पता का अनुभव किया । सिंहसा तब नागवेग और मुदुमम्वं का स्मरण जागृत हो उठा बर्षा प्रसात सागर तब से बाधनामक प्रवर्धित हो उठा ।

स्वामी । तुम्हारे दशन पाने तक उनको जिलाए रखते । तुम्हारे ही समान वे भी स्वाभीमावी थे । तुम्हारे ही जैसे वे भी साहसी थे । यदि जीवित रहते तो तुम्हारे ही जैसे सभव है कि वे भी त्यागी बने होते ।

अन्तिमव्वे वडवडाने लगी ।

गुड्डू ! तुम हतभागिनी हो । नहीं नहीं तुम दोनों को अपने निकट दूला लेने का भाग्य गोम्मटस्वामी का ही नहीं है ! प्रभो ! आज वे दोनों जीवित होते तो तुम्हारी मूर्तियाँ बनवा बनवाकर भारतवर्ष के कोने कोने में प्रतिष्ठापित करते अर्थात् राष्ट्र को रक्षित करने से मदते हमारी गुड्डू का हृदय इतना उन्नत और विशाल था कि ऐसी दसो मूर्तियों को आराम से सुला लेती थी । उसकी विशालता की समता बया सागर कर पाते । प्रभो उन दोनों को मुझसे छीन कर मुझे अघा कर रखा ।

अन्तिमव्वे की परा-वाणी में आकाश भी काप उठा । ठीक उसी समय वहाँ किसी बूढ़ी को लिए कोई आया और वह उस बूढ़ी से पूछने लगा —

नानी ! हम परमात्मा के निकट आए हैं । क्या उनके चरणों तक पहुँचा द ।

चरण के पास ! नहीं-नहीं । मुझे यही बैठने दो । जब तक मेरी दृष्टि मुझे नहीं मिलेगी तब तक मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूँगी ।

ऐसा कहते कहते कुछ दूर सरक कर बैठ गई । उस कमी का स्पर्श हुआ सा लगा ।

यह क्या है ? क्या किसी को कुचला ? हाय हाय ।

— बूढ़ी ने कहा ।

बूढ़ी माँ ! मैं ! मेरा नाम अन्तिमव्वे है ।

अतिमन्त्रे । यह नाम सुनते ही बुद्धिमा के शरीर में बिजली का संचार हुआ । बोली —

कौन अतिमन्त्रे ? तुम्हारा गाँव कौन सा है ? इसी नाम की एक ऐसी विजयन मे रहती है ।

हाँ हाँ ! मैं विजयनर की अतिमन्त्रे हूँ ।

तब तो मेरा अहोभाग्य है । ठीक समय पर मिली हो । तब दानविनामधि हो न? तुम कल्पतरु हो । विनामस्त शक्तियों के लिए विना दूर करनेवाली विनामधि हो । मैं तुमने सब की इच्छा पूर्ण है । मेरी भी इच्छा पूर्ण करो । मुझे बुद्धि दान दो ।

उस बुद्धिमा ने ऐसे विडगिडा कर माँगा कि जैसे कगल कीमती से माँगा करते हैं ।

बूढ़ी माँ तुम्हारा गाँव कहाँ है ?

कोल्हापुर । वहाँ मे रवाना होते समय मेरी बुद्धि अच्छी थी । मेरे पास पैसे नहीं थे । हमारे गाँव से कुछ खोप बसने । उतक पीछे पीछ बस पड़ी । वे बड़े बर्मासा ब । रास्त धर मुझे सिकाते सिखत रहे । जब तक गाँवें सुन्न रही थी पैरक स्वतन्त्र चलती रही । पर जैसे जैसे बुद्धि बूझती छी हुई, गाँवी पकड़ कर उसके बसने लगी ।

तब क्या तुम्हारी बुद्धि गाँव से निकलते समय स्पष्ट थी ?

जी । बहुत अच्छी थी । गाँव से निकले तीन महीने बीत गए । अभी अभी एक सप्ताह पूर्व में स्पष्ट देख सकती थी । बीरे बीरे भाँस बुझती पड़ी । जब तो महासूत्र है कुछ भी दिखाई नहीं देना । ऐसी एक बार मेरा स्पर्श करते हुए बाको कि तुम्हारी बुद्धि प्राप्त हो । मुझे विश्वास है कि मेरी बुद्धि साफ हो उठेगी । मैं देख सकता हूँ । एक बार मैं जानती प्रभु देवता चाहती हूँ । बार का मेरी बलि मन्त्र के लिए बस जाय ।

बूढ़ी माँ । क्या तुमने इससे पूर्व मुझे कही देखा था ?

हमारे देश में तीन व्यक्ति इतने प्रसिद्ध हैं कि उनको जिन्होंने नहीं देखा वह सचमुच अभागा ही होगा । उन तीनों में पहला स्थान तुम्हारा है, अत्तिमब्बे तुम्हारा है । दूसरा स्थान काळलदिवी का, और तीसरा स्थान है सड़ बाहुबली का । इनको देखने के बाद और कुछ नहीं देखा तो कोई नुकसान नहीं । प्रथम दोनों को मैंने कोल्हापुर में देखा था । अब मेरे प्रभु के दर्शन के लिए पाँच सौ मील पैदल आई । पर आखिरी घड़ी में निगोड़ी आँख बुझ गई । अब देवी दुष्टिदान दो हे दानचितामणि ! नहीं तो मैं यही अनशन करके मर जाऊँगी ।

बूढ़ी माँ ! मैं भी एक सामान्य अबला नारी हूँ । दृष्टिदान देने की क्षमता मुझ में कहाँ ? पुरुषों ने संग्रह करके अपार सुवर्ण-राशि रख छोड़ी थी । उसे बाँट बाँटकर खाली करती आई । तालाब का पानी भरा था , नाले में बहा दिया । यह अपनी मेहनत की कमाई थोड़े ही थी । जनता की संपत्ति थी जनता में बाँटी गई । तालाब का पानी तालाब में ही समा गया । बस कतज्ञ जनता मुझे दान-चितामणि कह कर सम्मानित करती है ।

रहने दो देवि ! मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो किमी तरह दुष्टि-दान दो ।

बुढ़िया अच्छी सी मचलने लगी । अत्तिमब्बे के चरण पकड़ कर रो पड़ी । अत्तिमब्बे का अत करण विश्वानुकप से द्रवित हो उठा । सीधे उठकर प्रभु के चरणों के निकट आई । प्रभु के चरणों का शुद्ध जल से अभिषेक किया । उस जल के साथ आँसू भी मिले थे । उस पादोदक की कुछ बूँदे उस बुढ़िया पर छिड़काई गई । अत्तिमब्बे ने आँखें बंद करके प्रार्थना की । .. हे प्रभो ! यह एक जीव है जो तुम्हारे दर्शन के लिए लालायित है । हे दयामय ! दया करो । कृपालु ! कृपा करो । मैं अपनी एक आँख से तुम्हें देखूँगी । दूसरी

औस की ज्योति इस धड़िया को मिल जाय । हे ! मो यदि बुद्धिया को बाँधें नहीं ही तो तुम्हारे सिर सेही सींह ।

— इस प्रकार अतिमन्त्र न भक्ति परब्रह्म होकर कहा । पारोपक के स्पर्श से उस बुद्धिया न यह अनयन किया कि मानों बाह्य ही उस पर छिड़काई गई । सूरज पर से बाह्य जैसे हट जाता है वैसे ही बाँध पर से वह परब्रह्म भी हटा जिस कारण बुद्धि ब्रह्म ही गई थी । उनका कनहूय भी उन्माह जैसे जैसे बढ़ता गया वैसे ही वैसे उसकी दृष्टि भी स्पष्ट बनती गई । ठीक उसी समय कहीं से ठडी ठडी हवा बहने लगी । काले बादलों न बर कर सूरज के ठेक कम कर दिया । कुछ बूँदें भी गिरी । प्रभु पर तबर्चीय अमृत कलश का अभिषेक हुआ । बरसात का भय उस भक्तादि पर से उतरते उतरते बड़ा जावर्पक लग रहा था । बुद्धिया की बाँधें स्पष्ट दिखाई देने लगी । उसने बाहुबली की मूर्ति को आपाव मस्तक देखा । बरसात में भीगती या रही थी पर जनता को इसका ध्यान ही नहीं था । सब जानव छावर में डूब हुए थे । अतिमन्त्र के भाव का तो आर गार ही नहीं था ।

अतिमन्त्र ने सभी को जगृह करके बतले दी । जनता में बहू समाचार जिह दृष्टि को भी मान करना हुए ठेक गया । मस्तकानिषेक के निमित्त भरत मूर्ती के कोने कोने से मस्तक-न बाया ही था । उनम जो जो मुक बाँ र समई मुले कोही तपरी जादिके सब अतिमन्त्र के पास आए । अपने कष्ट से पार करने के लिए प्रार्थना की । बाहुबली की अनेका जनता अतिमन्त्र के बाँध-मान में तन्मय होने लगी । अतिमन्त्र ने देह की बराबर की ओर ध्यान न देकर बिन एत उनके रोगों को बर करने के निमित्त प्रभु से प्रार्थना करने लगी । जिसका प्रारब्ध नू हुआ था उसको बाजित ठेक मिला । प्रभु ने अतिमन्त्र को निमित्त बना किया । उसका भय विनिरुध ठेकने लगा

अजितसेनाचाय जी ने अन्तिमव्वे से कहा —

जनता के दुख दद को दूर करने जाकर अपनी सारी शक्ति गँवाती जा रही हो। यही हाल रहा तो साल डेढ़ साल में अपनी शक्ति से वंचित हो जाओगी। वया कोई साग-पात तौलने के लिए सोने का नराजू और हीरे का बटुआ बनवाएगा। इन बातों से विरत हो जाओ।

आचाय जी, क्षमा कीजिए। भवरोग को दूर करने के लिए तीथ करो ने युग युग तक तपस्या नहीं की? स्वामी। तीर्थ कर महाप्रभुओं की शक्ति अपरिमित थी। मैं गरीबिन वया कर सकूँगी? यदि मुझमें जनता का दुख दद दूर हो सकता हो तो हो जाने दीजिए। मैं निमित्त मान हूँ। सब प्रभु की कृपा है।

— अन्तिमव्वे ने विश्वानुकप से आद्र होकर कहा।

देखो बेटो, तीथ करो की बात अलग है। इस मत्स्य लोक में कई ऐसे महानुभाव हैं जिन्हें अपूर्व सिद्धियाँ मिली रहती हैं। पर विशेष परिस्थिति के अतिरिक्त अन्यत्र उसका उपयोग नहीं करते। तुम। तो मिचाई करने की धुन में जलाशय की बाँध ही तोड़ने लगी हो

आचाय जी ने कहा।

तब मैं क्या करूँ? बताइए।

अन्तिमव्वे ने नतमस्तक थी।

बेटो। जनता से सहानुभूति रखो। पीरज बधाओ। भावान का भरोसा रख कर भक्ति सहित प्रार्थना करने कहो। वे प्रार्थना करें। अन्यथा तुम्हारी यह दया अनुचित होगी। जनता आलसी बनेगी और तुम्हारा दीवाला निकलेगा। अब भी चेतो। यह महिमा-प्रदर्शन की भूख दबाई जाय। आने आत्मा-कन्याण की बात सोचो कोई भी तीथ कर यो ही जनता के दुख दद दूर नहीं करते। जिस प्रकार वैद्य दवा देता है और परहेज

कर रोषियों को रहन के लिए कहता है उसी प्रकार तीर्थंकर भी स्वास्व-काम का मार्ग सुलाते हैं। और केवल आवश्यक प्रतीत होने पर दया या अनुग्रह करते हैं। जनत धर्मित सपत्न परमारमा ही सब श्रुता सबन रहता है तो अस्यसक्ति युक्त तुम्हारे लिए किटना संयम चाहिए, सोचो तो सही। अपने अपने कष्टों से पार होने के लिए उन्हीं को प्रार्थना करने का आदेश हो। जनता की धर्मित बाबना को बाबूत करो। सब में जनत धर्मित अतिनिष्ठ रहती है। तुम्हारा काम उठ सक्ति के मोठ की ओर सकेत करना माव है। समझी।

— बाबाय भी ने बताया हैने के साथ अतिमय्ये को कर्तव्य का रास्ता भी दिखाया

१७

अभिषेक देव युवक हुआ था। जनकजी में एक विनायक बन कर तैयार हुआ था। युगियों में बाहुबली की प्रति अत्युत्त भी। मरिचों में लम्बुही का मरिच अत्युत्त था। जनता मुक्त कठ से शोनी का बसोमान कर रही थी। जनकजी राजधानी बनने पौय कोट नहर, बुज आदि से सपत्न हो गया। अतिमय्ये के नेतृत्व में ही महक मरिच, प्रासाद आदि बन गए। जनकजी के विनायक में वंश कम्पास महीत्युत्त की तैयारी होने लगी। अतिमय्ये की योजना थी कि मरिच में जिनमूर्ति की स्थापना हो यहक का प्रवेचोत्त हो और साथ ही साथ अभिषेक देव का शुभ विवाह भी गरम हो। अतिमय्ये की इस योजना का सब ने अनुमोदन किया।

अतिमय्ये के पास भाई थे। पाचों के यहाँ कम्पाई थी। सब

के सब अत्तिमव्वे की बहू बनना चाहती थी। एक दृष्टि से उन में होड मच गई थी।

बेटियो ! मेरा इकलौता बेटा है। कैसे मैं सब को बहू बना सकूंगी ? एक, नहीं तो दो को बहू बना सकूंगी।

.. अत्तिमव्वे ने इन भतोजियो को समझाया।

मामी ! यह अण्णिग के अनुरूप है। विचार कर देखो।

— गुडुमय्य की छोटी बेटो की ओर से किसीने कहा।

मामी ! तुम सुमती को मन भूलो, सबसे सुंदर ह। अवश्य अण्णिगदेव इसे पसंद करेंगे।

— एळमय्य की मझली बेटो की ओर से किसीने कहा।

मामी ! चद्रप्रभा में रानी बनने योग्य लक्षण है। देखो वहन कैसा गठीला है।

— पोन्नमय्या की दूसरी लडकी को सिफारिश इन शब्दों में पेश हुई।

मामी ! वह खूब गाती है आप के बेटे को रिजाने की कला भी जानती है। रोज आप को भजन सुना करेगी आप सोचिए और इसे ही अपनी बहू बना लीजिए।

आह्वमल्ल की ज्येष्ठ पुत्री का प्रस्ताव इन शब्दों में किया गया।

वल्ल की बड़ी लडकी घु घुराले केशवाली विमला थी। उस की योग्यता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया

मामी ! यह खूब अभिनय कर सकती है। जिनेंद्र की पंच कल्याण महोत्सव का ऐसा अभिनय कर सकेगी कि आप के समक्ष वह यथार्थ में उतरा हुआ लगेगा। गाने में भी किसी से कम नहीं है।

अत्तिमव्वे ने सब की बातें सुनी। सब को सारवना देती हुई

बोली कि —

देखो यदि अग्निव माने तो मैं सब को गूँथ बना लूँगी।

अग्निव ने तीतला और विमला को पसंद किया। एक ही पल्लव में एक साथ दोनों कन्याओं का अग्निव से पालिशहल हुआ। कनक ही उस समय अमरावती के समान सुसोभित थी। पंचकल्याण महोत्सव हुआ विनेंद्र का प्रतिष्ठापना-समारोह भी संपन्न हुआ। इसी समय रत्न विरचित अक्षित पत्थर का प्रकाशन-महोत्सव भी अमृत पूर्व ईग से मनाया गया।

अक्षितनाथ हमरे तीर्थ कर थे। आदिनाथ के दिव्य चरितों का अनुसार पप महाकवि ने कर दिया था। अब यदि अमरवती रत्न से अक्षितनाथ की जीलाओं का नाम दिया था।

अबोधों में अक्षितनाथ राज कर रहा था। उनकी रानी विमलसेना देवी थी। इन की ही सत्ता अक्षितनाथ से। आप के जन्म के अवसर पर देवलोह ही पृथ्वी पर उतर आया था। अहिंसा धर्म के प्रभाव को दिखाने व प्रसार करने के लिए अवतरित अक्षितनाथ का जन्मोत्सव बड़ी जूम से मनाया गया। गया समय अक्षितनाथ का पालिशहल एक हथार कन्याओं से हुआ। वे युवराज भी बनें। सहस्र सहस्र लोग लोचनार्यों के साथ कई वर्ष रासबीजा आदि शोध विज्ञान में मग्न रहे। एक बार उन्कापात हुआ। अहिंसा उनकी कन्या कि सारा संसार ही एक उन्का है न जाने कम इसका भी पतन होना। अठएक सहस्र विरक्त बने और विमल रत्नप्राप्ती हुए। कई वर्षों तक तपस्या करते करते जीव और धर्म के स्वरूप और संबंध समझा। तप में सिद्धि मिली। शक्ति धर्म गूँथ हुआ। अक्षितनाथ सब विनेंद्र बने। समयसरल महोत्सव में सभी देवता उपस्थित हुए। अतः सभा में इस विनेंद्र ने तीनों ज्योत्स्नों के सम्मुख जीव और धर्म का स्वरूप समझाया और उनकी सन्धा उन से होनेवाली अमरों का वर्णन किया।

कर्म से छुटकारा प्राप्त करने का रहस्य बताया । इन सबका उपदेश सर्व भाषामयी दिव्य ध्वनि में दिया जिसे श्रव्यकोटि ने सुना और समझा ।

इन तीर्थंकर के काल के चक्रवर्ती सगर थे । रत्न ने अजितनाथ पुराण में इनका भी वर्णन किया है । सगर की राजधानि अयोध्या थी । वही से आप षट्खण्डो पर शासन कर रहे थे । वृषभाचल पर पूर्व में भरतेश ने अपनी विजयगाथा खुदवाई थी । उसी की वगल में सगर ने कविरत्न से अपनी विजयगाथा खुदवाई । छियानबे हजार सुर सुंदरियां उनका रनवास में थी और साठ हजार पुत्र थे और षट्खण्डो के राज्यशासन आदि में निरत सगर ससार सागर में पूर्ण निमग्न थे । उनको समझा बुझाकर आत्मकल्याण के मार्ग पर लगाने के उद्देश्य से, उनके जन्म जन्मातर के मित्र मणिकेतु दो-एक बार प्रव्रत्न कर विफल मनोरथ हुए थे ।

एक बार सगर चक्राधिप के साठ हजार कुमारो ने लीला से कैलास पर्वत के चारो ओर खाई खोदने का सकल्प किया । इससे असंतुष्ट होकर मणिकेतु ने अपनी विद्या के बल पर भ्रम उत्पन्न कर दिया कि इन सब को भस्मी भूत कर दिया हो । उन में से केवल भगीरथ बच गया । उसने अपने भाइयो का हाल सगर से निवेदन किया । उस समय विप्र-वेश घर कर मणिकेतु आया और अपने इकलौते बेटे को, जिसे मृत्यु ने छीन लिया था, वचा देने का अग्रह करते हुए रो पड़ा । सगर की रानियां भी उसे घेर कर अपनी अपनी सतान को जिला देने का आग्रह करने लगी । सगर की सभी बहूएँ वहाँ आ गई अपनै पतियो के वियोग में आँसू बहाते बहाते सागर ही उमड़ दिया । इस ऊषम के बीच सगर में वैराग्य जगा । ससार की अनित्यता का बोध उसे हुआ । संसार का त्याग किया । प्रेयसियो की ओर भी नहीं देखा । पृथो के शव तक नहीं देखा ।

कर्म से छुटकारा प्राप्त करने का रहस्य बताया । इन सबका उपदेश सर्व भावामयी दिव्य ध्वनि में दिया जिसे श्रव्यकोटि ने सुना और समझा ।

इन तोर्थ कर के काल के चक्रवर्ती सगर थे । रत्न ने अजितनाथ पुराण में इनका भी वर्णन किया है । सगर की राजधानि अयोध्या थी । वही से आप षट्खण्डो पर शासन कर रहे थे । वृषभाचल पर पूर्व में भरतेश ने अपनी विजयगाथा खुदवाई थी । उसी की बगल में सगर ने कविरत्न से अपनी विजयगाथा खुदवाई । छियानवे हजार सुर सु दरियां उनका रनवास में थी और साठ हजार पुत्र थे और षट्खण्डो के राज्यशासन आदि में निरत सगर ससार सागर में पूर्ण निमग्न थे । उनको समझा बुझाकर आत्मकल्याण के मार्ग पर लगाने के उद्देश्य से, उनके जन्म जन्मातर के मित्र मणिकेतु दो-एक बार प्रवृत्त कर विफल मनोरथ हुए थे ।

एक बार सगर चक्राधिप के साठ हजार कुमारो ने लीला से कैलास पर्वत के चारो ओर खाई खोदने का सकल्प किया । इससे असंतुष्ट होकर मणिकेतु ने अपनी विद्या के बल पर भ्रम उत्पन्न कर दिया कि इन सब को भस्मी भूत कर दिया हो । उन में से केवल भगीरथ बच गया । उसने अपने भाइयो का हाल सगर से निवेदन किया । उस समय विप्र-वेश घर कर मणिकेतु आया और अपने इकलौते बंटे को, जिसे मृत्यु ने छीन लिया था, वचा देने का अग्रह करते हुए रो पड़ा । सगर की रानियां भी उसे घेर कर अपनी अपनी सत्तान को जिला देने का आग्रह करने लगी । सगर की सभी बहुएँ वहाँ आ गई अपनो पतियो के वियोग में आँसू बहाते बहाते सागर ही उमड़ दिया । इस ऊधम के बीच सगर में वैराग्य जगा । ससार की अनित्यता का बोध उसे हुआ । संसार का त्याग किया । प्रेयसियो की ओर भी नहीं देखा । पुत्रो के शव तक नहीं देखा ।

विषय पर मग्यायी बन गए । उसपर मयावरण न होने ही मनुष्य पश्यण रक्ष-रक्ष मोह निद्रा में जाय उन्होंने पिता की विधि की बात मनी । उन का राम भी दूर हुआ । वैराग्य के महापूर में वह मग्न । सब के सब विगडर गति बने । कुछ समय के बाद मयीरव भी अपने सब बरबन को राज्य सौंप कर विगडर बने और कठोर तपस्या में निरत हुए । काक्यम में कमजोर हो गया केवल ज्ञान मुपन्न हुए । राम ने अश्विनाथ तथा मधुर के इस विषय चरित की अतिमध्य के परिवार को मनाया । इन मनुष्य सब प्रसन्न हुए ।

अश्विनाथ पुराण में राम ने अतिमध्य का यक्षोपान भी मुक्त कठ में किया था । अश्विनाथ पुराण के उन्नीसवाले के रूप में अतिमध्य का वृत्त जोड़ा गया है । अतिमध्य का रूप इस कारण वं अमर बना है । अतिमध्य के साम्प्रत्य को बड़े ही सुंदर निरूपित किया है । पुराण प्रसिद्ध महिका राजा की कठार में रखकर दिखा दिया है कि वह किनी से कम नहीं है । राम ने अतिमध्य को जिस जननी के समझ माना है । बुधजन अश्विनाथ विषय कायवेन् । यक्षवर्ति पूजिता विनघाटन प्रदीपिका । शानतितामनि । विनय बृद्धामनि । सम्प्रकाश विरोमनि । लीलाककुता । गुणमाणा ककुता आदि विद्यपत्नी से राम ने अतिमध्य का यक्षोपान किया है ।

अतिमध्य ने अश्विनाथ की एक ह्जार प्रतिमा बनवाई । बड़े और नरिरी में इन बीट दिया । योग्य अवस्थों को भी शान दिया । महामना अतिमध्य ने राम का सुवर्ण लुकाचार करके सब सुवर्ण कवि को दे दिया । और मदी लया में राम का बखोनाम करते हुए सम्मानित किया । कल्लड भायामृत को बुझकर बीटाकर इसी मन्मई निहाळकर रखने का भोज पच कवि का था । कल्लड भायामृत जमाकर इही जमाकर जवकर जड़त नवनीत निहाळने का भय पोन्न का था । कल्लड भायामृत से बने नवनीत को बीटाकर सुवर्ण भू

बना देने का श्रेय रत्न के पाले पड़ा । ये कन्नड साहित्य के रत्न ग्रथ हैं । मैं दानचितामणि हूँ सही, पर मेरा यह पुत्र रत्न केवल दान-चितामणियो और सम्यक्त्व चूडामणियो का यशोगान करनेवाले चारण शिरोमणि है ।

ऐसा कहकर अतिमन्त्र ने सब का आनंद बढ़ा दिया ।

१८

राष्ट्रकूटों के बाद गगगज्य दुवल बना । चामुण्डराय ने शस्त्रसत्यास ग्रहण किया और गोम्मट के सान्निध्य में ही आत्मचित्तन में लीन रहने लगा । जैसे ही समर परशुराम के शस्त्रन्यास का समाचार चोळों ने सुना तो उनमें सुप्त राज्य-दाह रूपी साप फन फैलाने लगा । कर्नाटक पर मदगज के समान चढ़ आए, पदतल पर आए हुए गावों को कुचला डाला । इस प्रकार चालुक्य साम्राज्या पर धाक जमाने के निमित्त आगे बढ़े । इरिववेडग ने तु गभद्रा पार करके चोळों का मुकाबिला किया । सर्व मेनापति अण्णिगदेव ने इरिववेडग का दाहिना हाथ बनकर चोळों से युद्ध किया । युद्ध में चालुक्य जीत तो गए पर दुर्भाग्य से ठीक उसी समय वर्षा प्रारंभ हुई । तु गभद्र में बाढ़ आई । नदी के इस पार चालुक्यों की सेना, रसद उस पार रह गई । शस्त्रास्त्र भी उसी पार था । चालुक्य सेना हतबुद्धि-सी हो गई । न रसद न शस्त्र । करें ही क्या ? ऐसे अवसर का लाभ उठाते हुए चोळों ने फिर से घावा बोलने का निश्चय किया और रास्ते में पड़नेवाले गांवों को लूटते हुए अपने लिए अवश्य रसद जादि जुटाने लग । पहले चोळ हार गए थे और दुम दवा कर भाग खड़े हुए थे ।

अब एनोस्ताह ने तुलसीदास की ओर दृष्टि किया। इधर विजय नामक सेना बाकी हाथ रह गई थी। दोनों के बीच में केवल छ मील का अंतर रहा हुआ। एक के सिर पर बिता सवार भी धनी के कारण दूसरे के सिर पर सैना सवार का बरसा लेने के जोर के कारण।

एक दिन जोड़ी से पड़ाव में एक पालकी आई। उसके साथ पद्म-बीस कहार भी थे। उनको न उन्हीं रोका और हाट कर पूछा कि तुम कौन हो? और कहाँ से जा रहे हो? इस पालकी में कौन है?

हम लख की जा रहे हैं? पालकी में रामदास बिछाने रखी है? — कहारों ने कहा।

यह उत्तर जोड़ा की अचानक में हाक दिया। फिर उन लोगों ने सोचा कि यदि इसे हम बंद कर दें तो अवश्य नामक सबि कर केन के लिए बिखर हो जाएँगे। इस अवसर का बुरा लाभ उठा सकते हैं। सेनापति को समाचार दिया गया। उन्होंने आते ही पालकी से उतरावा की आज्ञा दी। कहारों ने म्याग से उल्टा-सीधी फिर पालकी के चारों ओर जाते हुए गए। अतिमध्य में बाहर जाते हुए पूछा कि किसका हम का रोका है?

हम जोड़ सेनापति हैं। हमारी आज्ञा है कि तुम उतर जाओ अब हमारी हिदायत में हो समझी?

— सेनापति ने बड़े चमक से कहा।

मैं क्यों उतर जाऊँ? कैसे तुमने मुझे हिदायत में किया है? और क्यों?

— अतिमध्य की जीहें उन गई थी।

अरे! क्या देखते हो! वो चार कमा दे तो शिवांग ठिकाने जाएगी। जोड़ी पकड़ के उतरवा लो।

जोड़ सेनापति ने अपने बगलों की आज्ञा दी।

कहारो । तुम धीरज रखो ।

— अत्तिमब्बे ने कहरो से कहा । बाहर आई । चोळो के सम्मुख खड़ी हो गई और बोली

क्या मुझे हिरासत में लेना चाहते हो ? हम ने क्या अपराध किया है ? बताओ ।

अपराध । अपराध यही कि तुम हमारे दुश्मन की माँ हो । तुम्हारे बेटे ने हमारे सैकड़ों जवानों को मारा है । उस अकेले व्यक्ति के कारण हम हार गए, नहीं तो सारा कर्नाटक हमारे पदतल पर आया होता ।

— सेनानी ने दात पोस कर जवाब दिया ।

मेरा पुत्र तुम्हारे ही समान सेनाधिपति हैं । अपने कर्तव्य का निर्वहण मात्र उसने किया है । क्या चालुक्य सेना में तुम्हारे हाथ किसी की मौत नहीं हुई ? वाद विवाद क्यों ? अपने व्यवहार की बात अपने पास ही रहने दो ।

अत्तिमब्बे ने सलाह दी ।

वाह ! तुम बड़ी चालाक हो ।

— व्यग से हँमते हुए सेनापति ने अपने सैनिकों की ओर लाल लाल आँखों से देखते हुए कहा —

क्या देखते हो ? बढो आगे । ले लो हिरासत में ।

वे आगे बढ़े । पालकी को घेर लिया । अत्तिमब्बे की भौंहे चढ़ गई । बोली

खबरदार ! कहीं आगे एक कदम आया तो कुशल नहीं होगा । सिन्धु, बाल वच्चो और निरीह जनता को कुचल कर साम्राज्य स्थापित करनेवाली तुम्हारी ऐसी बुद्धि पर थक है । तुम्हें धिक्कार है ।

अत्तिमब्बे ने जोर से कह दिया ।

जैसे ही चोख सैनिकों ने उसे पकड़ने के मिश्रित हाथ बढ़ाया वैसे ही मृदु होकर ग्राह्य मृत्ती के समान मात्र समस्तों हुई दृष्टि से घूरकर जाने परतल पर खड़ेबाकी मृत्ती भर मिट्टी के उन सैनिकों की ओर फूँक दिया । उन को ऐसा लगा कि सैनिकों द्वारा विचित्रता एक साथ उन पर टूट पड़ी हो । विपक्षियों के लिए जहाँ विचित्रता टूट रही थी वह स्वपक्षीय करारों को चरित्रिकों का जाल दिखाई दे रहा था । सभी चोख बच्चाहल से सुखित हो गए । अतिमन्त्र ने पतनसंसार जपते हुए पाखरी की परिक्रमा की । कहाँ और पाखरी को भरकर एक अविश्वस्य निर्मित हुआ । घरे क अक्षर खड़ेबाकी को वह बावनी था । प चोखों को यह सचमुच अविश्वस्य ही था । उस समानुपिठ व्यापार से चोख हुए प्रथ होकर लड़े खड़े ।

अतिमन्त्र पाखरी में बैठ गई और पाखरी माने बड़ी । पाखरी और कहाँ के चारा और निर्मित वह अविश्वस्य भी उसी प्रकार माने गया ।

बड़ी हो बड़ी को मात्रा के बाह अतिमन्त्र की पाखरी तु गमना के किनारे जा पहुँची । चासक्य मना के पञ्चा पर उतरते ही अतिमन्त्र ने मन्त्रजप करते हुए चोखों का दिग्गमन कर दिया । उस मन्त्र स्थिति से होना के बीच में विचित्र प्रकार सुखित हुआ । असल में यह जीका बैलकर लारी सेना चकित हो उठी । खबर पाकर हरिवर्धन संगतिपति अम्बिक को साथ लिए चला गया । इस समानुपिठ एवं अत्राकृतिक दृश्य से चकित उठा । सोचा जब हम दूरे फले में पोछे हटते बनता न माने बढते पीछे ठेक प्रवाह है मात्र वह अकीर्ण विचित्र प्रकार है क्योंकि प्रवाह में उतरे तो हाथी की बीटी से वह भाँटे । माने यह बावना चोखों का कोकाहल लज यथ बढ रहा है । वे चले जा रहे हैं । जब सन के पत्रे में फँस भाँगे । हरिवर्धन पिताकृत हुआ । अम्बिक को भी

कुछ नहीं सूझ रहा था । दोनों घबरा उठे । तब वहाँ सहसा एक पालकी दिखाई दी । आश्चर्य से दोनों देख ही रहे थे । अतिमब्बे वहाँ थी इरिववेडग आगे बढा ।

माताजी ! कैसे समय दर्शन दिए ।

कह उस के पदतल पर सिर रख दिया । अणिग भी कम चकित नहीं था । माताजी के चरणों में नतमस्तक हुआ । पदतल पर वह भी गिर जाता पर वहाँ इरिववेडग ढडवन पडा हुआ था । माताजी से बोला

माँ हम सकट में फँसे हैं । पीछे प्रवाह आगे शत्रु । अब यह नया सकट भी उपस्थित हुआ । खैर, आप श्रवणवेळगोल मे क्यों कर आई ? चोळ बडे नीच होते हैं ।

अतिमब्बे ने इरिववेडग को ऊपर उटाया । देह में लगी धूल पोच डाली । अणिग के सिर पर प्यार से हाथ फेरा ।

माँ ! वही, सामने चोळो का सेना है । हमारे पास कुछ भी ही बचा है न रसद न शस्त्र ! हम बडे सकट में फँसे हैं ।

घबडा हट से अणिग फिर बोला ।

अणिग घबराओ मत ! जब तक मैं जीवित हूँ कनाटक साम्राज्य का बाल तक वाँका न होगा । मेरे रहते न तुम्हारे लिए अनिष्ट की सभावना है न इरिववेडग की ही । बेचारे चोळो की कौन कहे चाहे तो समस्त भारत के राजा-महाराजा भी एक साथ आक्रमण करें । मेना को सँभालो । मेरी तप शक्ति से निर्मित इस विद्युत्प्राकार के निकट आने का साहस शत्रु करें तो जल जाएँगे ।

— अतिमब्बे ने आश्वासन दिया ।

माँ ! तुगभद्रा को शांत करने के लिए कुछ तों करो ।

— अणिग ने प्रार्थना की ।

अणिग ! यह तुगभद्रा ही क्या ? आवश्यकता हो तो मैं

सप्त स्रूह को कटाक्ष वीक्षण से सोस सकती हु । डरो घट । पार करने के लिए ससम्भ हो जाओ ।

— इस प्रकार बचव देकर अतिमन्त्र ने पूज को और हरिबोधन की विधा किया ।

अतिमन्त्र के आगमन का पूज समाचार बालकृष्ण सेना के कोने कोने में पहुंच गया । प्रत्येक सैनिक में विभिन्न स्फूर्ति का संचार हुआ ।

बोझो ने आक्रमण करने का साहस किया । पर आगे बढ़ नहीं सके । उस विद्वयुग् प्राकार कुछ-एक को पहले से निकट तक आ नहीं सकते थे ।

अतिमन्त्र की घण्टि का अनुभव या अवएव जाने बहने का विचार छोड़ दिया । दूर ही से बालकृष्ण सेना की यतिविधि को देखते पाये रहे ।

बालकृष्णों का आक्रमण ऐसा आघ वहा था कि उन्होंने बेचडक खाया गया । पेठ के नीचे आश्रय छ मेट कर पान लमा कर आया । दूध उतर गई । बालकृष्ण सेना नहीं पार करने की तैयारी में लम गई । एक रज पर त्रिन-मूर्ति को बिठा किया । सैकड़ा शीप बलाए गए । पूज्य बुच्छो से रज खजामा गया । अतिबन्ध थी रजावड हुई । त्रिन-मूर्ति के पशुनक पर बैठ गई । उसकी अपल बपल में हरिबोधन और अभिय रीठ गए । रज से चार कलेज बोझ बोझ गए । उस नहीं में उतार दिया । नी का पानी किसी क्षिपाय के कारण हम इस बज रुक गया । बीच में रास्ता खुला । रज आने बहा । पीछे से सैकड़ो हाथी हवाय बीडे साओ लिपाही बज पड । आदमर्ष की बात यह थी कि यह विद्वयुग् प्राकार भी उसके पीछे पीछे जाने बना ।

बोझ सेवारति यह देख ही रहा था । नहीं पार करते हुए

शत्रु को रोकने की इच्छा थी फिर भी कुछ करते नहीं बन रहा था । इस विवशता ने उसको बेचैन कर दिया । फिर भी सेना को आज्ञा दी कि तीरो से हमला करो । उनके फेंके बाण अत्यंत वेग से चले आते पर इस ज्योतिर्मंडल के पास आते ही पर जले पक्षी की भंति गिरा जाते और जल जाते ।

घड़ी दो घड़ी के अंदर सारी चालुवय सेना नदी के उस पार थी । चोळो ने भी इस मौके का लाभ उठा कर नदी पार करन चाहा । पर एक तो उस प्रज्वलित दीवार के निकट ही नहीं अ सके । सेना के पार पहुंचते ही अत्तिमब्बे रथ से उतर आई और पूजा के फूलों को अजली में भर कर नदी पर चढाया । तुरंत ही ऐसा शब्द हो उठा मानो समुद्र ही छीक रहा हो । पानी उमड़ आया ।

वाढ के आघात से किनारे पर के वृक्षा गिर पड़े । जिस से तुग्भद्रा की शोभा और बढ गई । कर्नाटक महिला-रत्न के कीर्ति-प्रवाह में चोळों का पराक्रम बह गया । कर्नाटक की सीमा से बाहर खदेडने तक अत्तिमब्बे की मन्त्रशक्ति ने चोळों का पीछा किया ।

१९

अत्तिमब्बे आंखों देखा की एक एक करके महान दिभूतियाँ अस्तगत होती जा रही थी । ऐसे अवसरों पर कहती प्रभो ! बयो मेरे भाग्य मे ये सब मुझे देखना वदा है । खैर तुम्हारी इच्छा । कर्भा-कभी आप्तेष्टों की मृत्यु का समाचार मिलता । तब अपने बान के पग्दे को फाड देने के लिए प्रार्थना करती ।

इस के पिता बृध्वावस्था में लकड़ुंठि जाए और नही अंतिम सास तोड़ी । माताजी सती हो गई अंतिकम्बे सोझी —

पिताजी आप देखतुम्य हैं । आने बहुत कुछ बान पुष्प किया । इस सब में आपन बान दिया कि बाँये हाथ का दिया बाँए हाथ को पता न लगे । मैं तुमने सबमुख बाध्यवर्ती हो । तुम्हारे ही पुष्प से मैं बानविशामधि हूँ । आपने अपनी सारी संपत्ति मुझे दे डाली । मुझसे बान बर्न करा दिया । आप का सारा जीवन पति और सत्ता की परिधि में सीमित रहा । बरतबड की महिमाओं का आर्त या आप का जीवन । अपनी सारी संपत्ति और कीर्ति सुनानो न बाँट कर सपुत्र थी । अपने सत अनुष्ठानाधि किए पर किसी को पता भी नवरे नहीं दिया । इस कीर्तिशायना के पृष्ठसे वे ।

— इस लम्बो में माता-पितरों का स्मरण करके रो पड़ी ।

पितरों का वियोग हुए । थोड़े दिन हुए वे पप महाकवि के वैद्वयसाग का समाचार बिबली से दूट पड़ा । उनके साथ जगन्नी तीनों पत्नियों ने सहवसन किया । कवितानुचार्यन । क्यों तुमने बाँहें बर कर ली ? हे तडोष (हूँ बबबुध) । कर्नाटक अब गिरुआ बना । तुम्हारी तीनों पत्नियाँ तुम्हारे एल नव मानो थी । बाँधतीरप्य बहुर एलहार एल । केरळबूडि मृनाम्भमधि !! कर्नाटक-कम्पका कनाबरन !!! अब तुम्हें कहा पाठ ?

— इस प्रकार पुनः नबी का स्मरण करके रो पड़ी ।

अभी पप के वैद्वयसाग हुए थोड़े दिन हुए होवे बस्मय को मोठ लकड़ुंठी में हुई । सास को सती होने से रोकने का बरसक प्रयत्न किया । मुझ अनाधिनि के लिए हूँ । सही आप रह बाइए कइकर जाइह किया । पर कील परपरा के बिबल आना बाइया है ? बस्मय कि पिता पर पक्षम्बे हेमते हँसते सो गई । इस प्रकार अपनी सास को लम्बी बचाने देख कर अन्तिमम्बे से लड़ा नहीं गया । उसे

सभालने के लिए बहूए आगे बढ़ी। उन्हीं को सबोधन करते हुए अत्तिमब्बे बोली

ये ऐसे सास-ससुर थे कि कभी मेरे हाथ को रोकने का प्रयत्न नहीं किया। मुझे पतिहीना अनाधिनी जानकर सदा मेरी इच्छाओं को पूर्ण करने में लगे रहे। मैंने इनकी सारी संपत्ति लूटी इनके घर का मानो दीवाला ही निकाला। तब भी उसके मुह से चकार तक नहीं निकला।

ठीक इन्हीं दिनों में पोन्न और अजितसेनाचार्य जी के अन्तिम दिन भी आए। प्रभो! कहकर रो पड़ी। सोच रही थी कि सचमुच पापी चिरायु होते हैं। आँख के आँसू अब सूख गए थे। सदा सुन्न से बैठे रहती सदा मन ही मन आचार्य और पोन्न की महिमा का स्मरण किया करती थी। दो दिन बीते। काळलादेवी के काल कवलित होने का समाचार मिला।

मामी! काळलादेवी! घमड तुम्हारे नाम लेनेवाले के निकट भी नहीं रह सकता! गोम्मट के अत्युन्नत विश्रह खड़ा करके स्वर्ग और मर्त्य का अंतर नाप दिया। मैं भावगीति हूँ तो तुम एक महाकाव्य हो।

कर्नाटक के महान व्यक्तित्व एक एक करके अस्त होते जा रहा है और देश अनाथ बन रहा है। न जाने और भी क्या क्या देखने के लिए मैं जीवित हूँ!

अत्तिमब्बे की आँहें निकलने लगी। परिस्थिति ऐसी थी कि अत्तिमब्बे सदा सशक रहने लगी। दिन-रात उसे यही भय रहता कि कहीं कोई बुरा सुनना नहीं पड़े। न जाने आज किसकी मौत होनेवाली है? उठते बैठते दुःखद समाचारों का भय उसे सताने लगा था। एक दिन चामु डराय के स्वर्गवास का समाचार मिला।

—मामा जी मैं आप के प्यार को कैसे भूलूँ? आप के धैर्य स्थैर्य का स्मरण करके हृदय भी आश्चर्य चकित होता है। आप कैसे

महामहिम है । आप महामना हैं । आप की बराबरी करनेवाला इस
 सत्कार में कौन होगा । माताजी की आज्ञा के बहाने आपन इशमिरि
 की बोली को कोमल बनने की बाध्य किया और उस पापाप को
 सुखीय किया । पाहुबन्धी की अनग्न्य मति गढ़बा^१ । प्रस्तर प्रतिभाओं
 में जैसे बाटबन्धी है वैसे ही भव्यारमाभा में आप महान हैं । अचक्षुष
 हैं । सचमुच आज वर्नाटक खनाय हुआ । विप-काक निधनिक हुआ ।
 कनक काव्य-रमन व्यपहार मय बन गया । अब क्या बचा है ? किस
 लिए अब जीवित रहना है ? क्या और किसके वास्त में जीवित रहूँ ?

— अतिमध्य आगे पहुँच जलित रहन कभी ।

अतिमध्य अब पर्व विरसत पन गई । कभी कभी सुपति भी
 शान से बैठे । धोमकर्म कभी का भिट पया था । आए दिन मृग्य वा
 समाचार सुन सुनकर विषम होकर मोहकर्म भी पठ गया । अब वदोनवास
 काके हेतु ओपन करन लगी । दिन रात तपस्या में लीन रहती ।
 स्वयं में भी समसंस्करण को देखती हुई दिव्य ध्वनि धुनने के पास
 में आत्मविभूत में उबी रहने लगी । कौटिक से विरस तो हुई पर
 जोक से विरस नहीं हो सकी । घरा यात्रको की रोधी पीछे पड़ी
 रहनी । कभी कभी अतिमध्य का हाथ छाधी रहता । वह भी न मही
 कटती । अपनी बहूओं से कुछ न कुछ बिछा देती थी । कभी कभी पुन
 के पास ही यात्रको को बनने के लिए विषय हो जाती थी ।

प्रतिदिन अन्विय प्राप्तकाय अतिमध्य के चरणों पर ली
 मुझाई बड़ाकर चला आता था । उन में से एक एक मुझा अपने
 पोखो को देखकर अपनी बहूओं को इस इस देखकर, रस के नाम पर
 बन मुझाई किया रखती थीर बायी मन बाग रंगी थी । एक बार
 बका पुर से आभय के सवाक्य आय ।

उम्हारे निवेदन किया

माताजी । आभय दी जबिक स्थिति खोजनीय बन गई है ।

विद्यार्थियों की मर्दा पड़ रही है पर आमदनी घटती जा रही है । देने के लिए है कौन ? राष्ट्रकूटों के अधःपतन ने हमारी गिट टूट गई । चामुंडराय भी गए । कल्पतरु भी काळलाशयी भी अब नहीं । गंगो की ओर से जो भी वापिकी बची थी वह कम कर दी गई है । हनु किन्नर्य विभूत बने हैं । अजितमेनाचाय की बातों के मरगमे हम यहाँ चले आए । आचाय जी ने कहा था कि अब तक अतिमन्त्रे तब तक आप को चिन्तित होने की जरूरत नहीं होगी । मरट की म्यिति में दानचिन्तामणि के पास कहना भेजने पर महायता मिल जाएगी । यही कहते कहते अज्ञान भाव से समाधिस्थ हुए थे । हम सज के द्वार खटखटा चुके । दर कही हमें वहान से टालने का स्वभाव दिखाई पड़ा । कही कही इनना दुख मुना कि बस चलता तो अपने हाथ ने उनकी ही कुछ सहायता कर आते । जग में आप को ही कष्ट देना पड़ा । आप की अनुमति हो तो कही उधार लेकर अपना काम चला लेंगे । नहीं तो यही एक जैन विश्वविद्यालय है । इसे भी बद कर देंगे । कन्नड प्रांत में अब केवल दो ही जैनियों के जागार बच हैं । एक तो आप हूँ दूसरे श्रवणग्रेष्ठगोष्ठ के गोम्मटनाथ हैं ।

अतिमन्त्रे ने यह सब ज्ञातचिन्त से मुना । सोचने लगी — मेरी मूल थी कि मैं दानचिन्तामणि बनी । ममार के दैन्य को दूर करने का बीड़ा व्यर्थ ही क्यों उड़ाया ? औरों के समान कही अज्ञात रह जाती तो यह मकट नहीं रहता । क्या जैन समाज रसातल चला गया ? यदि जनता अपनी ओर से जितना बने उतना ही हाथ बँटावे तो इस विश्वविद्यालय का भार सभालना कठिन होगा ? कौन्सी दरिद्रता आई है ? यह घनाभाव का परिणाम नहीं, भावना के अभाव का परिणाम है । जनता स्वार्थी और भाव-शून्य बन गई है । क्या कल ? अपने पास मैंने एक कानी कौड़ी तक नहीं रखी ।

ऐसे सोचने सोचते अतिमन्त्रे की आँसू से आँसू की बाध

६. ई ।

उसके माँग बैठकर आभयवासी बोले —

माताजी ! लम्बा बीजिए । आप को हमन कष्ट दिया । यह हमारी दुर्बलता थी । आप जीसु बहादुर ! अतिशयमायाजी की बात मानकर बिबस होने पर चले आए । और मायम को चाहे बंद कर सकते हैं पर आप के माँसु देख नहीं जाते । आप का रोना और योम्मन्स्वर का प्रकट हो जाना दोनों एक ही हैं ।

प्रबन्धको ! मैंने अतिशयमायाजी की वचन दिया था । वचन का पालन करनी । आकर दानदेनवासी में तीन हू । अतिशयमायाजी की पावनक्ति मेरे पास है । बड़ी मेरे लिए अत्यन्त निधि है । आभय को बंद करने की बात सोची थी नहीं जा सकती । हूँ परिस्थिति के अनुग्न हूँ परिवर्तन करना पश्चात् । अब बकापूर का योग समाप्त प्राप्त है । अब हमारे लिए सहीव कम्पनका केवल योम्मन्स्वर है । अतएव उसे अवलम्बित्योक्त के बाइए । हमारी विश्वविद्यालय वहाँ कम सकमा । उसका नाम योम्मन्स्वर विश्वविद्यालय हो । पर कवि जिस विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था वह बंद क्यों हो । जिस विश्वविद्यालय ने रत्न जैसे कवि दिया है उस का नामो निधान तक रहन नहीं पाव ? नामहरण को लिखा पढ़ाकर मद्यस्वी बना हुआ विश्वविद्यालय स्वमित हो जाय ? नहीं नहीं बरुट ही सामना करना है । करने । अतिशय न हो । अवलम्बित्योक्त में स्वीकृत करके चला सें । अभी इसका प्रश्न कर बीजिए ।

— इतना कहकर अतिशय अचर गई । योम्मन् विश्वविद्यालय के लिए बहुतों से सहायता की याचना की ।

पहुँचो ने कहा —

माताजी ! हमारी सारी संपत्ति आप ही की है । इतना सोचा हम पर काब रखा है कि हम से बोले नहीं बने । आप

के नाम पर हम अपना सारा सुवर्ण विश्वविद्यालय के लिए दान देंगी केवल इस मागल्य, नत्थू, नूपुर, कर्ण-फूल और दो दो चूड़ियों को रख लेगी।

ऐसा कहती हुई दोनो बहुओं ने अपना सारा सुवर्ण लाकर सचालको के सम्मुख ढेर लगा दिया।

महाशय ! अब इस से किसी भाति काम चलाइए। आगे भगवान की कृपा। श्रवणवेळगोळ में विश्वविद्यालय प्रतिष्ठापित हो तो चिता नहीं रहेगी। कई महानुभाव परमात्मा के दर्शन के लिए आते रहेंगे। कम से कम सौ में विद्यालय का एक दानी निकलेगा तो भी काम से चलता रहेगा।

— अत्तिमब्बे ने यह कह कर उन सचालको को बिदा किया।

दिन बीतते गए। अत्तिमब्बे की भक्ति भी बढ़ती गई। साक्षात् मूर्तिमती भक्ति ही बन गई। आँखों में सदा परज्योति की झाकी बसी रहती। कानों में सदा भगवन्नमामृत की धारा बहुएँ बहा रही थी। उसकी जीभ पचनमस्कार से पगी रही। अत्तिमब्बे में भक्ति के अनुपात में शक्ति भी बढ़ी। अपनी असूँव शक्ति को छिपाए रखने का भर सक प्रयत्न किया करती थी, पर उसे अपना समय कभी कभी तोड़ना पड़ता था। एक बार लक्कुडि में इरिववेडग का दरवार लगा हुआ था। वहाँ राजगज मस्ती में रागल बना और जो भी कुछ मिला नष्ट करने लगा। आखिरकार सीधे इरिववेडग के दरवार में ही घुस पड़ा। इरिववेडग को सूँड से उठाकर चक्राकार घुमा ने लगा इरिववेडग वह चीख उठा।

माँ ! बचाओ ! माँ बचाओ !!

अत्तिमब्बे महल में ही थी। न जाने कैसे उसे यह बोध हुआ। दौड़ते दौड़ते दरवार आई। पचनमस्कार का जप करते हुए हाथी के पास गई। उसे देखते ही हाथी शांत हुआ।

क्यों दबराज ! तेरी क्या सुधी ? अतिमर्त्य के पद पर
करी नजर लगी । बन् मेरे की ।

— तारा कहने हुए उसकी पीठ मग्न करने लगी । हाथी ने
इरिबबेडन को सूँठ से उतार दिया । अतिमर्त्य ने जरम पर पड़ हुए
इरिबबेडन को उठाया । उस का स्पन्द क्या था सजीविनी का स्पर्श
करता था । वह गज वीमन्य पाकर जान सठा । बोला —

माँ तुम्हारी बड़ी कटा है । नहो तो मैं बे-मीत मारा
गया । वह अब भी बर बर काप रहा था ।

उसे जमय जान देते हुए अतिमर्त्य बोली —

बटा ! गोभ्यन्ताय की कथा है । पञ्चमत्कार जपा करो ।

एक बार सपरिवार जन बिहार करने अभिय गया । नदी
के किनारे पड़ा पड़ा । उस अपने अपने सोख कूर में मान था ।
तगदेव नामक अतिमर्त्य का एक पोता था । वह न जाने कब बाबी की
जिन-मूर्ति लेकर खेलने गया । उस महका रहा था कि वह हाथ से
छूटी और नदी में कही जो नदी ।

अतिमर्त्य ने जब जान छोड़ दिया । सपन पुरुष कहा कि
यब तक काष्ठगद्देवी की ही गई पार्श्वनायस्वामी की वह मरकज मूर्ति
नहीं मिले उस एक उस जब जान रहन नहीं करवी । माँ ही
बुद्धावस्था के कारण अतिमर्त्य पुरुष की । अब निराहार रहने लगी ।
अग्निव परवान हुआ । लारी लगी छाई कई पर कही मूर्ति नहीं
मिली । वैसे ही बसो मनिया बनवाकर माता जी के चरणों में अर्पित
करने का वादा किया पर उसन स्वीकार नहीं किया ।

आठ दिन अतिमर्त्य निर्धन रह गई । उस दिन फिर हाथी
के सिर एक धवार हुई । वह लोह-भूषण तोड़कर भागा । रास्ते
में जो कुछ मिला कुचल खाया । धीमे धीमे उस नगरपर उस जिनबिब
को नृप में उठाकर धूमते-धूमते महल की ओर चला । बगला इस

दृश्य को देख कर भक्ति-परवश हुई । पार्श्वनाथ की जय, गजराज की जयवाली घोषणा गूज उठी ।

हाथी आगे बढ़ा । जहाँ अत्तिमब्बे थी वहाँ आया । अत्तिमब्बे की गोद में जिन-बिब रख दिया । अत्तिमब्बे ने हाथी का सत्कार गन्ने आदि खिलाकर किया । सप्ताह भर जिनोत्सव मनाया गया । पोतो ने उस में भर-पूर योगदान दिया । भक्ति की बाढ उमड़ पड़ी ।

एक बार गोम्मटेश्वर जिनालय के सचालक फिर से आए ।

महाशयो ! आप के शुभागमन से बड़ा हर्ष हुआ । मैं आप की क्या सेवा कर सकती हूँ ।

अत्तिमब्बे ने सत्कृति से विनयपूर्वक प्रश्न किया ।

माताजी ! आप के दान से श्रवणवेळगोळ में विश्वविद्यालय बना । यात्रार्थियों से भी कुछ न कुछ मिलता ही रहता है । पर इसी से विश्वविद्यालय का काम सुचारु रूप से चल नहीं सकता । अभी कोई समस्या नहीं है । फिर भी आचार्यपाद का अभिमत है कि इस के लिए स्याई व्यवस्था हो जानी चाहिए । मूल-निधि आप के नाम पर स्थापित हो जाय । अतएव यहाँ आकर आप को दृष्ट देना पडा ।

सचालको ने निवेदन किया ।

मूल-निधि की बात है ? कितने की होगी ?

• अत्तिमब्बे ने सहज ही प्रश्न किया ।

कम से कम एक करोड की तो होना ही चाहिए ।

— सचालको ने उत्तर दिया ।

यह सुनते ही अत्तिमब्बे का उत्साह ठंडा पडा । पर इस भाव को व्यक्त नहीं किया । उन लोगो से इतना ही कहा कि आप यही रह जाइए । एक सप्ताह के अंदर इसका प्रबंध हो जाएगा ।

अत्तिमब्बे यो तो खाली हाथ थी । अपना कहने के लिए एक

कौड़ी की नहीं रही फिर भी उसने सुपासको वो आश्वासन दे दिया।

पाश्चन्ताव के सम्मुख चपचाप बैठे बैठे मानसिक पूजा करने लगी। मन ही मन सुकनोभिप्रेक भी कर दिया। पांच दिन बीत गए।

प्रमो क्या अठिय दिनों में येरी शान छाकी रू काय ? अब तक तुम्हारी कपा से किसी को भी ना मही कहा। अब तक येरी मान रखा। आखिरी हम तक येरी माख रखना। तुमसे कभी मैंने अपने लिए कुछ नहीं मांगा है। खनठा के लिए मांग रही हू। रेश के लिए मांग रही हू। बीन बस्त्रियों को येरे घर जाने की येरना देनेवाले तुम ही तो हो। क्या मही तुम्हारी भीला है ? अब यह व्यवस्थेअनोअ से सुपासक कैसे आ सके ? करोड रुपयो की मांग कौन कर रहा है ? यह तुम्हारी प्रेरणा नहीं है ? मुस अबका की परीक्षा केना चाहते हो ? तुम तो स्वामी जानते ही हो कि इस अकिचन के पास क्या है और क्या नहीं है। निस्तेय सूत्र कांतिहीन चद्र शान न हे मकनवाकी शान चित्तमभि। हमका रहना न रहना बरबर है। प्रमो अब येरे घर में सर्ववृष्टि हो ताकि आए हुए ये अतिथि खाली हाथ न लौट पावें। फिर मुस समाधिजनन ही हे वो। कोई बात नहीं।

इस प्रकार उसका रोना रोना मान रहा था। ठीक उसी समय इस के पोते पोतियां बहूँ खीं आईं। चारा ले देना कि बारी के जान वह रहे हैं। गुरुमन्त्र से रहा नहीं गया। पूछ लिया —

बारी रा कपो रही हो ?

— अन्धकपडे न प्रसन किया।

बारी ? तबीयत तो ठीक है ?

पद्ममन्त्र ने हाथ से झुंकर प्रश्न किया।

बारी ! बताओ तुमको क्या चाहिए ? रोने मत।

ओ जाहे ताबो मैं का रूना। मुय रोओपो तो मैं भी रो

रहीना।

— चौथे नागदेव ने सहानुभूति में सनी आवाज में कहा और हथेली से आँसू पोछ डाले ।

बच्चो ! मैं क्या उत्तर दूँ ? तुम में से कोई मेरी माँग पूर्ण नहीं कर सकोगे ।

ऐसी बात नहीं दादी । हम अवश्य कर देंगे ।

— प्रत्येक ने विश्वासपक्क कहा ।

देखो ! मुझे बहुत पैसे चाहिए । मेरे हाथ में एक पैसा तक नहीं है ।

अत्तिमब्बे ने अपने पोतो के सम्मुख अपनी गोचनीय स्थिति का वर्णन किया ।

बम ! पैसे के लिए रो रही हो ?

इतना कह कर सत्र वापस गए और कुछ ही क्षणों में लौट आए ।

दादी ! लो इतना मेरे पास है ।

— गुडमब्बे ने अजुली भर सुवर्ण मुद्रा लाकर अत्तिमब्बे के सामने रख दी । इसी प्रकार अब्बकब्बे और पद्मब्बे ने किया ।

दादी, अब मेरे पास सिर्फ इतना ही धन है । इस में जाया तुम लो । आधा मेरे पास रहेगा ।

— नागदेव ने बाँटते हुए कहा ।

बेटा ! तुम्हारी बहनो ने अपनी सागी पूँजी दे दी । तुम तो केवल आधा देने की बात कहते हो । यह क्यों ?

नागदेव को गोद में लेकर प्यार से अत्तिमब्बे ने प्रश्न किया ।

दादी ! और आधा हिस्सा बचा कर रखे रहूँगा । और कभी तुम्हें जरूरत पड़े तो ला दगा । समझी !

— बहुत ही सहज भाव से छोटे नागदेव ने उत्तर दिया ।

अतिमर्त्य का हृदय फूट उठा । आनवाधु के कोप्यारे फूट निकले ।

कंजुस कही का । बारी ! यह बड़ा कंजुस है ।

नव बहनों ने एक स्वर में कण्ठ दिया ।

पत्नी ! तुम सभी मेरे ही समान मूर्ख हो । यह मेरा मुन्हा
बड़ा समझदार है और होखियार है । एक ओर ठगारता से धान
करता है तो दूसरी ओर कुछ आपत्तन भी बचाए रखता है । दोनों
चाहिए नहीं तो मेरे ही समान मूर्ख लोगों को रोना पड़ेगा ।

— इस प्रकार पोता के सम्झना बुझाकर देखा साढ़े तीन
कंजुसी भर स्वर्ण मुद्राएँ थीं । अतिमर्त्य ने उन्हें अङ्गुली में भर कर
मन्दिर पूर्वक पार्श्वनाथ का स्वर्णभित्तिका किया । कबेर का खजाना ही
मानों कहा गया । कमल भर अठवसी हो ध्यानस्थ रही । अर्धों का
झूली देखती है सामने एक ओर अग्निव दूधरी ओर हरिबोधय जड़े है ।
पोते सब जैसे गए हैं ।

हरिबोधय ! क्या जाए बेटा ? दीन भी कुछल से तो है ?
महापत्नी चम्पेस्वरीदेवी कही है ?

माताजी ! सब कुछल है । आप के वर्णन की इच्छा हुई ।
जैसे आया । हरिबोधय ने उत्तर दिया ।

चक्रवर्ती सार्वभौम को इस बुद्धिमा क दयन की चाह । कहो
किर्दाकिए माए ?

कहू अतिमर्त्य इस पत्नी ।

आप को बूझूँ ? नव तो मेरा चक्रवर्ती यह आशी बड़ी भी
नहीं रहेनी माँ ! सधमुच आप ह। के वर्णन के किए आया । पिताजी
ने आप की सेवा में कइका सेवा है कि नागदेव के स्वर्णवास होने
पर नियमानुसार राज्य भी ओर से कुछ अतिपूर्ति देनी थी । उस समय
भूल गए । अब एक सप्ताह से परधाताप के मारे उठूँ छोटे धानठे
घाति नहीं मिल रही है और आपत्तन के रूप में मत्स्य देव की

घरोहर भी हमारे पास पड़ी हुई है। वह भी आप को मिलनी चाहिए। इसे चुकता कर देने के निमित्त मुझे भेजा है। हिसाब लगाने पर कुल दो करोड़ दो लाख मुद्राएँ निकली। उसे हाथियों पर लादकर यहाँ ले आया हूँ, स्वीकार कीजिए और शुभाशीर्वाद दीजिए ताकि हमारे वंश का भला होता रहे।

अत्तिमब्बे ने पूजाविग्रह हाथ में लिया और ऊपर उठाते हुए कहा

प्रभु पाश्वनाथ सब का भला करेगा। मेरे बालबच्चे अलग नहीं तुम अलग नहीं हो। जब तक मैं जीवित हूँ तब तक तुम लोगो का बाल तक बाँका नहीं होगा।

फिर पुष्प का प्रसाद इरिवबेडग को दिया। चरणामृत दिया। जैसे बाल बच्चों को दिया करती थी वैसे ही भोग चढाए गए मेवा आदि भी इरिवबेडग और अण्णिग को दिया।

ठीक उसी समय रत्न कवि हाँफते हाँफते आ उपस्थित हुआ। अत्तिमब्बे के दर्शन से सतुष्ट होकर बोला

माता जी। इधर एक सप्ताह से न जाने आप क्यों खिन्न हैं। कम से कम मुझमें अपना दुख कहे देती।

घबड़ाए हुए पूछा।

बेटा। कैसे जाना कि मैं दुखी हूँ।

माँ। मैं भत्तग्राम में भले ही रहूँ पर मेरा मन सदा आप ही के चरणों में लीन रहता है। आँख अधी हो पर ही की आँख अधी नहीं होती। मेरे साथ चलिए। प्रमाण दे दूंगा।

इतना निवेदन करके अत्तिमब्बे, अण्णिग और इरिवबेडग को साथ ले गया और महल के आँगन में अपने रथ पर स्थित मूर्ति को अनावरण कर देने का आग्रह अत्तिमब्बे से किया। अत्तिमब्बे ने विवश होकर उसका अनावरण किया और दग रह गई। वहाँ अत्तिमब्बे

को ही परमासनागीन मूर्खता प्रतीक के रूप में पाया। उसकी आँखों से बहे आँसू के बिंदु स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। इसे देखकर सब आश्चर्य चकित हुए।

तब ! कहीं से इतना सौना उभरा ?

अभिषेक ने रस सं पूछा।

माताजी आप का दिया हुआ है आपने मेरा तुला भारकरा दिया था। उस सोने से आप की मूर्ति बढवाकर निम्न पूजा कर रहा हूँ।

जीवन व्यक्तियों की मूर्ति बनवानी नहीं चाहिए। मृत व्यक्तियों की मूर्तियाँ बनाई जानी हैं।

अभिषेक ने कहा।

माता जी ! आप तो अमर हैं। आप हम नियम के अपवाद हैं।

— राज ने गंभीरता पूर्वक कड़कर नमस्कार किया।

पापक कही का ? सोना दिया का आराधन से रहने के लिए। बाप बन्धों और जनकी माँ को आराधन बनवाते। आराधन का जीवन बिलाटे। उसके बबले महा ब्रह्मा साधारण स्त्री की मूर्ति बनवाने में मग्न होता क्या बैठे। मूर्त ब्रह्मा विषया बनापिनी की मूर्ति बनवाकर पता की ? तुमने अपनी मूर्तता में इस तरह बार बार धक्का दिए हैं। मेरे माताजी पत्नी कहते थे कि कश्मिरी का अद्भुत ज्ञान सूख रहा है। तुम्हारा बर्तन साद्री कर रहा है। इस सुवर्ण से सबको जिन-मूर्तियाँ बनवा सकते थे। अभिषेक ने राज को डाँटा।

माताजी ! जिनसे आप की दृष्टि में बह है पर हमारी दृष्टि में आप बड़ी हैं। आपने मेरी परितो को छोड़कर सिनार से लगी लोरी एक कर दी है। मेरे बंटे राज को इतना दिया है कि कोई हितार्थ नहीं कर पाता। मेरी मुसीबत छोटी अभिषेक का तुल्यकार करके चोखा सोना ही दे रहा है। अब मुझे पहनायी मूल नहीं है। मैं शर्म से रहन हूँ। यदि किसी दिन मैं निर्बल भी बनूँ तो आप की

मूर्ति के सामने बैठकर प्रार्थना करूँगा ।

यह कहते समय रत्न भाव-परवश था ।

सबो ने मिलकर भक्ति पूर्वक अतिमञ्चे की सुवर्ण प्रतिमा उठाई और सीधे महल के दीवानखाने ले आए । वहाँ इरिवबेडग के द्वारा लगाए गए सोने के ढेर के सम्मुख रख कर इरिवबेडग, अणिग और रत्न तीनों ने मिलकर उस मूर्ति का अभिषेक ऐसे ही किया जैसे जिन-मूर्ति का किया जाता है । जलाभिषेक, क्षीराभिषेक और गधाभिषेक किया । अजली में भर-भर कर सुवर्ण से भी अभिषेक किया । बहू-बेटे, बालवन्चे सब ने मिलकर अतिमञ्चे की जय । दानचितामणि की जय । सम्यक्त्व चूडामणि की जय । कह कर जयघोष किया ।

अतिमञ्चे को बच्चो का यह खेल अच्छा लगा । वह आनद से फूल उठी । पार्श्वनाथ की हरी मूर्ति को अपनी सुवर्ण-मूर्ति की जाघो पर रखा और कहा —

महाप्रभो ! इन बालको को आशीर्वाद दो । मैं नहीं जानती कि ये क्या कर रहे हैं । अच्छा है या बुरा, तुम ही जानो । इसे स्वीकार करो । इन पर अनुग्रह करो ।

— भक्तिभाव से अतिमञ्चे गद्गद् हो उठी ।

अतिमञ्चे की सुवर्ण प्रतिमा की जाँघो पर पार्श्वनाथ की मूर्ति रख देने से ऐसा लग रहा था मानों दानचितामणि सम्यक्त्व में पनपकर फूली-फली और पगी हो ।



परिशिष्ट

पारिभाषिक शब्द-कोश

अकृत्रिम त्रिनालय

मिथुन मिमित त्रिनालयिर ब्रह्म ८ ११ १७ ४८२ ऐसे मंदिर तीनो छोको मे पाए जाते है। यहाँ केवल देवताओं की ओर से जिनो की पूजा होती है।

अनुमोदन पुण्य

किसी उत्कर्म के अनुमोदन से मिलनेवाला पुण्य।

अपरान्वित

पूर्व विश्व के अक्षितीय तीर्थ कर।

अच्छत (अर्द्ध) कमली और तीर्थकर

चाटिकों से मुक्त चेतनाओं को अर्द्ध कहते है। उनकी दो कोटियां है 1) जो अपने निर्वास के लिए प्रयत्न छील होत है वे कमली है और 2) जो लोक-सामान्य की मुक्ति की कामना रखते है ऐसे विश्वाकर्षी चेतना तीर्थ कर है। वे दोनों जिन और सर्वत्र भी कहाते है। इनका घटीर अप्राकृतिक होता है। अथ स्पष्ट बारी रहित एव सदा सुभाषित रहता है। इस परम शक्ति घटीर का ही सूक्ष्म नाम पामोदरिकाय है।

अर्धिक

जीन संस्थापिनी विरलता।

ईशानकल्प

पृथ्वी के ऊर्ध्व भाग में कमल दो-दो जोकों के आठ स्तर है

जिन को कल्प कहते हैं। प्रथम स्तर में दक्षिण की ओर फेले हुए लोक को ईशानकल्प कहते हैं।

ऊर्जयत

जुनागढ (गुजरात) के तीन मील दूरी पर रहनेवाले गिरनार को ऊर्जयत कहते हैं। यही बाईसवें नेमिनाथ तीर्थ कर ने निर्वाण प्राप्त किया।

कर्म - घातिकर्म और अघातिकर्म

यह अचेतन तत्व है। काया, वाचा मानसा कर्म सग्रह हुआ करता है। यही जीव के जन्म, जीवन और मरण का कारण है। दैविकगुणों को आच्छादित करनेवाले कर्म को घातिकर्म कहते हैं। ज्ञानावरणीय, दशनावरणीय मोहनीय और अतराय ये घातिकर्म के अवातर भेद हैं। नाम, गोत्र, आयु और वेदनारूप कर्म का नाम अघातिकर्म है। घातिकर्म से मुक्त जीव जिन कहलाता है अघातिकर्म से भी मुक्त होने पर जिन ही सिद्ध कहलाता है।

कपाय सल्लेखन

अतरंग के रागद्वेष को क्रमशः कुचल डालनेवाला व्रत

कुन्दकुन्द

ई पहली सदी में विद्यमान जैनाचार्य थे। प्रवचनसार, नियमसार, समयसार और पचास्तिकाय नामक दार्शनिक ग्रन्थों के रचयिता हैं।

कैलासगिरि

आदि तीर्थ कर आदिदेव का निर्वाण-स्थान।

गुणस्थान

जैनागमों के अनुसार मुक्ति पथ के चौदह गुणस्थान हैं।

तारुण्य हीर्ष कर बासुपुत्र्य का जन्म भीर निर्वाण स्वाम ।
 रामरूप (बिहार) के पास बाणकट बंपापुर नाम से यह
 स्वाम प्रसिद्ध है ।

कि

पञ्चकस्यान में एक उत्सव

वातिकर्म से मुक्त भीर

ई बृहती तृती में बुधवार मृगि ने १८ वाचाओं में कपास
 प्राकृत नामक आत्म ब्रह्म की रचना की। उस पर बीरसेनाचार्य
 एवं उनके शिष्य विनसेनाचार्य ने (८१४-८७२) कम से
 २ भीर ४ क्लोकात्मक व्याख्या लिखी है। इस
 व्याख्या का नाम पञ्चमल है ।

विस्तारानुसृत पुरित मुक्त-आत्मा

हीर्ष कर-बाणी

ई बृहती तृती में मृतवली भीर वृष्णवंत आचार्यों ने मिलकर
 छ टी सूत्रों में विनायकों का संग्रह किया । इस पर
 बीरसेनाचार्य (८१४-८७२) ने ७२ क्लोकों की व्याख्या
 लिखी । इस बृहत्कवि का नाम पञ्चल है ।

तार्क्ष्य कर बनने की शीघ्रता एवमवाका वाच पञ्च ।) भी के

गम में आने के छ महीने पूरा 2) जन्म लेने पर 4) वैराग्य-प्राप्ति के बाद, 5) केवलज्ञानी बनने के समय और अजातिकर्मों से मुक्त होकर मिद्ध बनने के अवसर पर चतुर्विंशाय जमरो द्वारा मनाए जानेवाला उत्सव ।

पचनमस्कार

जैन गायत्री । अहं त, मिद्ध, दिगवराचाय, दिगवर यति (उपध्याय) और दिगवर मुनि इन पाँचों के दैवी गुणों का स्मरण करना ।

पचपरमेष्ठि

अहं तादि पाचकोटि के जीव जो पचनमस्कार के विषय हैं ।

परीपह

मुक्तिपथ के राडे ।

परमौदारिककाय

अप्राकृतिकतन्त्र ने निर्मित १०८ लक्षणों से युक्त अहं त देह ।

पिच

नैन पाव के हाथ में रहनेवाले मोर पिच्छ के झाड़ ।

बलदेव

त्रिपण्डि - शलाका-पुरुषा में नौ बलदेव माने जाते हैं ।

स्तनत्रय

1) सम्यग्दर्शन (जैनागमों पर विश्वास) 2) सम्यक्ज्ञान (जैनागमों का ज्ञान) 3) सम्यक्चारित्र्य जैनागमों के अनुरूप जीवन बिताना ।

लोच

सिर और दाढ़ी-मूँछ के तबल उखाड़ने की क्रिया ।

वासुदेव

त्रिपट्टि-खलाका पूजनों में भी वासुदेव और भी प्रतिवासुदेव भी है । प्रांतवासुदेव को पराजित करके वासुदेव अर्घ्य चमी बनते हैं ।

विदेहक्षेत्र

तीर्थ करों का निवास स्वान । जबद्वीप के सप्त जगों में भीथा ।

आवक-आविक

जैन पृथ्वी नर-नारी ।

समस्तस्त्र

तीर्थ करों के उत्तार समारम जो देवताओं द्वारा व्यापक होठा है । इस समा में तीर्थ कर उपदेश देते हैं ।

सम्प्रविमरण

धुन-सम्प्रय में जानबाधी मृत्यु ।

सम्प्रविमरण

यहाँ बाण तीर्थ कर निर्वाण हुए हैं । बिहार प्रांत में इसका नाम निम्ना में है । ४४८१ पुनर्जन्म है ।

सामयिक

उध्या समय की प्रार्थना ।

सस्तेमन

दो प्रकार के हैं 1) कपाम सस्तेमन अर्थात् रामायण का ह और 2) काय सस्तेमन-आमरणाय अर्थात् काय का त्याग ।

सिद्ध

अपातिकर्म से मुक्त भीम ।

सिद्धको

जैनधर्म के अनुसार सिद्धों में अतिम लोक जहाँ सिद्ध निराकार स्थिति में अनन्तकाल अनन्त बिहार करते रहते

परिशिष्ट

शुद्धि पत्र

विज्ञ पाठको से निवेदन है कि नीचे के सही रूप मकेनानुसार यथास्थान जोड़कर पढ़े ।

पृ स	पक्ति	शुद्धपाठ	पृ स	पक्ति	शुद्धपाठ
10	10	राजकीय	20	23	उद्दीप्त
25	1	प्रेयसी	25	3	में
26	7	अगुली	26	11	अपने
27	14	तिलक	28	4	ग्रहण
29	8	का	29	13	अवेग
30	19	व्रत	32	7	रहे
34	22	के लिए	34	23	और
36	6	महर्षि	36	7	ओतप्रोत
37	24	कविचक्रवर्ती	38	14	त्याग
40	26	लोक	46	3, 7, 8	चक्रवर्ती
46	11	आश्वासन	99	1	आश्चय
102	26	प्रा	108	3	मूंछो
108	17	समझी	116	1	लिपटा
116	12	मल्लमली	125	17	सताने
133	18	कल्पना	133	18	विभार
152	16	समयन	163	16	तो
164	19	दिया	179	24	लिए
182	1	मत्र	184	19	से
188	3	ताक	191	16	बहाइए
199	6	वताई	200	8	विशेष

पृ. सं.	पंक्ति	सुस्पष्टपाठ	पृ. सं.	पंक्ति	सुस्पष्टपाठ
208	14	सुम्हारी	209	7	बीटी
209	15	पडाव	212	12	सुस्पष्ट
212	18	बात		20	पोस को
	21	पास	213	3	तो भी
213	18	वृष्टि		22	रापीरक
	25	देह न	220	23	स्पर्ध
220	25	सर्पिणी		25	प्रभु को
221	5	इस	225	15	रिजाने
225	22	क	226	24	सस
227	9	उनके	231	10	पीस
232	13	कहारा	233	3	बाये बहा
233	13	पास	234	22	सरक
235	2	आज्ञा	235	4	दिर
	7	करना		8	बा
"	22	अतिमध्ये ने	236	2	अतिमध्ये
236	5	सुम		10	कवने
	16	गडोव		2	की
	26	बहाते			

पृ. 175 पंक्ति 7 में—सभीत मूल्य से बही — होना चाहिए, उही पृ. पर 10 वीं पंक्ति में—से नहीं—परपुत्र छोड़ कर पढ़ना चाहिए ।

पृ. 234 की 9 वीं पंक्ति में कुछ सज्ज अधिक पड़े हैं—सही वाक्य यों हैं— उस विषय प्रकाश के निकट या नहीं समझे थे ।

उही पृ. के 11 वीं पंक्ति के प्रारम्भ में — कुछ एक की पाँके से — जोड़कर पढ़ा जाय ।

